

श्री वीतरागाय नमः।

श्रीमन्महामहोपाध्यायश्रीमेघविजयगणिविरचित-

मेघमहोदय-वर्षप्रबोध



अनुवादक व प्रकाशक—

पण्डित भगवानदास जैन



वीरनिर्वाणस० २४५२ विक्रमस० १९८२ ई० स० १९२६

प्रथमावृत्ति १००० मूल्य ४) रुपिया

दी सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर 9-4-26

विज्ञापन—

जैनाचार्यों के बनाये हुए ज्योतिष गणित सामुद्रिक शिल्प शकुन वैद्यक और कला आदि विज्ञान विषयों के प्राचीन अप्रगट ग्रंथों प्रकाशित हो रहे हैं। जो महाशय इनका स्थायी ग्राहक बनना चाहें वे एक रुपिया भेजकर स्थायी ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें, जिससे उनको मेरी तरफसे छपनेवाली हरएक पुस्तक पौनी किंमत में मिल जायेगी।

शीघ्र ही प्रकाशित होंगे—

गणितसारसंग्रह— श्रीमहावीराचार्य विरचित, इसका हिन्दी भाषानुवाद, उदाहरण समेत खुलासा वार किया गया है।

भुवनदीपक सटीक— श्रीपद्मप्रभसूरिप्रणीत मूल और श्रीसिंहतिलकसूरिकृत टीका के साथ हिन्दी अनुवाद समेत। यह प्रश्न-कुंडली में अनेक प्रकार के शुभाशुभ फल जानने का अपूर्व ग्रंथ है।

वास्तुसार (शिल्पशास्त्र)— परमजैन ठक्कुर फेरु विरचित। प्राकृतगाथा बद्ध और हिन्दी अनुवाद समेत इसमें घर मंदिर प्रतिमा(मूर्ति) आदि बनानेका अधिकार विस्तार पूर्वक दिया गया है।

त्रैलोक्यप्रकाश— श्रीहेमप्रभसूरि प्रणीत यह ताजिक ग्रंथ है। समस्त वर्ष में सुकाल दुष्काल आदि जानने का बहुत विस्तार पूर्वक खुलासा बताया है।

इनके अतिरिक्त दूसरे अनेक ग्रंथ भी तैयार हो रहे हैं।

पुस्तक मिलनेका पता—
पं. भगवानदास जैन
सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस
बीकानेर (राजपूताना)



बीकानेर-निवासी श्रीमान् दानवीर उदारहृदय साहित्यप्रेमी-

सेठ भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया की सेवामें.

माननीय महोदय !

आपने अपनी उदारता से धर्म और समाज के अभ्युदय के लिये
ग्रन्थालय (लायब्रेरी) विद्यालय और कन्यापाठशाला आदि
पारमार्थिक जैन संस्थाओं की स्थापना करके श्रीमानों के
सामने सुंदर आदर्श खड़ा कर दिया है। इतना ही
नहीं किन्तु धर्म और समाज की सेवाके लिये
आपने अपने आपको अर्पित कर दिया है।
इत्यादि प्रशंसनीय कार्यों से आकर्षित
होकर यह छोटीसी भेंट आपके
करकमलोंमें सादर समर्पित
करता हूं।

भवदीय—

भगवानदास जैन

प्रस्तावना.

हरएक मनुष्य को प्रायः यह वर्ष कैसा होगा? वर्षा कब और कितनी बरसेगी? सुकाल होगा या दुकाल? अन्न सस्ता होगा या महंगा? इत्यादि जानने की बहुत उत्कंठा रहा करती है अतः इनके भावी शुभाशुभ को जानने के लिये प्राचीन आचार्यों ने ज्योतिष- फलादेश के अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया है, उनमेंसे अनेक प्राचीन ग्रन्थों का साररूप संग्रह कर के रचा हुआ यह ग्रन्थ सुभिक्ष दुर्भिक्ष वृष्टि आदि जानने का अत्युत्तम साधन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता प्रखरपण्डित महामहोपाध्याय-श्री मेघविजयगणि हैं। ये अकबरशाही प्रतिबोधक तपागच्छनायक जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के पट्टपरम्परा में आये हुए जैनाचार्य श्रीविजयप्रभसूरि और जैनाचार्य श्रीविजयरत्नसूरि के शासनमें विद्यमान थे। इन्होंने अपनी वंशपरम्परा अपने बनाये हुए शान्तिनाथचरित्र-महाकाव्य के अन्तमें इस प्रकार लिखी है—

'तदनु गण गगनांगणपूर्वदिग्भानुमाली
विजयपदमपूर्वं हीरपूर्वं दधानः ॥५५॥
तदनु विजयसेनाऽस्यान्तिषत् प्राज्ञधामा
शुचितरवरशीलः शीलनामा तदीयः ।
तदनु विजयदेवः [illegible]
स्तनुज इव येषां वाचकश्रीशरीरः ॥५७॥
चारित्रवन्तोऽद्य विजयाभिधान-
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥५८॥
तत्पादपङ्कज[illegible]
[illegible]।
[illegible]
[illegible]

ग्रंथकर्त्ता का वंशवृक्ष—

हीरविजय
।
कनकविजय
।
शीलविजय
।
कमलविजय सिद्धिविजय चारित्रविजय
।
कृपाविजय
।
मेघविजय

मेघमहोदय (वर्षप्रबोध) आदि ज्योतिषग्रंथोंके अतिरिक्त न्याय व्याकरण काव्य आदि विषयों के भी अनेक ग्रंथ रचे हैं—

१ देवानन्दाभ्युदय-महाकाव्य¹ २ शान्तिनाथचरित्र-महाकाव्य²

---

१ यह माघकाव्य की पादपूर्तिरूप सप्तसर्गीय महाकाव्य संवत् १७६० में रचा हुआ है। इसमें जैनाचार्यश्रीविजयदेवसूरीश्वरजीका आदर्श जीवनचरित्र वर्णित है। यह यशोविजयजैनग्रंथमाला में प्रकाशित हो गया है।

२ इसमें श्रीहर्षकवि विरचित नैषधीय महाकाव्य की पादपूर्तिरूप श्रीशान्तिनाथजिन चरित्र बड़ा मनोहर लालित्य श्लोकोंमें वर्णित है। इसका कुछ श्लोक पाठकों के सामने उद्धृत करता हूँ—

" श्रियामभिव्यक्तमनोऽनुरक्तता विशालमालत्रितयश्रिया स्फुटा।
तया बभासे स जगत्त्रयीविभु-र्ज्वलत्प्रतापावलिकीर्त्तिमण्डलः ॥१॥
निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथा सुरा सुराज्यादिसुखं बहिर्मुखम्।
प्रपेदिरेऽन्तः स्थिरतन्मयाशया सदा सदानन्दभृतः प्रशंसया ॥२॥
यथाश्रुतस्येह निपीततत्कथा-स्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
सुधाभुजां जन्म न तन्मनः प्रियं भवेद् भवे यत्र न तत्कथा प्रथा ॥३॥
यदीयपादाम्बुजभक्तिनिर्भरात् प्रभावनम्तुल्यतया प्रभावनः।
नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः क्षमापतिः प्राप यशः-प्रशस्यताम् ॥४॥
द्विधापि धर्मानुगतिर्महीपति-र्ददावधे शैशवः एव शेवधिः।
क्रमेण चक्री विजये दिशां जिनः स राशिराशीन्महसां महोज्ज्वलः ॥५॥

यह जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला का ७ वां पुष्प रूपमें मुद्रित है।

११ प्रश्नबोधै — २ लघुत्रिषष्टि चरित्रै
१३ भक्तामरस्तोत्र टीका

इत्यादि उपलब्ध ग्रन्थरत्नों से आपके न्याय व्याकरण साहित्य विषयक प्रखर पाण्डित्य का पता लगता है। इसके अतिरिक्त गुजराती भाषामें भी कईएक रासा आदि जोडकर गुजराती भाषा साहित्य की वृद्धि की है इससे साफ मालूम होता है कि आप का ज्ञान परिमित नहीं-अत्यन्त विशाल था।

प्रस्तुत ग्रंथ तेरह अधिकारोंमें अनेक विषयोंसे पूर्ण हुआ है। जैसे-उत्पात प्रकरण, कर्पूरचक्र, पद्मिनीचक्र, मण्डल प्रकरण, सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण फल, प्रत्येक मासमें वायुका विचार, वर्षा को वरसानेका और बंध करनेका मंत्र यंत्र, साठ संवत्सरोंका मतमतान्तर-पूर्वक विस्तार से फल, ग्रहों का राशियों पर उदय अस्त या वक्री हो उनका फल, अयन मास पक्ष और दिन का विचार, संक्रांति फल, वर्षके राजा मंत्री आदि का विचार, वर्षा के गर्भ का विचार, विश्वाविचार, आय और व्ययका विचार, सर्वतोभद्रचक्र और वर्षा जानने का शकुन, इत्यादि उपयोगी विषयोंका अनेक मतमतान्तरोंसे विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है। इसका प्रतिदिन अनुशीलन किया जाय तो अगले वर्ष मे दुष्काल होगा या सुकाल, वर्षा कब और कितनी कितने दिन वरसेगी, धान्य, सोना चांदी आदि धातु, कपास, सूत और क्रयाणक वस्तु, इन सब का तेजी होना या मंदी ये अच्छी तरह जान सकते हैं। साराश यही है कि भावी वर्ष का शुभाशुभ जानने के लिए कोई भी विषय इसमें नहीं छोडा है।

वर्षप्रबोध के नाम से हिन्दी भाषा के साथ दो संस्करण और हो गये हैं। एक मुरादाबाद निवासी पं ज्वालाप्रसादजी मिश्र अनुवादित ज्ञानसागरप्रेस बम्बईसे और दूसरा जयपुर निवासी पं हनूमानजी शर्मा अनुवादित श्री वेङ्कटेश्वरप्रेस बम्बई से प्रकट हुआ है। पहले अनु-

---

शुभ फलादेश जानने के लिये अत्युत्तम है। यह 'मित्रज्ञान' नाम से भी प्रसिद्ध है।

११ आध्यात्मिक विषय का ग्रंथ है।

१२ चौवीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव और नव बलदेव य तेसठ महान् उत्तम पुरुषों का चरित्र ५००० श्लोक प्रमाण है और विस्तारसे कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने ३६००० श्लोक प्रमाण रचा है।

१३ श्रीमान् मानतुंगसूरि विरचित भक्तामर स्तोत्रकी विस्तार पूर्वक टीका है।

किया है। नि सदेह इसमें बहुतसी त्रुटिया अब भी मौजूद होगी। इस के कई कारण है— प्रथम तो मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं, गुजराती है। दूसरा कारण वश इसे बहुत शीघ्रतासे प्रकाशित किया है फिर भी यह कहनेमे कोई हर्ज नहीं है कि मैंने ग्रथको अधूरा नहीं रखा है।

इस ग्रथ की पूर्ण प्रेसकापी जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प गोकुलचन्द्रजी भावन द्वारा ज्योतिषशास्त्री प श्यामसुन्दरलालजी भावन ने पूर्ण परिश्रम लेकर सुधार की है। तथा मुद्रितफॉर्मे पाली (मारवाड) निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास ने सुधार दिये है। इस लिये उन सबका आभार मानता हूँ।

इसको शुद्ध करनेके लिए निम्न लिखित सज्जनो ने मेघमहोदय की हस्त लिखित प्रतिये भेजने की कृपा की है इसलिये मै उनका भी पूर्ण उपकार मानता हूँ।

१ श्रीमान् पूज्यपाद शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरीश्वरजी के शास्त्रभडार भावनगर से श्रीयुत अभयचन्द भगवानदास गाधी द्वारा प्राप्त।

२ श्रीमान् महोपाध्याय श्री वीरविजयजी शास्त्रसग्रह बडोदा से श्रीयुत प लालचन्द भगवानदास गाधी द्वारा प्राप्त।

३ श्रीमान मुनि महाराज श्री अमरविजयजी से प्राप्त।

४ जयपुर निवासी राज्यज्योतिषी प मुकुन्दलालजी शर्मा से प्राप्त।

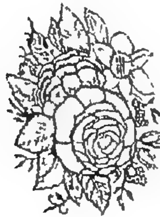
५ पाली निवासी दैवज्ञभूषण ज्योतिषरत्न प मीठालालजी व्यास से प्राप्त।

उक्त पाच प्रति प्राय इसी शताब्दीमे लीखी हुई अशुद्ध थी, इनमें जयपुरवाले पडितजी की प्रति म कहीं २ प्राचीन टिप्पणी भी थी वह मैंने यथा स्थान लगा दी है। किंतु यही प्रति प श्यामसुन्दरलालजी भावनके पास प्रेसकापी सुधारने के लिये रह जाने से विलम्बसे मिली जिस से जो बाकी रही गई टिप्पणियें मैंने ग्रथ के अतमे लीख दी है, आशा है— पाठक गण वहा से देख लेंगे।

विद्वान् जनो से सविनय प्रार्थना है कि मेरी मातृभाषा गुजराती होने से हिन्दी अनुवाद मे भाषा की तो बहुतसी त्रुटिया अवश्य होगी परन्तु कहीं श्लोको का गूढ आशय म भूल देखने मे आवे तो उसे सुधार कर पढने की कृपा कर और मेरेको सूचित करेंगे तो दूसरी आवृत्ति में सुधार की जायगी। जैसे—

विषयानुक्रमणिका ।





पाली (मारवाड) निवासी श्रीमान् ज्योतिषरत्न पं-मीठालालजी व्यास ने नीचे लिखे हुए श्लोकों का अर्थ सुधार कर भेजा है—

पृष्ठ- ५ श्लोक ४६- ४७- ४८ —- ज्येष्ठशुक्ल अष्टमी आदि चार दिन तक मृदु (सुखस्पर्श)वायु, शुभ(पूर्व उत्तर या ईशान का) वायु चले तथा स्निग्ध और विना गतिके बादल हो तो धारणा शुभ होता है इससे सब सर श्रेष्ठ होता है ॥४६॥ इन्हीं दिनोंमें स्वाति आदि चार नक्षत्रोंमें वर्षा हो जाय तो धारणा परिभ्रष्ट हो जाती है इस लिये क्रमसे श्रावणादि चार महीनोंमें वर्षा न हो ॥४७॥ अष्टम्यादि चारों दिन उपर के श्लोक ४६ के अनुसार एकसे (यथार्थ) निकले तो सुभिक्ष तथा सुखकारक जानना। यदि यथार्थ न निकले तो वर्ष अच्छा न हो और चौर तथा अग्नि का भयदायक हो॥४८॥

पृष्ठ-१५६ श्लोक- ३६— उदगूवीथी यानि आकाशमें उत्तरमार्गके माने हुए नव नक्षत्रों पर गुरु हो तो सुभिक्ष और कल्याण कारक है तथा मध्यमार्ग के नक्षत्रों पर हो तो मध्यम फल कहना ।

पृष्ठ- २५२ श्लोक- ११३— मिगसर वाय न वाइया याने मय के मृगशिर नक्षत्रमें वायु न चले ।

पृष्ठ२८४— श्लोक १ ७—मेष प्रवेश लग्नमें तथा वर्षप्रवेश लग्नमें यदि सप्तम स्थानमें पापग्रह हो तो धान्यका विनाश हो ॥१२७॥

पृष्ठ २६५ श्लोक- २०८— मूलनक्षत्र के चरणों में क्रमसे वर्षा हो तो आषाढादि चार महीनोंमें क्रम से वर्षा का अवरोध हो । इसी प्रकार श्रवण और धनिष्ठा के चरणोंमें वर्षा न हो तो क्रमसे आषाढादि चार मासमें वर्षाका अभाव हो ॥२०८॥

पृष्ठ ३२६ श्लोक २— आषाढशुक्ल प्रतिपदाको पुनर्वसु नक्षत्र हो तो धान्य की प्राप्ति हो ।

पृष्ठ ३६४ श्लोक १५२ —- आखा रोहिणी नहि मिले पोसी मूल न होय याने अक्षय तृतीया को रोहिणी और पोष अमावस को मूल न हो तो-

पृष्ठ ३७२ श्लोक १६८— 'आश्विन अमावस' के स्थान पर कोई भी मास की अमावस समझना

पृष्ठ ३७६ श्लोक २२५— मार्गशीर एकादशी को पुनर्वसु नक्षत्र हो तो कपास रुई सूत आदि का संग्रह करने से वैशाखमासमें लाभदायक होगा ॥२२५॥



॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्रीमेघमहोदयो-वर्षप्रबोधः ॥

(भाषाटीकासमेतः)

ग्रन्थकारस्य मंगलाचरणम् ।

श्री तीर्थनाथवृषभं प्रभुमाश्वसेनिं,
शङ्खेश्वरं नतसुरेन्द्रनरेन्द्रचन्द्रम् ।
ध्यायन् समेघविजयं सुखमाववुद्ध्यै,
शास्त्रं करोमि किल मेघमहोदयार्थम् ॥ १ ॥
येनायं प्रभुपार्श्वमाप्तवृषभं विश्वैकवीरं हृदि
स्मारंस्मारमहर्निशं पटुधिया ग्रन्थः समभ्यस्यते ।
त्रेधा तस्य सुवर्णसिद्धिकमला मेघाबलात् प्रैधते,
राजद्राजसभासु भासुरतया कीर्तिर्निरीनृत्यते ॥ २ ॥

नत्वा जिनेन्द्रं प्रभुपार्श्वनाथं, देवासुरैरर्चितपादपद्मम् ।
वर्षप्रबोधस्य करोमि टीका, बालावबोधाय सुभाषयाहम् ॥ १ ॥

भावार्थ—देवेन्द्र नरेन्द्र और चन्द्र आदि जिन को नमस्कार करते हैं, ऐसे धरणेन्द्र पद्मावती सहित तीर्थंकर श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथ प्रभु का ध्यान करता हुआ, मेघ के उदय के अर्थ को सुखपूर्वक जानने के लिये मैं (महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि) मेघमहोदय है अर्थ जिन का ऐसे मेघमहोदय नाम के ग्रन्थ को बनाता हूं ॥१॥

श्रेष्ठों में श्रेष्ठ और जगत् में एक वीर ऐसे श्रीपार्श्वनाथप्रभु को हृदय में निरंतर स्मरण करके जो बुद्धिमान् इस ग्रन्थ का अभ्यास करता है, उनको तीन प्रकार की विद्या, सिद्धि और लक्ष्मी बुद्धिबल से प्राप्त होती है, और बड़ी २ शोभायमान राजसभाओं में विशेष प्रकाश रूप से उनकी कीर्त्ति भी अत्यन्त नाचती है याने फैलती है ॥ २ ॥

दीपोत्सवदिने प्रात-र्ग्रन्थः प्रारभ्यते मया।
अस्मिन् जगद्गुरोर्भक्त्या भूयाद् वाक्सिद्धिसन्निधिः ॥३॥
स्थानाङ्गे दशमस्थाने न्यवेदि सुषमोदयः।
श्रीमद्वीरजिनेन्द्रेण सर्वलोकहितैषिणा ॥ ४ ॥
वृष्टेः कालाकालरूप-स्थानाद्यर्थनिरूपणात्।
सोऽत्र विवरणं स्पष्टं, ग्रन्थेऽस्मिन्नभिधीयते ॥ ५ ॥

यदागमः—दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणिज्जा, तंजहा—अकाले न वरिसइ १, काले वरिसइ २, असाहू न पूइज्जंति ३, साहू पूइज्जंति ४, गुरूहिं जणो सम्मं पडिवन्नो ५, मणुण्णा सद्दा ६, मणुण्णा रूवा ७, मणुण्णा रसा ८, मणुण्णा गंधा ९, मणुण्णा फासा १०, इति ॥

ग्रन्थस्याभ्यसनादस्य सिद्धान्तप्रतिपादनम्।
तद्वाचनेऽस्य तत्त्वज्ञै-र्निश्शङ्कत्वं विधीयताम् ॥ ६ ॥

दिवाली के दिन प्रातःकाल के समय मैंने इस ग्रन्थ का प्रारम्भ किया। इस जगत् में जगद्गुरु (श्रीहीरविजयसूरि) की भक्ति से मेरी वचनसिद्धि का विस्तार हो ॥३॥ स्थानांगसूत्र के दशवें स्थान में सर्वलोक के हितेच्छु श्रीमहावीर-जिनवर ने सुखम नाम के आरा (युग) का वर्णन किया है ॥४॥ वर्षा का काल अकाल रूप और स्थान आदि के अर्थ को जानने के लिये इस ग्रन्थ में सूत्रों का विवेचन स्पष्ट रूप से कहा जाता है ॥५॥

स्थानांगसूत्र के दशवें स्थान में उत्कृष्ट सुखमकाल का वर्णन इस प्रकार है—अकाल में वर्षा न बरसे १, काल में बरसे २, असाधु को न पूजे ३, साधु को पूजे ४, गुरु का अच्छे भाव से विनय करे ५, अनुकूल (मनोज्ञ) शब्द ६, अनुकूल रूप ७, अनुकूल रस ८, अनुकूल गंध ९ और अनुकूल स्पर्श १० ये दश सुखमकाल में होते हैं ॥
इस ग्रन्थ के अभ्यास करने से सिद्धान्त प्रतिपादन किया जा सकता है, उस

वृष्टिहेतोः शुभं वर्षं तेन तावत् स उच्यते ।
देशो वातश्च देवादिर्वृष्टिहेतुस्त्रिधामतः ॥ ७ ॥

यदागमः—तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया, तंजहा—तंसिंच णं देसंसि वा पएसंसि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति ॥१॥ देवा नागा जक्खा भूता सम्ममाराहिता भवति, अन्नत्थ समुट्ठित उदगपोग्गलं परिणायं वासिउकामं तं देसं साहरंति ॥ २ ॥ अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणायं वासिउकामं णो वाउआओ विहुणंति ॥ ३ ॥

टीका—वर्षणं वृष्टिरधःपतनं वृष्टिप्रधानः कायो-जीवनिकायो व्योमनि पतदप्काय इत्यर्थः । वर्षणधर्मयुक्तं वोदकं वृष्टिस्तस्याः कायो राशिर्वृष्टिकायः । महांश्चासौ वृष्टिकायश्च महावृष्टिकायः स 'स्याद्' भवेत् । तस्मिंस्तत्र सातवद्धुक्कणादौ । च शब्दो महावृष्टिकारणान्तरसमुच्चयार्थः । णमित्यलंकारे । देशे जनपदे प्रदेशे तस्यैव एकदेश-

---

को बाचने मे विद्वानों को निःशंक रहना चाहिये ॥६॥ वर्षा होने से वर्ष श्रेष्ठ होता है, इसलिये प्रथम वर्षा के हेतु कहते हैं— देश वायु और देव ये तीन वर्षा के कारण माने हैं ॥७॥

तीसरे स्थानांग मे वर्षा होने का कारण तीन प्रकार से कहा है, जिस देश मे जलयोनि के जीवों के पुद्गलों का विनाश और उत्पत्ति हो उस समय वहाँ बहुत वर्षा होती है ॥१॥ जहाँ नागकुमार यक्ष और भूत आदि देवों की अच्छी तरह पूजा की जाती हो वहाँ दूसरे देश में मेघ बरसने लगे वहाँ से लेआकर वे देव बरसावे ॥२॥ वर्षा के बादल उदय होकर बरसने लगें उस समय वायु नाश न करे ॥३॥ इन तीन स्थानों में वर्षा अच्छी होती है।

रूपे। वाशब्दौ विकल्पार्थौ, उदकस्य योनयः परिणामकारणभूता उदकयोनयस्त एवोदकयोनिका उदकजननस्वभावाः। व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते, व्यपक्रामन्ति च्यवन्ते, एतदेव यथायोग्यं पर्यायत आचष्टे च्यवन्ते उत्पद्यन्ते, वारं वारं क्षेत्रस्वभावादित्येकम् ॥ १ ॥ तथा देवा वैमानिका ज्योतिष्का नागा नागकुमारा भवनपत्युपलक्षणमेतत्, यक्षा भूता इति व्यन्तरोपलक्षणम्, अथवा देवा इति सामान्यं, नागादयस्तु विशेषः। नाग ग्रहणं च प्राय एषामेवंविधे कर्मणि प्रवृत्तिरिति ज्ञापनाय विचित्रत्वाद् वा सूत्रगतेरिति सम्यगाराधिता भवन्ति। विनयकरणाज्ज्ञानपदैरिति गम्यते ततोऽन्यत्र मरुस्थलादौ देशे प्रदेशे वा तस्यैव समुत्थितमुत्पन्नं, उदकप्रधानं, पौद्गलं पुद्गलसमूहो मेघइत्यर्थः। उदकपौद्गलं तथा परिणतं उदकदायकावस्थां प्राप्तम्, अत एव विद्युदादिकरणाद् वर्षितुकाम सत् त देश मगधादिकं संहरन्ति नयन्तीति द्वितीयम् ॥ २ ॥ अभ्राणि मेघास्तैर्वर्दलक-दुर्दिनमभ्रवर्द्दलक तस्मिन् देशे समुत्थितमुत्पन्नं वायुकायः प्रचण्डवातो नो विधुनोति न विध्वंसयतीति तृतीयमिति तद्वृत्तिः ॥ ३ ॥ इति स्थानाङ्गसूत्रे ॥

अनूपो[1] जाङ्गलो[2] मिश्र[3]-स्त्रिधा देशो बुधैर्मतः।
तत्तत् स्वभाव विज्ञाय जलवृष्टिर्निवेद्यते ॥ ८ ॥
तस्मान् मालवदेशादौ समानेऽपि ग्रहोदये।
वृष्टिः स्यादेव नियता कालात् क्षेत्रे बलिष्ठता ॥ ९ ॥

जलमयदेश, जागलदेश और मिश्रदेश, ये तीन प्रकार के देश बुद्धिमानों ने माने ह, उनके स्वभाव को पहिचानने से जलवृष्टि जानी जाती है ॥८॥ इसी कारण से मालवा आदि अनूपदेशों मे समानग्रह याने क्रमनना करने वाला दुष्ट ग्रह के उदय होने पर भी जलवृष्टि नियम से

तदा दुष्ट ग्रहादीनां योगे दुर्भिक्षता नहि
किन्तु विग्रह-मार्यादिस्तत्कृतं वैकृतं भवेत ॥ १० ॥
एवं मरुस्थलादौ स्याद् यदा शुभो ग्रहोदयः ।
तथाप्यवग्रहो वृष्टे-र्वाच्यः स्वल्पोऽपि धीमता ॥ ११ ॥
ज्ञेयं वाताभ्रयोगेन देशे वर्षशुभाशुभम् ।
तेनाय बलवान् सर्व-जलयोगेभ्य इष्यते ॥ १२ ॥
देशे स्वभावादुत्पातः कदाचिद् तत्त्वतो बली ।
तस्माद् वर्षविबोधाय लक्षयेत् त विचक्षणः ॥ १३ ॥

यदुक्त विवेकविलासे उत्पातप्रकरणम्—

स्ववासदेशक्षेमाय निमित्तान्यवलोकयेत् ।
तस्योत्पातादिकं वीक्ष्य त्यजेत् तं पुनरुद्यमी ॥ १४ ॥

होती है, क्योंकि काल की अपेक्षा क्षेत्र (देश) में बलिष्ठता है ॥९॥ इस-लिये यहा ग्रहों का दुष्टयोग होने पर भी दुष्काल नहीं होता, किंतु सग्राम प्लेग आदि उपद्रवों के कारण से विपरीत भी हो जाता है ॥१०॥ उसके अनुसार मारवाड आदि जागल देशों मे अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का उदय होने पर भी बरसात का अभाव होता है, क्योंकि इस देश में बुद्धिमानों ने कम वृष्टि का योग बतलाया है ॥११॥ देश में वायु और बादल के योग से वर्षा का शुभाशुभ जानना । यह योग सब वृष्टियोगों से बलवान् कहा है ॥१२॥ देश में कभी स्वाभाविक उत्पात हो तो वास्तविक बलवान् होता है । इसलिये विद्वान् लोग वर्षफल जानने के लिये उन उत्पात को जानें ॥१३॥

अपने रहने के स्थान के और समग्र देश के कल्याण के लिये निमित्त (शकुन) आदि देखना चाहिये, उन में उत्पात आदि को देख कर अपने स्थान का और देशका उद्यमी पुरुष त्याग कर दे ॥१४॥ जो पदार्थ जिस स्वरूप मे सर्वदा रहता है, उस में कुछ फेरफार मालूम

प्रकृतेश्चान्यथा भावे उत्पातः स त्वनेकधा ।
स यत्र तत्र दुर्भिक्ष देशराज्यप्रजाक्षयः ॥ १५ ॥
देवानां वैकृतं भङ्गं चित्रेष्वायतनेषु च ।
ध्वजश्चोर्ध्वमुखो यत्र तत्र राष्ट्राद्युपप्लवः ॥ १६ ॥
राजादिः कृषिजीवीचेद विधर्मी पशुपालकः ।
देवताप्रतिमाभङ्गो लिङ्गिविप्रवधस्तथा ॥ १७ ॥
ऋतौ विपर्ययो यत्र तत्र देशभयं भवेत् ।
देवध्वसः प्रजापीडा दुर्भिक्ष विप्रघातकः ॥ १८ ॥
जलस्थलपुरारण्य-जीवान्यस्थानदर्शनम् ।
शिवाकाकादिकाक्रन्दः पुरमध्ये पुरच्छिदे ॥ १९ ॥
छत्रप्राकारसेनादि-दाहाद्यैर्नृपभीः पुनः ।
अस्त्राणां ज्वलनं कोशान्निर्गमः स्वयमाहवे ॥ २० ॥

हो तब उसको उत्पात कहते हैं, वह अनेक प्रकार के हैं। उत्पात जहाँ होता है वहाँ दुष्काल पडता है, तथा देश राज्य और प्रजा का नाश होता है ॥१५॥ जहाँ मकान तसवीरों मे और देव मन्दिरों मे देवों की मूर्त्तिओं के स्वरूप मे फेरफार या भग हो और ध्वजा ऊंची उडती देखपडे तो राष्ट्र (देश) आदि मे उपद्रव होते ह ॥१६॥ राजा आदि खेती करने लगें, विधर्मी लोग पशु पालने लगें, देव की प्रतिमा का भग हो, तब लिगी (सन्यासी) और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१७॥ जहा ऋतु मे फेरफार हो वहा देशमे भय, देवालय का नाश, प्रजा को दु ख, दुष्काल और ब्राह्मण का नाश होता है ॥१८॥ जिस नगर में जलचर जीव भूमि पर और भूचर जीव जल मे, नगरके जीव जगल मे, और जगल के जीव नगर मे स्वाभाविक गति से देखने मे आवे, गीदड (शियाल) और कौवे बहुत शब्द करते देखपडे तो उस नगर का नाश होता है ॥१९॥ छत्र किला और सेना

अन्यायकुसुमाचारो पाखण्डाधिकता जने ।
सर्वमाकस्मिकं जातं वैकृतं देशनाशनम् ॥ २१ ॥
प्रावृष्यैन्द्रं धनुर्दृष्टं नाह्नि सूर्यस्य सन्मुखम् ।
रात्रौ दुष्टं सदा शेष-काले वर्णव्यवस्थया ॥ २२ ॥
सित-रक्त-पीत-कृष्णं सुरेन्द्रस्य शरासनम् ।
भवेद् विप्रादिवर्णानां चतुर्णां नाशनं क्रमात् ॥ २३ ॥
अकाले पुष्पिता वृक्षाः फलिताश्चान्य भूभुजे ।
अल्पेऽल्पं महति प्राज्यं दुर्निमित्तैः फलं वदेत् ॥ २४ ॥
अश्वत्थोदुम्बरवट-प्लक्षाः पुनरकालतः ।
विप्रक्षत्रियविट्शूद्र वर्णानां क्रमतो भिये ॥ २५ ॥

आदि में अग्नि का उपद्रव हो तो राजा को भय उत्पन्न होता है, और शस्त्र ज्वलायमान देखपड़े या स्वतः म्यान में से बाहर निकल पड़े तो संग्राम होता है ॥२०॥ जब लोगों में अन्याय दुराचार और धूर्तता अधिक देखपड़े और अकस्मात् सब रीति रिवाज विपरीत होजाय, तब देश का नाश होता है ॥२१॥ वर्षाकाल में इन्द्रधनुष दिन मे सूर्य के सन्मुख देखपड़े तो दोष नहीं है, मगर वह रात्रि में देखपड़े तो अशुभ जानना, और बाकी के समय देखपड़े तो रंग के अनुसार शुभाशुभ जानना ॥२२॥ वह इन्द्र-धनुष सफेद, लाल, पीला और कृष्ण रंग के समान देखपड़े तब क्रम से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इन का विनाश होता है ॥२३॥ यदि अकाल में [बिना ऋतु] वृक्षों में फल फूल आजाय तो राज्य परिवर्तन होता है । दुष्ट निमित्त अल्प हो तो अल्प और अधिक हो तो अधिक फल कहना ॥२४॥ पीपल, गूलर, बड़ (वट), प्लक्ष ये चार वृक्ष अकाल में फल फूल दें तो क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, इन चार वर्णों को भय होता है ॥२५॥ वृक्ष के ऊपर वृक्ष, पत्र के ऊपर पत्र, फल के ऊपर फल और फूल के ऊपर फूल लगा हुआ देख

वृक्षे पत्रे फले पुष्पे वृक्षः पुष्पं फलं दलम् ।
जायते चेत् तदा लोके दुर्भिक्षादिमहाभयः ॥ २६ ॥
गोध्वनिर्निशि सर्वत्र कलिर्वा दर्दुरः शिखी ।
श्वेतकाकश्च गृध्रादिभ्रमणं देशनाशनम् ॥ २७ ॥
अपूज्यपूजा पूज्याना-मपूजा करिणीमदः ।
शृगालोऽह्नि लवन् रात्रौ तित्तिरश्च जगद्भिये ॥ २८ ॥
खरस्य रसतश्चापि समकालं यदा रसेत् ।
अन्यो वा नखरी जीवो दुर्भिक्षादिस्तदा भवेत् ॥ २९
मांसाशनं स्वजातेश्च विनौतून् भुजगांस्तिमीन् ।
काकादेरपि भक्षस्य गोपनं सस्यहानये ॥ ३० ॥
अन्यजातेरन्यजाते-र्भाषणं प्रसवः शिशोः ।
मैथुनं च खरीसूति-दर्शनं चापि भीप्रदम् ॥ ३१ ॥

पडे तो जगत में बडा भय देनेवाले दुष्काल आदि उपद्रव होते हैं ॥२६॥ सब जगह रात्रि में गौओं का शब्द सुनने में आवे, जहाँ तहा कलह हो, शिखा वाले मेंडक देखपडे, सफेद कौवा कुत्ता और गीध पक्षी इन का घूमना अधिक देखपडे तो देश का नाश होता है ॥२७॥ जहाँ पूजनीय पुरुषों की पूजा न हो, अपूजनीय पुरुषों की पूजा हो हथिणी के गंडस्थल-मेंसे मद झरने लगे, शियाल [गीदड] दिन में शब्द करे और रात्रि में तीतरपक्षी बोले तो जगत् में भय उत्पन्न होता है ॥२८॥ जिस समय गदहा [गधा] रेंकता हो उस समय उसके साथ कोई भी नखवाला जीव भौंकने लगे तो दुष्काल आदि उपद्रव होते है ॥२९॥ बिल्ली, सर्प और मच्छी ये तीन जीवों को छोडकर बाकी के जीव अपनी अपनी जाति के जीवों का मास भक्षण करें, और कौवा आदि अपना भक्ष्य [खोराग] छुपा दे तो धान्य का नाश होता है ॥३०॥ अन्य जाति के जीव अन्य जाति के जीवों के साथ भाषण या मैथुन करे, अन्यजाति

अन्तःपुरपुरानीक-कोशयानपुरोधसाम् ।
राजपुत्रप्रकृत्यादे-रपि रिष्टफलं भवेत् ॥ ३२ ॥
पक्षमासर्त्तुषण्मास-वर्षमध्ये न चेत् फलम् ।
रिष्ट तद् व्यर्थमेव स्यादुत्पन्ने शान्तिरिष्यते ॥ ३३ ॥
दौःस्थ्ये भाविनि देशस्य निमित्त शकुनाः सुराः ।
देव्यो ज्योतिषमन्त्रादिः सर्वं व्यभिचरेच्छुभम् ॥ ३४ ॥
प्रवासयन्ति प्रथमं स्वदेवान् परदेवताः ।
दर्शयन्ति निमित्तानि भङ्गे भाविनि नान्यथा ॥ ३५ ॥
एवमुत्पातसंयोगान् ज्ञात्वा शास्त्रान्तरादपि ।
वर्षे शुभाशुभ देशे ज्ञेय वृष्टिपरीक्षकैः ॥ ३६ ॥
सुगमाज्ञापकं सूत्रं स्थानाङ्गे वीरभाषितम ।
तदुत्पातपरिज्ञानात् सुज्ञानं सुधिया स्वयम् ॥ ३७ ॥

मे अन्यजाति के बच्चे का प्रसव हो और गदही बच्चा प्रसवती देखपड़े तो भय उत्पन्न होता है ॥३१॥ अन्तःपुर, नगर, सेना, भंडार, वाहन, [हाथी, घोडा, पालखी आदि] राजगुरु, राजा, राजपुत्र, और मन्त्री आदि को उत्पात का फल होता है ॥३२॥ एक पक्ष, एक मास, दो मास, छ मास या एक वर्ष इन में उत्पात का फल न मिले तो वह उत्पात व्यर्थ समझना । उत्पात होने पर शान्ति कराना अच्छा है ॥३३॥ जब देश की खराब दशा होने वाली होती है तब निमित्त, शकुन, देवता, देवी, ज्योतिष और मन्त्र आदि शुभ हो तो भी विपरीत फल देते हैं ॥३४॥ जब भविष्य में देश आदि का नाश होने वाला हो तब ही दूसरे देवता अपने देश के देवता को निकाल देते हैं और दुष्ट उत्पात दिखलाते हैं । जब नाश न होने वाला हो तब ऐसे उत्पात नहीं होते हैं ॥३५॥ इसी तरह दूसरे शास्त्रों से भी उत्पात योगों को जानकर देश मे वर्ष का शुभाशुभ ज्योतिषियों को जानना चाहिये ॥३६॥ स्थानाग सूत्र में सुगमाज्ञापक सूत्र

अनुत्पातं स्वभावेन देशे स्युर्जलयोनिकाः ।
बहवः पुद्गला जीवा महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३८ ॥
एवं च जाङ्गलेऽपि स्यु-र्भूयांसो जलयोनिकाः ।
शुभग्रहप्रसङ्गेन महावृष्टिविधायिनः ॥ ३९ ॥
अनूपेऽपि यदा क्रूर-ग्रहवेधो हि सम्भवेत् ।
तदा जीवाः पुद्गलाश्च स्वल्पाः स्युर्जलयोनिकाः ॥ ४० ॥
अनावृष्टिस्तदादेश्यः स्वभावस्य विपर्ययात् ।
ततो यथोदितं वीक्ष्य सर्वदेशेषु वार्दलम् ॥ ४१ ॥

यदाह मेघमालाकार —

मेषसङ्क्रान्तिकालात्तु नवस्वपि दिनेष्वथ ।
यत्राभ्र वातो विद्युद् वाप्य र्द्रादौ तत्र वर्षति ॥ ४२ ॥
यद्वाऽत्र नवयामेषु वाताभ्रादिविनिर्णयः ।
यस्यां दिशि यत्र यामे दिग्धिष्ण्ये तत्र वर्षति ॥ ४३ ॥

को श्री वीजिन ने कहा है कि उन उत्पात को जानने से बुद्धिमान् स्वय अच्छे ज्ञान को प्राप्त कर सकते है ॥३७॥

जब देश में बहुत से जलयोनि के पौद्गलिक जीव स्वभाव से ही उत्पन्न होते हैं, तब बडी वर्षा होती है, उसको उत्पात नहीं कहना चाहिये ॥३८॥ इसी तरह जाङ्गल देश में भी बहुत से जलयोनि के जीव है वे शुभग्रह के प्रसग से बडी वर्षा करने वाले है। ॥३९॥ जलमय प्रदेश में भी जब क्रूरग्रह का वेध हो तब जलयोनि के जीव और पुद्गल थोडे होते हैं ॥४०॥ स्वभाव में जब कुछ फेरफार देख पडे तब अनावृष्टि कहना, इसलिये सब देश में बद्दल को देखकर भी यथायोग्य कहना ॥४१॥ मेषसक्रांति के समय से नव दिनमें जब बादल, वायु और विजली हो तब क्रमसे आर्द्रादि नव नक्षत्रों में वर्षा होती है ॥४२॥ वैसे नव प्रहर से भी वायु-बद्दल आदि का निर्णय करना,

किंवा नवसु यामेषु वाताभ्रादिशुभं भवेत् ।
यस्यां दिशि च सम्पूर्णं तद्देशे विपुलं जलम् ॥ ४४ ॥

लौकिकमपि—

आर्द्रा थकां नक्षत्र नव, जो वरसे मेह अनंत ।
भड्डली सुणो भरडो भणे, रहिजे होइ निचिंत ॥ ४५ ॥
जिण दिसि आभो अधिक हुई, सा दिसि साची जाण ।
सा धण धान्न रसाउली, भड्डली भली वखाण ॥ ४६ ॥

अथ पद्मिनीचक्र कूर्मचक्र वा—

अथ तस्मात् प्रवक्ष्यामि ग्रहयोः क्रूरसौम्ययोः ।
वेधज्ञानाय देशानां चक्रं पद्माह्वयं यथा ॥ ४७ ॥
अष्टपत्रं लिखेच्चक्रं पद्माकारं मनोहरम् ।
कर्णिका नवमीमध्ये तत्र देशांश्च विन्यसेत् ॥ ४८ ॥
कृत्तिकादीनि भानीह त्रीणि त्रीणि यथाक्रमम् ।
संस्थाप्य वीक्ष्यते चक्रं तत्कूर्माभिधानात्मकम् ॥ ४९ ॥
यत्र ऋक्षे स्थितः सौरि-स्तद्दिशो देशमण्डले ।
दुर्भिक्षं यदि वा युद्धं व्याधिदुःखं प्रजायते ॥ ५० ॥

जिस दिशा में और जिस प्रहर मे हो, उस दिशा और उसी ही नक्षत्र में वर्षा होती है ॥४३॥ यदि नव प्रहर मे वायु-बद्दल आदि होतो अच्छा है जिस दिशा में सपूर्ण हो उस देश में बहुत वर्षा होती है ॥४४॥ लोक भाषा में विशेष कहा है कि आर्द्रा से नव नक्षत्रों में वर्षा होतो निश्चित रहना ऐसा ब्राह्मण कहता है और भडली सुनती है ॥४५॥ जिस दिशा मे बादल अधिक हो वह दिशा सच्ची जानना, वह धन धान्य से पूर्ण करें।४६।

देशों में शुभाशुभ ग्रहों का वेध जानने के लिये पद्म नामके चक्र को मैं कहता हूं, जैसे—मनोहर आठ पाखडी वाला कमल का आकार सदृश चक्र बनाकर इसमें देशों के नाम और कृत्तिकादि तीन२ नक्षत्र अनुक्रम

पद्मिनीचक्रस्थापना यथा—

अथ शनिदृष्टिचक्रम्—

मेषादित्रितये प्राच्यामपाच्यां कर्कटत्रये ।
तुलात्रये पश्चिमायामुदीच्यां मकरत्रये ॥ ५१ ॥
शनैश्चरः क्रमात् पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत् ।
दुर्भिक्षदेशभङ्गाद्यै-विग्रहो राजविड्वरैः ॥ ५२ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रे दिग्विचार—

याम्यां भगाग्निदैवत्ये पुष्यं पैत्र्यं द्विदैवतम् ।
पूर्वभाद्रपदं याम्यं मासानष्टौ प्रपीडयेत् ॥५३॥
ब्राह्मैन्द्रराधाश्रवणो-त्तराषाढाश्च वासवम् ।
पूर्वस्यां सप्तदिवसान् यावच्छुभकरं भवेत् ॥५४॥
मृगादित्याश्विनीहस्तास्वाष्ट्रमुत्तरफाल्गुनी ।
उत्तरस्यां च पीडाकृद् यावन्मासद्वयं भवेत् ॥५५॥

से लिख कर चक्र को देखना चाहिये । इस पद्म नाम के चक्र को कूर्मचक्र भी कहते हैं । जिस नक्षत्र पर शनिश्चर रहा हो उसी दिशा के देशमडल मे दुष्काल, युद्ध, रोग, और दु ख आदि उपद्रव होते है ॥४७ से ५०॥

मेष वृष और मिथुन राशिका शनिश्चर पूर्वदिशा को, कर्क सिंह और कन्या राशि का दक्षिणदिशा को, तुला वृश्चिक और धन राशि का पश्चिमदिशा को, मकर कुम्भ और मीन राशिका उत्तरदिशा को देखता है । तो उन उन दिशा के देशों मे दुष्काल देशभग विग्रह और परचक्र आदि उपद्रवों से दु खी करता है ॥५१॥५२॥

दक्षिणदिशा में पूर्वाफाल्गुनी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा और भरणी ये नक्षत्र आठ मास दु ख कारक है । पूर्वदिशा में रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, उत्तराषाढा और धनिष्टा ये सात दिन शुभ कारक हैं । उत्तरदिशा में मृगशीर्ष, पुनर्वसु,

आर्द्राश्लेषामूलपौष्णा-वारुणोत्तरभाद्रपात् ।
मासं यावत् पश्चिमायां शुभाय कथितं बुधैः ॥५६॥
चक्रे श्रीसर्वतोभद्रे शुभवेधे शुभं मतम् ।
क्रूरवेधे भवेत् पीडा तत्तद्देशेषु निश्चयात् ॥५७॥

अथ कर्पूरचक्रेण देशान्तरेषु वर्षे शुभाशुभज्ञान यथा तत्र प्रथम चक्रन्यासप्रकार —

गाथा–पणमिय पयारविंदं, तिलुक्कनाहस्स जगपरिवुढस्स ।
वुच्छामि लोगविजयं, अंतं जंतूण सिद्धिकए ॥५८॥
सिरिरिसहेसरसामिय, पारणप्पगारम्भ (?) गणिय धुवं ।
दस उयरेहिं ठवियं, जं तं देवाण सारमिणं ॥५९॥
नवकोएण सुद्धं, इगसय पणयाल १४५ अंक गणियपयं ।
इक्कि होई वुड्ढी, तिपन्नसयं विघाणाहि ॥६०॥

अश्विनी हस्त चित्रा और उत्तराफाल्गुनी ये दो मास दुःख कारक हैं। पश्चिमदिशा में आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, रेवती, शतभिषा और उत्तराभाद्रपदा ये एक मास शुभकारक हैं। इस सर्वतोभद्रचक्र में जिस देश में शुभग्रह का वेध हो तो शुभ और क्रूरग्रह का वेध होतो दुःख निश्चय कर के होता है ॥५३ से ५७॥

त्रिलोक के नाथ और जगत् के स्वामी के चरणकमल को नमस्कार करके प्राणीमात्र की सिद्धि के लिये लोकविजय को कहता हूं ॥ ५८ ॥ श्री ऋषभदेवस्वामी का पारणा के दिन याने अक्षय तृतीया को बादल का निश्चय करें। [जो देवों के साररूप दश अक हैं वे बिच में रखें] ॥५९॥ नवकोण वाला चक्र बनाकर बीच में १४५ अक लिखें, पीछे उसमें एक एक अक १५३ तक बढाकर उत्तर ईशान पूर्व इत्यादि क्रम से आठों ही दिशा में लिखें ॥६०॥ देश के ध्रुवाक, दिशा के ध्रुवाक और अश्विन्यादि ने जिन नक्षत्र पर शनि हो इतना अक, ये तीनो मिला

निहिभते जं सेसं, तमकसारेण गणिय जो देसी ।
संवच्छररायाओ, आरम्भे दसाक्कमे भणिया ॥६१॥
जो जंको जं देसे, बोधव्वो देसगामनगरस्स ।
आइचाइगहाणं, फल च पभणंति गीयत्था ॥६२॥
जं जम्मि देसनयरे, गामे ठाणे वि नत्थि मूल धुवो ।
त नामेण य रिक्खं, रुइंकं करिय तम्मिस्सं ॥६३॥
निहिभत्ते जं सेसं, धुवगणिय देसनयरगामाणं ।
मूलदसाक्कमगणियं, एवुत्तकम्मं वियाणाहि ॥६४॥
मेहवुट्ठी अणवुट्ठी, सपरचक्कं च रोगभय ।
अन्नस्सुपत्ती नासो, रायाकट्ठं चमुद्दवं च ॥६५॥
संवच्छररायाओ, गणियव्वं देसी [स ?] कमेण फलं ।
आइचाइग्गहाणं, सुहासुहं जाणए कुसले ॥६६॥

कर नवका भाग देना, जो शेष बचे वह वर्तमान संवत्सर के राजा से वि-शोत्तरीदशा क्रम से गिनकर फल कहना ॥६१॥ जो जो अंक जिस जिस देश में हैं वे देश गाव नगर के अंक जानना। इनसे विद्वानों ने रवि आदि ग्रहों का फल कहा है ॥६२॥ जो जो देश नगर गाव या स्थान का मूल ध्रुवांक न हो तो उनके दिशा के १४५ आदि मूल अंक, वर्ष के राजा का विशोत्तरीदशा का मूलपर्याक, शनि जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से गाव के नक्षत्र तक के अंक और दिशा के अंक ये सब इकट्ठे कर ग्यारह से गुणा करना, पीछे उसमें नवका भाग देना, शेष रहे उस ग्रह के अनुसार देश नगर गाव का मूल दशाक्रम से फल कहना ॥६३, ६४॥ मेघवृष्टि, अनावृष्टि, स्वचक्र और परचक्र का भय, रोगभय, अनाज की उत्पत्ति तथा विनाश, राजकष्ट, सेना में उपद्रव ये सब संवत्सर के राजा से देशक्रम से सूर्य आदि ग्रहों का शुभाशुभ फल को कुशल पुरुष जानें ॥ ६५, ६६ ॥

आइच्चे आरोगी लोयाणं हवइ समप्पत्ती ।
रायासुतेजसुओ अ सवित्तीय किंचिवि भयं ॥६७॥
चदेहि नरवराणं आरुग्गा सुह च धणावुड्ढी ।
थोवजला अन्ननिप्पत्ती अमियरसो होइ पुढवीए ॥६८॥
दुब्भिक्खं रायदुक्खं हयहाणापलीवणा महाघोरा ।
जुज्झंति रायपुरिसा भूमे अरिभयं गणियं ॥६९॥
रह्न रिद्धिविणासो ठाणब्भसं च रायपज्जाण ।
महदुक्ख पुरेहि भगो नयरदेसस्स संहारो ॥७०॥
बहुदुद्धा गोमहिसी सस्सनिप्पत्ती च बहुमेहा ।
रायसुइ नत्थि भय उत्तमवणियासु जीवेण ॥७१॥
मंदे नरवरमरण उवद्दवं सयललोयमज्झम्मि ।
दिय दूसगाय लोया घरि घरि भमंति कुत्तबहुआ ॥७२॥
बालत्थीसिसुमरण धणनासं च रोगसंभवो ।
ठाणे ठाणे रायाणं संहार च बुहे नर ॥७३॥

सूर्यफल—लोक सुखी, धान्य की समान प्राप्ति, राजाओं में पराक्रमता और ब्राह्मणों को कुछ भय हो ॥ ६७ ॥ चन्द्रफल—राजा प्रजा सुखी और आरोग्य हो, धन की वृद्धि हो, जल थोडा, अनाज की प्राप्ति और पृथ्वी अमृत रसवाली हो ॥६८॥ मंगलफल—दुर्भिक्ष, राजा को कष्ट, हाथी घोड़ा का विनाश कारक बड़ा भयंकर राजपुरुषों का युद्ध हो, और शत्रु का भय हो ॥६९॥ राहुफल—ऋद्धि का विनाश, राजा प्रजा के स्थान का विनाश और उनको महादुःख, पुर का भंग और देश नगर का विनाश हो ॥७०॥ गुरुफल—गौ भैंस बहुत दूध दें, धान्य की उत्पत्ति हो, वर्षा बहुत हो, राजाओं को सुख हो और भय न हो ॥७१॥ शनिफल—राजा का मरण, सकल लोक में उपद्रव, लोगों में दूषण तथा घर घर कुत्ते बहुत भटकते फिरें ॥७२॥ बुधफल—बालक स्त्री का मरण, धन का

रायाण ठाणभंसो पयासुहं च बहुघणावुट्ठी ।
संवच्छरपत्थाओ वासापुत्रो हवइ देसो ॥७४॥
सुक्के मिच्छाण जसं बहुवस्सा मेहसंकलिय ।
उत्तम जाई पीडा घणधन्न समाउला पुहवी ॥७५॥
पुनः—पुव्वाइ दिसा चउरो जाया विचरंति चउसु विदिसासु ।
अगारयनमसणिया सा परचक्क भयं घोरा ॥७६॥
क्रूरा कुणंति दुक्खं सेसा सव्वे सुहंकरा नेया ।
समुह दाहिणवामा दिट्ठीए सुहयरा हुंति ॥७७॥
सूरो वि हरइ तेयं संमुहा हवइ रायलोयाणं ।
सोमो करइ साम भोमो अग्गी अइसारो ॥७८॥
बुद्धिकरो वुट्ठिकरो बहुअ लोयाण घहुय केकहरो ।
कोसं कोट्ठागारं पूरेई सुरगुरू उड्ढो ॥७९॥

नाश, रोग का सभव और स्थान स्थान पर राजाओं का सताप हो ॥७३॥ केतुफल—राजाओं का स्थान भ्रष्ट हो, प्रजा सुखी, बहुत मेघवर्षा, और देश सवत्सर तक वर्षा से पूर्ण हो ॥७४॥ शुक्रफल—म्लेच्छों का यश हो, मेघों से आच्छादित बहुत वर्षा हो, उत्तम जन को पीड़ा और धन धान्य से समाकुल (पूर्ण) पृथ्वी हो ॥ ७५॥ फिर भी—पूर्वादि चार दिशा और चार विदिशा मे जो ग्रह विचरते है, उनमे मगल राहु और शनि ये क्रूरग्रह परचक्र का भयकारक हैं ॥७६॥ क्रूरग्रह दुःख कारक हैं तथा बाकी के सब ग्रह सुखकारक हैं, और ये समुख दक्षिण और बाँयी दृष्टि से सुखदायक हैं ॥७७॥ सूर्य समुख हो तो राजलोगों के तेज का नाश करता है । चद्रमा—शातिदायक है । मगल—अग्नि और रोग करता है ॥७८॥ बुध—बहुत वर्षाकारक, तथा केकयदेश के लोगों का बहुत विनाश कारक है । गुरु—खजाना और कोठार को समस्त प्रकार से पूर्ण करें ॥७९॥ शुक्र—राजा प्रजा की वृद्धि याने उन्नतिकारक और

सुक्को रायपयाण वुड्ढिकरो जणियजणमाणदो ।
मंदो नरवइकट्ठ दुब्भिक्खभयकरो घोरो ॥ ८० ॥
राहू खप्पर रज्ज धूव विणासेइ उत्तमवहूण ।
दुप्पयपसुसहारो अइअरित्तनासकरो केऊ ॥ ८१ ॥
अक्कजराहू मिलिया कत्तरिजोगेण पभए ससिट्ठिया ।
ज जं नक्खत्त वेधइ तत्थेव करोय (करेइ) महार ॥ ८२ ॥
अंगारो अग्गिकरो अन्नविसलाखे जतुपिट्ठिचरो ।
तत्थ विदिसाविभागो दुक्खं वणियाण निवमरण ॥ ८३ ॥
तिहिआविमी सियपक्खे भद्दवयपोसमाहमासाणं ।
निवमरणं दुब्भिक्खं विहिकुलहाण च मासेसु ॥ ८४ ॥
मासक्खओ पुन्निमहीणा तुल्लिआ अहिआ अहियत्तरी ।
दुब्भिक्ख होइ महग्घ समग्घं होइ सुब्भिक्ख ॥ ८५ ॥

मनुष्यों को आनन्ददायक है। शनि—राजा को कष्ट और भयकर दुर्भिक्षकारक है ॥ ८० ॥ राहु- खर्पर राज्य का और उत्तम वधूओं का विनाशकारक है। केतु—मनुष्य और पशुओं का विनाशकारक है ॥ ८१ ॥ कर्त्तरीयोग- से शनि राहु मिल जाय और साथ चन्द्रमा होकर जो जो नक्षत्र को वेधे उनका नाश करे ॥ ८२ ॥ मगल अग्निकारक है रवि अन्ननाशक है, इसी तरह विदिशा विभाग में व्यापारी को दु ख और राजा का मरण हो ॥ ८३ ॥ भाद्रपद पौष और माघ महीने के शुक्लपक्ष की तिथि का क्षय हो तो राजा का मरण, दुर्भिक्ष विधिकुल (ब्रह्मकुल) की हानी हो ॥८४ ॥ क्षयमास हो या पूर्णिमा का क्षय हो तो दुर्भिक्ष हो, पूर्णिमा समान हो तो समान भाव और अधिक या विशेष अधिक हो तो सुभिक्ष होता है ॥ ८५ ॥

है

पुनः प्रकारान्तरेण कर्पूरचक्रस्य द्वितीयपाठः—

दिशश्चतस्रो विदिशश्चक्रे न्यस्य तदन्तरे ।
पुरी उज्जयिनी स्थाप्या मालवस्था पुरातनी ॥ ८६ ॥
भूमध्यरेखाविश्रान्ता लङ्कातो मेरुगामिनी ।
तेन श्रीऋषभेणेयं पुरीमध्ये निवेशिता ॥ ८७ ॥
अन्येद्युरस्या भूपेन विक्रमार्केण चिन्तितम् ।
ज्ञायते सुखदुःखानि कथञ्चित् पार्श्ववासिनाम् ॥ ८८ ॥
पर न दूरदेशानां सुखदुःखादि वेत्स्यते ।
अत्रान्तरे मनोऽभिज्ञः कर्पूरः प्राह भूपतिम् ॥ ८९ ॥
कर्पूरचक्रं मम वर्त्तते पुरा, तस्य प्रमाणेन समस्तभूतले ।
ज्ञेयानि वाताम्बुदराजविग्रह-प्रजासुखावृष्टिभयाभयानि च॥९०॥
विक्रम उवाच–किं तच्चक्र कृत केन कथं तस्माद्विवेत्स्यते ।
सुखदुःखे अवृष्टिर्वा वृष्टिर्लोके शुभाशुभम् ॥ ९१ ॥

चक्र में चार दिशा और चार विदिशा रखकर बीच में मालवा देश में आई हुई प्राचीन उज्जयिनी नगरी को स्थापन करना ॥८६॥ वह नगरी लंकासे मेरु तक गई हुई भूमध्यरेखा के प्रदेश में है, तथा श्रीऋषभदेव का निवास (मंदिर) से युक्त है ॥ ८७ ॥ एक दिन विक्रमादित्य राजा ने विचार किया कि समीप रहे हुए देशों का शुभाशुभ सुख दुःख कुछ जान सकते हैं ॥ ८८ ॥ परंतु दूर रहे हुए देशों का सुख दुःख नहीं जान सकते, इस अवसर पर मन के अभिप्राय को जाननेवाला कर्पूर नाम का दैवज्ञ राजा को कहने लगा ॥ ८९ ॥ कि मेरे पास कर्पूर चक्र है, उसके प्रमाण से समस्त भूतल पर वायु, वर्षा, राजविग्रह, प्रजाओं का सुख दुःख, अवृष्टि, भय और निर्भय इत्यादि सब जान सकते हैं ॥ ९० ॥ राजा बोला–वह चक्र क्या है ? किसने बनाया ? और उससे जगत में सुख दुःख, अवृष्टि, वृष्टि, और सब शुभाशुभ कैसे जाने जाते हैं ? ॥ ९१ ॥

कर्पूर उवाच–एतच्चक्र नृपश्रेष्ठ ! गर्गाचार्येण भाषितम् ।
सर्वज्ञशासनादेशाद् ज्ञानं यन्त्रे प्रकाशितम् ॥ ९२ ॥
पुरग्रामाकरस्था वा नदीपर्वतवासिनः ।
तेषां शुभाशुभं सर्वं ग्रहयोगेन बुध्यते ॥ ९३ ॥
अवन्त्यादौ मण्डलान्ते योजनानां शतद्वये ।
लोके दुःख सुख सर्वं ज्ञायते चक्रचिन्तनात् ॥ ९४ ॥
अवन्तीतः समारभ्य सृष्टिमार्गं निरूपयेत् ।
अङ्कानां च लिपिर्लेख्या नवभिर्भाज्यतेऽथ सा ॥ ९५ ॥
शेषाङ्के वर्षराजाङ्क योजयित्वा दशाक्रमात् ।
शुभाशुभ च विज्ञेयं ग्रहवासेन मण्डले ॥ ९६ ॥
कश्चित्तु तद्दिशस्त्वङ्के योज्यते ग्रामतो ध्रुवः ।
समील्य शनिनक्षत्र नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ९७ ॥
शेषाङ्कसंख्यया वर्ष-राजतो गणने कृते ।
विंशोत्तरीदशारीत्या ग्रहाणां फलमूचिरे ॥ ९८ ॥

कर्पूर बोला —हे नृपश्रेष्ठ ! यह चक्र गर्गाचार्य ने कहा, इसने सर्वज्ञ प्रणीत आगमों का ज्ञान इस यन्त्र द्वारा प्रकाशित किया ॥ ९२ ॥ पुर गाव किला नदी पर्वत आदि स्थानों में रहने वालों का शुभाशुभ सब ग्रह योग से इस चक्र द्वारा जाना जाता है ॥ ९३ ॥ इस चक्र को जानने से उज्जयिनी से चारों तरफ के देशों में दो सौ योजन तक सुख दुःख सब जान सकते है ॥ ९४ ॥ उज्जयिनी से प्रारम्भ कर सृष्टिमार्ग द्वारा निरूपण किए हुए १४५ आदि अंकों की लिपि लिखना, उसमें नव का भाग देना ॥ ९५ ॥ शेष बचे उसमें वर्ष के राजा का अंक जोड़ कर विंशोत्तरी दशाक्रमसे ग्रहों का दशों में शुभाशुभ फल जानना ॥ ९६ ॥ कोई इस तरह भी कहते हैं — उस दिशा के अंक में गाँव का ध्रुवांक मिलाकर, फिर उसमें शनि नक्षत्र का मिला दें और पीछे उसमें नव का भाग दें ॥ ९७ ॥

यत्र ग्रामे ध्रुवो न स्यात् संदिग्धो वा लिपेर्वशात् ।
तस्य ग्रामस्य नक्षत्रे दिशोङ्कान् मीलयेद् बुधः ॥९९॥
ततो रुद्राङ्कयोगेन क्रियतेऽथ नवो ध्रुवः ।
प्राग्वत् सर्वं ततःकृत्वा ग्रहाणां फलमिष्यते ॥१००॥
रवौ गावो बहुक्षीरा बहुवर्षाः प्रजासुखम् ।
निधानं भूपतेः सौख्य ब्राह्मणाना महाबलम् ॥१०१॥
सोमवासे प्रजासौख्य बहुपुण्य धनागमः ।
राजाऽऽरोग्य तृणोत्पत्तिः स्वल्पमेघाः सुखी जनः ॥१०२॥
भौमवासे च दुर्भिक्ष राज्ञः कष्ट महद्भयम् ।
वह्निभीतिः प्रजापीडा सस्यनाशो न संशयः ॥१०३॥
बुधवासेऽनलव्याप्तिर्बालरोगस्य सम्भवः ।
राज्ञो दुःख पुरे भङ्ग उपद्रवपरम्परा ॥१०४॥

जीववासे बहुक्षीरा धेनवो मेघसम्भवः ।
प्रजानां भूपतेः सौख्यं सस्योत्पत्तिस्तु भूयसी ॥ १०५ ॥
शुक्रवासे सुखी राजा धर्मी लोको धनागमः ।
प्रजारोग्यं महालाभः पुत्रोत्पत्तिर्जयो नृणाम् ॥ १०६ ॥
सौरिवासे नृपध्वंस उपलिङ्गाज्जनक्षयः ।
दुर्भिक्षं सभया विप्रा धर्महानिः कुतः सुखम् ॥ १०७ ॥
राहुवासे प्रजापीडा भयपयुद्धं महाभयम् ।
वह्निचौरभयं दुःखं राज्ञां मृत्युः प्रजायते ॥ १०८ ॥
केतुवासे सर्वनाशः स्थानभ्रष्टा जनाः किल ।
गृहे गृहे महद्वैरं देशभङ्गः क्रमाद् भवेत् ॥ १०९ ॥
चतुर्दिक्षु स्थिताः खेटास्तत्र ज्ञेयं शुभाशुभम् ।
पूर्वादिक्रमतो ज्ञेया वर्षराजादयः किल ॥ ११० ॥
सौरिर्भौमस्तथा राहुर्बुधः केतुश्च यद्दिशि ।
तत्र भङ्गो भवेद्धानिः सौम्येषु सुखसम्पदः ॥ १११ ॥

सम्मुखे दक्षिणे पृष्ठे वामपार्श्वे यदा ग्रहाः ।
तदा तदा पृथग् भावो ज्ञातव्यश्च मनीषिभिः ॥११२॥
सम्मुखे च रवौ हानिः सोमे राज्ञां सुखं भवेत् ।
भौमे भूपस्य लोकानां वह्निजातं भयं भवेत् ॥११३॥
बुधे धर्मरतो राजा प्रजादुःखं महाभयम् ।
गुरुणा वर्द्धते कोशः प्रजाः सर्वान्नपूरिताः ॥११४॥
शुक्रे भूपप्रजावृद्धिर्द्विजलोकः सुखी भवेत् ।
शनौ चतुष्पदे पीडा प्रजा दुर्भिक्षपीडिता ॥११५॥
राहौ च म्रियते राजा प्रजा च क्रमपीडिता ।
केतौ शरीरदुःखं च प्रजा देशात् प्रवासिता ॥११६॥ इति ॥

अथ भृगुसुतोदयतो देशेषु फलानि यथा

भृगुसुतः कुरुतेऽभ्युदयं यदा, सुरगणर्क्षगतः खलु सिन्धुषु ।
सकलगुर्जरकर्बटमण्डले, भवति सस्यविनाशमहारुजे ॥११७॥

और चिह्नों को जानना चाहिये ॥११२॥ सम्मुख रवि हो तो हानि, सोम हो तो राजा को सुख, मंगल हो तो राजा तथा प्रजा को अग्नि का भय हो ॥११३॥ बुध हो तो राजा धर्म में तत्पर हो और प्रजा को दुःख, तथा महान् भय हो। गुरु हो तो खजाना की वृद्धि हो और प्रजा समस्त अन्न से पूर्ण हो ॥११४॥ शुक्र हो तो राजा और प्रजा की वृद्धि, तथा ब्राह्मण लोक सुखी हो, शनि हो तो पशुओं को पीडा और प्रजा दुर्भिक्ष से दुःखी हो ॥११५॥ राहु हो तो राजा का मरण, प्रजा दुःखी, केतु हो तो शरीर को दुःख और प्रजा अपने देश में प्रवास कर यानि परदेश जाय।११६।

यदि शुक्र का उदय देवगणों के नक्षत्र में हो तो सिन्धु गुजरात कर्बट देशों में खेती का नाश और महारोग हो ॥११७॥ जालन्धर में दुर्भिक्ष

१ सुरगण – अश्विनी, मृगशिर, रेवति, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाति ।

जालन्धरेऽपि दुर्भिक्ष विग्रहो रणसम्भवः ।
मनुष्यगणभे शुक्रो-दये सौराष्ट्रविग्रहः ॥११८॥
कलिङ्गदेशे स्त्रीराज्ये मध्यम वर्षमुच्यते ।
मरुस्थले च दुर्भिक्षं घृतधान्यमहर्घता ॥११९॥
स्वर्ण रूप्य महर्घं स्यात् पीडा गोमहिषीव्रजे ।
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्व प्रजायते ॥१२०॥
नक्षत्रे राक्षसगणे शुक्रस्याभ्युदये सति ।
गुर्जरे पुद्गलभय दुर्भिक्ष द्रव्यहीनता ॥१२१
पञ्चवर्णं पट्टसूत्र मूल्येनापि च दुर्लभम् ।
श्रीफल दुर्लभ मृत्युः श्रेष्ठपुसश्च कस्यचित् ॥१२२॥
उत्पातश्चीनदेशे स्यात सिन्धुदेशेऽतिविग्रहः ।
दिनत्रयमवाणिज्य विग्रहो मालवादिके ॥१२३॥

विग्रह और लडाई हो । यदि शुक्र उदय [1]मानवगण के नक्षत्र में हो तो सौराष्ट्र देशमें विग्रह हो ॥११८॥ कलिंग देश और स्त्रीराज्यमें यह वर्ष मध्यम रहे, मारवाड देश में दुर्भिक्ष, घी और धान्य महँगे हो ॥११९॥ सोना चादी की तेजी हो, गौ भेंस की जाती में पीड़ा हो, कपास रुई सूत आदि महँगे हों ॥१२०॥ यदि शुक्र का उदय [2]राक्षसगण के नक्षत्र में हो तो गुर्जर (गुजरात) देश में पुद्गल भय, दुर्भिक्ष और द्रव्य-हीन हों ॥१२१॥ पचवर्ण के पट्टसूत्र (रेशमी वस्त्र) मोल से भी मिले नहीं अर्थात् बहुत तेज हों, श्रीफल का अभाव हो और कोई श्रेष्ठ-उत्तम पुरुष की मृत्यु हो ॥१२२॥ चीन देश मे उत्पात, सिन्धु देश में विग्रह, तीन दिन व्यापार बंद रहे और मालवा आदि देशमे विग्रह हो ॥१२३॥

---

[1] मानवगण नक्षत्र—तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी आर्द्रा और भरणी ।

[2] राक्षसगण नक्षत्र—कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा धनिष्ठा और मूल ।

शुक्रास्तना देशेषु उत्पात यथा

सुरगणे भृगुजास्तगतिर्यदा, हवसगुर्जरमालवमण्डले ।
भवति देशभय नृपविग्रहः,प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्घता॥१२४॥
पश्चात् समर्घता किञ्चिन्मासमेकं प्रवर्तते ।
खुरसाने महोत्पातो द्रव्यनाशोऽतिदण्डतः ॥ १२५ ॥
प्रबला जलवृष्टिश्च मासषट्कात् परं भवेत् ।
हेमरूप्यमहार्घत्वं निद्रालुः सकलो जनः ॥ १२६ ॥
मरुस्थलेषु दुर्भिक्षं दिल्ल्या राज विवर्त्तनम् ।
गोपालगिरिदेशो स्यात्सगर्को नरकोपमः ॥ १२७ ॥
खर्परे हरमजेऽपि व्यापारः क्वाऽपि नो भवेत् ।
भृगुकच्छेऽथ चम्पाया धूलिपातश्च शून्यता ॥ १२८ ॥
रोगबाहुल्यमथवा परचक्रपराभवः ।
व्यापारे बहुला लक्ष्मीः सुभिक्षमुत्तरापथे ॥ १३० ॥

मनुष्यगणशुक्रास्ते वह्निभी रोमपत्तने।
देशत्रासः कोङ्कणे च लाटे सिन्धौ तु शून्यता ॥१३०॥
दुर्भिक्षमुत्तरे देशे विग्रहो द्रविडाश्रये।
गुर्जरे च सुभिक्षं स्याद्वनस्पतिफलोदयः ॥१३१॥
मासमेक महर्घं स्यात् ततो धान्ये समर्घता।
घृततैलान्ननिष्पत्तिः पट्टसूत्राणि सर्वतः ॥१३२॥
राजानः सुखिनः सर्वाः प्रजा रोगविवर्जिताः।
सर्वत्र वसतिर्देशे दुर्गेष्वानन्दनन्दिताः ॥१३३॥
शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दूदेशेषु विग्रहः।
खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ॥१३४॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यम भवेत्।
असिया उडभङ्गः स्याद् गुर्जरे मुद्गलाद् भयम् ॥१३५॥
यानपात्रविनाशोऽब्धौ फिरङ्गाणां च विग्रहः।

यदि मनुष्यगण के नक्षत्र मे शुक्रका अस्त होतो रोमदेश में अग्नि का भय हो, कोंकण देशमे भय, तथा लाट और सिंधु देशमें शून्यता हो ॥ १३० ॥ उत्तर देशमे दुर्भिक्ष, द्रविड देशमें विग्रह, गुर्जरदेशमें सुभिक्ष हो, और वनस्पतियों मे फलफूल आवे ॥ १३१ ॥ एक महीना अनाज तेज रहै और पीछे समभाव रहे, घी, तेल, अन्न और पट्टसूत्र इन की विशेष उत्पत्ति हो ॥ १३२ ॥ सब राजा सुखी रहैं, प्रजा रोग रहित हो वसति (ग्राम) देश और किला आदि सब जगह आनन्द रहे ॥ १३३ ॥

यदि शुक्र का अस्त राक्षसगण नक्षत्र में होतो हिन्दू देशमें विग्रह हो, खर्पर देशमें राजयुद्ध हो और मिश्रदेशमे अन्न की तंगी रहे ॥ १३४ ॥ मरुस्थल और सिंधुदेशमें सामान्य दुर्भिक्ष हो, असिया और उडदेश का भग हो गुर्जरदेशमे जनु आदि के उपद्रव का भय हो ॥ १३५ ॥ समुद्र में जहाजों का विनाश और फिरंगियों का विग्रह हो, विराट, कुरु, पाचाल

शुक्रास्तता देशेषु वर्त्तज्ञान यथा

सुरगणे भृगुजास्तगतिर्यदा, हबसगुर्जरमालवमण्डले ।
भवति देशभय नृपविग्रहः,प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्घता॥१२४॥
पश्चात् समर्घता किञ्चिन्मासमेक प्रवर्तते ।
खुरसाने महोत्पाता द्रव्यनाशोऽतिदण्डतः ॥ १२५ ॥
प्रबला जलवृष्टिश्च मासषट्कात् पर भवेत ।
हेमरूप्यमहार्घत्व निद्रालुः सकलो जनः ॥ १२६ ॥
मरुस्थलेषु दुर्भिक्ष दिल्ल्या राज विवर्त्तनम् ।
गोपालगिरिदेशो स्यान्मरको नरकोपमः ॥ १२७ ॥
खर्परे हरमजेऽपि व्यापारः कोऽपि नो भवेत् ।
भृगुकच्छेऽथ चम्पायां धूलिपातश्च शून्यता ॥ १२८ ॥
रोगबाहुल्यमथवा परचक्रपराभवः ।
व्यापारे बहुला लक्ष्मीः सुभिक्षमुत्तरापथे ॥ १२९ ॥

यदि देवगण के नक्षत्र में शुक्र का अस्त हो तो हबशी गुर्जर मालवा इन देशों में भय और राजविग्रह हों प्रथम से धान्य महँगा हो ॥१२४॥ पीछे एक मास तक सस्ता बिके । खुरासान में उत्पात, द्रव्य का नाश और दंड बहुत हों ॥ १२५ ॥ छ मास पीछे बहुत जलवर्षा हो , सोना चांदी तेज हों और मनुष्यों में आलस्य अधिक हो ॥ १२६ ॥ मरुस्थल (मारवाड) देश में दुर्भिक्ष, दिल्ली मे राज्यपरिवर्तन, गोपालगिरिदेश में महामारी(प्लेग)हो ॥१२७॥ खर्पर,हरमज देश मे कोई व्यापार भी नहीं हो, भृगुकच्छ (भरूच) और चंपानगरी मे धुल की वृष्टी और शून्यता हो ॥ १२८ ॥ उत्तर दिशा में बहुत रोग हो या शत्रु का पराभव हो, व्यापार में बहुत लक्ष्मी की प्राप्ति हो और सुभिक्ष सुकाल हो ॥ १२९ ॥

मनुष्यगणशुक्रास्ते वह्निभी रोमपत्तने ।
देशत्रासः कोङ्कणे च लाटे सिन्धौ तु शून्यता ॥१३०॥
दुर्भिक्षमुत्तरे देशे विग्रहो द्रविडाश्रये ।
गुर्जरे च सुभिक्ष स्याद्वनस्पतिफलोदयः ॥१३१॥
मासमेक महर्घं स्यात् ततो धान्ये समर्घता ।
घृततैलान्ननिष्पत्तिः पट्टसूत्राणि सर्वतः ॥१३२॥
राजानः सुखिनः सर्वाः प्रजा रोगविवर्जिताः ।
सर्वत्र वसतिर्देशे दुर्गेष्वानन्दनन्दिताः ॥१३३॥
शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दूदेशेषु विग्रहः ।
खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ॥१३४॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यम भवेत् ।
अमिया उडभङ्गः स्याद् गुर्जरे सुद्गलाद् भयम् ॥१३५॥
यानपात्रविनाशोऽब्धौ फिरङ्गाणां च विग्रहः ।

यदि मनुष्यगण के नक्षत्र मे शुक्रका अस्त होतो रोमदेश में अग्नि का भय हो, कोंकण देशमें भय, तथा लाट और सिंधु देशमें शून्यता हो ॥ १३० ॥ उत्तर देशमें दुर्भिक्ष, द्रविड देशमें विग्रह, गुर्जरदेशमें सुभिक्ष हो, और वनस्पतिया मे फलफूल आवे ॥ १३१ ॥ एक महीना अनाज तेज रहें और पीछे समभाव रहे, घी, तेल, अन्न और पट्टसूत्र इन की विशेष उत्पत्ति हो ॥ १३२ ॥ सब राजा सुखी रहें, प्रजा रोग रहित हो, वसति (ग्राम) देश और किला आदि सब जगह आनन्द रहे ॥ १३३ ॥

यदि शुक्र का अस्त राक्षसगण नक्षत्र मे होतो हिन्दू देशमे विग्रह हो, खर्पर देशमें राजयुद्ध हो और मिश्रदेशमे अन्न की तंगी रहे ॥ १३४ ॥ मरुस्थल और सिंधुदेशमे सामान्य दुर्भिक्ष हो, अमिया और उडदेश का भंग हो गुर्जरदेशमे जनु आदि के उपद्रव का भय हो ॥ १३५ ॥ समुद्र में जहाजों का विनाश और फिरंगियों का विग्रह हो, विराट, कुरु, पाचाल

विराटकुण्डपाञ्चालसौराष्ट्रेषु च रौरवम् ॥१३६॥
तथा राज्यपरावर्त्तो मालवेषु जनक्षयः ।
जीर्णदुर्गे भय भङ्गः पत्तनेऽन्नमहर्घता ॥१३७॥
नव्यमुद्राप्रकाशः स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदः ।
द्रव्यक्षेत्रकालभावा-भ्यामादेष विनिश्चय ॥१३८॥
॥इति शुक्रास्तगणेन देशवर्षज्ञानम् ॥

अथ मण्डलविचारगाथा उत्पातेन देशेषु वर्षज्ञानम् । तत्र प्रथमाग्नेयमण्डलं यथा—

कृत्तिका भरणी पुष्य द्विदैव पूर्वफाल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदं पैत्र्य स्मृतमाग्नेयमण्डलम् ॥१३९॥
यद्यस्मिन् धूलिवर्षादेर्विकारः कोऽपि जायते ।
भूमिकम्पोऽशनेः पात उल्कापातोऽन्धकारिता ॥१४०॥
दर्शनं धूमकेतोश्च ग्रहण चन्द्रसूर्ययोः ।
रक्तवृष्टिर्ज्वलद्वृष्टिरन्यद्वा किञ्चिदद्भुतम् ॥१४१॥
तदाग्निमण्डलात् प्राज्ञा जानीयाद् भावि लक्षणम् ।

और सौराष्ट्र इन देशों में महाकष्ट हो ॥ १३६ ॥ तथा मालवा देश में राज्य परिवर्तन हो और मनुष्यों का विनाश हो। जीर्ण किले को टूटने का भय तथा पट्टन में अन्न महँगा हो ॥ १३७ ॥ नवीन सिक्का चले और दक्षिण में सुख सपदा हों। इसी तरह शुक्र का विचार द्रव्य क्षेत्र काल और भाव के अनुकूल करना चाहिये ॥ १३८ ॥

कृत्तिका भरणी पुष्य विशाखा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपद और मघा ये आग्नेयमण्डल के नक्षत्र है ॥ १३९ ॥ यदि इनमे धूलीवर्षादिका कोई विकार हो, भूमिकंप, वज्रपात, उल्कापात, अन्धकार ॥ १४० ॥ धूमकेतु का दर्शन, चन्द्र सूर्य का ग्रहण, रक्तवृष्टी अग्निवृष्टि अथवा कोई अद्भुत वार्ता हो ॥१४१॥ तो इस अग्निमण्डल से बुद्धिमान् भावी होनहार को जानें—नेत्रों का रोग,

नेत्ररोगमतीसारं देशेऽग्निप्रबलोदयम् ॥१४२॥
गवां दुग्धघृतालपत्वं द्रुमे पुष्पफलाल्पताम् ।
अर्थनाशं च चौरेभ्यः स्वल्पां वृष्टिं समादिशेत ॥१४३॥
क्षुधया पीडिता लोका भिक्षाखर्प्परधारिणः ।
सैन्धवा यमुनातीर-घृताटकोजबाल्हिकाः ॥१४४॥
जालन्धराश्च काश्मीराः समस्तश्चोत्तरापथः ।
एते देशा विनश्यन्ति तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥१४५॥

वायुमण्डलम्—

मृगादित्याश्विनीहस्ता-श्चित्रास्वातिसमन्विताः ।
उत्तराफाल्गुनी वायो-रिदं मण्डलमुच्यते ॥१४६॥
यद्येषु जायते किञ्चित् प्रोक्तोत्पातलक्षणम् ।
महावातास्तदा वान्ति महद्भयमुपस्थितम् ॥१४७॥
उन्नीता अपि पर्जन्या न मुञ्चन्ति तदा जलम् ।
विनाशो देवविप्राणां नृपाणां विन्ध्यवासिनाम् ॥१४८॥

अतीसार, देशमें अग्नि का विशेष लगना ॥ १४२ ॥ गायों के दूध घी की अल्पता, वृक्षों में फल फूल थोड़े, चोरों से अर्थ का नाश और थोड़ी वर्षा जाननी ॥ १४३ ॥ लोग क्षुधा से दुःखी होकर भिक्षा और खर्प्पर (खप्पड़) धारण करने वाले हों। सिन्धुदेश, यमुना के तट के देश, घृताटकोज बाल्हिक ॥ १४४ ॥ जालन्धर, काश्मीर और समस्त उत्तर प्रदेश, इन देशों में यदि उत्पात देखने में आवे तो उनका विनाश होता है ॥ १४५ ॥

मृगशीर्ष पुनर्वसु अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती और उत्तराफाल्गुनी ये वायुमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १४६ ॥ यदि इन नक्षत्रों में प्रोक्त कोई उत्पात हो तो महावायु चले, बड़ा भय उपस्थित हो ॥ १४७ ॥ उन्नत हुए भरे बादल भी जल न छोड़ें, देव ब्राह्मणों का विनाश हो, विन्ध्यवासी राजाओंमें कलह हो ॥ १४८ ॥ परकोट किये पर्वतों के शिखर और तोरण के समान की

प्राकारगिरिशृङ्गाणि तोरणस्थलभूमिकाः ।
वायुवेगविधूतानि वनानि निपतन्ति हि ॥१४६॥

वारुणमण्डलम्—

आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्र-पद पौष्ण च वारुणम् ।
पूर्वाषाढा मूलमेतद् वारुणं मण्डलं स्मृतम् ॥१५०॥
एषूत्पातोदये पूर्वं गदिते स्यात् प्रजासुखम् ।
बहुक्षीरघृता गावो बहुपुष्पफला द्रुमाः ॥१५१॥
बहुधान्या मही लोके नैरुज्य बहु मङ्गलम् ।
धान्यानि च समर्घाणि सुभिक्ष प्रबलं भवेत् ॥१५२॥
कीटका मूषकाः सर्पाः शलभा मृगकुक्कुटाः ।
मारिः पिपीलिकाकाण्ड स्थलदेशे प्रजायते ॥१५३॥

माहेन्द्रमण्डलम्—

ज्येष्ठानुराधारोहिण्यो धनिष्ठा श्रवणास्तथा ।
अभिजिच्चोत्तराषाढा शुभं माहेन्द्रमण्डलम् ॥१५४॥
एषूत्पातोदये लोकाः सर्वे मुदितमानसाः ।

भूमि ये सब वायु वेग से भग हो जाय और वन के वृक्ष गिर पड़ें ॥१४६॥

आर्द्रा आश्लेषा उत्तराभाद्रपद रेवती शतभिषा पूर्वाषाढा और मूल ये वारुणमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १५० ॥ यदि इनमें पूर्वोक्त कोई उत्पात हो तो प्रजा को सुख हो, गायों में दूध बहुत हों वृक्षों में फलफूल बहुत हों ॥ १५१ ॥ पृथ्वी पर बहुत धान्य उत्पन्न हों निरोगता और मंगल हों, धान्य सस्ते और सर्वत्र सुभिक्ष हो ॥ १५२ ॥ कीड़े मूसे सर्प शलभ मृग कुक्कुट मारी (प्लेग) और चींटी ये स्थल प्रदेश में अधिक हों ॥ १५३ ॥

ज्येष्ठा अनुराधा रोहिणी धनिष्ठा श्रवण अभिजित् और उत्तराषाढा ये माहेन्द्रमण्डल के नक्षत्र हैं ॥ १५४ ॥ इनमें पूर्वोक्त कोई उत्पात हो

सन्धिं कुर्वन्ति भूमीशाः सुभिक्षं मङ्गलोदयः ॥ १५५ ॥

कस्मिन् समये मण्डलानि फलदायकानि ?

उल्कापातादयः सर्वेऽमीषु स्वस्वफलप्रदाः ।
वर्षाकालं विना ज्ञेया वर्षाकाले तु वृष्टिदाः ॥ १५६ ॥
माहेन्द्रं सप्तरात्रेण सद्यो वारुणमण्डलम् ।
आग्नेयमर्धमासेन फलं मासेन वायवम् ॥ १५७ ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं राज्ञां सन्धिः परस्परम् ।
अन्त्यमण्डलयोर्ज्ञेयं तद्विपर्ययमाद्ययोः ॥ १५८ ॥
माहेन्द्रे वारुणे चैव हृष्टा भवन्ति धेनवः ।
उत्पाताः प्रलयं यान्ति धरणी वर्द्धते शिवैः ॥ १५९ ॥

अर्घकाण्डे तु—

त्रिमासिकं तु चाग्नेयं वायव्यं च द्विमासिकम् ।

तो सब लोग आनन्द से रहे, राजा परस्पर सन्धि करे, सुभिक्ष और मङ्गल हो ॥ १५५ ॥

उल्कापातादिक जो उत्पात है वे इन मण्डलों में अपने २ फल को वर्षाकाल के बिना दूसरे समय मे देते है और वर्षाकाल में तो वृष्टि करने वाले होते है ॥ १५६ ॥ माहेन्द्रमण्डल का फल सात दिन में, वारुणमण्डल का फल शीघ्रही, अग्निमण्डल का फल आधे मास में और वायुमण्डल का फल एक मास मे होता है ॥ १५७ ॥ सुभिक्ष क्षेम (कल्याण) आरोग्य और राजाओं की परस्पर सन्धि ये सब अन्त्य के दो मण्डलों में जानना, और आदि के दो मण्डलों मे इससे विपरीत जानना ॥ १५८ ॥ माहेन्द्र और वारुणमण्डल मे गौ प्रसन्न होती है, उत्पात नष्ट हो जाते है और पृथ्वी पर मांगलिक होते है ॥ १५९ ॥ अर्घकाण्ड में कहा है कि— तीन महीने में आग्नेय, दो महीने मे वायव्य, एक महीने मे वारुण और सात

मासमेकं च वारुण्यं माहेन्द्रं सप्तरात्रिकम् ॥ १६० ॥

पुनः विवेकविलासे—

मण्डलेऽग्नेरष्टमासै-र्द्वाभ्यां वायव्यके पुनः ।
मासेन वारुणे सप्त-रात्रान्माहेन्द्रके फलम् ॥ १६१ ॥

रुद्रदेव प्राह—वायव्य मासयुग्मेन माहेन्द्रं सप्तरात्रिकम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेन वारुणं शीघ्रवारिदम् ॥ १६२ ॥

वारुणाग्नेययोर्भौमानिलयोः फलमन्दता ।
अन्योऽन्यमभिघातेन तद्विमृश्य वदेत् फलम् ॥ १६३ ॥

भूमिकम्परजोवर्षदिग्दाहाकालवर्षणम् ।
इत्याद्याकस्मिकं सर्वमुत्पात इति कीर्त्यते ॥ १६४ ॥

ईत्यनीतिप्रजारोगरणाद्युत्पातजं फलम् ।
मण्डलाख्यासमं प्रायो वह्निवाय्वादिकं तथा ॥ १६५ ॥

रात्रि में माहेन्द्रमण्डल का फल होता है ॥ १६० ॥ विवेकविलास में लिखा है कि - अग्निमण्डल आठ महीने वायु का दो महीने, वरुण का एक महीना और महेन्द्र का सात दिन, इतने समय मंडलों का फल रहता है ॥ १६१ ॥ रुद्रदेवने कहा है कि—वायु का दो महीने, महेन्द्र का सात दिन, अग्नि का आधा महीना यानि पंद्रह दिन और वरुणमण्डल शीघ्र ही जल देने वाला है ॥ १६२ ॥ वरुण और अग्निमण्डल के मिलने में तथा माहेन्द्र और वायुमण्डल के मिलने में फल की मन्दता होती है । ऐसे परस्पर मण्डल के मिल जाने से विचार पूर्वक इन का फल कहना ॥ १६३ ॥ भूमिकंप, धूलि की वर्षा, दिग्दाह, अकाल में वर्षा इत्यादि उपद्रव अकस्मात् हों तो उनको उत्पात कहते हैं ॥ १६४ ॥ टीड्डी मूसे आदि के उपद्रव, अनीति, प्रजा को रोग और लडाई ये सब उत्पात के फल जानने चाहिये । प्रायः करके मण्डल के नाम सदृश अग्नि वायु आदि के उत्पात होते हैं ॥ १६५ ॥ अग्निमण्डल में दक्षिण दिशा, वायुमण्डल में

आग्नेये पीड्यते याम्या वायव्ये पुनरुत्तरा ।
वारुणे पश्चिमा चात्र पूर्वा माहेन्द्रमण्डले ॥ १६६ ॥

॥ इति मण्डलोपरि उत्पातेन देशो वर्षज्ञानम् ॥

अथ प्रसगेन उत्पातभेदा यथा—

भूमिकम्पे प्रजापीडा निर्घाते तु नृपक्षयः ।
अनावृष्टिस्तु दिग्दाहे दुर्भिक्ष पांशुवर्षणे ॥१६७॥
क्षयकृत्पांशुवृष्टिश्च नीहारश्च भयङ्करः ।
दिग्दाहोऽग्निभय कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः ॥१६८॥
झञ्झावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः ।
भूकम्पो दुःखदायी च परिवेषश्च रोगकृत् ॥१६९॥
ग्रहयुद्धे राजयुद्ध केतौ दृष्टे तथैव च ।
ग्रहणान्ते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥१७०॥
उल्कापाते श्रेष्ठनाशो द्रुमच्छिन्ने धनक्षयः ।

उत्तर दिशा, वारुणमण्डल में पश्चिम दिशा और माहेन्द्रमण्डल में पूर्व दिशा पीडित होती है ॥ १६६ ॥

भूमिकंपसे प्रजा को पीडा, वज्र गिरने से राजा का नाश, दिग्दाह से अनावृष्टि, धूल की वर्षा होने से दुर्भिक्ष होता है ॥ १६७ ॥ धूल की वर्षा क्षय करती है, कुहर (बरफ) गिरे तो भयदायक है, दिग्दाह हो तो अग्नि का भय करता है और वज्र गिरने से राजा को भय होता है ॥ १६८॥ झंझावायु और तीक्ष्णशब्द ये दोनों चोरों का भय करता है, भूकम्प होना दुःखदायक है, चन्द्रसूर्य का परिवेष (घेरा) रोग करता है ॥ १६९ ॥ ग्रहों के युद्ध में, तथा केतु के दर्शन से राजाओं में युद्ध होता है । यदि ग्रहण के अंत में अधिक वर्षा हो तो सब दोषों का विनाश हो जाता है ॥ १७०॥ उल्कापातसे श्रेष्ठ पुरुष का नाश, वृक्ष के टूटने से धन का नाश और प-

पाषाणवर्षणे ज्ञेया सर्वधान्यमहर्घता ॥१७१॥
विद्युत्पाते जलाभावः प्रजानाशोऽन्धकारिते ।
ऋतूनां व्यत्यये रोगः सर्वजन्तुषु जायते ॥१७२॥
जन्तूनां विकृतोत्पत्ती राजविघ्नकरी मता ।
विग्रहो जायते घोरश्चन्द्रसूर्यविपर्यये ॥१७३॥
ग्रहयुद्धे भवेद् युद्ध युतौ चैव महर्घता ।
सूर्येन्दुपरिवेषाणां फलं वक्ष्ये स्वरूपतः ॥१७४॥
दूरस्थे मण्डलेऽन्यत्र स्वदेशो मध्यवर्त्तिनि ।
प्रत्यासन्ने फल ज्ञेय मण्डलाधिपतेर्महत् ॥१७५॥
श्वेतवर्णे भवेद् भव्य पीतवर्णे रुजाकरः ।
रक्तवर्णे भवेद् युद्ध कृष्णवर्णे नृपक्षयः॥१७६॥
नीलवर्णे महावृष्टि-र्धूम्रवर्णे च धूमरी ।

त्थर की वर्षा होनसे सब अन्न महँगे होते हैं ॥ १७१ ॥ विद्युत के उत्पात में जल का अभाव, अंधकार से प्रजा का नाश ऋतुओं की विपरीतता से सब प्राणियों में रोग होता है ॥ १७२ ॥ जन्तुओं की विकृत (विरूप) उत्पत्ति राजा को विघ्नकारी होती है, चन्द्रसूर्य की विपरीतता से बड़ा संग्राम होता है ॥ १७३ ॥ ग्रहों के युद्ध मे युद्ध और ग्रहयुति मे धान्य की महर्घता होती है । सूर्यचन्द्रमा के मण्डल का फल अपने रूप के अनुसार कहना चाहिये ॥ १७४ ॥ दूरदेश स्वदेश और मध्यदेश इन में जहां मण्डल का अधिपतित्व हो वहां विशेष फल जानना ॥ १७५ ॥ श्वेत वर्ण का मण्डल हो तो कल्याण कारक, पीत वर्ण का रोग कारक, रक्त वर्ण का युद्ध करानेवाला, कृष्ण वर्ण का राजा का क्षय कारक ॥ १७६ ॥ निल वर्ण का हो तो महावर्षा, धूम्र वर्ण होनेसे धूमस, थोडा वर्ण होने से थोडा और अधिक होने से अधिक फल दायक होता है ॥

स्वल्पे स्वल्पफलं सर्वं बहूनां तु फल महत् ॥१७७॥
जलार्द्रत्वे महावृष्टिर्विम्बनाशे नृपक्षयः ।
अकाले फलपुष्पाणि सस्यनाशकराणि च ॥१७८॥
यस्य राज्ये च राष्ट्रे च देवध्वंसः प्रजायते।
सपरिवारभूपस्य तस्य ध्वंसः प्रजायते ॥१७९॥
सूर्येन्द्वो सर्वथा ग्रासे सर्वस्यापि महर्घता ।
भौमादिग्रहवर्गस्य वक्रे च प्राक्तन फलम् ॥१८०॥

अथ गन्धर्वनगरम्——

कपिल सस्यघाताय माञ्जिष्ठ हरण गवाम्।
अव्यक्तवर्णं कुरुते बलक्षोभ न संशयः ॥१८१॥
गन्धर्वनगर स्निग्ध सप्राकार सतोरणम्।
सौम्यां दिशं समाश्रित्य राजस्तद्विजयङ्करम् ॥१८२॥

---

१७७ ॥ मण्डल में से जल के कण का स्राव हो, या मण्डल जल से भीगा हुआ मालुम पड़े तो अत्यन्त वर्षा होती है। विम्ब के नाश से राजा की मृत्यु होती है। अकाल में फल पुष्पों का होना खेती का विनाश कारक है ॥ १७८ ॥ जिस के राज्य या देश में देवता का विनाश हो उस देश के राजा का परिवार सहित नाश होता है ॥ १७९ ॥ सूर्य चन्द्रमा का पूर्ण ग्रास हो तो सब चीजों का भाव तेज हो। मङ्गलादि ग्रह वक्री हो तो उनका पूर्वोक्त ही फल कहना ॥ १८० ॥

गन्धर्वनगर कपिल वर्ण यान भूरा दीखे तो खेती का विनाश हो, मजीठ रंग का दीखे तो गायों को पीडा कारक है, अप्रकट रंग का देख पड़े तो सेना का क्षोभ करता है ॥ १८१ ॥ यदि गन्धर्व नगर स्निग्ध परिकोट (किला) और ध्वजा सहित पूर्व दिशा में देख पड़े तो राजा का विजय होता है ॥ १८२ ॥

विद्युल्लक्षणम्--

कपिलाविद्युदनिलं कुर्यात् पीता तु वृष्टये।
लोहिता आतपाय स्यात् सिता दुर्भिक्षहेतवे ॥१८३॥

केतुफलम्

श्रावणे भाद्रमासे च केतवो वारुणा दश।
जलवृष्टिकरा लोके नदा धान्यसमर्घता ॥१८४॥
आश्विने कार्त्तिके ते स्युः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश।
कुर्युश्चतुष्पदे मृत्यु दुर्भिक्षं देशनाशनम् ॥१८५॥
वह्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशत् केतवो मार्गपौषयोः।
अग्निदाहं चौरभयमनावृष्टिं दिशन्त्यमी ॥१८६॥
केतवो यमपुत्राः स्युर्माघफाल्गुनयोर्नव।
धान्य महर्घं दुर्भिक्षं कुर्युर्नृपमहारणम् ॥१८७॥
केतवोऽष्टादश सुता धनदस्य वसन्तके।

कपिल वर्ण की (भूरी) विजली चमके तो पवन चले, पीले रंग की चमके तो बहुत वर्षा हो, लाल रंग की चमके तो गरमी अधिक पड़े और श्वेत वर्ण की चमके तो दुर्भिक्ष पडे॥ १८३ ॥

श्रावण और भादों महीने में दश केतु वरुण के पुत्र हैं, ये लोक में उदय होनेसे जल की वृष्टि और अनाज सस्ता करते है॥ १८४॥ आसोज और कार्तिक में चौदह केतु सूर्य के पुत्र है ये पशुओं का विनाश, दुर्भिक्ष और देश का नाश करते हैं॥ १८५ ॥ मार्गशिर और पोष मास में चौंतीस केतु अग्निके पुत्र हैं, ये अग्निदाह चोरभय और अनावृष्टि करते है॥ १८६ ॥ माघ और फाल्गुन मास मे नव केतु यम के पुत्र हैं, ये धान्य की महर्घता दुष्काल और राजाओं में विग्रह करते है॥ १८७ ॥ चैत्र और वैसाखमें अठारह केतु कुबेर के पुत्र हैं, ये लोक में उदय होनेसे सुख मंगल और सुभिक्ष करते हैं

लोके सुखं मङ्गलानि सुभिक्षं कुर्युरुद्गताः ॥१८८॥
ज्येष्ठाषाढोदिता वायोः पुत्रा विंशतिकेतवः ।
सवातजलवर्षायै नरुप्रासादभङ्गदाः ॥१८९॥
एवं पञ्चोत्तरं शतं कचिदष्टोत्तरं शतम् ।
केचिदेकोत्तरं शतं केतूनां स्यान्मतत्रयात् ॥१९०॥
दशैव रविजा यस्याः शतमेकोत्तरं ततः ।
त्रयोविंशा वायुजाताः शतमष्टोत्तरं तदा ॥१९१॥

अथ केतूदयफलम्—

एषां कदा फलमिति ज्ञेयमृक्षं विलोकयेत् ।
महोत्पातहते ऋक्षे देशेऽनावृष्टिसम्भवः ॥१९२॥
यदुक्तम्—उल्कापातो दिशां दाहो भूकम्पो ब्रह्मवर्चसम् ।
दृष्ट्वा ऋक्षे भवेद् यत्र तदृक्षं पीडितं भवेत् ॥१९३॥
लौकिकमपि—भूकम्पश्च तारापड्वा रक्तपाषाणवृष्टि ।

॥ १८८ ॥ जेठ और अषाढमें बीस केतु वायु के पुत्र हैं ये उदय होने से वायु और जल वर्षा करते हैं तथा वृक्ष और महल का विनाश करते हैं ॥१८९॥ इस प्रकार एकसौ पांच केतु हैं कोई एकसौ आठ और कोई एकसौ एक, एस तीन मत में केतुओं की संख्या मानते हैं ॥ १९० ॥ जो सूर्य के पुत्र दश केतु मानें तो एक सौ एक और वायु के पुत्र तेईस केतु मानें तो एकसौ आठ संख्या होती है ॥ १९१ ॥

इनका फल देखने के लिये नक्षत्र को देखे, यदि नक्षत्र का महोत्पातसे आघात हो तो देशमें अनावृष्टि होता है ॥ १९२ ॥ उल्कापात दिग्दाह भूकंप और ब्रह्मतेज आदि को देख कर विद्वान् विचार करे, जो नक्षत्र उस दिन हो वही नक्षत्र पीडित होता है ॥ १९३ ॥ भूकंप, तारे का गिरना, रक्त और पाषाण की वृष्टि, केतु का उदय, सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण, इनमेंसे

केतुगामण रविससिगहण इक्कमि होइ उक्किट्ठि ॥१६४॥
जिण नक्खत्ति भड्डली कांई होउ अनिट्ठ ।
तिण नवि वरसे अंबुधर जाणे गब्भविणट्ठ ॥१६५॥

अथ प्रसङ्गानुप्रसक्तचन्द्रसूर्यग्रहणफलम्—

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहः शुभकरो मार्गे तथा कार्तिके,
पौषे धान्यमहर्घता जनभयं वर्षं पुरा मध्यमम् ।
माघे वाञ्छितवृष्टिरन्नविगमः स्यात् फाल्गुने दुःखकृ-
च्चैत्रे चित्रकरादिलेखकमहापीडा समा मध्यमा ॥१९६॥
वैशाखे तिलतैलमुद्गकपास कार्पासकं नाशयेद्,
ज्येष्ठेऽवर्षणधान्यनाशनकरं स्याद् भाविवर्षं शुभम् ।
आषाढे क्वचिदेव वर्षति घनो रोगोऽन्नलाभः क्वचिद्,
वृक्षे मूलफलानि हन्ति सहसा वर्षं शुभं सम्भवेत् ॥१९७॥

एक भी हो तो कष्ट देने वाला होता है ॥ १६४ ॥ भडली का कहना है कि जिस नक्षत्र पर अनिष्ट (उत्पात) हो, उस नक्षत्र में जल नहीं बरसता है और गर्भ का विनाश होता है ॥ १६५ ॥

सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण कार्त्तिक और मार्गशिर मास में हो तो शुभ करता है । पौष मास में हो तो धान्य का भाव तेज, मनुष्यों को भय और अगला वर्ष मध्यम करता है । माघ मास मे हो तो इच्छानुसार वृष्टि और अन्न की प्राप्ति विशेष होती है । फाल्गुन मास मे हो तो दु ख दायक है । चैत मास में हो तो चित्रकार और लेखक आदि को महा पीडा तथा वर्ष मध्यम हो ॥ १९६ ॥ वैशाख मास मे हो तो तिल तैल मूग रूई और कपास का नाश हो । ज्येष्ठ मास मे हो तो वृष्टि न हो और धान्य का नाश और अगला वर्ष शुभ हो । आषाढ में ग्रहण हो तो कहीं जल वर्षे, कहीं रोग और कहीं अन्न का लाभ हो, वृक्षों के मूल फल टूट पडे, शेष वर्ष शुभ रहे ॥ १९७ ॥ श्रावण मास मे हो तो कोढियों का और

गर्भाः श्रावणकेऽश्वगर्दभभवास्तूर्णा पतन्त्युल्वणम्,
स्त्रीगर्भान् विनिहन्ति भाद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने ।
कुर्यादाश्विनकेऽथ सूर्यशशिनोरेकत्र मासे ग्रह-
द्वन्द्वं चेन्नरनायका बहुबला युद्ध्यन्ति कोपोत्कटाः ॥१९८॥
कदाचिदधिके मासे ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रभयं भङ्गः क्षयं यान्ति महीभुजः ॥ १९९ ॥
रवेर्ग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् ।
तदा दर्शनिनां पूजा धर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ २०० ॥
क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपनिक्षयः ।
राष्ट्रभङ्ग इति प्राहुर्भद्रबाहुमुनीश्वराः ॥ २०१ ॥
रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्यसङ्ग्रहः ।
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतलोहसतैलविक्रयः ॥ २०२ ॥
सोमेऽर्कग्रहणे राजविग्रहोऽन्नमहर्घता ।

गदहियों के गर्भ पतित हों, बिजली या कंकादिक पडे। भाद्रपद मे हो तो स्त्रियो के गर्भ पतित हो आसोज मास मे हो तो लोग मे सुख और सुभिक्ष हो। यदि एक ही मास में सूर्य और चन्द्रमा दोनों का ग्रहण हो तो राजा लोग परस्पर महा क्रोध करके युद्ध करने तत्पर हो ॥ १९८ ॥

कभी अधिक मास मे चन्द्र सूर्य का ग्रहण हो तो राष्ट्र भंग और राजाओं का क्षय हो ॥ १९९ ॥ सूर्य के ग्रहण बाद एक ही पक्षान्त मे यदि चन्द्रग्रहण हो तो साधु जनों का पूजा, धर्म की वृद्धि और बडे पुरुषों का उदय हो ॥ २०० ॥ क्रूर ग्रह से युक्त सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण हो तो राजाओं का नाश और देश भंग हो, ऐसे भद्रबाहु मुनीश्वर कहते है ॥ २०१ ॥ रविवार को ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम रहें, धान्य का संग्रह करना उचित है, राजयुद्ध दुर्भिक्ष घृत लोहा और तैल इनका विक्रय करना ॥ २०२ ॥ सोमवार को ग्रहण हो तो राजविग्रह, अनाज के भाव तेज,

लाभस्तैलघृतादिभ्यो भौमे वह्निभयं भवेत् ॥ २०३ ॥
भौमवारे ग्रहे भानोरन्योऽन्य नृपतिस्तथ ।
इन्दोर्ग्रहे च कर्पासस्तसूत्रमहर्घता ॥ २०४ ॥
बुधे प्रगोरक्तवस्त्रसङ्ग्रहो लाभदायकः ।
गुरौ पीतरक्तवस्तुतैलगन्धादिलाभदः ॥ २०५ ॥
शुक्रे सुभिक्षं माङ्गल्य सर्वलोकशुभकरम् ।
शनौ युगन्धरीलाभः श्यामवस्तुमहर्घता ॥२०६॥
पीतरक्तवस्त्रताम्रवृषभादिकसङ्ग्रहे ।
मासद्वये तस्य लाभ इत्युक्त ज्ञानिभिः पुरा ॥२०७॥
अर्द्धोऽर्द्धमासिके लाभस्त्रिभागश्च त्रिमासिके ।
चतुर्भागश्चतुर्मासेऽस्तमिते वर्षसम्भवः ॥२०८॥
ग्रहणाद्ये च सर्वस्मिन्नुत्पातः प्रबलो यदा ।

और तैल घी आदि मे लाभ हो । भौमवार को ग्रहण हो तो अग्निभय हो ॥ २०३ ॥ मगलवार को सूर्य ग्रहण हो तो राजाओं मे अन्योऽन्य विग्रह हो । चन्द्र ग्रहण हो तो कपास रूई और सूत महँगे हों ॥ २०४ ॥ बुधवार को ग्रहण हो तो सुपारी तथा लाल वस्तु का सग्रह करना लाभदायक है । गुरुवार को ग्रहण हो तो पीली और लाल वस्तु तथा तैल गधादिक सग्रह करना लाभ दायक है ॥ २०५ ॥ शुक्र के दिन ग्रहण हो तो सब लोग में शुभकारक सुभिक्ष और मांगलिक होता है । शनिवार को ग्रहण हो तो युगधरी (जुवार) से लाभ और काली वस्तु महँगी हो ॥ २०६ ॥ पीत तथा रक्त वस्त्र, तांबा, वृषभादिक का सग्रह करने से दो महीने पीछे उनसे लाभ होगा, ऐसा ज्ञानियों ने कहा है ॥२०७॥ अर्द्ध मास मे आधे मास मे लाभ, तीन भाग मे तीन मास मे लाभ, चतुर्थ भाग मे चौथे मास मे लाभ और अस्त मे ग्रहण हो तो एक वर्ष मे लाभ होगा ॥ २०८॥ सब (चद्र या सूर्य) ग्रहण की आदि मे उत्पात प्रबल हो किंतु ग्रहण के

पश्चात् संजायते मेघोऽरिष्टभङ्गं तदादिशेत् ॥२०९॥
एवमुत्पातरहिते यस्मिन्नुदकयोनिकाः ।
जीवा वा पुद्गला दृश्यास्तद्देशे वृष्टिरुत्तमा ॥२१०॥
एतेन गर्भाः सर्वेऽपि सूचिता वातवर्जिताः।
स्थानाङ्गसूत्रकारेण तेषां नीरात् समुद्भवात् ॥२११॥

यदागमः--चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा--उस्सा महिया सीया उसिणा । चत्तारि दगगब्भा पण्णत्ता तंजहा--हेमगा अब्भसंथडा सीओसिणा पचरूविया--

माहे उ हेमगा गब्भा फग्गुणे अब्भसंथडा।
सीओसिणाओ य चित्ते वइसाहे पंचरूविया ॥२१२॥
सप्तमे सप्तमे मासे गर्भतः सप्तमेऽहनि ।

बाद ही वर्षा हो जाय तो सब उत्पात के फल का नाश हो जाता है ॥२०९॥ इसी तरह जिस देश में उत्पात रहित जल योनि के जीव या पुद्गल देखने में आवे, उस देश में अच्छी वर्षा होती है ॥ २१० ॥ ये सब वर्षा के गर्भ जल से उत्पन्न होने के कारण स्थानांग सूत्रकार ने वायु रहित सूचित किया ॥ २११ ॥

ओस (धूमस) महिका शीत और उष्ण ये चार प्रकार के उदक गर्भ हैं । मतान्तर से-- हिम मेघाडंबर (बादल का समूह) शीत और गरमी ऐसे भी चार प्रकार के हैं । इन प्रत्येक के गर्जना विजली जल वायु और बद्दल, इस तरह पांच पांच प्रकार हैं । माघ मास में हिम का गिरना, फाल्गुन मास में बादल से आकाश आच्छादित रहना चैत्र मास में शीत और गरमी तथा वैशाख मास में मेघ गर्जना, विजली, वर्षा, वायु और बादल ये पांच प्रकार के गर्भ का लक्षण होता है ॥२१२॥ गर्भ सात मास और सात दिन में परिपक्व होता है, जैसा गर्भ हो वैसा फल जानना ॥

गर्भाः पाक नियच्छन्ति यादृशास्तादृशं फलम् ॥२१३॥

हिम तुहिन तदेव हिमकं तस्यैते हैमका हिमपातरूपा इत्यर्थः। 'अब्भमंथड' त्ति अभ्रसंस्थितानि मेघैराकाशाच्छा दनानीत्यर्थः। नात्यन्तिके शीतोष्णे पञ्चानां रूपाणां गर्जितविद्युज्जलवाताभ्रलक्षणानां समाहारः पञ्चरूप तदस्ति येषां ते पञ्चरूपिका उदकगर्भा इति। इह मतान्तरमेव—

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्यारागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः।
नात्यर्थं मार्गशीर्षे शीत पौषेऽतिहिमपातः ॥२१४॥
माघे प्रबलो वायुस्तुषारकलुषद्युती रविशशाङ्कौ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ ॥२१५॥
फाल्गुनमासे रूक्षश्चण्डः पवनोऽभ्रसम्प्लवाः स्निग्धाः।
परिवेषाश्च सकलाः कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभ. ॥२१६॥
पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभाः सपरिवेषाः।
घनपवनसलिलविद्युत्स्तनितैश्च हिताय वैशाखे ॥२१७॥

---

२१३ ॥ मतान्तर से— मागसिर और पौष मास मे सन्ध्या रंगवाली हो और जल के परिमण्डल दख पड़े, मार्गशिर मे विशेष शीत ठंड) और पौष मे विशेष हिम न पड़े ॥ २१४ ॥ माघ मास म प्रबल वायु वाय, सूर्य चन्द्रमा तुषार से स्वच्छ देख न पडे, विशेष ठंड पड और सूर्य के उदय अस्त मे बद्दल देखने मे आवे तो शुभ है ॥ २१५ फाल्गुन मास में रूखा और तेज पवन चले, बहुत स्निग्ध बादल आकाश मे चलत देख पडे, परिमण्डल भी हो, सूर्य कपिल (भूरा) और रक्त वर्ण का हो तो शुभ है ॥२१६॥ चैत मास मे पवन बद्दल और वृष्टि के साथ परिमण्डल वाले गर्भ हो तो शुभ है। वैशाख मास में बादल वायु तथा बिजली और गर्जना वाले गर्भ श्रेय है ॥ २१७ ॥ ऐसा स्थानांगसूत्र के चतुर्थ स्थानाङ्ग मे लिखा है ॥

तानेव मासभेदेन दर्शयति माहेत्यादिरिति ॥ इति स्थानाङ्गसूत्रवृत्तिः ॥

हीरमेघमालायामपि—

परिवेष वाय वद्दल संझाराग च इंदधणु होइ ।
हिम करह गज्ज विज्जु छंटा गब्भो भणिएहिं ॥ २१८ ॥
जीवेभ्यः पुद्गलाः सूत्रे पृथगेव समारिताः ।
तेन केचिदजीवाः स्युर्महावृष्टेश्च हेतवः ॥ २१९ ॥
जलयोनिकजीवादेः सद्भूतिः प्रच्युतिर्यथा ।
विचार्यते देशतस्ते तथा ग्रामे च मण्डले ॥ २२० ॥
यद्दिनेऽभ्रादिसम्भूतिर्मेघशास्त्रे निरूपिता ।
यथा सा वृष्टिहेतु स्यात् तथाभ्रादेः परिच्युतिः ॥ २२१ ॥

यदुक्तम्—

आर्द्रादौ दश ऋक्षाणि ज्येष्ठे शुक्ले निरीक्षयेत् ।
साभ्रेषु हन्यते वृष्टिर्निरभ्रे वृष्टिरुत्तमा ॥ २२२ ॥

हीरमेघमाला में कहा है कि परिमडल, वायु, बादल, सन्ध्याराग, इन्द्रधनुप, करह (ओला), गर्जना, बिजली और जल के छींटे ये दश गर्भ के लक्षण जानना ॥ २१८ ॥ आगम में जीवों से पुद्गल पृथक् ही मान हैं, इस लिये कितनेक पुद्गल महावृष्टि के कारण हैं ॥ २१९ ॥ जैसे जलयोनि के जीवों की उत्पत्ति और विनाश का विचार करते हैं, वैसे समग्र देश गाँव (नगर) और देश का भी विचार करना चाहिये ॥२२०॥ जिस दिन बादल की उत्पत्ति मेघशास्त्र में कही है, वह जैसे वृष्टि के हेतु है वैसे बद्दल के नाशक भी है ॥ २२१ ॥ कहा है कि आर्द्रा आदि दश नक्षत्र ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में देखने चाहिये, यदि वे बद्दल सहित देख पड़े तो वृष्टि के नाशक है और बादल रहित निर्मल देख पडे तो उत्तम वृष्टि जानना ॥ २२२ ॥

एवं देशनिवेशपुद्गलजलप्राण्यादिसंमूर्च्छनाद्,
हेतून् प्रागवगम्य सम्यगुदकासारस्य सारस्यदीन्।
ब्रूते मेघमहोदयं सविजयं तस्य श्रियो वश्यता-
मुत्कर्षाद्दिव चारुरूप्यकनकैर्वर्षन्ति सिद्धिप्रदाः ॥२२३॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिकृते देशाधिकारः ॥

इस प्रकार देश गाँव आदि में पुद्गल जल और प्राणी आदि का संमूर्च्छन से (स्वाभाविक उत्पत्ति और परिवर्त्तन से) प्रथम जल की अच्छी वर्षा के हेतुओं को अच्छी तरह जान करके सफलीभूत मेघ के उदय को जो कहता है, उस को लक्ष्मी आधीन होती है और सुवर्ण चांदि सोने से सिद्धि कारक वर्षा होती है ॥ २२३ ॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकित प्रथमो देशाधिकार ।



अथ वाताधिकारः ।

अथ मरुदभिगम्यः सम्यगाभोगरम्यः,
कृतभुवनविनोदः प्रौढपाथोदमोदः ।
प्रमुदितमरुदेवः श्रीप्रभुः पार्श्वदेवः,
सृजति सरसवर्षं भोगिनां दत्तहर्षः ॥ १ ॥

वातस्त्रिलोक्या आधारः सर्वार्थेभ्यो महाबलः ।
व्याप्तः सर्वत्र लोकेऽपि बादरः शाश्वतः स्वतः ॥ २ ॥
प्राच्योदीच्यादिभेदेन बहुधा वसुधातले ।
वर्षणेऽवर्षणे हेतुः केतुर्वैक्रियरूपभाक् ॥ ३ ॥

यदागमः—रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी, अत्थि णं भंते ! ईसिंपुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति ? हंता, अत्थि । अत्थि णं भन्ते ! पुरत्थिमे णं ईसिंपुरेवाया

देवताओं के वंदनीय, अच्छे अच्छे चौतीस अतीशयादि विभूतियों से पूर्ण जगत् को आनन्द देनेवाले और जिनसे मेघमाली इन्द्र वायुकुमार-देव और नागकुमार देव ये हर्षित हुए हैं, ऐसे श्रीपार्श्वनाथ प्रभु रसवाले वर्षको उत्पन्न करते हैं ॥ १ ॥

वायु तीन लोक का आधार है, सब पदार्थों से महाबली है, सर्वत्र लोकमें व्याप्त है तथा बादर और शाश्वत है ॥ २ ॥ पूर्व पश्चिमादि भेदों से बहुत प्रकार के वायु पृथ्वी पर हैं, ये वृष्टि और अनावृष्टि के कारणभूत हैं और ये वायु वैक्रियशरीर वाले और ध्वजाकार के सदृशरूप वाले हैं ॥ ३ ॥

राजगृहनगर में गौतम स्वामी श्री सर्वज्ञ महावीरप्रभु को इस प्रकार बोले—हे भगवन् ! ईषत्पुरोवायु (धीमा चलने वाला चिकना वायु) वनस्पति आदि को हितकर पथ्यवायु, मन्द चलने वाला मन्द वायु और

पच्छावाया मदावाया महावाया वायंति ? हंता, अत्थि। एवं पच्चत्थिमेणं दाहिणे णं उत्तरे णं उत्तरपुरत्थिमे णं, दाहिणपुरत्थिमे णं दाहिणपच्चत्थिमे णं उत्तरपच्चत्थिमे णं, जयाण भन्ते ! पुरत्थिमे ण ईसिं० जाव वायति। तयाणं पच्चत्थिमे ण वि ईसिंपुरेवाया जयाणं पच्चत्थिमे ण ईसिंपुरेवाया० जाव वायन्ति। तयाणं पुरत्थिमे णं वि ईसिं तयाणं पच्चत्थिमेण वि ईसिं। एवं दिसासु विदिसासु॥ इति श्रीभगवत्यां पञ्चमशतके द्वितीयोद्देशके॥

अस्त्ययमर्थो यदुत वाता वान्तीति योगः कीदृशा (शः?) इत्याहः-'ईसिपुरेवाय'त्ति मनाक् सस्नेहवाताः। 'पच्छावाय त्ति वनस्पत्यादिहिता वायवः। 'मन्दावाय' त्ति शनैः संचारिणो न महावाता इत्यर्थः। 'महावाय' त्ति उद्दण्डवाता अनल्पा इत्यर्थः। 'पुरत्थिमेण' ति सुमेरोः पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः।

ननु सूत्रोक्तरीत्यैव द्वीपे वातैक्यमापतेत्।

तेज चलने वाला महावायु चलते हैं ? हे गौतम ! हां, ये वायु चलते हैं। हे भगवन् ! पूर्व दिशामें ईषत्पुरोवायु पथ्यवायु मन्दवायु और महावायु चलते हैं ? हे गौतम ! हां चलते हैं। इस प्रकार पश्चिम मे, दक्षिण मे, उत्तर मे, ईशानकोण मे, अग्निकोणमे नैऋत्यकोण मे और वायव्यकोण मे समझना। हे भगवन् ! जब पूर्व मे ईषत्पुरोवायु पथ्यवायु मन्दवायु और महावायु चलते हैं तब पश्चिम मे भी ईषत्पुरोवायु आदि वायु चलते हैं ? और जब पश्चिम मे ये वायु चलते हैं तब ये पूर्व मे भी चलते हैं ? हे गौतम ! जब पूर्व मे ईषत्पुरोवायु आदि वायु चलते हैं तब ये पश्चिम मे भी चलते हैं। और जब पश्चिम में ईषत्पुरोवायु आदि वायु चलते हैं तब ये पूर्व मे भी चलते हैं। इसी तरह सब दिशा और विदिशा मे भी [illegible]।

यह सूत्रोक्त रीति मे द्वी[illegible]) मे रहे हुए वायु के समूह का

तदैक्याद् वर्षणोऽप्येकं तेन सर्वसमाः समाः ॥ ४ ॥
तदध्यक्षविरोधोऽथ वातभेदात् प्रतिस्थलम् ।
नैतच्छक्यं यतो वातो वाते भेदत्रयस्मृते ॥ ५ ॥

यतस्तत्रैव—कया ण भन्ते ! ईसिंपुरे वाया० जाव वायन्ति ? गोयमा ! जया ण वाउकाए आहारियं रियन्ति, तया णं ईसिंपुरेवाया० जाव वायन्ति ॥ १ ॥ कया ण भन्ते ! ईसिं० जाव वायन्ति ? गोयमा ! जयाणं वाउकाए उत्तरकिरियं करेति तया णं ईसिं० जाव वायन्ति ॥ २ ॥ कयाणं भन्ते ! ईसिंपुरे वाया पच्छावाया ? गोयमा ! जया णं वायुकुमारा वायुकुमारीओ वा, अप्पणो वा, परस्सा वा, तदुभयस्स वा, अट्ठाए वाउकायं उदीरेंति, तया ण ईसिंपुरे वाया० जाव महावाया वायन्ति ॥ ३ ॥

इति 'अहारिय रियन्ति' त्ति रीतं रीतिः स्वभाव इत्यर्थः । तस्यानतिक्रमेण यथारीत रीयते गच्छति, यथा स्वाभाविक्या

वर्णन किया, उनमे मे एक एक भी वर्षादि के निमित्त है यदि सब अनुकूल हों तो वर्षा अनुकूल होता है ॥ ४ ॥ वायु के भेद से प्रत्येक स्थल का बड़ा विरोध है, ये जानना सुगम नहीं है। इस लिये वायु को जाननेका अभ्यास करना चाहिये। वायु चलने के तीन कारण आगममें कहे है ॥ ५ ॥

हे भगवन् ! ईषत्पुरो वायु आदि वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकाय अपना स्वभाव पूर्वक गति करे तब ये वायु चलते हैं ॥ १ ॥ हे भगवन् ! ये वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकाय उत्तर क्रिया पूर्वक वैक्रिय शरीर बनाकर गति करे तब ये वायु चलते हैं ॥ २ ॥ हे भगवन् ? ये वायु कब चलते हैं ? हे गौतम ! जब वायुकुमार और वायुकुमारियां अपने या दूसरों के लिये या दोनों के लिये वायुकाय को उदीरे (गति करते) हैं तब ये वायु चलते हैं ॥ ३ ॥

गत्या गच्छतीत्यर्थः । 'उत्तरकिरिय' ति वायुकायस्य हि मूलशरीरमौदारिकं, उत्तर तु वैक्रियम् । अत उत्तरा उत्तरशरीराश्रया क्रिया गति लक्षणा, यत्र गमने तदुत्तरक्रिय तद्यथा-भवतीत्येवं रीयते गच्छति । वाचनान्तरे त्वाद्य कारगं महावातवर्जितानां, द्वितीय तु महावातवर्जितानां, तृतीय तु चतुर्णामप्युक्तमिति तद्वृत्तिः ।

एव वातविशेषेण वर्षाऽवर्षाविशेषणात् ।
शुभाशुभादियोगेन वातऽद्वन्द्वे विचित्रता ॥६॥
वातस्तु त्रिविधः प्रोक्तो वापकः स्थापकोऽपरः ।
तृतीयो ज्ञापको वृष्टेः स्थानाङ्गे मध्यमङ्गहात ॥७॥
तुलादण्डस्य नीत्यात्र ग्राह्यावाद्यन्त्यमारुतौ ।
आद्यस्तूत्पादकोऽभ्रादेः परो न विशारारुकृत् ॥८॥
तृतीयो भाविनी वृष्टिं पूर्वमेव निवेदयेत् ।
तत्कालं वृष्टिकृत्कालान्तरे वाद्योऽपि च द्विधा ॥९॥

इस तरह वर्ष मे वायुविशेष स वृष्टि या अवृष्टि की विशेषता और शुभाशुभ योगों से वायु की विशेषता ये विचित्रता है ॥ ६ ॥ स्थानाग सूत्रमें वायु तीन प्रकार के कह है— वापक स्थापक और तीसरा वृष्टि कारक ज्ञापक है ॥ ७ ॥ तुलादण्डनीति के अनुसार यहा आद्य और अन्त्य वायु ग्रहण करना चाहिये, आद्य वायु वर्षा का उत्पादक है। दूसरा वायु विनाश कारक नहीं है ॥ ८ ॥ तीसरा होने वाली वृष्टि का प्रथम स बतलाने वाला है और तत्काल वृष्टि करने वाला या कालान्तर मे वृष्टि करने वाला है। इसी प्रकार वर्षा को उत्पन्न करने वाला पहला वापक वायु के भी दो भेद है—प्रथम वर्षाकाल मे बादलों को उत्पन्न करके तत्काल वर्षा करना है और दूसरा शीत कालमे बादलों का उत्पन्न करके बहुत काल पीछे वर्षा करना है ॥ ९ ॥

वातचक्र सामान्यत —

पूर्वस्या अथवोदीच्याः पवनः शीघ्रवृष्टये ।
दक्षिणास्या वृष्टिनाशी पश्चिमाया विलम्बकः ॥ १०
आग्नेय्या विग्रहं वह्नि-भय वृष्टिविबाधनम् ।
नैर्ऋतः पवनो यावत् तावत् कुर्यान्महातपम् ॥ ११ ॥
वायव्यवायुः कुरुते वृष्टि पवनसंयुताम् ।
ततः पीडा मत्कुणाद्या ईतयो जीववर्षणम् ॥ १२ ॥
ऐशानः पवनो विश्व-हिताय जलवृष्टये ।
आनन्द नन्दयेल्लोके वायुचक्रमिदं मतम् ॥ १३ ॥

रुद्रोऽपि स्वकृतमेघमालायामाह—

"वायुधारणमेवेद श्रृणु तत्त्वेन सुन्दरि ! ।
सुभिक्ष पूर्ववातेन जायते नात्र संशयः ॥ १४ ॥
आग्नेय्या खण्डवृष्टिश्च जायते गिरिजात्मजे ।

पूर्व और उत्तर दिशा के वायु से शीघ्र वर्षा होती है, दक्षिण का वायु वृष्टि विनाशक है, पश्चिम का वायु विलम्ब से वृष्टि करता है ॥ १० ॥ आग्नेयी दिशा का वायु अग्नि का भयकारक और वर्षा का बाधक है, नैर्ऋत दिशा का पवन जबतक चले तबतक महा ताप-अधिक गरमी पडे ॥ ११ ॥ वायव्यदिशा का वायु पवन के साथ वृष्टि करता है, खटमल आदि छोटे छोटे जीवों की उत्पत्ति और ईति— (शलभ मूसा टिड्डी आदि) की अधिकता होती है ॥ १२ ॥ ईशान का वायु से जगत का कल्याण होता है, जल की वृष्टि होती है और लोक में आनन्द होता है । यह वायुचक्र है ॥ १३ ॥

रुद्रदेव ने स्वकृत मेघमाला मे कहा है कि—हे सुन्दरि ! वायु का धारण तत्व विचार से श्रवण कर—पूर्व के वायु से निश्चय से सुकाल होता है ॥ १४ ॥ आग्नेय कोण का वायु खण्डवृष्टि करता है, दक्षिण का वायु

दक्षिणे ईतिर्विज्ञेया नैर्ऋत्यां कुलदान् वहे ॥ १५ ॥
वारुणे दिव्यधान्यं च वायव्यां तप्तिसम्भवः ।
उत्तरायां सुभ ज्ञेय-मीशान्यां सर्वसम्पदः ,, ॥१६॥
हेमन्ते दक्षिणो वायुः शिशिरे नैर्ऋतः शुभ ।
वसन्ते वारुणः श्रेष्ठः फलदायी शरत्सु सः ॥ १७॥
शरत्काले तु पूर्वस्याः समीरः फलनाशनः ।
वसन्ते चोत्तरोवायुः फलपुष्पाणि नाशयेत् ॥ १८॥
आग्नेय्यो न कदापीष्ट ऐशानः सर्वदा शुभः ।
नैर्ऋतो विग्रह रोग दुर्भिक्षं कुरुते भयम् ॥१९॥
झञ्झावात विना कश्चिद् यदा प्राच्यादिकोऽनिलः।
स्पष्टभावेन नो वाति तदा वृष्टिः स्थिरा भवेत् ॥२०॥

ईति कारक है , नैर्ऋत्य कोण का वायु कुलवृद्धि कारक है ॥ १५ ॥ पश्चिम का वायु दिव्य धान्य उत्पन्न करता है, वायव्य कोण का वायु ताप उत्पन्न करता है, उत्तर दिशा का वायु शुभ जानना और ईशान कोण का वायु सब सम्पत्ति करता है ॥ १६ ॥

हेमत ऋतु में दक्षिण दिशा का वायु और शिशिर ऋतु में नैर्ऋत कोण का वायु चले तो शुभ है। वसन्त तथा शरद ऋतु में पश्चिम दिशा का पवन चले तो फलदायक होता है ॥ १७ ॥ शरद ऋतु में पूर्व दिशा का वायु चले तो फल का विनाश करता है। वसत में उत्तर दिशा का वायु चले तो फल और फूलों का नाश करता है ॥ १८॥ आग्नेय कोण का वायु कभी भी शुभ दायक नहीं होता। ईशान कोण का वायु सर्वदा शुभ रहता है। नैर्ऋत कोण का वायु विग्रह रोग दुर्भिक्ष और भय करता है ॥ १९ ॥

झझावायु को छोडकर यदि कोई पूर्वादि का वायु स्पष्टतया न चलें तो वर्षा स्थिर होती है ॥ २० ॥ आषाढ में मुख्य कारक पूर्व दिशा

श्रावणे मुख्यतः प्राच्यो नभस्ये चोत्तरोऽनिलः ।
वृष्टिं दृढतरां कुर्याच्छेषमासेषु वारुणः ॥२१॥

चैत्रमास वायुविचार —

चैत्राऽसितद्वितीयायां सर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ।
विना मेघ तदा भाद्रपदे वृष्टिस्तु भूयसी ॥२२॥
पूर्वस्या उत्तरस्याश्च वायुश्चैत्रे सितेतरे ।
तृतीयायां तदा लोके सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ॥२३॥
चतुर्थ्यां वृष्टियुग्वातस्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ।
चैत्रेऽसितेऽपि पञ्चम्यां तादृगेव फलं भवेत् ॥२४॥
चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषु, कृष्णेऽथ पक्षे यदि पूर्ववातः ।
वर्षायुतो नैव शुभः सिते तु, पूर्वोत्तरोवायुरतीवशस्तः ॥२५॥
चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः ।

का, भाद्रपद में उत्तर दिशा का और बाकी महीने में पश्चिम दिशा का वायु चले तो बहुत अच्छी वर्षा होती है ॥ २१ ॥

चैत मास मे कृष्ण पक्ष की द्वितीया के दिन यदि सब दिशा का वायु चले किंतु वर्षा न हो तो भाद्रपद में बहुत वर्षा होती है ॥ २२ ॥ चैत कृष्ण पक्ष में तृतीया के दिन पूर्व और उत्तर का वायु चले तो लोक में सुभिक्ष हो और जल वर्षा अधिक हो ॥ २३ ॥ चतुर्थी के दिन यदि वर्षा युक्त वायु चले तो दुर्भिक्ष होता है। इसी तरह शुक्ल (कृष्ण) पचमी का भी यही फल जानना ॥ २४ ॥ चैत कृष्ण पक्ष में यदि द्वितीया आदि चार दिन वर्षा युक्त पूर्व दिशा का वायु चले तो शुभ नहीं होता, किंतु शुक्ल पक्ष मे पूर्व और उत्तर का वायु चले तो बहुत शुभ होता है॥२५॥ चैत्र शुक्ल पचमी के दिन दक्षिण और पूर्व का वायु चले और साथ वर्षा भी हो तो उस वर्ष भादों में धान्य के त्रिगुणित मूल्य हो याने धान्य बहुत

वृष्ट्या सह तदा वर्षे (भाद्रे) धान्ये त्रिगुणमूल्यता ॥२६॥
एवच–चैत्राऽय बहुरूपस्तु दक्षिणानिलसयुतः ।
सर्वो विद्युत्समा युक्तो वृष्टेर्गर्भहितावहः ॥२७॥
मूलमारभ्य याम्यान्त क्रमाच्चैत्र विलोकयेत् ।
यावद्दक्षिणतो वायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ॥२८॥

वैशाखमासे वायुविचार –

शुक्ला कृष्णापि वैशाखेऽष्टमी यद्वा चतुर्दशी ।
एषु चेद्दक्षिणोवातस्तदा मेघमहोदयः ॥२९॥
राधे शुक्लतृतीयायां चिह्नैर्निश्चीयतेऽनिलः ।
पूर्वस्या यदि वोदीच्या घनाघनस्तदा घनः ॥३०॥
दक्षिणो नैर्ऋतो वायुर्वृष्टेः स्यात् प्रतिघातकः ।
वारुणाद् वृष्टिरधिका परधान्यस्य रोधनम् ॥३१॥
वैशाखशुक्लतुर्येऽह्नि सन्ध्यायामुत्तरानिलः ।

महँगे हो ॥ २६ ॥ चैत्र मास मे अनेक प्रकार के दक्षिण दिशा का पवन चले और बिजली चमके तो वर्षा के गर्भ को हितकारक है ॥२७॥ चैत्र मास मे मूल नक्षत्र से भरणी नक्षत्र तक क्रमसे देखें, जबतक दक्षिण दिशा का वायु चले तब तक चौमास मे उतनी वर्षा होती है ॥ २८ ॥

वैशाख मास मे शुक्ल या कृष्ण पक्ष का अष्टमी या चतुर्दशी के दिन दक्षिण दिशा का वायु चले तो मेघ का उदय जानना ॥ २९ ॥ वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन चिह्नों से वायु का निश्चय करें, यदि पूर्व या उत्तर दिशा का प्रचुर वायु चले तो वर्षा हो ॥ ३० ॥ दक्षिण या नैर्ऋत्य दिशा का वायु चले तो वर्षा की रुकावट हो, पश्चिम का वायु चले तो वर्षा अधिक और धान्य का रोध हो ॥ ३१ ॥ वैशाख शुक्ल चतुर्थी के दिन सन्ध्या के समय उत्तर दिशा का वायु चले तो सुभिक्ष करता है। पञ्चमी के दिन पूर्व

सुभिक्षायाथ पञ्चम्यामैन्द्रो धान्यमहर्घकृत् ॥३२॥
उदयास्तगतो यावत् पूर्वोवायुर्यदा भवेत् ।
सङ्ग्रहीयाच्च धान्यानि प्रचुराणि सुलब्धये ॥३३॥
एव शुक्लदशम्यां चेत्तदापि धान्यसङ्ग्रहः ।
तथा देशेषु पूर्णायां वायु सम्यग्विचारयेत् ॥३४॥
प्रातश्चतुर्घटीमध्ये पूर्वो वायुर्यदा भवेत् ।
सूर्यार्द्रासङ्गमे चाद्यदिने मेघमहोदयः ॥३५॥
वृष्टिर्द्वितीयेऽपि वायुर्घटिके पूर्ववायुतः ।
ज्ञेया द्वितीये दिवसे आर्द्रातपनसङ्गमे ॥३६॥
आर्द्राया वासरा एव चातुर्घटिकसंख्यया।
ज्ञेयाः सर्वेऽपि सजला निर्जलास्तु विपर्यये ॥३७॥
पूर्णिमातः समारभ्य यावज्ज्येष्ठासिताष्टमी ।
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवके वृष्टिरुच्यते ॥३८॥

दिशा का वायु चले तो धान्य महँगे करता है ॥ ३२ ॥ सूर्य के उदय और अस्त के समय यदि पूर्व दिशा का वायु चले तो धान्य का संग्रह करना चाहिये, जिस से बहुत लाभ हो ॥ ३३ ॥ इसी तरह शुक्ल दशमी के दिन वायु चले तो भी धान्य का संग्रह करना । तथा वैशाख पूर्णिमा के दिन देशों में वायु का अच्छी तरह से विचार करें ॥ ३४ ॥ यदि प्रात काल चार घड़ी में प्रथम पूर्व का वायु चले तो सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र के साथ योग हो तब प्रथम दिन मेघ का उदय जानना यानि वर्षा हो ॥ ३५ ॥ दूसरी चार घड़ी में पूर्व का वायु चलता आर्द्रा और सूर्य के योग के दूसरे दिन वर्षा हो ॥ ३६ ॥ इसी प्रकार चार चार घड़ी से आर्द्रा का प्रत्येक दिन जानना चाहिये । इस क्रम से वैशाख पूर्णिमा से लेकर ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी तक के नव दिन पूर्व का वायु चले तो सूर्य के आर्द्रा आदि नव नक्षत्रों में वर्षा होती है और विपरीत यानि पूर्व के वायु से अतिरिक्त

सूर्यसौम्यसमायोगे वायुर्वारुणदिग्भवः ।
यदा शरत्सु विज्ञेयो वायुर्धान्यमहाफलम् ॥३९॥
नवमासान यदा पूर्वो वायुश्चरति भूतले ।
स्थानां मौक्तिकरूप्याणि बहुधान्यादिमङ्गलम ॥४०॥

ज्येष्ठमास वायुविचार

ज्येष्ठमासे रविकरास्तपन्ति प्रचुरोऽनिलः ।
लूकासमन्विता वाति घनगर्भस्तदा शुभः ॥४१॥
ज्येष्ठमासेऽष्टमी कृष्णा तथा कृष्णचतुर्दशी ।
दक्षिणानिलसंयुक्ता परतो वृष्टिहेतवे ॥४२॥
ज्येष्ठस्य यदि पञ्चम्यां दक्षिणः पवनश्चरेत ।
तदा तिलास्तथा तैलं घृतं क्रय तदाश्विने ॥४३॥

यदुक्तं मेघमालायाम्—

ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां गर्जितं श्रूयते यदि ।

दक्षिणस्या भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं यदा नभः ॥४४॥
धान्यानां तिलतैलानां सङ्ग्रहः क्रियते तदा ।
द्विगुणास्त्रिगुणा लाभ क्रमान्मासचतुष्टये ॥४५॥
सिताष्टम्यां ज्येष्ठमासे चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुवायुः शुभोवातः स्निग्धाभ्र स्थगिताभ्रकः ॥४६॥
तत्रैव स्वात्याद्ये वृष्टे भवतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिश्रुता धारणास्ताः स्युः ॥४७॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्ष सुखकारिकाः ।
सान्तरा न शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥४८॥
ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां ध्वजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
शुभं मण्डलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलङ्कृतम् ॥ ४९ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

के दिन मेघ गर्जना हो, दक्षिण का वायु चले और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो ॥ ४४ ॥ धान्य तिल तेल इनका संग्रह करना, चार महीने पीछे द्विगुणा त्रिगुणा लाभ होता है ॥४५ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन चार प्रकार के वायु मानते हैं—मन्दवायु, शुभवायु, स्निग्धाभ्र और स्थगिताभ्रक ॥४६ ॥ इनमे आदि और अन्त्य वायु मे वृष्टि हो तो संसार को आनंद देने वाली है । ये चार प्रकार के वायु क्रमसे चले तो श्रावण आदि चार महीनों मे क्रमसे वर्षा होती है ॥४७॥ यदि ये वायु सब मिले हुए चलें तो सुभिक्ष और सुखकारक होते हैं, यदि पृथक पृथक चले तो अच्छा नहीं, चोर अग्नि का भय देने वाले होते हैं ॥ ४८ ॥ ज्येष्ठ महीने का शुक्ल एकादशी के दिन अच्छी तरह ध्वजा बनाकर धूप दीप आदि से सुशोभित अच्छा मण्डल करके ॥ ४९ ॥ एक बड़े लंबे दंड मे ध्वजा बांधकर उसको ऊँचे स्थान में रक्खे । इसी प्रकार यत्नपूर्वक

दक्षिणास्या भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं यदा नभः ॥४४॥
धान्यानां तिलतैलानां सङ्ग्रहः क्रियते तदा ।
द्विगुणास्त्रिगुणा लाभ. क्रमान्मासचतुष्टये ॥४५॥
सिताष्टम्यां ज्येष्ठमासे चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुवायुः शुभोवातः स्निग्धाभ्र स्थगिताभ्रकः ॥४६॥
तत्रैव स्वात्याद्ये वृष्टे भवतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिश्रुता धारणास्ताः स्युः ॥४७॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षं सुखकारिकाः ।
सान्तरा न शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥४८॥
ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
शुभ मण्डलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलङ्कृतम् ॥ ४९ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

के दिन मेघ गर्जना हो, दक्षिण का वायु चले और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो ॥ ४४ ॥ धान्य तिल तेल इनका संग्रह करना, चार महीने पीछे द्विगुणा त्रिगुणा लाभ होता है ॥४५ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन चार प्रकार के वायु माने हैं- -मृदुवायु, शुभवायु, स्निग्धाभ्र और स्थगिताभ्रक ॥४६ ॥ इनमे आदि और अन्त्य वायु मे वृष्टि हो तो संसार को आनंद देने वाली है । ये चार प्रकार के वायु क्रमसे चले तो श्रावण आदि चार महीनों मे क्रमसे वर्षा होती है ॥४७॥ यदि ये वायु सब मिले हुए चले तो सुभिक्ष और सुखकारक होते हैं, यदि पृथक पृथक चले तो अच्छा नहीं, चोर अग्नि का भय देने वाले होते हैं ॥ ४८ ॥ ज्येष्ठ महीने की शुक्ल एकादशी के दिन अच्छा नगर पूजा करके धुप दीप आदि से सुशोभित अच्छा मण्डल करके ॥ ४९ ॥ एक बड़े लंबे दण्ड मे बड़ा ध्वजा लगा कर उसको ऊँचे स्थान मे रक्खे । इसी प्रकार यत्नपूर्वक

मेघसौम्यसमायोगे वायुर्वारुणादिग्भवः ।
यदा शरत्सु विज्ञेयो वायुर्धान्यमहाफलम् ॥३९॥
नवमासान् यदा पूर्वो वायुश्चरति भूतले ।
स्वातौ मौक्तिकरूप्यानि बहुधान्यादिमङ्गलम् ॥४०॥

ज्येष्ठमास वायुविचार -

ज्येष्ठमासे रविकरास्तपन्ति प्रचुरोऽनिलः ।
उल्कासमन्विता वाति घनगर्भस्तदा शुभः ॥४१॥
ज्येष्ठमासेऽष्टमी कृष्णा तथा कृष्णचतुर्दशी ।
दक्षिणानिलसंयुक्ता परतो वृष्टिहेतवे ॥४२॥
ज्येष्ठस्य यदि पञ्चम्यां दक्षिणः पवनश्चरेत् ।
तदा तिलास्तथा तैलं घृतं क्रय्यं तदाश्विने ॥४३॥

यदुक्तं मेघमालायाम्—

ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां गर्जितं श्रूयते यदि ।

दक्षिणस्या भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं यदा नभः ॥४४॥
धान्यानां तिलतैलानां सङ्ग्रहः क्रियते तदा ।
द्विगुणस्त्रिगुणो लाभ. क्रमान्मासचतुष्टये ॥४५॥
सिताष्टम्यां ज्येष्ठमासे चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुवायुः शुभोवातः स्निग्धाभ्र स्थगिताभ्रकः ॥४६॥
तत्रैव स्यादाद्यान्त्ये वृष्टे भवतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिश्रुता धारणास्ताः स्युः ॥४७॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षं सुखकारिकाः ।
सान्तरा न शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥४८॥
ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
शुभं मण्डलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलङ्कृतम् ॥ ४९ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

के दिन मेघ गर्जना हो, दक्षिण का वायु चले और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो॥ ४४ ॥ धान्य तिल तेल इनका संग्रह करना, चार महीने पीछे द्विगुणा त्रिगुणा लाभ होता है ॥४५ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन चार प्रकार के वायु मान है---मृदुवायु, शुभवायु, स्निग्धाभ्र और स्थगिताभ्रक ॥४६ ॥ इनमे आदि और अन्त्य वायु मे वृष्टि हो तो संसार को आनंद देने वाली है । ये चार प्रकार के वायु क्रमसे चले तो श्रावण आदि चार महीनों मे क्रमसे वर्षा होती है ॥४७॥ यदि ये वायु सब मिले हुए चले तो सुभिक्ष और सुखकारक होते है , यदि पृथक पृथक चले तो अच्छा नहीं, चोर अग्नि का भय देने वाले होते है ॥ ४८ ॥ ज्येष्ठ महीने की शुक्ल एकादशी के दिन अच्छी तरह पूजा करके धुप दीप आदि से सुशोभित अच्छा मंडल करके ॥ ४९ ॥ एक बडे लंबे दंड मे बड़ी ध्वजा लगा कर उसको ऊँचे स्थान में रक्खे । इसी प्रकार यत्नपूर्वक

दक्षिणस्या भवेद्वायुरभ्रच्छन्नं यदा नभः ॥४४॥
धान्यानां तिलतैलानां सङ्ग्रहः क्रियते तदा ।
द्विगुणास्त्रिगुणा लाभ. क्रमान्मासचतुष्टये ॥४५॥
सिताष्टम्यां ज्येष्ठमासे चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुवायुः शुभोवातः स्निग्धाभ्र स्थगिताभ्रकः ॥४६॥
तत्रैव स्वात्याद्ये वृष्टे भवतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिश्रुता धारणास्ताः स्युः ॥४७॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्ष सुखकारिकाः ।
सान्तरा न शिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥४८॥
ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
शुभ मण्डलकं कृत्वा पुष्पधूपैरलङ्कृतम् ॥ ४९ ॥
उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

के दिन मेघ गर्जना हो, दक्षिण का वायु चले और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो ॥ ४४ ॥ धान्य तिल तेल इनका संग्रह करना, चार महीने पीछे द्विगुणा त्रिगुणा लाभ होता है ॥४५ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन चार प्रकार के वायु माने हैं- -मृदुवायु, शुभवायु, स्निग्धाभ्र और स्थगिताभ्रक ॥४६ ॥ इनमें स्वाति और अन्य वायु में वृष्टि हो तो संसार को आनंद देने वाली है । ये चार प्रकार के वायु क्रमसे चले तो श्रावण आदि चार महीनों में क्रमसे वर्षा होती है ॥४७॥ यदि ये वायु सब मिले हुए चले तो सुभिक्ष और सुखकारक होते हैं , यदि पृथक् पृथक् चले तो अच्छा नहीं, चोर अग्नि का भय देने वाले होते हैं ॥ ४८ ॥ ज्येष्ठ महीने का शुक्ल एकादशी के दिन अच्छी तरह पूजा करके धुप दीप आदि से सुशोभित अच्छा मंडल करके ॥ ४९ ॥ एक बड़े लंबे दंड में बड़ा ध्वजा लगा कर उसको ऊँचे स्थान में रक्खे । इसी प्रकार यत्नपूर्वक

यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥ ६३ ॥
तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वगामी च वारिदः ।
घना मेघास्तदा भाद्रे वर्षन्ति विपुलं जलम् ॥ ६४ ॥
चतुर्थ्यां दक्षिणो वायुर्मेघः पूर्वे च गच्छति ।
आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ६५ ॥
वृष्टे दिनचतुष्केऽस्मिन् वाते पूर्वोत्तरागते ।
अतिवृष्टिः सुभिक्षं च दुर्भिक्षं च तदन्यथा ॥ ६६ ॥
द्वादशीप्रतिपत्पूर्णामावास्यां चेन्महानिलः ।
वृष्टिर्व्योमाभ्रसञ्छन्नं तदा मेघमहोदयः ॥ ६७ ॥

आषाढपूर्णिमायां वायुविचार —

आषाढ्यां घटिकां षष्ठ्या मासद्वादशनिर्णयः ।
पूर्णायां पञ्चकाः षष्टिर्द्वादशेति विभाजनात् ॥ ६८ ॥
पञ्चनाडी भवेन्मासः षष्ठ्या वर्षस्य निर्णयः ।
सर्वरात्रं यदाभ्राणि वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ॥ ६९ ॥

के वर्षा होती है ॥ ६३ ॥ तृतीया के दिन पूर्व का वायु चले और पूर्व में ही बादल जाते हो तो भाद्रपद में बहुत वर्षा हो ॥ ६४ ॥ चतुर्थी के दिन दक्षिण का वायु चले और बादल पूर्व मे जाते हो तो आश्विन मास में निश्चय कर के वर्षा होती है ॥ ६५ ॥ इस वर्षा के चार दिन पूर्व तथा उत्तर का वायु चले तो बहुत वर्षा और सुभिक्ष हो, अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ ६६ ॥ द्वादशी प्रतिपदा पूर्णिमा और अमावास्या के दिन बड़ा पवन चले, वर्षा हो और आकाश बादलों से आच्छादित हो तो मेघ का उदय जानना ॥ ६७ ॥ आषाढ पूर्णिमा की साठ घड़ी पर से बारह महीने का निर्णय करें। पूर्णिमा की साठ घडी को बारह से भाग दें तो लब्धि पांच घड़ी आवे ॥ ६८ ॥ इन पांच घडी का एक मास, इसी तरह वर्ष का निर्णय करें। सारी रात बादल रहें और पूर्व तथा उत्तर का वायु चले ॥ ६९ ॥ तो उस

तस्मिन् वर्षे कणाः पुष्टा भवन्ति भुवि मङ्गलम् ।
यदि वाताभ्रलेशः स्याद् वातौ पूर्वोत्तरौ नहि ॥७०॥
न वर्षति यदा देवो दुष्टकालं तदादिशेत् ।
यत्राभ्रे स्वल्पके जाते मध्ये वातेऽल्पवर्षणम् ॥७१॥
यत्र मासविभागे च निर्मलं दृश्यते नभः ।
तत्र हानिश्च वृष्टेश्च विज्ञेयं गर्भपातनम् ॥७२॥
यत्राभ्र पञ्चनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ।
तत्र मासे भवेद्वृष्टिरित्येवं सर्वनिर्णय ॥७३॥
आषाढ्यां रात्रिकालेऽपि पवनः सर्वदिग्गतः ।
अभ्रैरवृष्टैरपि च पूर्णिमा सुखदायिनी ॥७४॥
आद्ये यामे यदाभ्राणि वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ।
आद्ये मासे तदा वृष्टिर्वाञ्छितादधिका क्षितौ ॥७५॥
आषाढ्यां च विनष्टायां नूनं भवति निष्कणम् ।

वर्ष मे धान्य बहुत पुष्ट हो और जगत् मे मगल हो । यदि लेशमात्र भी पूर्व और उत्तर का वायु न चले ॥ ७० ॥ तो मेघ बरस नहीं जिससे दुष्काल हो । जहा थोड बादल हो और मध्यम प्रकार से वायु चले तो थोडी वर्षा हो ॥ ७१ ॥ जिस मास विभाग में आकाश निर्मल दीखे, उस मास मे वर्षा की हानि और गर्भपात जानना ॥ ७२ ॥ जिस महीने की पाच घडी में बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु चले तो उस महीने में वर्षा हो । इसी तरह सब का निर्णय करें ॥ ७३ ॥ आषाढ की पूर्णिमा को रात्री के समय सब दिशा का वायु चले और बादल भी हो किन्तु वर्षा न हो तो सुखदायक है ॥ ७४ ॥ यदि पूर्णिमा को प्रथम प्रहर में बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु चले तो प्रथम मास मे पृथ्वी पर इच्छा से भी अधिक वर्षा हो ॥ ७५ ॥ यदि पूर्णिमा का क्षय हो तो धान्य की प्राप्ति न हो । ग्रहण भूकम्पान आदि के उपद्रवों से पूर्णिमा का

ग्रहण भूकम्पाताद्यैः सत्यं नश्यति पूर्णिमा ॥७६॥
प्रथमा घटिकाः पञ्च आषाढः पञ्च श्रावणः ।
पञ्च भाद्रपदो मासस्तथा पञ्चाश्विनः पुनः ॥७७॥
यत्राभ्राकुलनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ स्फुटम् ।
तत्र मासे भवेद्वृष्टिर्वातैरपि शुभैः शुभा ॥७८॥
येषु मासेषु ये दग्धा गर्भाः पौषादिसम्भवाः ।
तन्मासे पञ्चनाडीषु रात्रौ चन्द्रोऽतिनिर्मल ॥७९॥
पौषादिसम्भवे गर्भे ध्रुवमुत्पातसम्भवः ।
तेनाषाढीदिवारात्रौ द्रष्टव्या वृष्टिहेतवे ॥८०॥
यद्याषाढ्यामहोरात्रमभ्रैर्वातैः शुभैर्युतम् ।
तदा गर्भाः शुभा ज्ञेयाः शीतकालेऽपि धीमता ॥८१॥
एकमेव दिन प्रेक्ष्य वर्षज्ञानाय धीधनैः ।

क्षय होता है ॥ ७६ ॥ पूर्णिमा की प्रथम पाच घडी आषाढ, दूसरी पाच घडी श्रावण, तीसरी पाच घडी भाद्रपद और चौथी पाच घडी आश्विन महीना समझना ॥ ७७ ॥ इन मे जो घडी मे बादल हो तथा पूर्व और उत्तर का वायु स्पष्टतया चले तो उस महीने मे वर्षा होती है, शुभ वायु चले तो शुभ जानना ॥ ७८ ॥ पौष आदि महीना में उत्पन्न हुए गर्भ जिस महीनों मे नष्ट हो, उस महीने की पाच घडी मे चद्रमा बहुत निर्मल रहे ॥ ७९ ॥ तो पौषादि मास में उत्पन्न हुए गर्भ मे निश्चय कर के उत्पात होता है । इस लिये आषाढपूर्णिमा को वर्षा के लिये दिनरात देखना चाहिये ॥ ८० ॥ यदि आषाढ पूर्णिमा दिनरात बादल और अच्छे वायु से युक्त हो तो विद्वानों का शीत काल मे भी वर्षा के गर्भ शुभ जानना ॥ ८१ ॥ यह एक ही दिन वर्षा जानने के लिये बुद्धिमानों को देखना चाहिये । इस दिन आठों ही प्रहर बादल और शुभ वायु हो तो शुभ होता

अषाढ्यामप्यशुभ-वातैर्वर्षं भवेच्छुभम् ॥८२॥
आषाढ्यां निर्मलश्चन्द्रः परिवेषयुतोऽथवा ।
तदा जगत्समुद्धर्त्तुं शक्रेणापि न शक्यते ॥८३॥
कुहूतः षोडशे चाह्नि लक्षण चिन्तयेदिदम् ।
अस्तं गच्छति तिग्मांशौ तस्माद्वर्षं शुभाशुभम् ॥८४॥
आषाढ्यां पूर्ववाते च सर्वधान्या मही भवेत् ।
आग्नेयवाते लोकाः स्युरस्थिशेषास्तु रोगतः ॥८५॥
दक्षिणे पवने राज्ञां महायुद्धं परस्परम् ।
नैर्ऋते निर्जला भूमिर्धान्यसङ्ग्रहकारणम् ॥८६॥
वारुणे प्रबला वृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ।
वायव्ये मत्कुणास्तीड्डा मशकाद्यास्तथेतयः ॥८७॥
उत्तरे पवने लोका गीतमङ्गलपूरिताः ।

है ॥ ८२ ॥ आषाढ पूर्णिमा को चन्द्रमा निर्मल हो अथवा मंडल सहित हो तो जगत् का उद्धार करने के लिये इन्द्र भी शक्तिमान् नहीं होता ॥८३॥ आषाढ पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त समय इन लक्षणों का विचार करें, जिस से शुभाशुभ वर्ष जान सकें ॥ ८४ ॥ सूर्यास्त समय पूर्व दिशा का वायु चले तो पृथ्वी सब प्रकार के धान्य वाली हो । आग्नेय कोण का वायु चले तो लोक रोग से अस्थिशेष हो जाय याने रोग अधिक चले ॥ ८५ ॥ दक्षिण का पवन चले तो राजाओं का परस्पर बड़ा युद्ध हो । नैर्ऋत्य कोण का वायु चले तो पृथ्वी जल रहित हो, इस लिये धान्य का संग्रह करना उचित है ॥ ८६ ॥ पश्चिम दिशा का वायु चले तो धान्य की प्राप्ति के लिये बहुत वर्षा हो । वायव्य कोण का वायु चले तो खटमल टीडी मच्छर आदि ईति का उपद्रव हो ॥ ८७ ॥ उत्तर दिशा का वायु चले तो लोगों में गीत मंगल अधिक हो और ईशान कोण का वायु चले तो सब

धान्य धन तथैशाने सुख धान्यसमर्घता ॥८८॥
आषाढे घनशिखर गर्जन्ति यदि वाति चोत्तरः पवनः।
दशमे मासि तदानीं भुवि मेघमहोदय कुर्यात् ॥८९॥
अभ्रं विनाषाढपूर्णा वातो पूर्वोत्तरो यदि।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टिर्दृढा भवेत् ॥९०॥
न चेत्पूर्वोत्तरो वातो न चाभ्र नापि वर्षणम्।
आषाढ्यां तर्हि विज्ञेय दुर्भिक्षं लोकदुःखदम् ॥९१॥

मार्गशीर्षमास वायुविचार —

मार्गमासे सिताष्टम्या पूर्वो वातः सुभिक्षकृत्।
अन्यदिक्पवनः कुर्याद् दुर्भिक्ष भावि वत्सरे ॥९२॥

पौषमास वायुविचार —

एकादश्यां पौषकृष्णे दक्षिणः पवनो यदा।
विद्युद्वार्दलसंयुक्तस्तदा दुर्भिक्षकारकः ॥९३॥
पौषस्य शुक्लपञ्चम्यां तुषारः पवनो यदि।

धान्य और सुखप्राप्ति हो तथा धान्य सस्ते हों ॥ ८८ ॥ आषाढ महीने में मेघगर्जना हो और उत्तर दिशा का वायु चले तो दशवें दिन पृथ्वी पर मेघ का उदय जानना ॥ ८९ ॥ आषाढ पूर्णिमा को जिस यामार्द्ध में बादल न हो किंतु पूर्व और उत्तर का वायु चले तो उस महीना में वर्षा कचित् होती है ॥ ९० ॥ यदि पूर्णिमा को बादल न हो और पूर्व उत्तर का वायु भी न हो तो लोक को दुःख दायक ऐसा दुर्भिक्ष होता है ॥९१॥

मार्गशिर शुक्ल अष्टमी के दिन पूर्व दिशा का वायु चले तो सुभिक्ष करता है और दूसरी दिशा का वायु चले तो अगला वर्ष में दुर्भिक्ष करता है ॥ ९२ ॥

पौष कृष्ण एकादशी को दक्षिण दिशा का वायु चले और बिजली तथा बादल हो तो दुर्भिक्ष कारक जानना ॥ ९३ ॥ पौष शुक्ल पचमी को

तदा गर्भस्य पिण्डः स्याद्भाविवर्षहितावहः ॥ ९४ ॥
पञ्चम्यां व्योमखण्डेऽपि यदाभ्र शीतलोऽनिलः ।
विद्युन्मेघसमायुक्तस्तदा गर्भोदयो ध्रुवम् ॥ ९५ ॥

माघमासे वायुविचार —

माघे शुक्लप्रतिपदि वायुर्वार्दलसंयुतः ।
तैलादिसर्वसुरभि महर्घं जायते भुवि ॥ ९६ ॥
माघस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टियुक्तोत्तरानिलः ।
अनावृष्टिर्भाद्रपदे कुर्याद्धान्यमहर्घता ॥ ९७ ॥
शुक्ले माघस्य सप्तम्यां वारुण्यां विद्युदभ्रयुक् ।
ऐन्द्रो वातोऽथ कौबेरो दिवानिशं सुभिक्षकृत् ॥ ९८ ॥
माघस्य नवमी कृष्णा दशम्येकादशी तथा ।
सवाता विद्युता युक्ताः कथयन्ति जल बहु ॥ ९९ ॥
अमावास्यामहोरात्रं हिमो वातस्तु वृष्टियुक् ।
पौर्णमास्यां भाद्रपदे कुर्यान्मेघमहोदयम् ॥ १०० ॥

तुषार युक्त वायु चले तो गर्भ का पिंड अगला वर्ष को हित कारक होता है ॥ ९४ ॥ पचमी के दिन आकाश में बादल हो, शीत वायु चले, बिजली चमके और वर्षा हो तो निश्चय से गर्भ का उदय जानना ॥ ९५ ॥

माघ शुक्ल प्रतिपदा के दिन वायु और बादल हो तो तैल आदि सुगंधित वस्तु पृथ्वी पर महँगी हो ॥ ९६ ॥ माघ शुक्ल पचमी को वर्षा युक्त उत्तर दिशा का वायु चले तो भाद्रपद मे वर्षा न हो और धान्य महँगे हों ॥ ९७ ॥ माघ शुक्ल सप्तमी को पश्चिम दिशा में बिजली चमके और बादल हो तथा पूर्व और उत्तर दिशा का वायु दिन रात चले तो सुभिक्ष कारक होता है ॥ ९८ ॥ माघ कृष्णा नवमी दशमी तथा एकादशी के दिन वायु चले और बिजली चमके तो बहुत वर्षा हो ॥ ९९ ॥ अमावास्या को दिनरात वर्षा युक्त शीतल वायु चले तो भाद्रपद की पूर्णिमा के दिन महा वर्षा होती है ॥ १०० ॥

जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं छम्मासा" इति। उदकगर्भः कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेतुः पुद्गलपरिणामः तस्य चावस्थानं जघन्यतः समयः समयान्तरमेव प्रवर्षणात्, उत्कृष्टतस्तु षण्मासाः, षण्मासानामुपरि वर्षणात्। एतेन प्रागुक्ताः सस्नेहवाताः पथ्या वनस्पत्यादिहिता वायव इति सविस्तरं व्याख्यातम्।

इति कतिपयवातैर्जातगर्भावदात-
जलधरजलवर्षा रम्यवर्षासिहेतुः।
प्रथित इह जिनानामागमेषु द्वितीयः,
कथित उचितवृत्त्या मेघमालोदयाय॥ १११॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वितीयो वाताधिकारः।

भगवन्! उदक गर्भ की स्थिति कितने समय की है? उत्तर हे गौतम! जघन्य से एक समय और उत्कृष्ट से छ महीने की स्थिति है॥

इसी तरह गर्भ को उत्पन्न करने वाले अच्छे २ कितनेक वायुओं से मेघ का पानी वर्षना अच्छी वर्षा होने के हेतु हैं। जिनेश्वरों के आगमों में प्रसिद्ध एसा दूसरा अधिकार इस ग्रन्थ में मेघमाला का उदय के लिये उचित वृत्ति से कहा गया है॥ १११॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य जैनेन विरचितया मेघमहोदय बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितः द्वितीयो वाताधिकारः।

अथ देवाधिकारः ।

देवः सदाभ्युदयतां रससम्पदेव,
श्रीमान्महेन्द्रमहितप्रभुमारुदेवः ।
पुन्नागराजदितिजैः कृतसन्निधानाद्
वामेय एव भगवान् विलसन् महोभिः ॥ १ ॥
परिणामोऽम्बुदादीनां प्रयोगाद् वा स्वभावतः ।
द्विविधश्चागमे प्रोक्तः श्रीवीरेणार्हता स्वयम् ॥ २ ॥
आद्यो मेघकुमारादेरिवान्यः स्वीयकारणात् ।
तथापि प्रतिबोद्धारस्तत्र देवा विराधिताः ॥ ३ ॥
तेन वर्षां विना सर्वेऽप्याराध्यास्त्रिदिवौकसः ।
विशेषाद् वज्रभृत्पाशी नागा भूताश्च गुह्यकाः ॥ ४ ॥
यदुक्त श्रीभगवत्यङ्गे तृतीयशतके सप्तमोद्देशके—

जैसे मेघ रससम्पत्ति से उदय को प्राप्त होता है, वैसे महेन्द्रों से पूजित श्री आदिनाथप्रभु तथा नरेन्द्र नागेन्द्र और असुरों ने जिनका सनिधान किया है ऐसे और महान् तेज से शोभायमान है ऐसे पार्श्वनाथ प्रभु सर्वदा अभ्युदय को प्राप्त हों ॥१॥ वर्षा आदि का परिणाम (भाव) प्रयोग से या स्वभाव से ये दो प्रकार के है, ऐसा श्री महावीर जिनने स्वय आगम मे कहा है ॥२॥ वर्षा का पहला कारण मेघकुमार आदि देवताओं के प्रयोग से होता है और दूसरा स्वाभाविक है। दूसरा स्वाभाविक है तो भी उसको विराधित देव रोकने वाले है ॥ ३ ॥ इस लिये यदि वर्षा न हो तो सब देवों का पूजन करना श्रेय है। विशेष करके वज्र को धारण करने वाले इन्द्र, पाश को धारण करने वाले वरुण, नागकुमार भूत और यक्ष आदि देवों का पूजन करना चाहिये ॥ ४ ॥

जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं छम्मासा" इति । उदकगर्भः कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेतुः पुद्गलपरिणामः तस्य चावस्थानं जघन्यतः समयः समयान्तरमेव प्रवर्षणात्, उत्कृष्टतस्तु षण्मासाः, षण्मासानामुपरि वर्षणात । एतेन प्रागुक्ताः स्नेहवाताः पथ्या वनस्पत्यादिहिता वायव इति सविस्तरं व्याख्यातम् ।

इति कतिपयवातैर्जातगर्भावदात-
जलधरजलवर्षा रम्यवर्षासिहेतुः ।
प्रथित इह जिनानामागमेषु द्वितीयः,
कथित उचितवृत्त्या मेघमालोदयाय ॥ १११ ॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वितीयोवाताधिकारः ।

भगवन्! उदक गर्भ की स्थिति कितने समय की है? उत्तर हे गौतम! जघन्य से एक समय और उत्कृष्ट से छ महीने की स्थिति है ॥

इसी तरह गर्भ को उत्पन्न करने वाले अच्छे २ कितनेक वायुओं से मेघ का पानी वर्षना अच्छा वर्षा होने के हेतु हैं । जिनेश्वरों के आगमों में प्रसिद्ध ऐसा दूसरा अधिकार इस ग्रंथ में मेघमाला का उदय के लिये उचित वृत्ति से कहा गया है ॥ १११ ॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदय बालावबोधिन्याऽर्यभाषया टीकितः
द्वितीयो वाताधिकारः ।

अथ देवाधिकारः ।

देवः सदाभ्युदयतां रससम्पदेव,
श्रीमान्महेन्द्रमहितप्रभुमारुदेवः ।
पुन्नागराजदितिजैः कृतसन्निधानाद्
वामेय एव भगवान् विलसन् महोभिः ॥ १ ॥
परिणामोऽम्बुदादीनां प्रयोगाद् वा स्वभावतः ।
द्विविधश्चागमे प्रोक्तः श्रीवीरेणार्हता स्वयम् ॥ २ ॥
आद्यो मेघकुमारादेरिवान्यः स्वीयकारणात् ।
तथापि प्रतिबोद्धारस्तत्र देवा विराधिताः ॥ ३ ॥
तेन वर्षां विना सर्वेऽप्याराध्यास्त्रिदिवौकसः ।
विशेषाद् वज्रभृत्पाशी नागा भूताश्च गुह्यकाः ॥ ४ ॥
यदुक्तं श्रीभगवत्यङ्गे तृतीयशतके सप्तमोद्देशके—

जैसे मेघ रससम्पत्ति से उदय को प्राप्त होता है, वैसे महेन्द्रों से पूजित श्री आदिनाथप्रभु तथा नरेन्द्र नागेन्द्र और असुरों ने जिनका सन्निधान किया है ऐसे और महान् तेज से शोभायमान है ऐसे पार्श्वनाथ प्रभु सर्वदा अभ्युदय को प्राप्त हों ॥१॥ वर्षा आदि का परिणाम (भाव) प्रयोग से या स्वभाव से ये दो प्रकार के है, ऐसा श्री महावीर जिनने स्वयं आगम मे कहा है ॥२॥ वर्षा का पहला कारण मेघकुमार आदि देवताओं के प्रयोग से होता है और दूसरा स्वाभाविक है। दूसरा स्वाभाविक है तो भी उसको विराधित देव रोकने वाले है ॥ ३ ॥ इस लिये यदि वर्षा न हो तो सब देवों का पूजन करना श्रेय है। विशेष करके वज्र को धारण करने वाले इन्द्र, पाश को धारण करने वाले वरुण, नागकुमार भूत और यक्ष आदि देवों का पूजन करना चाहिये ॥ ४ ॥

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा आणावयणनिद्देसे चिट्ठंति, तं जहा–वरुणकाइआइ वा, वरुणदेवकाइआइ वा, नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ, थणिअकुमारा थणिअकुमारीओ, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिआ, तप्पक्खिआ, तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा-अइवासाइ वा, मंदवासाइ वा, सुवुट्ठीइ वा, दुवुट्ठीइ वा, उदब्भेइ वा, उदप्पीलाइ वा, उव्वाहाइ वा, पव्वाहाइ वा, गामवाहाइ वा, जावसन्निवेसवाहाइ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया कुलक्खया, वसणब्भूया अणारिया जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो, वरुणस्स महारण्णो,

शक्र देवेन्द्र देवराज वरुण महाराज की आज्ञा में ये देव रहने वाले हैं - वरुणकायिक, वरुणदेवकायिक, नागकुमार, नागकुमारियाँ, उदधिकुमार, उदधिकुमारियाँ, स्तनितकुमार, स्तनितकुमारियाँ और दूसरे भी उस प्रकार के देव ये सब उन वरुणदेवेन्द्र की भक्तिवाले, उन के पक्ष वाले और उन के तावे में रहने वाले हैं। ये सब देव वरुण की आज्ञा में, उपपात में, कहने में और निर्देश में रहते हैं। जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में मेरु पर्वत की दक्षिण तरफ उत्पन्न होने वाले अतिवृष्टि, मन्दवृष्टि, सुवृष्टि, दुर्वृष्टि, उदकोद्भेद (पहाड़ आदि में से पानी की उत्पत्ति), उदकोत्पील (तलाव आदि में पानी का समूह), अपवाह (पानी का थोड़ा चलना), पानी का प्रवाह, ग्राम खिंचाव जाना यावत् सन्निवेश का खिंचाना, प्राणक्षय, जनक्षय, धनक्षय, कुलक्षय, व्यसनभूत अनार्य (पाप रूप) और उस प्रकार के दूसरे सब भी शक्र देवेन्द्र देवराज वरुण महाराज से अनजान नहीं

अन्नाया अदिट्ठा असुया अविण्णाया तेसिं वा वरुणाकाइयाणं देवाणं इति ।

नन्वेवमेतेषां देवानां वृष्टिज्ञातृत्वमेव न तु तत्कर्त्तृत्वमिति किमेषामाराधनेनेति चेद् देवासुरनागानां तु कर्त्तृत्वं साक्षादागमे श्रूयते यदुक्तं तत्रैव षष्ठे शतके पञ्चमोद्देशके—

"अत्थि णं भंते ! किं देवो पकरेइ, असुरो पकरेइ, णागो पकरेइ ? गोयमा ! देवो वि पकरेइ असुरो वि पकरेइ, णागो वि पकरेइ" इति । एवं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां मेघप्रमुखनागकुमारकृता वृष्टिः । ज्ञाताङ्गे सौधर्मदेवकृता वृष्टिः । राजप्रश्नीयोपाङ्गे समवसरणरचनार्थं देवकृता वृष्टिरप्युदाहर्त्तव्या । भगवतः श्रीवर्द्धमानस्य तिलस्तम्बनिष्पत्त्यनीति वचःसिद्ध्यर्थं, यथा सन्निहितैर्व्यन्तरैः कृता वृष्टिः पञ्चमाङ्गेऽपि सूत्रे पठिता । उत्तराध्ययनेऽपि हरिकेशीये—"तहियं गन्धोदयपुप्फवासं,

हे नहीं देखे हुए नहीं हैं, नहीं सुने हुए नहीं हैं, और अविज्ञात नहीं हैं अर्थात् ये सब वरुणकाइक देवों से अज्ञात नहीं हैं ॥

इस तरह इन देवों को तो वृष्टि जानने वाले बतलाये, किन्तु वृष्टि करने वाले नहीं बतलाये ॥ उनकी आराधना करने से क्या ? साक्षात् आगम में कहा है कि देव असुर और नागकुमार ये वृष्टि करने वाले हैं। भगवतीसूत्र का छठा शतक का पांचवां उद्देशा में कहा है कि —हे भगवन् ! तमस्काय में उदार-बड़ा-मेघ सस्वेद पाते हैं । समूर्च्छते हैं ? और वर्षा वर्षते हैं ? हे गौतम ! हाँ ऐसा है । हे भगवन् ! क्या उसको देव करते हैं ? असुर करते हैं ? या नागकुमार करते हैं ? हे गौतम ! देव भी करते हैं, असुर भी करते हैं और नागकुमार भी करते हैं। इस तरह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र में मेघकुमार आदि नागकुमारदेवों से की हुई वृष्टि का वर्णन है । ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र में सौधर्मदेवलोक की हुई

दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा। पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं, आगासे अहो दाणं च घुट्ठं"। अत्र देवाद्युपलक्षणाद् योगलब्धिमहातपःकृतापि वृष्टिः प्रयोगजन्या मन्तव्या, प्रतीयते चासौ श्रीमद्भागवते पञ्चमस्कन्धे तुर्याध्याये-'यस्य हीन्द्रः स्पर्द्धमानो भगवद्वर्षे न ववर्ष, तदवधार्य भगवान् ऋषभदेवयोगेश्वरः प्रहस्यात्मयोगमायया स्ववर्षमजनाभं नामाभ्यवर्षीत्' तस्य वर्षे मण्डले इत्यर्थः। एवं च लौकिकलोकोत्तरशास्त्रविरुद्धं देवाः किं कुर्वन्ति ? योगमन्त्रादिप्रभावात् किं स्यात् ? सर्वं स्वकर्मकृत्यमित्यादि मूढवचो न प्रमाणीकार्यमित्यलं विस्तरेण।

वृष्टि का वर्णन है। राजप्रश्नीयसूत्र में समवसरण की रचना के लिये देवों द्वारा की हुई वृष्टि का वर्णन है। एक समय भगवान् श्री महावीरस्वामी विहार कर रहे थे, तब रास्ता में एक तिलका पौधा (झाड़) देख कर गोशाला ने पूछा कि यह उगेगा या नहीं ? तब भगवान् की सेवा में रहा हुआ सिद्धार्थ व्यन्तर बोला कि यह उत्पन्न होगा और इसमें तिल भी उत्पन्न होंगे, उसका यह वचन मिथ्या करने के लिये गोशाला ने उस पौधे को उखाड़ डाला, उस समय व्यन्तर ने वहां जल वृष्टि की, जिस से उसकी जड़ कीचड़ में घुस जाने से तिल उत्पन्न हुआ। इत्यादि वर्णन पञ्चमाङ्गसूत्र में है। उत्तराध्ययनसूत्र के हरिकेशीय अध्ययन में कहा है कि —देवों ने सुगन्धी जल पुष्प और वसुधारा की वृष्टि की और आकाश में दुदुभी का नाद करके अहोदान ! अहोदान ! ऐसी उद् घोषणा की। यहां देवादि उपलक्षण से योगके लब्धिके और महान तपके प्रभाव से भी वृष्टि होती है, इसलिये वृष्टि प्रयोगजन्य मानना प्रमाणित होता है। भागवत के पंचम स्कंध के चौथे अध्ययन में कहा है कि भगवान् ऋषभदेव से स्पर्द्धा करके इन्द्र ने वर्षा न बरसाई, तब ऋषभदेव भगवान् ने

तन्नास्तिकमतं त्यक्त्वा प्रतिपद्याऽऽस्तिकागमम् ।
देवताराधने यत्नः कार्यः सम्यग्दृशाप्यहो ! ॥ ५ ॥
रेवतीसूर्यसंयोगे वसन्ते समुदीत्वरे ।
महोत्सवाज्जिनस्नात्रं पुण्यपात्रं विधीयते ॥ ६ ॥
प्रकारैः सप्तदशभि-र्वाद्यनिर्घोषपूर्वकैः ।
गौरीणां गीतनृत्याद्यै-र्विधेयं जिनपूजनम् ॥ ७ ॥
दशदिक्पालपूजा च तथा नवग्रहार्चनम् ।
जलयात्रा जनैः कार्या रात्रिजागरणं तथा ॥ ८ ॥
यावतोष्णांशुना योगे पौष्णस्य क्रियते दिवि ।
तावद्दिनेषु जैनार्चा स्याद् वृष्टेः पुष्टये भुवि ॥ ९ ॥
अवग्रहेऽप्यसौ रीतिः कर्त्तव्या देवतुष्टये ।

अपने आत्मयोग बल से वर्षा वर्षा कर अपना अजनाभ नाम यथार्थ किया। इस तरह लौकिक लोकोत्तर शास्त्र विरुद्ध देव क्या करते हैं? योग-मंत्र आदि के प्रभाव से क्या होता है? सब अपने कर्म से होता है इत्यादि मूढ़ जनों का वचन प्रामाणिक नहीं मानना चाहिये। इत्यादि विशेष विस्तार करने से क्या?।

हे सम्यग्दृष्टि जनो! उस नास्तिकमत को छोड़कर और आस्तिक मत को स्वीकार कर देवता के आराधन में यत्न करना चाहिये ॥ ५ ॥ रेवती नक्षत्र पर सूर्य आने से वसन्तऋतु में बड़े महोत्सव के साथ पुण्य पात्र ऐसा जिनस्नात्र करना चाहिये ॥ ६ ॥ सत्रह भेदी पूजा गाजे बाजे के साथ और सन्नारियों के गीत नृत्यादि से जिनेश्वर का पूजन करना चाहिये ॥ ७ ॥ साथ में दश दिक्पालों की और नव ग्रहों की भी पूजा करनी और जलयात्रा तथा रात्रिजागरण भी करना चाहिये ॥ ८ ॥ जितने दिन आकाश में रेवती नक्षत्र का योग सूर्य के साथ हो उतने दिन जिनार्चन करना ये जगत में वृष्टि की पुष्टि के लिये है ॥९॥ वृष्टि रुक गई हो तो

नैवेद्यपूजा भूतानां बलिः कार्योऽन्त्यवासरे ॥ १० ॥
जिनेन्द्रे पूजिते सर्वे देवाः स्युर्भुवि पूजिताः ।
यस्माद् भागवती शक्तिः सर्वदेवेष्ववस्थिता ॥ ११ ॥
विवेचनधिया केचिद् वैष्णवः शाङ्करोऽथवा ।
न करोति जिनार्चां चेत् तेन पूज्याः स्वदेवताः ॥ १२ ॥
वैष्णवो जलशय्यायां मूर्तिं पूजयते हरेः ।
शाङ्करो गङ्गया युक्तां हरमूर्तिं जटान्विताम् ॥ १३ ॥
यवनोऽपि महीशानि परोऽपि स्वस्वदेवताम् ।
पश्चिमायां जलस्थाने पूजयेद् वृष्टिपुष्टये ॥ १४ ॥
सम्पूज्य भोग निर्माय जपः सूर्यस्य सन्मुखैः ।
विधेयश्चातपे स्थित्वा जनैः स्वस्वगुरूदितः ॥ १५ ॥
क्षुद्रैः कृता जीवहिंसा क्षुद्रदेवस्य तुष्टये ।

भी नैवेद्य पूजा आदि यहाँ शान्ति कर्मों का मनन करने के लिये करना और अन्तिम दिन भूतों का बाकुल करना ॥ १० ॥ एक जिनेन्द्रदेव का पूजन से समस्त देव जगत् में पूजित हो जाते हैं क्योंकि भागवती शक्ति सब देवों में रही हुई है ॥ ११ ॥ पक्षपातबुद्धि से कोई विष्णुमत वाले या शिवमत वाले जिन पूजा न करे तो उन्हें अपने २ देवों का पूजना चाहिये ॥ १२ ॥ वैष्णव जलशय्या वाली विष्णु की मूर्ति का पूजे और शिवमत वाले गंगा युक्त जटा वाली शिवमूर्ति का पूजे ॥ १३ ॥ यवन लोग मसजिद को पूजें और दूसरे लोग अपने २ देवताओं को पश्चिम दिशा में जल स्थान पर वृष्टि के लिये पूजें ॥ १४ ॥ अच्छी तरह भक्ति से पूजन कर नैवेद्य चढ़ा कर सूर्य के सन्मुख धूप में रह कर अपने २ गुरु से कहा हुआ विधिपूर्वक जाप जपे ॥ १५ ॥ क्षुद्र जन क्षुद्र देवता की तृप्ति के लिये जीवहिंसा करते हैं उससे कदाचित् देवानुकूलता से हो तृप्ति होती है ॥

तथापि क्रियते वृष्टिः क्वचिद्दैवानुकूल्यतः ॥ १६ ॥
शिष्टैर्न साऽनुमन्तव्या पन्था नाद्रियतेऽपि सः ।
यतः पवित्रा देवेन्द्र-प्रमुखा वृष्टिनायकाः ॥ १७ ॥
हिंसया ते न तुष्यन्ति प्रीयन्ते ते हि पूजया ।
नैवेद्यैर्विविधैर्धूपै-र्गन्धैः स्तोत्रैर्जपैस्तथा ॥ १८ ॥
येऽनभिज्ञा जपार्चासु कृषिकर्मादितत्पराः ।
तैरप्यातपसंस्थानैः कार्यं त्रैरात्रिकं व्रतम् ॥ १९ ॥
चतुर्विद्युत्कुमारीणां माघाऽसितायवासरे ।
द्विसाहस्रो जपः कार्य-स्तासां सन्तुष्टये बुधैः ॥ २० ॥
माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नागा उदधयस्तथा ।
स्तनिता भवनाधीशा आराध्या जपकर्मभिः ॥ २१ ॥
प्रत्येकं तु द्विसाहस्रो गणनं प्रतिवत्सरम् ।
विधेयं प्रीतये तेषां तद्देवीनां तथैव च ॥ २२ ॥

१६॥ यह जीवहिंसादि की विधि सज्जनों को माननीय नहीं है कारण यह राक्षसी मार्ग है, जिस से अनादरणीय है । वृष्टि के नायक तो पवित्र देवेन्द्र आदि देव ही हैं ॥१७॥ ये हिंसा से संतुष्ट नहीं होते हैं मगर पूजन से अनेक प्रकार के नैवेद्य से, धूप से, सुगंधित द्रव्यों से, स्तुति करने से और उन का ध्यान करने से ही संतुष्ट होते हैं ॥१८॥ जो खेती कार (किसान) आदि लोग ध्यान-पूजन में अनजान हैं, वे सूर्यसमुख बैठ कर त्रैरात्रिक व्रत (तीन उपवास) करें ॥१९॥ सुज्ञ जन चतुर्विध विद्युत्कुमारियों को सन्तुष्ट करने के लिये माघ कृष्णा प्रति पदा के दिन दो हजार जाप करें ॥ २०॥ माघ शुक्ल चतुर्थी के दिन नागकुमार, उदधि कुमार स्तनितकुमार, और भुवनपति देवों की आराधना जप कर्म से करें ॥२१॥ प्रत्येक वर्ष उन प्रत्येक देवों का दो हजार जाप उन को संतुष्ट करने के लिये जपे । इसी तरह उन की देवियों का भी जाप करना ॥२२॥ ऊपर मूल में लिखा हुआ

ॐ ह्रीं नमो म्ल्व्र्यूं मेघकुमाराणां ॐ ह्रीं श्री नमो क्ष्म्ल्व्र्यूं मेघकुमारिकाणां वृष्टिं कुरु कुरु सर्वोपद्रव स्वाहाः । ॐ ह्रीं मेघकुमार आगच्छ आगच्छ स्वाहाः ।

एव नामानि सर्वेषा जप्यानि वृष्टिहेतवे ।
जपात् सन्तर्पिताः सर्वे देवा वृष्टिविधायिनः ॥ २३ ॥
ये ग्रामदेवता हिंस्रा नागा भूताश्च गुह्यका. ।
ये चान्ये भगवत्याद्यास्तान् नैवाशातयेद् बुधः ॥ २४ ॥
जिनार्चान्ते क्षेत्रदेवी कायोत्सर्गाऽऽविधानतः ।
सम्यग्दृशामपि स्मार्या एव भुवनदेवता ॥ २५ ॥

अथ देशाधिकार देशयन्त्रोद्धार —

प्रथम नवकोष्टकयन्त्र स्वस्तिकाकार कृत्वा तत्र मध्यकोष्टके वाग्बीजं ब्रह्मरूपं 'ऐं' विन्यस्य परितो 'नमो अरिहंताणं' इति लेख्यम । ततो दक्षिणकोष्टे 'ह्रीं' इति शिवशक्तिबीजं महेश्वररूप, तदधोऽपि 'अमला' इतिइन्द्राणीनाम लेख्यम्। ततो नैऋतकोष्टके 'अचन्द्रा' इति, पश्चिमकोष्टके 'शुचिमेघा' इति, वायव्ये 'नवमिका' इति, उत्तरकोष्टके 'क्लीं' इति विष्णुबीजं तदधो 'रोहिणी' इति, ईशानकोष्टके 'शिवा' इति, पूर्वस्या 'पद्मा' इति, आग्नेयकोष्टके 'अज्'

जाप विधि पूर्वक करे। इसी तरह सब देवों के नाम का जाप वृष्टि के लिये जपे। उन का ध्यान करने से सब देवता सन्तुष्ट हो कर वृष्टि के करने वाले होते हैं ॥२३॥ बुद्धिमान जन ग्रामदेवता हिंस्रदेवता नागदेवता भूत देवता और यक्ष आदि देवों की और भगवती आदि देवियों की आशातना नहीं करें ॥२४॥ सम्यग्दृष्टि जनों को भी जिनपूजा के पूजन के बाद कायोत्सर्ग में रही हुई क्षेत्रदेवी की और भुवनदेवी की विधिपूर्वक स्मरण करना चाहिये ॥२५॥

इति, एता अष्टौ इन्द्राग्रमहिष्यः । ततः स्वस्तिके पूर्वभागे 'नमो सिद्धाणं' दक्षिणस्यां 'नमो आयरियाणं' पश्चिमायां 'नमो उवज्झायाणं' उत्तरस्यां 'नमो लोए सव्वसाहूणं' इति पञ्चपदानि लिखितव्यानि । स्वस्तिकान्तराले अग्निकोणे 'आवर्त्तः' १, नैर्ऋते 'प्रत्यावर्त्तः' २, वायव्ये 'नन्दावर्त्तः' ३, ईशाने 'महानन्दावर्त्तः' ४, तदुपरि अग्नौ 'चित्रकनकायै नमः' १, नैर्ऋते 'शतह्रदायै नमः' २, वायव्ये 'सौदामिन्यै नमः' ३, ईशाने 'चित्रायै नमः' ४ इति चतस्रो विद्युत्कुमारिका महत्तराः । ततः स्वस्तिकपूर्ववलनकोष्ठके 'सोमाय नमः' तदग्रे 'अ आ अं अः' ततो द्वितीयवलनकोष्ठके 'द्रोणः' तदुपरितनकोष्ठके 'श्रों' इति । ततो दक्षिणवलने 'यमाय नमः' तदग्रे 'इ ई उ ऊ' ततो द्वितीयवलनकोष्ठके 'आवर्त्तः' तदुपरितनकोष्ठके 'क्रों' इति । ततः पश्चिमवलने 'वरुणाय नमः' तदग्रे 'ऋ ॠ ऌ ॡ' ततो द्वितीयवलनके 'पुष्करावर्त्तः' तदुपरितनकोष्ठके 'ह्रौं' इति । तत उत्तरवलनके 'धनदाय नमः' तदग्रे 'ए ऐ ओ औ' ततो द्वितीयवलनके 'संवर्त्तः' इति तदुपरितनकोष्ठके 'व्लौं' इति । ततः प्रागुदिशि "ॐ ह्रीं नमो भगवओ पासनाहस्स धरणिंदपूइयस्स तस्स भत्तीए ॐ ह्रीं मेघकुमार आगच्छ २ स्वाहा" स्वस्तिकाग्रे "ॐ ह्रीं नमो वासुदेवाय क्षीरसागरशायिने शेषनागासनाय इन्द्रानुजाय अत्र आगच्छ २ जलवृष्टिं कुरु २ स्वाहा" एवं स्वस्तिसमापर्य रेखान्तरे "ॐ ह्रीं नमो म्ल्व्र्यूं मेघकुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो म्ल्व्र्यूं मेघकुमारिकाणां महावृष्टिं कुरु २ सर्वोपद्रवं हन्तु नागकुमारा सव्वेणागकुमाराओ उदहिकुमारा उदहिकुमाराओ थणियकुमारा थणियकुमाराओ महा-

वृष्टिकरा भवन्तु" । ततो द्वितीयवलये पूर्वादिचतुर्दिक्षु 'गाथुभ' १- शिव २- शङ्ख ३- मनशिल ४- नामानश्चत्वारो ना-गराजाः स्थाप्याः । चतुर्विदिक्षु 'कर्कोटक' १, कर्दमक. २, कैला-सः ३, अरुणप्रभाख्यश्च ईशानाग्निरक्षोऽनिलक्रमेण स्थाप्याः॥ जलबीजमातृका चतुर्दिक्षु देया । तृतीयवलये "ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते महेन्द्राय मेघवाहनाय ऐरावतस्वामिने वज्रायुधाय अत्रागच्छ वृष्टिं कुरु २ स्वाहा" इति पूर्वदिशि लिखनीयम् । दक्षिणस्यां "ॐ नमो भगवते श्रीमहस्रकिरणाय वरुणदेवाय मकरवाहनाय गभस्ति अर्यमरूपेण अत्रागच्छ वृष्टिं कुरु २ स्वाहा" । पश्चिमायां "ॐ ह्रीं नमो भगवते वरुणदेवाय जलस्वामिने मकरासनाय रोहिणीमदनाचित्रा-श्यामासहिताय मेघनादाय अत्रागच्छ महाजलवृष्टिं कुरु २ स्वाहा" । उत्तरस्यां "ॐ ह्रीं नमो भगवते चन्द्राय अ-मृतवर्षिणे सर्वौषधिनाथाय कर्कचारिणे इहागच्छ २ महारस वृष्टिं कुरु २ स्वाहा" इति लेख्यम । चतुर्थवलये याम्यदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो धरणिंदस्स कालवाल-कोलवाल-सेल वाल-संखवालप्पमुहा सव्वे णागकुमारा णागकुमारीओ इह आगच्छन्तु महाजलवुट्ठिं कुणन्तु" इति पश्चिम दिक् पर्यन्त लेख्यम । तत उत्तरदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो भूयाण दस्स कालवाल-कोलवाल-सगवाल-सेलवालप्पमुहा । सव्वे णागकुमारा णागकुमारीओ इह आगच्छन्तु महाजलवुट्ठिं कुणन्तु" इति पूर्वदिकपर्यन्त लिखनीयम । पञ्चमवलये द-क्षिणदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो जलकन्त नमहिंदस्स । जल जलन्तर जलकान्त जलप्पहाईया उदहिकुमारा । उदहिकुमा रीओ य इह आगच्छन्तु" इत्यादि प्राग्वत पश्चिमदिक्

पर्यन्तं लिखनीयम् । तत उत्तरदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो जलप्पहिंदस्स जल जलतर जलप्पह जलकंताईया उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ य " इत्यादि प्राग्वत् पूर्वदिक्पर्यन्त लेख्यम् । षष्ठे वलये दक्षिणदिशः प्रारभ्य "ॐ ह्रीं नमो घोसमहिंदस्स आवत्त वियावत्त नंदियावत्त महानंदियावत्तप्पमुहा सव्वे थणियकुमारा थणियकुमारीओ य इहागच्छन्तु महामेहवुट्ठि कुणंतु " इति पश्चिमदिक्पर्यन्तम् । तथा उत्तरदिशः प्रारभ्य " ॐ ह्रीं नमो महाघोसमहिन्दस्स आवत्त वियावत्त महानंदियावत्त नंदियावत्तप्पमुहा थणियकुमारा थणियकुमारीओ य इहागच्छतु महामेहवुट्ठि कुणंतु स्वाहा " इति पूर्वदिक्पर्यन्त यावल्लिखनीयम् । अत्र चतुर्थपञ्चमषष्ठेषु त्रिषु वलयेषु मध्यचक्रादौ ' अल्ला सक्का सतेरा सोदामणी इदा घणविज्जुयाइया णागकुमारीओ उदहिकुमारीओ थणियकुमारीओ वा ' इति यथास्थान लिखनीयम् । ततः सप्तमवलये पूर्वदिशः समारभ्य " ॐ ह्रीं मेघकरा मेघवती सुमेघा मेघमालिनी तोयधारा विचित्रा च वारिषेणा बलाहिका इहागच्छन्तु " । दक्षिणस्यां " ॐ ह्रीं अलीता सोल्का सतह्रदा सोदामिनी ऐन्द्री घनविद्युत्प्रमुखा विद्युत्कुमार्य इहागच्छन्तु " । पश्चिमायां " ॐ ह्रीं अब्भिंतरपरिसाए सट्ठि सहस्सा मज्झिमपरिसाए सत्तारि सहस्सा बाहिरपरिसाए असीइ सहस्सा नागकुमारा इहागच्छन्तु " । उत्तरस्यां " ॐ ह्रीं सव्वे णागोदहिथणियकुमारा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चमरस्स महारण्णो आणाए महाबुट्ठिकरा भवन्तु " । तत्र सप्तमवलयं यन्त्र कृत्वा दिक्षु लिकारयुक्तं विदिक्षु ठॅकित, सर्वत्र वज्राकारवेष्टि:

ह्यामाभ्यां नमः' इति. तदुपरि मायाबीज प्राकारत्रयवेष्टितम् । प्रान्ते क्रोंकारयुक्तं लेख्यम् । इदं यन्त्रं कुङ्कुमाद्यष्टगन्धेन लिखित्वा आतपे धार्यम् । तदग्रे " तुह समरणजलवरिसिसित्त माणवमहमेइणि, अवराबरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहणि । जायइ फलभरभरिय हरियदुहदाहअणोवम, इय महमेइणिवारिवाह दिस पास मइ मम " ॥१॥ गाथेयम् अस्मानिर्यो क्षुभित मोऽम्भालकाचन-' इत्यादिकं श्रीभक्तामरस्तोत्रकाव्यं वा गणनीयम् । तेनाच्चाम्लादितपसा सूर्याभिमुखाष्टोत्तरशतजापेन मेघाकर्षणम् ।

एवं एनां कलामध्ये या मेघाकृष्टिरीरिता ।
रूपभेदा समाजायि ज्ञा दोध्यागमताम्त्रतः ॥२६॥

अथ इह मेघस्थापनाय --

ॐ ह्रीं वायुकुमार आगच्छ २ स्वाहा । स्थापना यथा-
गतज्जापविधानेन मेघस्तम्भा विधीयते ।
यन्त्रं तथेष्टिकायुग्मे लिखित्वा न्यस्यते भुवि ॥ २७ ॥
मेघाकर्षणवर्षणादिकरणी विद्यानवद्यागमा
देया मेघमहोदये रतिभृतं ज्ञात्राय पात्राय सा ।

देवीमंत्रजपादिशक्तिजननी हेतुर्मृतीयोऽप्ययं,
सिद्धेः शुद्धधियां प्रसिद्धिभवनं शास्त्रं तदायं मुदे ॥२८॥

इति श्री मेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय
श्रीमेघविजयगणिविरचिते देवाधिकारस्तृतीयः ॥

यह प्रसिद्धि का भवन (स्थान) रूप यह ग्रन्थ शुद्ध बुद्धि वाले पुरुषों को आनंद के लिये है ॥ २८ ॥

-इतिश्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य
जैनेन विरचितया मेघमहोदय बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया ।

अथ चतुर्थ संवत्सराधिकारः ।

संवत्सरः सरस-शास्त्रविधि विधेयाद
धाराधरेण धरणीभरणेन सद्यः ।
गन्धद्विपेन्द्र इव पुष्करपुष्पशाली
श्रीनाभिसम्भवजिनेश्वरसन्निधानात् ॥१॥
द्रव्यतः क्षेत्रतो भावात् त्रिविधं वृष्टिकारणम् ।
संकलस्याथ कालोऽपि तुर्यो हेतुर्विदर्श्यते ॥२॥

अथ वर्षद्वारोमि—

शाकं वत्सरमायनाद्यदिवम मास ,सपक्ष दिन,
पोताङ्घि नृपमन्त्रिधान्यपरसादीशाः परे पूर्वगाः ।
अब्दस्यापि च जन्मलग्नमनिल विद्युत्युताभ्रोदयं,
गर्भं वारिमुचां तिथि ग्रहगण वारं सनक्षत्रकम् ॥३॥
कर्पूरसर्वतोभद्रचक्रे योगान् जलोदयान् ।
शकुनांश्च विमृश्यैव ज्ञेयं वर्षेशुभाशुभम् ॥४॥
शाकस्त्रिघ्नो युतो द्वाभ्यां चतुर्भागेऽवशेषितः ।
समेऽङ्के स्यादल्पवृष्टिः प्रचुरा विषमे पुनः ॥५॥
राशीश्वरोपपयुक् त्रिगुणो, लाभः शराढ्यस्तिथिभक्तशेषः ।
लब्धे त्रिगुणे शरयोजितेऽस्य, बाणेन्दुभागे व्यय एव शिष्टः ।६

राशिस्वामी वर्षराजस्य दशावर्षध्रुवयुक्तः क्रियते, तत्-त्रिगुणीकार्यः, तत्र पञ्चभिर्युक्त कार्यस्तस्य पञ्चदशभिर्भागे शेषाङ्कत आयः स्यात । पश्चाल्लब्धाङ्के त्रिगुणीकृते पञ्चभि-

दिन, मास, पक्ष, दिन, अगस्त्यतारा वर्ष का राजा और मन्त्री, धान्येश, रसेश, वर्ष का जन्मलग्न, वायु, बीजली के साथ बद्दल का होना, मेघ का गर्भ, तिथि, ग्रहसमूह, वार, नक्षत्र कर्पूरचक्र, सर्वतोभद्रचक्र, जल के उदय (वर्षा) का योग और शकुन इत्यादिक का विचार करके ही वर्ष का शुभाशुभ जानना ॥३-४॥

शालिवाहन शक को त्रिगुणा करके दो मिलाना, उसमें चार का भाग देना जो समशेष बचे तो अल्पवृष्टि और विषम शेष बचे तो बहुत वृष्टि हो ॥५॥ राशि के स्वामी और वर्ष के स्वामी के अष्टोत्तरी दशा के ये दोनों ध्रुवाङ्क मिलाकर त्रिगुणा करना, इसमें पांच मिलाकर पन्द्रह से भाग देना, जो शेष बचे वह लाभ-आय है और लब्धाङ्क को त्रिगुणा करके पांच मिलाना। इसमें पन्द्रह से भाग देने से जो शेष बचे वह 'व्यय' है, यह वर्ष का आयव्यय है ॥ ६ ॥ कोई बारह राशियों के आय और व्यय का मिलान करते हैं,

विषमस्थ जगत्सर्वं विविधोपद्रवान्वितम् ।
मूषकैश्च शुकैर्देवि! विलम्बे पीड्यते जनः ॥१२॥
स्वल्पोदका जने मेघा धान्यमौषधपीडनम् ।
दुर्भिक्ष जायते सस्य विकारिवत्सरे प्रिये! ॥१३॥
पृथिव्यां जलस्य शोषो धने धान्ये च पीडनम् ।
मेघो न वर्षति प्रायः पीडा स्यान्मानुषी भुवि ॥१४॥
क्वचिच्च धान्यनिष्पत्ति-मण्डल निरुपद्रवम् ।
मेघाश्च प्रबला लोके प्लवे सवत्सरे प्रिये! ॥१५॥
सुभिक्ष सर्वदेशेषु तृप्ता गौर्ब्राह्मणास्तथा ।
नन्दति च प्रजा सौख्ये शुभकृद्वत्सरे प्रिये! ॥१६॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्य विग्रहश्च महद्भयम् ।
क्रूरैर्वक्रगतैर्देवि! शोभने वत्सरे प्रिये! ॥१७॥
विषमस्थ जगत्सर्वं व्याधिरोगसमाकुलम् ।

धान्य सामान्य हो ॥ ११ ॥ हे देवि! विलम्बवर्ष मे सब जगत अनेक प्रकार के उपद्रवोंसे अव्यवस्थित हो और चूहा टिड्डी आदि से लोक दुःखी हों ॥ १२ ॥ हे प्रिये! विकारीवर्ष मे दुष्काल हो, वर्षा थोडी हो, धान्य और औषधि का नाश हो, और घास पैदा हो ॥ १३ ॥ शार्वरीवर्ष में पृथ्वी में जल सुख जावे । धन धान्य का विनाश हो, प्राय मेघ न बरसे और जगत् में मनुष्यकृत दुःख हो ॥ १४ ॥ हे प्रिये! प्लववर्षमें क्वचित् धान्य पैदा हो, देश उपद्रव रहित हो और पृथ्वी पर प्रबल वर्षा बरसे ॥ १५ ॥ हे प्रिये! शुभकृत्वर्ष में समस्त देश मे सुकाल हो, गो ब्राह्मण तृप्त हो और सुख मे प्रजा आनन्द करे ॥ १६ ॥ हे देवि! शोभनवर्ष मे सुकाल हो, कल्याण हो आरोग्य हो, यदि क्रूरग्रह वक्रगतिवाले हों तो विग्रह और बडा भय हो ॥ १७ ॥ क्रोधिवर्ष में समस्त जगत् आधि व्याधि से व्याकुल हो कर अन्यअन्य हो और थोडी वर्षा हो ॥ १८ ॥ विश्वावसु वर्ष मे सर्वत्र कल्याण हो सब धा

अल्पवृष्टिश्च विज्ञेया क्रोधः क्रोधिनि वत्सरे ॥१८॥
सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वसस्यमहर्घता।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां वृष्टिश्च प्रबला पुनः ॥१९॥
विश्वावसौ सुवृष्टिश्च काष्ठलोहमहर्घता।
पार्थिवाश्च माण्डलिका सामन्ता दण्डनायका. ॥२०॥
पीडिताश्च प्रजाः सर्वाः क्षुधार्त्ताः स्युः पराभवे।
धान्यौषधानि पीड्यन्ते ग्रीष्मे वर्षति माधवः ॥२१॥
। इति द्वितीया वैष्णवीविंशतिका।
प्लवङ्गे पीडिता लोकाः सर्वे देशाश्च मण्डलाः।
जायन्ते सर्वसस्यानि कुत्रापि निरुपद्रवः ॥१॥
सौम्यदृष्टिर्भवेद् राजा कीलके च शुभं भवेत्।
सुभिक्षं क्षेममारोग्य सर्वोपद्रववर्जितम् ॥२॥
सौम्ये राजा प्रजा सौम्या भुवि सौम्यं प्रवर्त्तते।
तोयपूर्णा मही मेघै-र्महावर्षा दिने दिने ॥३॥

न्य तेज हों, प्रबल वर्षा बरसे और सब धान्य पैदा हों ॥ १९ ॥ पराभववर्ष में अच्छी वर्षा हो, काष्ठ और लोहा तेज हो, देशका राजा माण्डलिकराजा, सामन्त और दण्डनायक आदि दुःखी हों, सब प्रजा क्षुधा से दुःख पावे, धान्य और औषधि का नाश हो और ग्रीष्मऋतु में वर्षा बरसे ॥ २०-२१ ॥ इति द्वितीया वैष्णवी विंशतिका।

प्लवङ्गवर्ष में सब देशके और प्रान्तके लोग दुःखी हों कोई जगह उपद्रव रहित भी हो और सब धान्य पैदा हों ॥ १ ॥ कीलकवर्ष में शुभ हो, राजा अच्छी नीतिवाले हों सुकाल हो, लोग कल्याणवाले आरोग्यवाले और उपद्रवरहित हों ॥ २ ॥ सौम्यवर्षमें राजा और प्रजा सुखी हों, पृथ्वी पर सुख फैले, पृथ्वी जल से पूर्ण हो और प्रत्येक दिन बड़ी वर्षा हो ॥ ३ ॥ साधारण वर्ष में राजा उपद्रव रहित हो, देश और प्रान्त में जल वर्षा हो और

निरुपद्रवा भूपालाः सर्वं सस्य प्रजायते ।
साधारणे मेघवर्षा देशे स्यात् खण्डमण्डले ॥४॥
परस्पर विरोधः स्या-ज्जनानां भूभुजां तथा ।
कान्यकुब्जे त्वहिच्छत्रे कृषिनाशो विरोधिनि ॥५॥
अभिभूतं जगत्सर्वं क्लेशैश्च विविधैः प्रिये ! ।
मारुतो बहुदाहश्च परिधाविनि सुव्रते ! ॥६॥
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां सुभिक्ष जायते तथा ।
प्रमाथिवर्षे वर्षा स्याद् देशे वा खण्डमण्डले ॥७॥
नश्यन्ति सर्वधान्यानि सर्वसस्यमहर्घता ।
घृत तैल सममूल्या-दानन्दे नन्दिता प्रजा ॥८॥२००॥
कोद्रवाः शालयो मुद्गाः पीड्यन्ते ते वरानने ! ।
सर्वौषधीनां धान्यानि राक्षसे निष्ठुरा जनाः ॥९॥
दुर्भिक्षं जायते देशे धान्योपधिप्रपीडनम् ।
नश्यन्ति धनधान्यानि देवि ! स्यात् नलाभिधे ॥१०॥
गोमहिष्यो विनश्यन्ति ये चान्ये नटनर्त्तकाः ।

माधवो नैव वर्षेच पिङ्गले नात्र संशय ॥११॥
गोमहिष्यो हिरण्य च रौप्य नाम्र-विशेषतः ।
सर्वस्वमपि विक्रीय कर्त्तव्यो धान्यसंग्रहः ॥१२॥
तेन संजायते देवि ! दुर्भिक्ष क्रमतो जने।
पश्चाद् वर्षन्ति मेघोऽपि सर्वधान्य प्रजायते ॥१३॥
जायन्ते बहुला रोगाः कालसंवत्सरे प्रिये ! ।
अल्पोदकास्तथा मेघा अल्पसस्या च मेदिनी ॥१४॥
तोयपूर्णो भवेद् मेघो बहुसस्या वसुन्धरा ।
निष्ठुरा पार्थिवा देवि! रौद्रे रौद्र प्रवर्त्तते ॥१५॥
सुभिक्ष समता धान्ये व्यवहारो न वर्त्तते ।
जायते मध्यमा वृष्टिर्दुर्मतौ वत्सरे सति ॥१६॥
सुभिक्षं जायते स्वस्थ-देशाश्च निरुपद्रवाः ।
प्रजानां सुखितारोग्य जाते दुन्दुभिवत्सरे ॥१७॥
सर्वस्वमपि विक्रीय कर्त्तव्यो धान्यसंग्रहः ।
रुधिरोद्गारिवर्षे च दुर्भिक्ष भविता महत् ॥१८॥

धान्यनाशः स्वल्पवर्षा नृपाणां दारुणो रणः ।
तस्करा बहुला रोगा रुधिरोद्गारिवत्सरे ॥१९॥
रोगान्मृत्युश्च दुर्भिक्षं धान्यौषधप्रपीडनम् ।
पापबुद्धिरता लोका रक्ताक्षिवत्सरे प्रिये ! ॥२०॥
ननु रोगाश्च दुर्भिक्षं विविधोपद्रवास्तथा ।
क्रोधश्च लोके भूपेषु प्रजाते क्रोधने प्रिये ! ॥२१॥
मेदिनीचलनं देवि ! व्याकुलाश्च चराचराः ।
देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं क्षयाब्दे क्षीयते प्रजा ॥२२॥
सौराष्ट्रे मध्यदेशे च दक्षिणस्यां च कोङ्कणे ।
दुर्भिक्षं जायते घोरं क्षये संवत्सरे प्रिये ! ॥२३॥

इति रौद्रीयमेघमाला शिवकृता ।

अथ जैनमत दुर्गदेव स्वकृतषष्टिसंवत्सरग्रन्थं पुनरारभते—

ॐनमः परमात्मानं वन्दित्वा श्रीजिनेश्वरम् ।

जो कुछ भी हो वह बेच कर धान्य का संग्रह करना अच्छा है ॥ १८ ॥ धान्य का नाश हो, थोड़ी वर्षा हो, राजाओं का बड़ा घोर युद्ध हो, बहुत चोर और रोग हो ॥ १९ ॥ हे प्रिये! रक्ताक्षिवर्ष में रोगसे बहुत प्राणी मरें, दुष्काल हो, धान्य और औषधियों का नाश हो, और लोग पापबुद्धि वाले हों ॥ २० ॥ हे प्रिये! क्रोधनवर्ष में निश्चयसे रोग और दुष्काल हो, अनेक प्रकारके उपद्रव हों, लोगोंमें बहुत क्रोध हो ॥ २१ ॥ हे देवि! क्षयसंवत्सरमें भूकम्प हो, पृथ्वी चराचर व्याकुल हो, देशभङ्ग हो, दुष्काल हो और प्रजा का नाश हो ॥ २२ ॥ सौराष्ट्रदेश मध्यदेश और दक्षिण में कोङ्कणदेश आदि में बड़ा दुष्काल हो ॥ २३ ॥ इति रौद्रीयमेघमालायां तृतीया विंशतिका ॥

पञ्च परमेष्ठी के वाचक ॐकार को नमस्कार करके तथा परमात्मा जिनेश्वरदेव को वन्दन करके और केवलज्ञान का आश्रय लेकर दुर्गदेवमुनि

केवलज्ञानमास्थाय दुर्गदेवेन भाष्यते ॥ १ ॥
पार्थ उवाच–भगवन् दुर्गदेवेश! देवानामधिप! प्रभो ! ।
भगवन् कथ्यतां सत्यं सवत्सरफलाफलम् ॥ २ ॥
दुर्गदेव उवाच–शृणु पार्थ! यथावृत्त भविष्यन्ति तथाद्भुतम् ।
दुर्भिक्ष च सुभिक्षं च राजपीडा भयानि च ॥ ३ ॥
एतद् योऽत्र न जानाति तस्य जन्म निरर्थकम् ।
तेन सर्वं प्रवक्ष्यामि विस्तरेण शुभाशुभम् ॥ ४ ॥

प्रभवविभवौ शुभौ, शुक्लोऽशुभः, प्रमोदप्रजापती शुभौ, अङ्गिरा अशुभः, श्रीमुखभावौ शुभौ, युवा विरुद्धः, धाता समः, ईश्वरबहुधान्यौ शुभौ, प्रमाथी विरुद्धः, विक्रमवृषभौ शुभौ, चित्रभानुर्विरुद्धः, सुभानुतारणौ शुभौ, पार्थिवो विरुद्धः, व्ययः समः ॥ इति प्रथमा विंशतिका ॥

भणियं दुग्गदेवेण जो जाणइ वियक्खणो ।
सो सव्वत्थ वि पुज्जो णिच्छयओ लद्धलच्छी य ॥ १ ॥

कहते हैं ॥ १ ॥ पार्थ उवाच–हे परमपूज्यवर्य भगवन् दुर्गदेवेश ! संवत्सर का फलाफल सत्यतापूर्वक कहो ॥ २ ॥ दुर्गदेव उवाच–हे पार्थ ! दुष्काल सुकाल राजपीडा भय अभय आदि होंगे उनका यथार्थ अद्भुत वर्णन सुन ॥ ३ ॥ उसको जो नहीं जानता है उसका जन्म व्यर्थ है इसलिये मैं सब शुभाशुभ को विस्तार पूर्वक कहता हूं ॥ ४ ॥ प्रभव और विभववर्ष शुभ है, शुक्लवर्ष अशुभ है, प्रमोद और प्रजापति वर्ष शुभ हैं अङ्गिरा अशुभ है, श्रीमुख और भाववर्ष शुभ है, युवावर्ष विरुद्ध है, धाता समान है, ईश्वर और बहुधान्यवर्ष शुभ है प्रमाथी विरुद्ध है, व्यय समान है ॥ इति प्रथमा विंशतिका ॥

दुर्गदेव मुनि ने जो कहा है उसको यदि विचक्षण पुरुष जाने तो वह सर्वत्र माननीय होता है और निश्चय से लक्ष्मी को प्राप्त करता है ॥ १ ॥

सर्वजित्सर्वधारिणौ शुभौ, विरोधिविकृतखरा विरुद्धाः, नन्दनविजयजयमन्मथाः शुभाः, दुर्मुखो विरुद्धः, हेमलम्बिविलम्बौ शुभौ, विकारी विरुद्धः, शर्वरीप्लवशुभकृच्छोभनाख्याः शुभाः, क्रोधनो विरुद्धः, विश्वावसुः शुभः, पराभवो विग्रही ॥ इति द्वितीयविंशतिका ॥

प्लवङ्गकीलकौ शुभौ, सौम्यः समः, साधारणविरोधिकृतौ शुभौ, परिधावी विरुद्धः, प्रमाथी आनन्दश्च शुभः, रुधिरोद्गारीरक्ताक्षिक्रोधनक्षयाख्या विरुद्धाः ॥ इति तृतीयविंशतिका ॥

तत्र श्लोका अपि—बहुतोयधरा मेघा बहुसस्या च मेदिनी।
प्रशान्ताः पार्थिवा लोकाः प्रभवे वत्सरे ध्रुवम् ॥१॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वव्याधिविवर्जितम्।
हृष्टतुष्टा जनाः सर्वे विभवे च न संशयः ॥२॥

रोगाश्च विविधाश्चैव नराणां वाजिदन्तिनाम् ।
पृथ्वीपतिविनाशश्च ध्रुवं शुक्ले प्रजायते ॥३॥
उत्तमं च जगत्सर्वं धनधान्यसमाकुलम् ।
नित्योत्सवः प्रजावृद्धिः प्रमोदे नात्र संशयः ॥४॥
नीरोगाश्च निराबाधाः सर्वदुःखविवर्जिताः ।
बहुक्षीरघृता गावः प्रजासुखं प्रजापतौ ॥५॥
हर्षितं च जगत्सर्वं नरा निर्धनधान्यकाः ।
प्रजाविवाहमाङ्गल्य-मङ्गिरायां तु निश्चितम् ॥६॥
सुभिक्षं कुशलं लोके वर्षाकालेऽतिशोभनम् ।
वृद्धिश्च सर्वसस्यानां श्रीमुखे सति निर्णयात् ॥७॥
बहुक्षीरघृता गावो धान्यं च प्रचुरं स्मृतम् ।
समर्घं च भवेत् सर्वं भावे भावेषु सुस्थता ॥८॥
महर्घं जायते धान्यं घृतं तैलं तथैव च ।
प्रजानां जायते वृद्धिर्युवा युवतिनन्दनः ॥९॥

प्रकार के रोग हों और राजा का विनाश हो ॥ ३ ॥ प्रमोदवर्ष में समस्त जगत् उत्तम धन धान्य से पूर्ण हो सर्वत्र शुभोत्सव हो और प्रजा की वृद्धि हो इसमें संशय नहीं ॥ ४ ॥ प्रजापति वर्ष में सब लोग रोग रहित बाधा रहित और सब प्रकार के दुःख रहित हों, गौएं बहुत घी दूध दें और प्रजा सुखी हो ॥ ५ ॥ अङ्गिरावर्षमें समस्त जगत् आनन्दित हों, मनुष्य धन धान्य से रहित हों और प्रजामें विवाह मङ्गल रहें ॥ ६ ॥ श्रीमुखवर्षमें जगतमें सुकाल और कल्याण हों, वर्षाऋतुमें बड़ी मनोहरता हो और सब प्रकारके धान्यकी वृद्धि हो ॥ ७ ॥ भाववर्षमें गौएं बहुत दूध घी दें, बहुत धान्य पैदा हो और सब वस्तुके भाव सस्ते हों ॥ ८ ॥ युवावर्षमें धान्य तेज हो तथा घी तेल भी तेज है। प्रजाकी वृद्धि और युवा स्त्री पुरुष प्रसन्न रहें ॥ ९ ॥ धातृसंवत्सरमें गेहूँ चावल आदि सब धान्य

जायन्ते सर्वसस्यानि गोधूमा व्रीहिरल्पकाः ।
इक्षुखण्डगुडा रोगा धातृसंवत्सरे क्वचित् ॥१०॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं कर्पासस्य महर्घता ।
लवणं मधुमद्यं च महर्घमीश्वरे भवेत् ॥११॥
सुभिक्षं क्षेमता मार्गे प्रशान्ताः पार्थिवा यतः ।
तस्करोपद्रवो ग्रामे बहुधान्ये न संशयः ॥१२॥
राष्ट्रभङ्गश्च दुर्भिक्षं तस्करग्रहपीडनम् ।
डामरं विग्रहो मार्गे प्रमाथी जनमन्थनः ॥१३॥
जायन्ते सर्वसस्यानि मेदिनी निरुपद्रवा ।
लवणमधुमद्याज्यं समर्घं विक्रमे भवेत्॥१४॥महर्घमितिक्वचित्
कोद्रवाः शालयो मुद्गाः कङ्गुमाषास्तिलादयः
सुलभं च भवेत् सर्वं वृषभे वृषभाः प्रियाः ॥१५॥
चणका मुद्गमाषाद्या-स्तथान्यद्द्विदलं ध्रुवम् ।
महर्घं जायते सर्वं चित्रभानौ न संशयः ॥१६॥

पैदा हों, इक्षु और गुड थोडा हो और क्वचित् रोगका संभव रहे ॥१०॥ ईश्वरवर्षमें सुकाल हो, माङ्गलिक कार्य और आरोग्य हो, कपास का भाव तेज हो, तथा लूण, मधु और मद्यका भाव भी तेज हो ॥ ११ ॥ बहुधान्यवर्षमें सुकाल हो, मार्गमें कल्याण हो, राजा शान्त रहे, गाँवमें चोरों का उपद्रव हो इसमें संशय नहीं ॥ १२ ॥ प्रमाथीवर्षमें राष्ट्रभङ्ग और दुष्काल हो, चोरों का उपद्रव हो, घोर विग्रह हो और मार्गमें लोग कष्ट पावें ॥ १३ ॥ विक्रमवर्षमें सब प्रकार के धान्य उत्पन्न हों, पृथ्वी उपद्रव रहित हो, लूण, मधु, मद्य और घी सस्ते हों ॥ १४ ॥ वृषभवर्षमें वृषभ (बैल) प्रिय हो, कोद्रवा, चावल, मूंग, कंगु उड़द और तिल आदि सस्ते हों ॥ १५ ॥ चित्रभानुवर्षमें चणा, मूंग, उड़द आदि सब द्विदलधान्य निश्चय से महँगे हों इसमें संशय नहीं ॥ १६ ॥ सुभानुवर्षमें सुकाल हो, बहुत धा-

सुभिक्षं बहुधान्यानि स्वस्था देशा नृपाः प्रजाः ।
सर्वेऽपि सुखिनो हर्षा-ज्जाते सुभानुवत्सरे ॥१७॥
अतिवृष्टिः प्रजासौख्यं धान्यौषध्यः प्रपीडिताः ।
सस्य भवति सामान्य धान्यं किञ्चित्तु तारणे ॥१८॥
बहुसस्यानि जायन्ते सौराष्ट्रे गौडमण्डले ।
लाटदेशे तथा धान्यं पार्थिवे पार्थिवक्षयः ॥१९॥
दुर्भिक्ष जायते घोर विविधोपद्रवो जने ।
अल्पवृष्टिः समाख्याता व्यये संवत्सरोदये ॥२०॥

इति प्रथमा विंशतिका ।

वर्षन्ति सोत्तमा मेघाः सर्वसस्य प्रजायते ।
समर्घं च भवेत् सर्वं सर्वजिद्वत्सरे स्मृतम् ॥२१॥
कोद्रवाः शालयो मुद्गाः कङ्गुमाषाढयो घनाः ।
सुभिक्ष सर्वदेशेषु सर्वधारिणि वत्सरे ॥२२॥
ज्वालाग्निप्रबलात्तापाद् धान्यौषध्यः प्रपीडिताः ।

जायते च नृणां कष्टं विरोधो वा विरोधिनि ॥२३॥
सर्वत्र जनपीडा स्याद् ज्वराद्धान्यमहर्घता ।
शिरोऽक्षिश्रुतिरोगादि-विकृतिर्वैकृते भवेत ॥२४॥
उपप्लुतं जगत् सर्वं तस्करैः शलभैः शुकैः ।
प्रपीडिताः प्रजा भूपाः खरेऽतिखरता भुवि ॥२५॥
स्वस्थता जायते देशे व्याधिः सर्वोऽपि शाम्यति ।
धनधान्यवती भूमि-र्नन्दने नन्दति प्रजा ॥२६॥
अल्पतोयधरा मेघा वर्षन्ति खण्डमण्डले ।
नश्यन्ति सर्वसस्यानि विजये विजया रणे ॥२७॥
क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः शूद्रा ये नरनायकाः ।
पीड्यन्ते लोकसंक्षोभो जये न्यायपरिच्युताः ॥२८॥
सरोगं जायते विश्वं दाघज्वरादिरोगतः ।
पीड्यन्ते च जगत सर्वं मन्मथे मन्मथक्रिया ॥३०॥
तुषधान्यक्षयादेव सर्वधान्यमहर्घता ।

व्यवहारविनाशश्च दुर्मुखे न सुखं क्वचित् ॥६०॥
क्षीयन्ते सर्वसस्यानि देशेषु च न सुस्थता ।
हेमलम्बे प्रजाहानि दुर्भिक्षं राजपीडनम् ॥६१॥
तस्करैः पार्थिवैर्दैवैः पराभूतमिदं जगत् ।
अर्घो भवति सामान्यो विलम्बे तु महद्भयम् ॥६२॥
दुःखितं च जगत् सर्वं बहुधा स्युरुपद्रवाः ।
विकारिवत्सरे सर्पाः वर्षा वर्षेऽत्र पश्चिमा ॥६३॥
पर्वते पर्वते वृष्टि-र्देशेऽपि खण्डमण्डले ।
व्यापारस्य विनाशश्च दुर्भिक्षं शर्वरीकृतम् ॥६४॥
सुभिक्षं जायते लोके मेदिनी तुष्यति ध्रुवम् ।
प्लावयन्ते सर्वतो नीरैः पीडिता अपि मानवाः ॥६५॥
शोभनानि च धान्यानि सुखं लोके चराचरे ।
ब्राह्मणा अपि सन्तुष्टाः शुभकृत्सरे सति ॥६६॥
सुभिक्षं सुखमारोग्य-मही गोब्राह्मणादयः ।

देशाः सुस्था प्रजाहर्षो वर्षे स्याच्छोभने जने ॥३७॥
विषमस्थं जगत् सर्वं व्याकुलं दारुणाद् रणात् ।
देशे ज्ञातौ कुटुम्बे च क्रोधी क्रोधपरः परम् ॥३८॥
सर्वत्र जायते क्षेमं सर्वरसमहर्घता ।
विश्वावसौ सस्यवृद्धिः काष्ठलोहमहर्घता ॥३९॥
पार्थिवे मण्डले मुख्यैः सामन्तैः खण्डमण्डले ।
पीडिताश्च प्रजाः सर्वा भयभीताः पराभवे ॥४०॥

इति द्वितीया विंशतिका ।

तुषधान्यक्षयादेव ग्रीष्मे धान्यमहर्घता ।
प्लवङ्गे पीड्यते भूपैः स्वदेशः परमण्डलम् ॥४१॥
जायन्ते सर्वसस्यानि सुस्थता नास्त्युपद्रवः ।
सामन्ताश्च राजानः कीलके केलिकिञ्चनम् ॥४२॥
भेरवा सौम्यवृष्टिश्च सुभिक्षं निरुपद्रवम् ।
सौम्यदृष्टिर्भवेद् राजा सौम्ये सौम्यप्रवर्त्तते ॥४३॥

तोयपूर्णा भुवि मेघा वर्षन्ति च निरन्तरम्।
साधारणे लोकहर्षः सर्वसस्य प्रजायते ॥४४॥
माधवो वर्षति जने देशेषु खण्डशः क्वचित्।
छत्रभङ्गः कान्यकुब्जे विरोधी स्याद् विरोधिनि ॥४५॥
सन्तुष्टं च जगत्सर्वं क्षेमाणि विविधान्यपि।
मरुतोऽपि वान्ति सौम्याः परिधाविनि वत्सरे ॥४६॥
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां सर्वरसमहर्घता।
तैलं घृतं समर्घाणि आनन्दे नन्दिताः प्रजाः ॥४७॥
कोद्रवा शालयो मुद्गाः पीड्यन्ते धान्यरोगतः।
विप्रपीडा राजयुद्धं राक्षसे निष्ठुराः प्रजाः ॥४८॥
दुर्भिक्षं जायते किञ्चिद् धान्यौषधविनाशनः।
आश्विने मरणं वैरं नले तापाज्जलात क्षयः ॥४९॥
सुभिक्षं देशभोगश्च रसवस्त्रमहर्घता।

क्वचिच्छोकः क्वचिन्मोदः पिङ्गले सङ्कुलं बहु ॥५०॥
दुर्भिक्षं जायते लोके सर्वरसमहर्घता ।
अस्यां स्वपकर्पासौ च कालयुक्ते कलिर्महान् ॥५१॥
तोयपूर्णाः शुभा मेघा बहुसस्या च मेदिनी
निष्ठुराः पार्थिवा देशे सिद्धार्थे वत्सरे सति ॥५२॥
उपद्रवो रणात् क्षेत्रे स्वपकैः शलभैः शुकैः ।
दुर्भिक्षं स्वल्पकं रौद्रे क्रमाद्रोगः प्रवर्त्तते ॥५३॥
सुभिक्षं भवति प्रायो व्यवहारो न वर्त्तते ।
दुर्मतौ मध्यमा वृष्टिः पश्चात् सौख्यं सुखं जने ॥५४॥
सुभिक्षं स्यान्महोत्साहाद् दुन्दुभिर्नन्दति ध्रुवम् ।
त्रिभागाः च गवां वृद्धि दुन्दुभौ मर्त्यैः शुभम् ॥५५॥
अन्नवृष्टिर्भवेद् दैवात् क्रूररूपाश्च मानवाः ।
संग्रामो दारुणो भूपे रुधिरोद्गारिवत्सरे ॥५६॥
मेदिनी पुष्पिता मेघैः सस्या धान्यमहर्घता ।

प्रायो रोगातुरा लोका रक्ताक्षे भूमिकम्पनम् ॥५७॥
राजिडम्भरदुर्भिक्ष विरोधोपद्रवाकुलम् ।
क्रोधने विषमं सर्वं मरको म्लेच्छराजना ॥५८॥
मेदिनी कम्पते सैन्यात् कम्पन्ते च महीधरा ।
देशे मङ्गाश्च दुर्भिक्षात् क्षयाब्दे क्षीयते प्रजा ॥५९॥
इति तृतीया विंशतिका ।
क्वचिज्जडविलेखनाद् वचसि विभ्रमाद् वा क्वचिद्,
प्रमादपि मतेस्तथा भवति पाठभेदो भुवि ।
तथाप्यवितथा कथा स्फुरतु वार्षिके निर्णये,
विशेषविदुषां मिथः कथनमेकमुत्पश्यतात् ॥१॥
अथ विस्तरत षष्टिवर्षाणां स्पष्टता फले ।
प्राचीनवचनैरेव गद्यरीतया निगद्यते ॥२॥
श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वाहं-वृषभं प्रणमन् स्तुवन् ।
सांवत्सरफल वच्मि प्रभवादिसमुद्भवम् ॥३॥

प्रभवनामसंवत्सरे ब्रह्मा स्वामी. चैत्रो वैशाखश्च मन्दः, सर्ववस्तुसमर्घता इत्यर्थः ज्येष्ठादयो मासास्त्रयस्तत्र धान्यमहर्घता, गोधूमयुगंधरीमुद्गादीनां महर्घता भाद्रपदोऽपि शुभः, आश्विनश्च क्वचिन्महर्घतापि रोगपीडा महती सर्वक्रयाणकं महर्घम् ॥१॥ विभवे विष्णुः स्वामी राजभयानि पृथ्व्यां नागपुरदेवगिरिदुर्गभङ्गः तिलङ्गमगधचीनदेशे महर्घता. उच्चमुलतानस्थले महाविग्रहः, अन्यत्र समता. चैत्रादिमासत्रयी महार्घा आषाढादित्रये मेघवृष्टिः, आश्विने सर्वरसमहर्घता. तथा मेघबाहुल्यं कार्त्तिकादयो मासाः पञ्च तेषु सर्ववस्तुमहर्घता गोधूमसमता ॥२॥ शुक्ले रुद्रः स्वामी छत्रभङ्गो म्लेच्छदेशेषु मन्त्रिणो राज्यं. चैत्रादिमासत्रये समर्घम्. आषाढादिमासत्रये महामेघः आश्विने जनरोगः अन्नघृत समर्घम् च

न्यत् सर्वं महार्घम्, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये सर्वं धान्यं समर्घम्, फाल्गुनमासे विड्वरम्, सर्वत्र विग्रहः, लोकग्रामपीडा, देशेषु आकुलता, शून्यत्व ग्रामेषु ॥३॥ प्रमोदे रविः स्वामी, मध्यम वर्षम्, अल्पवृष्टिः खण्डमण्डले, मेदपाटपीडा, देश उद्वसः, म्लेच्छवर्णान्वयः, छत्रभङ्गः, पर्वते तटे स्वल्पा वसतिः, तिलङ्गे राजविड्वरम्, चैत्रे वैशाखे च महर्घता, ज्येष्ठे रोगपीडा, आषाढादिमासत्रयेऽल्पमेघः, आश्विनमासे 'किञ्चिद्वर्षा, धान्यस्य कलशिका त्रयोदशफदियानाणकैः', कार्त्तिकादिमासपञ्चके महर्घम्, अनिवायुर्वाति, व्यापारिलोकपीडा, खण्डवृष्टिः, पट्टकूलादिमहर्घता, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये सर्वरसमहर्घता, फाल्गुने मध्यमः ॥४॥ प्रजापतिवत्सरे चन्द्रः स्वामी, द्वादशापि मासाः शुभाः अल्पमेघवर्षा, आश्विने रोगबाहुल्यम्, धान्यस्य कलशिका पञ्चत्रिंशत्फदियानाणकैः. कार्त्तिकादिमासद्वय मन्दं, पौषादिमासत्रये-

ऽरिष्टम्, क्वचिदुत्पात, दर्शनिलोकस्य पीडा ॥५॥ अङ्गिरायां मङ्गलः स्वामी, चैत्रो वैशाखश्च मन्दः, ज्येष्ठे वायुः प्रबलः, आषाढे मेघबाहुल्य, श्रावणादिमासत्रये रोगपीडा, कार्त्तिके सर्वान्ननिष्पत्तिः, पौषादिमासत्रये करका न मेघवर्षा इत्यर्थः ॥६॥ श्रीमुखे बुध स्वामी, चैत्रे सर्वधान्य महर्घम, आषाढे कृष्णपक्षेऽत्यन्तं मेघवर्षा, श्रावणे गोधूमा महर्घाः, घृते धान्ये च द्विगुणो लाभः, वणिग्लोकपीडा, पश्चिमायां रौरव, पूर्वस्यां परचक्रभयम, उच्चमुलतानस्थले प्रजापीडा, भाद्रपदे आश्विने च सर्वधान्य सुभिक्षम, कार्त्तिकादिमासत्रये पञ्चके वा सर्वरसानां सर्वधान्यानां महर्घता ॥७॥ भावसंवत्सरे गुरुः स्वामी, बहुक्षीरा गावो वर्षा बहुला विशोपिकाः पञ्च दश, सर्ववस्तुसमर्घता, उच्चमुलतानादौ स्यात् राजविड्वरम, लोकपीडा, घृतगुडाहिफेनपूगीमञ्जिष्ठामरिचादन्नवस्तु महर्घम,

द्रपदे पुरुषा नपुंसकानि, पश्चिमायां महती मेघवर्षा, सर्वथा न्य समर्घम्, उत्तरदक्षिणयोर्मध्ये महामेघः पर लोक पीडा, आश्विने रसकसधातुमहर्घता धान्यसमता कार्त्ति कादयो मासाश्चत्वारस्तत्र सर्वदेशो अन्न महर्घम् ॥ १० ॥ ईश्वरे राहुः स्वामी, उत्तरस्या दुर्भिक्ष. पूर्वस्या सुभिक्ष. पश्चिमायां परस्पर विरोधः, चैत्रे वैशाखेऽन्नमहर्घता, ज्येष्ठा षाढयोरल्पवृष्टि' पर सर्वधान्यमहर्घता. कार्त्तिके रौरव दुर्भिक्ष. मञ्जिष्ठामरिचलवंगएलादिपूर्गी फलक्रमतु महर्घता. मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयेऽतिदुर्भिक्ष, धान्य,महर्घ, मनुष्या णां रुण्डमुण्डानि भूमिकायां स्फलन्ति ॥११॥ बहुधान्ये केतु स्वामी पुरुषा निर्वीर्याः पश्चिमायां सुभिक्ष पर सान्य स र्वदेशमध्ये, दक्षिणस्या विग्रह' पर महाभय उत्तरापथे स र्वदेशेषु पीडा, पूर्वस्या दुर्भिक्ष अन्नसंग्रह कार्यः चैत्रवैशा

त्वयांशे किञ्चिन्महर्घता, ज्येष्ठमासे चतुर्गुणो लाभः, श्रावणाषाढयोर्मेघः, अत्र सर्वत्र महर्घं, षड्गुणो लाभः, भाद्रपदेऽत्यन्तमेघः, सर्वधान्यसमर्घता, आश्विने मेघः कनकधाराभिः, कार्त्तिकादिमासचतुष्टये समता ॥१२॥ प्रमाथिनि रविः स्वामी, आषाढे श्रावणे चाल्पमेघः, भाद्रपदे पञ्चम्यां किञ्चिन्मेघः, चैत्रे गोधूमयुगधरीमहर्घता, वैशाखे ज्येष्ठे सर्वत्र धान्यमहर्घता। पर कृष्णासप्तम्यमावस्ययोर्महामेघः, परमतोवारिष्टकार्त्तिकादिमासपञ्चसु सर्वरसमहर्घता, मञ्जिष्ठापूगीहिङ्गुलकाश्मीरजागरुपट्टसूत्रनालिकेर एतद्वस्तुमहर्घता ॥१३॥ विक्रमसंवत्सरे चन्द्रः स्वामी, राजा प्रजा सुखी, अतिमेघः, चैत्रे वैशाखे महर्घम्, अत्र द्विगुणो लाभः,पर वैशाखे म्लेच्छभयाद् नगर उद्वसमत्वम् अरण्ये वासः, वैशाखे दिनदश महान् वायुर्भूमिकम्पः प्रजापीडा, ज्येष्ठमासे द्रु-

षे युद्धं पश्चिमायां धान्य महर्घम् उत्तरापथे महादुर्भिक्ष फाल्गुनमासो मध्यमः, तस्करपाशिकभय, अन्न महर्घम्, विग्रहो राजविरोधात् महत्पातकम्,पूर्वस्यां दक्षिणस्यां वा वने वासः, पश्चिमायां महायुद्ध पर धान्यवस्तु समर्घम्॥१८॥ पार्थिवे शनिः स्वामी, उत्पातबहुलः, अन्नसंग्रहः कार्यः, चैत्रे वैशाखे महार्घता सर्वतो विग्रहः, ज्येष्ठे रोगपीडा यद्वा नृपयुद्ध आषाढे ऽल्पमेघः, धान्यं महार्घं महावायुः, श्रावणे खण्डवृष्टिः, भाद्रपदे नैर्ऋतो वायुः, अन्नमहार्घता, आश्विने वृष्टिः, गोधूमयुगन्धरीमुद्गादि महर्घं पर धातुवस्तु घृतमहर्घता, कार्तिकादिद्वये रोगपीडा, पौषमाघयोर्महार्घता, फाल्गुने समता ॥१९॥ व्ययवत्सरे राहुः स्वामी, अनावृष्टिर्दुर्भिक्ष रौरव, चैत्रो मध्यमः, वैशाखद्वये महार्घता देशविग्रहः, आषाढेऽल्पमेघः पर म-

हार्घता, श्रावणे दुर्भिक्षं मध्यदेशे विग्रहः, दक्षिणस्यां प्रजा-
पीडा, भाद्रपदे खण्डवृष्टिरन्नमहार्घता, आश्विने रोगपीडा,
पूर्वस्यां विग्रहः गोधूममहार्घता चतुर्गुणो लाभः सर्वरसमहा-
र्घता मध्यमः समयः, कार्त्तिके रोगपीडा षष्ठा विग्रहोपश-
मः, मार्गमासेऽन्नमहार्घता नवरं युद्धं किञ्चित्, पौषादिमास-
द्वयेऽतिमहार्घता, फाल्गुने समता परं मार्गस्य वैषम्यमन्न म-
हार्घम् ॥२०॥ इति उत्तमविंशतिका पूर्णा ।

सर्वजिति वत्सरे ब्रह्मा स्वामी, चैत्रादिमासत्रय महर्घ-
म्, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणे महामेघः, सर्वधान्यरसवस्तुस-
मर्घता नवान्नमुद्रोदयः, राजविग्रहः, परस्परभङ्गमहर्घता
भाद्रपदे दिनपञ्च पश्चान्महती वृष्टि, आश्विने रोगार्त्तिः स-
र्वधान्यसमर्घता कार्त्तिके राजा राज्यं करोति, प्रजासुखम-
न्नसमर्घता, मार्गशिरपौषौ उत्तमौ सर्वलोकसुखं, माघमासे

मेघो दिनत्रयः, मञ्जिष्ठामुहरामरिचसुंठीपिप्पलीपूगीप्रमुख महर्घता, फाल्गुने सर्ववस्तुरससमता उत्तमसमयः ॥२१॥ सर्वधारिणि विष्णुः स्वामी, राजा राज्यसुस्थः प्रजासुखमन्न समर्घम् मार्गशीर्षः पौषश्च उत्तमः, सर्वलोकसुख पड्दर्श नमहत्वं प्रजा, सर्वनगरदेशासुस्थानवासः । चैत्रे सर्वधान्यस मता, उत्तरापथे दुष्कालः, वैशाखज्येष्ठयोर्महर्घता, ज्येष्ठे महाभयसरिट आषाढे मेघः, श्रावणेऽल्पवर्षा, अन्न महर्घं, भाद्रपदे दुर्भिक्ष । आश्विने रोगः अन्नसमता, राजा परस्पर विरोधोऽन्नमहर्घता ॥२२॥ विरोधिनि रुद्रः स्वामी, चैत्रादि मासत्रये धान्यमहर्घता, आषाढे श्रावणेऽतिवर्षा, भाद्रपद खण्डवृष्टिः, मासत्रयेऽतिभय किञ्चिदुत्पातः, राजा सुखी प्रजा सुखी क्वचिद्राजयुद्ध, सर्वधान्यमहार्घता, आश्विने सर्वधान्यसमर्घता, कार्तिके मारीरोगबहुलता, मार्गशीर्षा दिमासचतुष्टय गुर्जरे मरुदेशेऽन्न महार्घम ॥२३॥ विकृते र

वि स्वामी, अकाले वर्षा राजविरोधः देश उद्वसः, मरु-धरायां दुर्भिक्षं, चैत्रादिमासचतुष्टये महार्घता, कणकलशिकां प्रतिफदियानाणकैरेकशतेन लाभः श्रावणमासद्वये मेघवृ-ष्टिर्नास्ति रौरवं दुर्भिक्षं आश्विने उत्पातभूमिकम्पाः, का-र्त्तिके छत्रभङ्गः, सुवर्णरूप्यताम्रकांस्यसर्वधातुसमर्घता कणकलशिकाटकाः२०फदियानाणकानामेकशतं लभ्यते।२४। खरसंवत्सरे चन्द्रः स्वामी चैत्रादिमासपञ्चके महती वर्षा सु-भिक्षं प्रजासुखं सर्वलोके गुरूणां महत्त्वं पश्चिमायां सुभि-क्षं। आश्विनेऽन्नसमता रसमहर्घता मञ्जिष्ठासुहागावस्तुतो मरुधरायां त्रिगुणो लाभः म्लेच्छक्षयः परं रोगपीडा सर्वधान्यनिष्पत्तिः प्रजासुखं कार्त्तिकादि मासपञ्चके मध्यम सर्वधातुसमर्घता ॥२५॥

नन्दने भौमः स्वामी, प्रजासुखं सर्वधान्यसमता, चैत्र-मध्ये करकाः पतन्ति। वैशाखे धान्यं महर्घं प्रचण्डवायुः। ज्ये-

ष्ठेऽपि तथैव महर्घं। आषाढे महामेघः। श्रावणेऽल्पवर्षा, भा द्रपदे महावृष्टिः। आश्विने सुभिक्ष राजा राज्यसुस्थः प्रजा सुख। कार्त्तिके सुभिक्षमन्नसमना, मार्गशीर्षादिमासचतुष्टय महर्घता, मञ्जिष्ठालवङ्गमरिचमहर्घता॥२६॥ विजयसंवत्सरे बु धः स्वामी, सर्वदेशेषु महापीडा, राज्ञां परस्पर विरोधः, अन्न महर्घं तुच्छजल मही लोहितप्रायिनी विप्रपीडा, गोमहिषाश्व हस्तिपीडा, चैत्रमध्ये गर्जारववर्षा, वैशाखे ज्येष्ठेऽन्नमहर्घता, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघः कणकलशिका प्रतिफदिया ४०, भा द्रपदे वर्षा न वर्षति कणकलशिका प्रतिफदिया ०४, आश्विने वणिग्जनपीडा, अन्न महर्घं, फाल्गुने समना पर विग्रहो धा न्ये षड्गुणो लाभः ॥२७॥ जयसंवत्सरे गुरुः स्वामी। महासु भिक्ष, चैत्रे महार्घता, वैशाखज्येष्ठयो समर्घता, आषाढे मेघवर्षा अन्न महर्घं। श्रावणे दिन २४ महामेघः। भाद्रपदे दिन

७ मेघः। आश्विनेऽन्न समर्घं कणानां मणां प्रतिद्रम्मा ३५ लभ्याः स्वर्णादिधातुसमता। कार्त्तिकादिमासपञ्चकमुत्तममन्नसमता। अन्यवस्तुनि महार्घाणि भवन्ति। परं मौक्तिकादिप्रवालकं च महर्घं। मार्गशीर्षे रोगबहुलता वणिक्पीडाः उत्तमुलतानदेशे रोगपीडा छत्रभङ्गो लोका दुःखिताः॥२८॥ मन्मथे शुक्रः स्वामी, राजविरोधः, पूर्वदेशे लोकपीडा परं अतिवृष्टिः, रोगबाहुल्यं, धान्यसंग्रहः। चैत्रे वर्षा भूमिकम्पः। वैशाखे समर्घता, ज्येष्ठाषाढयोर्महर्घता धान्ये षड्गुणो लाभः। श्रावणेऽल्पमेघः। भाद्रे महामेघो वृष्टिर्दिन १४। आश्विने रोगपीडा, अन्नं महर्घं, धान्यं मणप्रतिद्रम्मा ६० लभ्यन्ते; सर्वधातुसमर्घता। कार्त्तिके सुभिक्षं, गुर्जरदेशापेक्षयान्नसमता। मार्गशीर्षादिमासत्रयेऽन्नं समर्घं लोकसुखं राजा सुस्थः सर्वधातुसमर्घः वस्त्रमहर्घता॥२९॥ दुर्मुखे शनिः स्वामी, अन्ना-

शुभ; अल्पमेघो महतां लोकानां पीडा, सरोगा लोका उत्तरापथे दुष्कालः, पश्चिमायां महापीडा, पूर्वदेशे सुभिक्ष, अन्नं महर्घं वैरं नकुलसर्पाभ्यां विषं गृह्यते, चैत्रादिमासत्रये समर्घं (४००) ना, आषाढेऽल्पमेघः। श्रावणे प्रचण्डवायुः सर्व धान्यमहर्घता भाद्रपदे कणानां मणं १ प्रतिद्रम्मा ८० लभ्यन्ते, खण्डवृष्टिः, आश्विने रोगपीडा सर्वे धान्यः समर्घाः कार्त्तिकादिमासा ४ रौरव दुर्भिक्ष गोब्राह्मणपीडा जीर्जीयादयाः कराः प्रवर्त्तन्ते माता पुत्रविक्रया पिता पुत्रस्नेहमुक्तः फाल्गुने रोगपीडा, राज्ञा परस्पर विरोधः लोकपीडा ॥३०॥ हेमलम्बे राहुः स्वामी अतिगौरव सरोगा लोका भक्ष्यादय उत्पाना वणिक्पीडा। चैत्रवैशाखमासयो र्धान्यादिमन्दभावः परचक्रागमः ज्येष्ठादिमासत्रये धान्य महर्घं चतुर्गुणो लाभः, भाद्रपदे महामेघः अन्नमसना मञ्जिष्ठामरिचलवणदन्तम यवस्तुमहर्घता अन्नमसना कार्त्तिके छत्रभङ्गो लोकपीडा

अन्नकलशिकां प्रतिफदिया १०२, सर्वधातुसमर्घः चतुष्पदपी-
डा। मार्गशीर्षादिमासा ४ राजा सुस्थः, लोकाः सुखिन ॥३१॥
विलम्बे वत्सरे रविः स्वामी, चैत्रवैशाखयोर्धान्यमहर्घता
आषाढे श्रावणे धान्यकलशिकां प्रतिटंका ५ फदिया २५ ल-
भ्यन्ते, आषाढे मेघोऽल्पः। श्रावणे महामेघः सुभिक्ष। भाद्रप-
दे दिन ११ वर्षा बहुला परं गोधूमाश्चणकाश्च महर्घाः पश्चि-
मायां सुभिक्षं राजविग्रहः पूर्वदेशोऽन्न दुष्पापं, दक्षिणदेशे
राज्ञामन्योऽन्य विरोधः, आश्विनेऽन्नमहर्घता रोगपीडा सर्व
क्रयाणकवस्तुमहर्घता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके धान्यकलशिकां
प्रति फदिया १० लभ्यन्ते ॥३२॥ विकारिवत्सरे चन्द्रः स्वा-
मी, सर्वान्नवस्तुमहर्घता द्विजाः सुखिनः। चैत्रादिमासत्रये
धान्यमहर्घता, आषाढे श्रावणे च महान्मेघ सुभिक्षं, भाद्र-
पदे स्वल्पमेघः, आश्विने रूपमय केतूदयः, अन्नकलशिकां १

प्रतिफदिया १० लभ्यन्ते सर्ववस्तुसमर्घता, कार्त्तिकादिमास-द्वये धान्य समर्घं, पौषे रोगपीडा, लोकः सुखी फाल्गुने धान्यमहर्घता ॥३३॥ शर्वरीवत्सरे भौम स्वामी, वर्षा अल्पा, प्रजाप्रलयः, राजविरोध, चैत्रादिमासत्रयेऽन्नसमता, आषाढद्वये महान् मेघः परं खण्डवृष्टिः, अन्नमहर्घता। भाद्रपदे वर्षा नास्ति राजपीडा लोकेषु, आश्विने रोगपीडा अन्न कलशिका एका फदियानाणकैर्लभ्यते दशभिः पश्चिमायां दुर्भिक्ष पूर्वस्यां सुभिक्ष कार्त्तिकादिमासद्वयेऽन्न महर्घ पौषादिमासत्रये धान्य समर्घम् ॥३४॥ प्लवे बुधः स्वामी, वर्षाकाले वर्षा-बहुला उत्तमः समयः, चैत्रे धान्यमन्दता, वैशाखे भूमिभयङ्करी, ज्येष्ठेऽन्नसमर्घता, सिन्धु पूर्वदेशे पीडा आषाढे महावायुः उत्पाताः, लोकाः सरोगाः श्रावणे महान मेघः दिन १७ वर्षा भाद्रपदे घनो घनाघनः, धान्य समर्घं, कणकलशिका एका फदियानाणकैरष्टभिर्लभ्यते, आश्विने सर्ववस्तु

सर्वधातुसमर्घता, गोधूमानां महार्घता, कार्त्तिकेऽन्नं समर्घं, लोकः सुखी, मरुडपाचले विग्रहः, पौषादिमासत्रयेऽतिसुभिक्ष राजा राज्यसुखः ॥३८॥

शुभकृद्वत्सरे गुरुः स्वामी, अतिवर्षा, राजा प्रजा सुखी न वर्त्तते, उत्तरापथे वह्निभयं, चैत्रे वैशाखे समर्घता, धातुसमर्घता, श्रावणे नवमीतिथिनो वर्षा, अन्नसमर्घता, भाद्रपदे महामेघः, अन्नकलशिका एका फदियानाणकैरष्टभिः, घृतं तैल समर्घं, कार्त्तिकादिमासत्रये युगधरीगोधूमचणकतिलमुद्गचवला इत्याद्यन्नं समर्घं, राज्ञां परस्पर विरोधः, ज्येष्ठादित्रिमासेषु सर्ववस्तु समर्घं, फाल्गुने किञ्चिदुत्पातः, मरुदेशे रोगः पर सुभिक्षम् ॥ ३६ ॥ शोभने त्विद फलं शुक्रः स्वामी, राज्ञां प्रजानां च सुखं, अतिवर्षा, चैत्रादिमासत्रये धान्यसमर्घं, राजविग्रहः, किञ्चिदुत्पातः, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणेऽतिवर्षा, पर लोकपीडा, भाद्रपदे महान्मेघः,

आश्विने सुभिक्षं ततोऽपि किञ्चिद्विग्रहः ॥ ३७ ॥ क्रोधिनि वत्सरे शनिः स्वामी, द्वादशमासेषु अन्नं महर्घं, मध्यमः समयः, राज्ञां परस्परं विरोधः, प्रजा पापरता, लोका निर्द्धना व्यापारहीनाः, चैत्रे वा वैशाखे करकापातः, रोगो मारिभयं, ज्येष्ठे धान्यं महर्घं, आषाढे समता, अल्पो मेघः, श्रावणे रौरवं, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, अन्नं महर्घं, आश्विने मेघवर्षा, सर्वत्र रसकससमता, अन्नं वस्तु सर्वं समर्घं, कार्त्तिके समता ॥ ३८ ॥ विश्वावसुवत्सरे राहुः स्वामी वर्षासमता परं अन्नमहर्घता, चैत्रे राज्ञां विरोधः, धान्यं महर्घं, वैशाखे मण्डपदुर्गे विग्रहः, मरुदेशे दुर्भिक्षं, पश्चिमायां अन्नं महर्घं, ज्येष्ठे विग्रहोऽन्नस्य ४८ फदियानाणकैरेका कलशिका, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणे भाद्रपदे दुर्भिक्षं ५० फदियानाणकैरेका कणकलशिका, अन्यत्र देशे सुभिक्षं, आश्विने लोकपीडा, रोगबाहुल्यं, गोमहिषघोटकाजामहर्घता, सुवर्णादिधातुमह-

र्घता, कार्त्तिकादिमासत्रये समर्घता, रुणकलशिका ११ फदियानाणकैः ॥ ३९ ॥ पराभवसंवत्सरे केतुः स्वामी, द्वादशमासवर्षा, मध्यमवृष्टिः, चैत्रे वैशाखे चान्नं महर्घं, मेघगर्जितविद्युद्वायवः, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, उद्दण्डवायुः, आषाढेऽल्पमेघः, अन्ने द्विगुणो लाभः, श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः परं दुर्भिक्षं, आश्विने किञ्चिद् लोकसुखं परं धान्यरसवस्तु महर्घमेव धातुसमर्घता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके समता, पश्चिमायामन्नसमता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमः ॥ ४० ॥ इति मध्यमविंशतिका पूर्णा ॥

प्लवङ्गनामसंवत्सरे ब्रह्मा स्वामी, चैत्रे वैशाखे महर्घता, ज्येष्ठमध्ये राजपीडा, आषाढेऽल्पमेघः, भूमिकम्पः, हस्तिपीडा, तुरङ्गममहर्घता, श्रावणे महामेघो भाद्रपदाष्टमीतो महामेघः, आश्विने रोगचालकः, रसमहर्घता, फाल्गुने कण-

का भाव तेज सोना आदि धातु तेज। कार्त्तिकादि तीन मास अनाज के भाव समता ११ फदिया का कलशी धान्य ॥ ३९ ॥ पराभवसंवत्सर का केतु स्वामी बारह मास में मध्यम वर्षा। चैत्र वैशाख में अनाज तेज, मेघकी गर्जना, बिजली कड़क, वायु चले। ज्येष्ठ में धान्य का संग्रह करना चाहिए। आषाढ में वर्षा थोड़ी अनाज में दूना लाभ। श्रावण में बड़ी वर्षा, अनाज भाव सम। भाद्रपद में खण्डवृष्टि पीछे से दुर्भिक्ष। आश्विन में कुछ सुख पीछे धान्य और रस की वस्तु मँहगी, धातु सम। कार्त्तिकादि पांच मास सम पश्चिम में अनाज भाव सम सिन्धुदेश से धान्य का आगमन ॥ ४० ॥ इति मध्यम विंशतिका पूर्णा ॥

प्लवङ्गसंवत्सर का स्वामी ब्रह्मा चैत्र वैशाख में अन्न तेज ज्येष्ठ में राजपीडा, आषाढ में थोड़ी वर्षा भूमिकम्प हाथीको पीडा घोड़े तेज, श्रावण में महामेघ भाद्रपद अष्टमी से महामेघ आश्विन में रोग रस मँहगा, फाल्गुन में [illegible] फदियाका कलशा धान्य हो [illegible] और [illegible] लोक पीडा

फलगिका एका फदिया १० प्रमाणे, अश्वमहिषीपीडा लोकपीडा ॥४१॥ कीलकवत्सरे विष्णु स्वामी, वर्षा मध्यमा, चैत्रे धान्य महर्घं, वैशाखे रोगः, मरुदेशे दुर्भिक्षं, पश्चिमायां समर्घता, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघ, अन्न महर्घं, धान्ये द्विगुणो लाभः, भाद्रपदेऽष्टमीतिथेर्मेघः, आश्विने वर्षा अन्न महर्घ, राजशनिनगरं उपद्रव, न रोगा बहुला, गोधूमा महर्घाः, सर्वधान्य समर्घं, रसाः समर्घाः, घृत पलमान प्रति फदिया १८ प्रमाणे, कार्त्तिकादिमासत्रये समर्घता माघमासेऽन्नमहर्घता रोगपीडा महती, फाल्गुनमध्ये राजा राजकुमाराः प्रजासुखं अन्नसमता ॥४२॥ सौम्यसंवत्सरे रुद्रः स्वामी, अन्नमेव, गावोऽल्पक्षीराः वृक्षा अल्पफलाः, चैत्रे महर्घता, वैशाखे दक्षिणपथावः, ज्येष्ठे विग्रहः, प्रजापीडा, आषाढेऽल्पमेघोऽन्न महर्घं, श्रावणे महामेघः, धा-

न्ये द्विगुणो लाभः, गोधूमानां कलशिका एका रूदिया ५० प्रमाणैर्लभ्यते, सर्वधान्यसमता, रसमहर्घता, भाद्रे खण्डवृष्टिरन्नदुर्भिक्षं, आश्विने राजविरोधो लोकपीडा मार्गविषमता अन्नसंग्रहः धान्ये द्विगुणो लाभः, सर्वरसधातुसमर्घताः कार्त्तिकादिमासा ४ तेषु समता परं राजविड्वर रोगचालकः, देशा उद्भ्रमाः, देशान्तरे लोकपीडा, फाल्गुने उद्दण्डवायुः, पश्चिमायां सुभिक्षं, सिन्धुदेशे राजविरोधः, अन्नसमता ॥४२॥ माघाख्ये रविः स्वामी, चैत्रे धान्यमन्दता, वैशाखे ज्येष्ठे च उत्पातो, भूमिकम्पो रोगवृद्धी राजविरोधा धान्यमहर्घतादिः, आषाढे वायुरुद्दण्डो रौरव क्वचिदल्पमेघः, श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदेऽल्पमेघः, आश्विनेऽल्पधान्यनिष्पत्तिः, कार्त्तिकादिमासद्वयं मध्यममरिष्ट भूमिकम्पः, अकस्माद् राजविग्रहः, अन्नमहर्घता, फाल्गुने चतुष्पदः रोगभावः, अरण्यमल्पफला वृक्षाः संगृहीतधान्ये त्रिगुणो लाभः, सर्वधातुमहर्घता सर्वसंग्रहः परं राजा दुः-

खी ॥४४॥ विरोधकृत्संवत्सरे चन्द्रः स्वामी, मण्डपाचलदुर्गे वि ग्रहः, कुङ्कणदेशे मेदपाटमण्डले मध्यदेशे महारौरव, परस्पर राजविग्रहः, मार्गा विषमाः, चैत्रादिमासत्रयेऽन्नसमता, आषाढेऽल्पमेघः, श्रावणे महावर्षा, अन्नसमर्घता, भाद्रपदे मेघः अन्नसमता सर्वधातुमहर्घता, फाल्गुने देशविरोधः, मार्गवैषम्य, मजिष्ठासोपारिकापट्टसूत्रदन्तमयवस्तुतुरङ्गमादिमहर्घता ॥४५॥ परिधाविनि वत्सरे भौमः स्वामी, दुर्भिक्षं, नागपुरे मेदपाटे जालन्धरदेशे च राज्ञां विरोधः चैत्रादिमासचतुष्टयेऽन्नसमता, तत्र संग्रहः कार्यः, लोके रोगपीडा, मरुदेशे मनुष्येषु मारिभ यं, चतुष्पदमहिषीतुरंगहस्तिनां पीडा श्रावणे भाद्रपदेऽल्प मेघः, खण्डवृष्टिरन्नसमता सर्वरससमर्घता सर्वं धान्यं सम र्घं, कार्त्तिकादिमासपञ्चकेऽधान्यसमता राजविग्रहः सिन्धुदे शात् धान्यागम ॥४६॥प्रमाथिनि वत्सरे बुधः स्वामी कुङ्कणे

दुर्भिक्षं विग्रहः, चैत्रे धान्यमन्दता, वैशाखज्येष्ठयोर्धान्यसंग्रहः, आषाढे नवीनमुद्रा परमल्पमेघः, श्रावणस्यार्द्धे मेघवर्षा, अन्नं महर्घं धान्ये त्रिगुणो लाभः, भाद्रपदे महामेघः, अन्न समर्घं,आश्विनादिमासात् सुभिक्षं, सर्वरसकससमर्घता, लोकसुखी, गुरूणां पूजा महिमवृद्धिः,राजा धर्मी ॥४७॥ आनन्दे गुरुः स्वामी, वर्षा बहुला सुभिक्षं, चैत्रे वैशाखे चान्नं समर्घं ज्येष्ठाषाढयोर्महावृष्टिः परं नवीनमुद्रा जायते, श्रावणे महान् मेघः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, गोधूमा महर्घाः, आश्विने समर्घाः रसान्नवस्तुसमता धातुमहर्घता, कार्त्तिकेऽकस्माद् भय लोकपीडा मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिणदिशि गमनम्, पौषे माघे च मेघवर्षा, अन्न समर्घं, फाल्गुने धान्य महर्घं ॥४८॥ राक्षसे शुक्रः स्वामी, धान्यसंग्रहः कार्यः, चैत्रे करकाः पत-

---

भाव, गजविकलता , सिन्धुदेशमें धान्यकी प्राप्ति ॥ ४६ ॥ प्रमाथीवर्षका स्वामी बुध; कुरुक्षेत्रमें दुर्भिक्ष, विग्रह , चैत्रमें धान्य भाव मंदा, वैशाख ज्येष्ठमें धान्य संग्रह करना, आषाढमें नवीन मुद्रा, थोड़ी वर्षा, आधा श्रावणमें वर्षा, अनाज तेज, धान्यसे तीगुना लाभ, भादोंमें महा मेघ, अनाज सस्ता, आश्विनादि उपरान्त सुभिक्ष, सब रसकस सस्ता, लोकसुखी, गुरु जनोंकी पूजा, महिमाकी वृद्धि और राजा धर्मी हो ॥ ४७ ॥ आनन्दवर्षका स्वामी गुरु, वर्षा अधिक, सुभिक्ष, चैत्र वैशाखमें अनाज सस्ता, ज्येष्ठ आषाढमें बड़ी वर्षा, नवीनमुद्रा , श्रावणमें महावर्षा, भाद्रपदमें खण्डवृष्टि, गेहूँ तेज, आश्विनमें सस्ता, रस अन्न और वस्तु समभाव, धातु तेज, कार्त्तिकमें अकस्मात भय, लोकपीडा मार्गशीर्षमें लोगोंका दक्षिणदिशामें गमन, पौषमें और माघमें वर्षा, अनाजका भाव सस्ता,फाल्गुनमें धान्य तेज ॥ ४८ ॥ राक्षसवर्षका स्वामी शुक्र, धान्य संग्रह करना उचित है, चैत्र में करा (ओले) गिरे वैशाख ज्येष्ठमें तेल महँगे, ज्येष्ठ आषाढमें गुड

न्ति, वैशाखे ज्येष्ठे तैल महर्घं. ज्येष्ठे आषाढे गुडखण्डाद्रव्यं महर्घं, श्रावणेऽल्पमेघः, अन्नमहर्घता, भाद्रपदे महामेघः, अन्नसमर्घता, आश्विने समता, कार्त्तिके रोगार्त्तिः, मार्गशीर्षादिचत्वारो मासाधान्यसमर्घताः, राजा सुखी, प्रजा राजमान्या, फाल्गुने समर्घता, वृक्षा नवपल्लवाः, मार्गे सुख सुभिक्षम् ॥४९॥ नलसंवत्सरे शनिः स्वामी, अल्पमेघः पर समर्घता, चैत्रे रोगपीडा, वार्दल बहुल, वायुः प्रबलः, वैशाखेऽरिष्टमन्नसंग्रह कार्यः, ज्येष्ठे राज्ञां परस्पर विग्रहो लोकसुखी, मार्गवैषम्यं क्वचिदाषाढे श्रावणे चाल्पमेघः, धान्ये त्रिगुणश्चतुर्गुणो लाभः ,भाद्रपदे खण्डवृष्टिर्दुर्भिक्षं धान्यसंग्रहः आषाढे कार्यः, आश्विने विक्रियः, मार्गशीर्षादिमासत्रयेऽन्नसमता, फाल्गुने रोगचालकः, तस्कर भयः, उत्तरदेशे दुष्कालः, पूर्वस्यां सुभिक्षम ॥५०॥ पिङ्गले राहुः स्वामी, उच्चमुल्तान नागपुरमरुदेशे ढिल्ली मण्डलेषु मथुरायां पूर्वदेशेषु दुर्भिक्षमन्न महर्घं सर्वधातुसमर्घता

परं सर्वत्र विग्रहः, नगरे वासः, ग्रामसुद्वसनं रोगपीडा राजा सुस्थः प्रजासुखमन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमनं, चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा, वैशाखादिमासत्रयेऽन्नमहर्घता प्रजाक्षयोऽश्वपीडा, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघः, धान्ये चतुर्गुणो लाभः, भाद्रे खण्डवृष्टिः, आश्विने समता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके विग्रहपीडा, अन्नमहर्घता चतुष्पदरोगः ॥५१॥ कालवत्सरे केतुः स्वामी, अल्पमेघो देशउद्वसनम्, अल्पव्यापारः राजविग्रहः, चैत्रे वैशाखे चात्यरिष्टमुत्तरापथे देशभङ्गः, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, धान्ये षड्गुणो लाभः, आषाढेऽल्पमेघः, लोके दुःखं, मार्गविषमाः, श्रावणे महान् मेघोऽन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, धान्यदुर्भिक्षमुत्पातः, आश्विने रोगशीतलादिविकारः, धान्य फदिया ७५ नाणकैः कणकलशिका एका लभ्यते, सर्वरसमहर्घता सर्वधा-

और पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष, अन्नभाव तेज, सब धातु सस्ती, सब जगह विग्रह, नगरमें निवास, गामका विनाश, रोगपीडा, राजा सुखी, प्रजा सुखी, अन्नभाव सम, गुजरात देशमें सस्ता, सिंधु देशसे धान्यका आगमन, चैत्रमें धान्य तेज, प्रजापीडा, वैशाखादि तीन मास अन्न तेज, प्रजाका क्षय, घोडाको पीडा, आषाढ श्रावणमें थोड़ी वर्षा, धान्यसे चौगुना लाभ, भाद्रपदमें खण्डवृष्टि आश्विन में सम, कार्त्तिकादि पांच मास विग्रह और पीडा, अन्न तेज पशुओंमें रोग ॥ ५१ ॥ कालवर्षका स्वामी केतु, थोडी वर्षा, देशका उजाड थोड़ा व्यापार राजविग्रह, चैत्र वैशाखमें अधिक दुःख, उत्तरमें देशभंग, ज्येष्ठमें धान्यका संग्रह करनेसे छगुना लाभ, आषाढमें थोड़ी वर्षा, लोगोंमें दुःख, मार्ग विषम, श्रावणमें महामेघ, अन्नभाव सम भाद्रोंमें खण्डवृष्टि, धान्यकी दुर्भिक्षता, उत्पात आश्विन में रोग शीतला आदिका विकार, धान्य ७५ फदियाका एक कलशी मिलै, सब रस तेज

परं सर्वत्र विग्रहः, नगरे वासः, ग्रामभुद्धसनं रोगपीडा राजा सुस्थः प्रजासुखमन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमनं, चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा, वैशाखादिमासत्रयेऽन्नमहर्घता प्रजाक्षयोऽश्वपीडा, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघ, धान्ये चतुर्गुणो लाभः, भाद्रे खण्डवृष्टिः, आश्विने समता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके विग्रहपीडा, अन्नमहर्घता चतुष्पदरोगः ॥५१॥ कालवत्सरे केतुः स्वामी, अल्पमेघो देश उद्धसनम्, अल्पव्यापारः राजविग्रहः, चैत्रे वैशाखे चात्यरिष्टमुत्तरापथे देशभंग., ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, धान्ये षड्गुणो लाभः, आषाढेऽल्पमेघः, लोके दुःख, मार्गविषमाः, श्रावणे महान् मेघोऽन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः. धान्यदुर्भिक्षमुत्पातः, आश्विने रोगशीतलादिविकारः, धान्य फदिया ७५ नाणकैः कणकलशिका एका लभ्यते. सर्वरसमहर्घता सर्वधा-

और पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष, अन्नभाव तेज, सब वस्तु सस्ती, सब जगह विग्रह, नगरमें निवास, गांवका विनाश, रोगपीडा, राजा सुखी, प्रजा सुखी, अन्नभाव सम गुजरात देशमें सस्ता, सिंधु देशसे धान्यका आगमन, चैत्रमें धान्य तेज, प्रजापीडा, वैशाखादि तीन मास अन्न तेज, प्रजाका क्षय, घोडाको पीडा, आषाढ श्रावणमें थोडी वर्षा, धान्यसे चोगुना लाभ, भाद्रपदमें खण्डवृष्टि आश्विन में सम, कार्त्तिकादि पांच मास विग्रह और पीडा, अन्न तेज, पशुओंमें रोग ॥ ५१ ॥ कालवर्षका स्वामी केतु, थोडी वर्षा, देशका उजाड थोडा व्यापार, राजविग्रह, चैत्र वैशाखमें अधिक दुःख, उत्तरमें देशभंग, ज्येष्ठमें धान्यका संग्रह करनेसे छगुना लाभ, आषाढमें थोडी वर्षा, लोगोंमें दुःख, मार्ग विषम, श्रावणमें महामेघ, अन्नभाव सम भाद्रमें खण्डवृष्टि, धान्यकी दुर्भिक्षता, उत्पात, आश्विन में रोग शीतला आदिका विकार, अन्न ७५ फदियाका एक कलशी मिले, सब रस तेज

न्ति, वैशाखे ज्येष्ठे तैलं महर्घं, ज्येष्ठे आषाढे गुडखण्डाद्रव्य महर्घं, श्रावणेऽल्पमेघः, अन्नमहर्घता, भाद्रपदे महामेघः, अन्नसमर्घता, आश्विने समता, कार्त्तिके रोगार्त्तिः, मार्गशीर्षादिचत्वारो मासा धान्यसमर्घता, राजा सुखी, प्रजा राजमान्या, फाल्गुने समर्घता, वृक्षा नवपल्लवाः, मार्गे सुखं सुभिक्षम् ॥४९॥ नलसंवत्सरे शनिः स्वामी, अल्पमेघः पर समर्घता, चैत्रे रोगपीडा, वार्दल बहुल, वायुः प्रबलः, वैशाखेऽरिष्टमन्नसंग्रह कार्यः, ज्येष्ठे राज्ञां परस्पर विग्रहो लोकसुखी, मार्गवैषम्यं क्वचिदाषाढे श्रावणे चाल्पमेघः, धान्ये त्रिगुणश्चतुर्गुणो लाभः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिर्दुर्भिक्षं धान्यसंग्रहः आषाढे कार्यः, आश्विने विक्रियः, मार्गशीर्षादिमासत्रयेऽन्नसमता, फाल्गुने रोगचालकः, तस्करभयः, उत्तरदेशे दुष्कालः, पूर्वस्यां सुभिक्षम् ॥५०॥ पिङ्गले राहुः स्वामी, उच्चमुलतान नागपुरमरुदेशे दिल्लीमण्डलेषु मथुरायां पूर्वदेशेषु दुर्भिक्षमन्न महर्घं सर्वधातुसमर्घता

शक्कर तेज, श्रावणमे थोडी वर्षा, अनाजका भाव तेज, भाद्रपदमे महामेघ, अनाज सस्ता, आश्विनमें सम, कार्तिकमे रोगपीडा, मार्गशीर्षादि चार मास धान्य सस्ता, राजासुखी, प्रजा राजाका सन्मान करे, फाल्गुनमें सस्ता, वृक्षोंमे नये पत्ते, मार्गमें सुख और सुभिक्ष ॥ ४९ ॥ नलसंवत्सरका स्वामी शनि, थोडी वर्षा, अनाजभाव सम, चैत्रमे रोगपीडा, बहुत बदल और प्रबल वायु, वैशाखमे अरिष्ट, अनाज संग्रह करना, ज्येष्ठमें राजाओंमें परस्पर विग्रह, लोकसुखी, मार्गमें विषमता, कभी आषाढ श्रावणमे थोडी वर्षा धान्यमे तीगुना चोगुना लाभ, भादोंमे खण्डवृष्टि दुर्भिक्ष, आषाढमे धान्य संग्रह करना और आश्विनमे बेचना, मार्गशीर्षादि तीन मास अनाजका भाव सम, फाल्गुनमें रोग और चोरका भय, उत्तरदेशमे दुष्काल और पूर्वमे सुभिक्ष हो ॥ ५० ॥ पिंगलवर्ष का स्वामी राहु, उच्चमुल्तान नागपुर मरुदेश देहलीदेश मथुरा

परं सर्वत्र विग्रहः, नगरे वासः, ग्रामगुद्वसनं रोगपीडा राजा सुस्थः प्रजासुखमन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता, सिन्धुदेशाद् धान्यागमनं, चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा, वैशाखादिमासत्रयेऽन्नमहर्घता प्रजाक्षयोऽश्वपीडा, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघ , धान्ये चतुर्गुणो लाभः, भाद्रे खण्डवृष्टिः, आश्विने समता, कार्त्तिकादिमासपञ्चके विग्रहपीडा, अन्नमहर्घता चतुष्पदरोगः ॥५१॥ कालवत्सरे केतुः स्वामी, अल्पमेघो देश उद्वसनम्, अल्पव्यापारः राजविग्रहः, चैत्रे वैशाखे चात्यरिष्टमुत्तरापथे देशभग., ज्येष्ठे धान्यसग्रहः, धान्ये षड्गुणो लाभः, आषाढेऽल्पमेघः, लोके दुःख, मार्गविषमाः, श्रावणे महान् मेघोऽन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः. धान्यदुर्भिक्षमुत्पातः, आश्विने रोगशीतलादिविकारः, धान्य पदिया ७५ नाणकैः कणकलशिका एका लभ्यते. सर्वरसमहर्घता सर्वथा-

और पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष, अन्नभाव तेज, सब धातु सस्ती, सब जगह विग्रह, नगरमे निवास, गामका विनाश, रोगपीडा, राजा सुखी, प्रजा सुखी, अन्नभाव सम गुजरात देशमे सस्ता, सिंधु देशसे धान्यका आगमन, चैत्रमें धान्य तेज, प्रजापीडा, वैशाखादि तीन मास अन्न तेज, प्रजाका क्षय, घोडोंको पीडा, आषाढ श्रावणमे थोडी वर्षा, धान्यसे चोगुना लाभ, भाद्रपदमें खण्डवृष्टि आश्विन में सम, कार्तिकादि पांच मास विग्रह और पीडा, अन्न तेज, पशुओंमें रोग ॥ ५१ ॥ कालवर्षका स्वामी केतु, थोडी वर्षा, देशका उजाड, थोडा व्यापार राजविग्रह, चैत्र वैशाखमे अधिक दुःख, उत्तरमे देशभंग, ज्येष्ठमें धान्यका संग्रह करनेसे छगुना लाभ, आषाढमे थोडी वर्षा लोगोंमें दुःख, मार्ग विषम, श्रावणमे महामेघ, अन्नभाव सम भादोंमें खण्डवृष्टि, धान्यकी दुर्भिक्षता, उत्पात आश्विन में रोग शीतला आदिका विकार अन्न ७५ पदियाका एक कलशी बिकै, सब रस तेज

तुसमर्घता, कार्त्तिकादिमासपञ्चक यावत् परं राजविड्वरं, अश्व चतुष्पदपीडा वृक्षाः सफलाः ॥५२॥ सिद्धार्थे रविः स्वामी, सुभिक्ष सर्वदेशे वसतिर्बहुला अन्नविक्रयः, चैत्रे वैशाखे लोकपीडा, ज्येष्ठाषाढयोरुद्दण्डवायुः, श्रावणे दिनत्रये महावर्षा सर्वान्नमहर्घता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, आश्विनेऽन्नसमता, कार्त्तिके धान्यनिष्पत्तिर्बहुला अन्नसमर्घता, मार्गादिमासचतुष्टयमन्नं सार सर्वत्र ग्राहकता उत्पातः क्वचिद् राजविरोधो लोकसुखमन्नमूल्यमहर्घता॥५३॥ रौद्रे चन्द्रः स्वामी, पृथिवी रोगबहुला, चतुष्पदनाशः, छत्रभङ्गोऽल्पमेघश्चैत्रादिमासत्रये महर्घता, आषाढे श्रावणेऽल्पमेघः, खण्डवृष्टिः, भाद्रपदे महान् मेघोऽन्नसमर्घता, अन्यद्वस्तुमञ्जिष्ठा सौपारिका लविंगसमर्घता लोकसुखी, चतुष्पदसमर्घता हस्तिपीडा ॥५४॥ दुर्मतौ भौमः स्वामी, चैत्रे वैशाखे च धान्यं समर्घं,

---

सब धातु सस्ती, कार्त्तिकादि पांच मास तक राजविद्रोह, घोडा आदि पशुओंमें पीडा, वृक्षोंमें फल ॥ ५२ ॥ सिद्धार्थवर्षका स्वामी रवि, सुभिक्ष, सब देशमें बहुत वसति, अन्नकी बिक्री, चैत्र वैशाख में लोकपीडा, ज्येष्ठ आषाढमें उद्दण्ड (प्रबल) वायु, श्रावण में तीन दिन महावर्षा, सब अन्न तेज, भादोंमें खण्डवृष्टि, आश्विन में अन्नभाव सम, कार्त्तिकमें धान्य प्राप्ति, अनाज सस्ता, मार्गशीर्षादि चार मास सब स्थानमें अनाजकी प्राप्ति, कहा राजविरोध, लोक सुखी और थोडेका भाव तेज हो ॥ ५३ ॥ रौद्रवर्षका स्वामी चन्द्र, पृथ्वीमें रोग अधिक, पशुका विनाश, छत्रभंग, थोडी वर्षा, चैत्रादि तीन मास तजी, आषाढ श्रावणमें थोड़ी वर्षा, खण्ड वृष्टि, भादोंमें अधिक वर्षा, अनाज भाव सस्ता, दूसरी वस्तु मँजीठ सोपारी लौंग आदि सस्ता, लोक सुखी, पशु सस्ते, और हाथियोंको पीडा ॥५४॥ दुर्मतिवर्षका स्वामी भौम, चैत्र वैशाखमें धान्य सस्ते, ज्येष्ठमें अनाज भाव

ज्येष्ठेऽन्नसमता, आषाढे उद्दण्डवायुः, श्रावणेऽल्पमेघोऽन्न-समर्घता, भाद्रपदे मेघानां महोदयः, गोधूमाः समर्घाः कण-कलशिका एका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते, सर्वधातवः समर्घताः, आश्विने सर्वरससमर्घता धान्यसमता, कार्त्ति-कादिमासद्वयं यावत् सर्ववस्तुसमता राजस्वास्थ्यः ग्रामे ग्रामे नवीना वसतिः सर्वलोकसुखी, अश्वमहर्घता चतुष्पदमहर्-घता, पौषादिमासत्रये समता पर धातुसमर्घता ॥ ५७ ॥

दुन्दुभीवत्सरे बुधः स्वामी, वर्षा बहुला, अन्नसमर्घता र-मकसवस्तुसमता, चैत्रादिमासत्रयेऽन्नसमर्घता, आषाढे द्वि-गुणो लाभोऽल्पमेघः, श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः, भाद्रपदे मेघा दिन ९ अन्न समर्घं, देशा नवीना वसन्ति, आश्विने-ऽन्न समर्घं, रोगा बहुला मजिष्ठामरिचाना समर्घता, सर्वर-ससर्वधातुसमर्घता, कार्त्तिके धान्य समर्घं मेदपाटे लोकपीडा अन्नदुर्भिक्षं, पश्चिमायां शुभ, मार्गशीर्षे समर्घता राज्ञां प-

रस्परं विरोधः, पौषादिमासत्रये समता अश्वमहर्घता मं जिष्ठा महर्घा ॥५६॥ रुधिरोद्गारिणि वत्सरे गुरुः स्वामी, राज्ञामन्योऽन्य विरोधः, लोका देशान्तरे यान्ति दुर्भिक्ष छिज पीडा जीजीयादिकरः प्रवर्त्तते, म्लेच्छराज्ये परदेशाद् धान्यमायाति, आषाढे शुक्लपक्षे महामेघ, श्रावणे दिन १५ महावर्षा, चैत्रादिमासत्रये समर्घता धातवः समर्घाः, उत्तरापथे उच्चमुलतानतिलगगौडभोटादिदेशेषु दुर्भिक्ष पश्चिमायां सुभिक्ष सिन्धुदेशे धान्यनिष्पत्तिः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, धान्ये त्रिगुणो लाभः, आश्विने समता रोगचालकः, कार्त्तिकादिमासपञ्चकेऽन्न समर्घं, मेदपाटे लोकपीडा ॥५७॥ रक्ताक्षे शुक्रः स्वामी, अन्न समर्घं, मेदपाटे पर्वते वासः, चैत्रादिमासत्रये महर्घता अन्नस्य, सर्वे धातव समर्घा, फाल्गुनेऽन्नसंग्रहः, ज्येष्ठेऽन्नमहर्घता शुक्लपक्षे महामेघः। आषाढे महती

मेदपाटदेशमे लोकपीडा, अनाजकी दुर्भिक्षता, पश्चिममे शुभ, मार्गशीर्षमे सस्ता, राजाओंका परस्पर विरोध, पौषादि तीन मास सम, घोडे तेज और मँजीठ तेज ॥ ५६ ॥ रुधिरोद्गारी वर्षका स्वामी गुरु, राजाओं का परस्पर विरोध, लोग देशान्तर गमन करें, दुष्काल ब्राह्मणोंको पीडा, म्लेच्छदेशमे जीजीया आदि कर (महसुल) की प्रवृत्ति, परदेशसे धान्यका आगमन, आषाढ शुक्लपक्षमें बड़ी वर्षा, श्रावणमे दिन पन्द्रह वर्षा अधिक, चैत्रादि तीन मास सस्ते, धातु सस्ती, उत्तरमे उच्चमुलतान तैलंग गौड भोट आदि देशोंमें दुर्भिक्ष, पश्चिममे सुभिक्ष, सिंधुदेशमें धान्य निष्पत्ति, भाद्रपदमें खण्ड वर्षा, धान्यमे तीगुना लाभ, आश्विनमे सम, रोगप्राप्ति, कार्त्तिकादि पांच मासमे अनाज सस्ता, मेदपाटदेशमे लोकपीडा ॥ ५७ ॥ रक्ताक्षवर्षका स्वामी शुक्र, अनाज सस्ता, मेदपाटदेशमे पर्वत पर वास, चैत्रादि तीन मासमे अनाजकी तेजी सब धातु सस्ती फाल्गुनमें अनाज संग्रह करना ज्येष्ठ

जलवृष्टिः सौराष्ट्रे ग्रामप्रवाहः, अन्नं समर्घं, श्रावणेऽल्पमेघः, किञ्चिद्विग्रहः, भाद्रपदेऽल्पवर्षा रोगपीडा, आश्विनेऽन्नं समर्घं रसकसवस्तु समर्घं. कार्त्तिकादिमासपञ्चके धान्यं महर्घं विवाहादिकं नास्ति, अश्वपीडा पश्चिमायां सुभिक्षम् ॥५८॥ क्रोधने शनि. स्वामी, रोगा बहुलाः, मन्दवृष्टिः प्रजापीडा, उत्तरापथे दुर्भिक्षं लोका निर्धनाः, चैत्रे वैशाखेऽल्पमेघोऽन्नसमर्घता, ज्येष्ठे मन्दता रोगपीडा अन्नसमता, आषाढे श्रावणेऽल्पवर्षा, धान्ये द्विगुणलाभः, भाद्रपदे मेघोऽन्नसमर्घं, आश्विने रोगपीडा, कार्त्तिके विग्रहः धान्य समर्घं, मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्माद् उत्पातः, पोषे समर्घता वणिक्पीडा अन्नवस्तु च महर्घम् ॥५९॥ जयसंवत्सरे राहुः स्वामी, चैत्रे करकापातः. वैशाखे उत्पातः, भूमिकम्पः, ज्येष्ठाषाढयो रोगचालक, नवीनमुद्रा उदयोऽल्पमेघोऽन्नं समर्घं, भाद्रपदे ख

षडवृष्टिः, चतुष्पदहानिः, फदिया ५५ नाणाकैर्धान्यकलशिका एका, आश्विने रोगः परमन्नसमता सर्वधातुसमता मध्यमसमयः राजविरोधः पश्चिमायां सुभिक्षमन्नं समर्घं सिन्धुदेशात् स्थलदेशाद् वा अन्नागमः पूर्वस्यां विड्वरमन्नसमता ॥६०॥ इत्यधमा विंशतिका पूर्णा।

॥ इति संक्षेपतः षष्टिसंवत्सरफलानि ॥

अथ गुरुचारः।

इय वाच्या प्राच्यादधिगमबलाद् वत्सरफला,
तृतीयायां राधे जिनवरगवि शुक्लसमये।
यदा स्यादास्यादेरिव भवति काचिद् विघटना,
तदा ज्ञेयं ज्ञेयं खललिखितवाचालचरितम् ॥ १॥
आद्यप्रभोर्भगवतस्त्रिजगत्समीक्षा,
दीक्षा बभूव मधुमाससिताष्टमाह्ने।
जातं तपस्तदनुवार्षिकमार्षिकेन्द्र-

वर्षा, अनाज सस्ता। भादोंमें खंडवर्षा, पशुओंकी हानि, ५५ फदिया का कलशी धान्य, आश्विनमें रोग, परन्तु अनाज सस्ता, सब धातु समान, मध्यम समय, राजाओंमें विरोध, पश्चिममें सुकाल, अन्नभाव सस्ता, सिंधुदेश अथवा स्थलदेशसे अन्नका आगमन पूर्वमें उपद्रव और अन्नभाव सम हो ॥६०॥ इत्यधमाविंशतिका पूर्णा। इति संक्षेपतः षष्टिसंवत्सरफलानि।

वैशाख शुक्ल तृतीयाके दिन यह संवत्सर संबंधी फलादेश प्राचीन शास्त्रके बलसे कहना चाहिये, यदि इस सत्यरूप जिनवरोंके वचनोंमें कोई विघटना मालुम पड़े तो समझना चाहिये कि यह खलपुरुषोंसे लिखा हुआ वाचाल चरित्र है ॥ १ ॥ चैत्र शुक्ल अष्टमीके दिन आदिनाथ भगवान्की तीन जगत्के स्वरूपको देखनेवाली दीक्षा हुई, तभीसे वार्षिक तप

श्रीमारुदेवविहित प्रथमं पृथिव्याम् ॥ २॥
तत्पारणादायककारणासे-रभावतः साधिकवत्सरान्ते ।
राधे तृतीयादिवसे बलक्षे, बभूव भूवल्लभवन्दनीया ॥ ३॥
तद्वत्सरस्यापि शुभाशुभाद्य, फलं च तस्मिन् दिवसे विचार्यम्
दानं च कार्यं पुरुषैः सनार्यैः, सत्कार्य साधौ तदुपासके वा ।४।
संवत्सराख्या द्विपविंशिकार्थ-ग्रहप्रचाराद्यधिगम्य सम्यक् ।
यदीक्ष्यतेऽसौ सफला तदोक्तिर्भवेद्विसंवादिकथाऽन्यथाऽस्याः
प्राचां तु वाचां विभवानुदीक्ष्य, चलाचलत्वं च बलाबलत्वम् ।
सर्वग्रहाणां बहुसंग्रहेण, विचार्य चार्यं प्रवदेत् फलानि ॥ ६ ॥
तपस्तोऽतिभक्तः स्वगुरौ च देवे, सक्तः स्वधर्मे हृदये दयालुः ।
यः शास्त्ररीत्या फलमब्दजन्य, ब्रूते स मेघाद्विजयश्रियाढ्यः ॥
वर्षाधिनाथा गुरुशौरिकेतुः स्वर्भाणवस्तेषु गुरुप्रचारात् ।
संवत्सरा द्वादश सम्भवन्ति, प्राच्याय तेषामभिधाविधानैः ।८।

प्रारंभ हुआ, जगत्‌में यह प्रथमदान ही श्री ऋषभदेवने किया ॥ २ ॥ उस तपका पारणाके लाभकी प्राप्तिका अभावसे एक वर्षसे कुछ अधिक वैशाख शुक्ल तीजको हुआ, इसलिये यह तीज जगतको प्रिय और वंदनीय है ॥ ३ ॥ इस दिन वर्षके शुभाशुभ फलका विचार करना चाहिये और स्त्री तथा पुरुष साधुओंको या उनके उपासकोंको सत्कारपूर्वक दान दें ॥ ४ ॥ यदि संवत्सरका विंशतिकाका अर्थ ग्रहप्रचार आदिका अच्छी तरह विचार कर कहा जाय तो उनका वचन सफल होता है, अन्यथा विसंवाद (असत्य) होता है ॥ ५ ॥ प्राचीन वचनोंका प्रभावको स्वीकार कर और सब ग्रहोंका चलाचल बलाबलका अच्छी तरह विचार कर फल कहना चाहिये ॥ ६ ॥ जो अपने गुरु और देव पर बहुत भक्तिवाला, अपने धर्ममें श्रद्धावान् और हृदय दयावान् हो वह शास्त्ररीतिसे वर्षफल कहे तो सघन विजय लक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥७॥ वर्षका स्वामी गुरु शनि केतु

अथ गुरुकृतसंवत्सरनामफलकथन रामविनोदे—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम् ।
अनेन गुरुचारेण प्रभवाद्यब्दसम्भवः ॥९॥
स्यादूर्जादिमासेषु वह्निभादिद्वय द्वयम् ।
उपान्त्यपञ्चमान्त्येषु नक्षत्राणां त्रयं त्रयम् ॥१०॥
यस्मिन्नभ्युदितो जीव स्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ।
क्वचिद् गुरोरस्तभेऽपि सूर्यसिद्धान्तसंमते ॥११॥
प्रवासान्ते गृहर्क्षेण सहितोऽभ्युदयेद् गुरुः ।
तस्मात् कालादक्षपूर्वो गुरोरब्दः प्रवर्त्तते ॥१२॥

अथ गुरुवर्षविचार —

स्यात् पीडा कार्त्तिके वर्षे वह्नि गावोपजीविनाम् ।
शस्त्राग्निक्षुद् भय वृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम् ॥१३॥
सौम्यवर्षे त्वल्पवृष्टिः सस्यहानिरनेकधा ।

और सूर्यादि हैं उनमेंसे बृहस्पतिका चारसे बारह संवत्सर होते है ॥८॥

अब यहांसे बृहस्पतिका उत्तम चार (चलन)को कहता हूँ क्योंकि इस गुरुचारसे प्रभव आदि संवत्सर होते है ॥९॥ गुरुके कार्त्तिकादि महीनोंमें कृत्तिका आदि दो २ और पांचवा तथा अत्यके दो ये तीन महीनोंमें तीन २ नक्षत्र हैं ॥१०॥ जिस नक्षत्र पर बृहस्पतिका उदय हो उसको नक्षत्रसंवत्सर कहते है । कहीं सूर्यसिद्धान्तके मतसे बृहस्पति जिस नक्षत्र पर अस्त हो उसको नक्षत्रसंवत्सर कहते है ॥११॥ प्रवासके अन्त्यमें जिन राशि के साथ बृहस्पति का उदय हो उस कालसे बृहस्पति का वर्ष होता है ॥१२॥

बृहस्पतिके कार्तिक वर्षमें अग्नि और गोए से आजीविका करनेवाले को पीडा, शस्त्र और अग्नि आदिका भय तथा कौसुम (केसुडा) के फूलों के आजीवियोंकी वृद्धि हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षवर्ष मे थोड़ी वर्षा, अनेक प्रकारसे खेतीकी हानि, राजा लोग एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे युद्धमें

राजानो युद्धनिरता अन्योऽन्यं वधकांक्षिणः ॥१४॥
पौषेऽब्दे सुखिनः सर्वे गुरुपूजारता जनाः ।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं वृष्टिः कार्यवशानुगा ॥१५॥
माघः सम्पत्करोऽब्दः स्यात् सर्वभूतहितोदयः ।
सम्यक् वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं च प्रजायते ॥१६॥
फाल्गुनाब्दे चौरभीतिः स्त्रीणां दुर्भगता भृशम् ।
क्वचिद् वृष्टिः क्वचित्सस्यं क्वचिद् भीरीतयः क्वचित् ॥१७॥
चैत्राब्दे भूभुजः स्वस्थाः स्त्रीषु चाल्पप्रजा भवेत् ।
अल्पवृष्टिः सस्यसम्पत् प्रजानां व्याधितो भयम् ॥१८॥
वैशाखेऽब्दे तु राजानो धर्ममार्गरताः क्षितौ ।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं द्विजाश्चाध्वरतत्पराः ॥१९॥
ज्येष्ठाब्दे धर्ममार्गस्थाः पीड्यन्ते सत्क्रियापराः ।
न च वर्षेत्तदा देवो भवेत् सस्यविनाशनम् ॥२०॥
आषाढाब्दे तु राजानः सर्वदा कलहोत्सुकाः ।

तत्पर हों ॥ १४ ॥ पौषवर्षमें सब सुखी, मनुष्य गुरुजनोंकी पूजा करें, क्षेम सुभिक्ष तथा आरोग्य हो और कार्यानुकूल वर्षा हो ॥ १५ ॥ माघवर्ष सब सम्पत्ति दायक है, इसमें अच्छी वर्षा और सुकाल होता है ॥ १६ ॥ फाल्गुनवर्षमें चोरोंका भय, स्त्रियोंकी दुर्भाग्यता, कहीं वर्षा, कहीं खेती, कहीं भय और कहीं ईतिका उपद्रव होता है ॥ १७ ॥ चैत्रवर्षमें राजा आरोग्य हों, स्त्री थोड़ी सन्तानवाली हों, थोड़ी वर्षा, धान्यकी प्राप्ति और प्रजाको रोगसे भय हो ॥ १८ ॥ वैशाखवर्षमें राजाओं पृथ्वीपर धर्म पालन करें, क्षेम सुभिक्ष और आरोग्य हो, तथा ब्राह्मण यज्ञकर्ममें तत्पर हों ॥ १९ ॥ ज्येष्ठवर्षमें धर्ममार्गी और सत्क्रिया करनेवाले दुःखी हों, वर्षा नहीं होनेसे अन्नका विनाश हो ॥ २० ॥ आषाढवर्षमें राजा सर्वदा लड़ाई करनेमें उद्यत हों, कहीं ईति, कहीं भय, कहीं वृद्धि और कहीं जल हो ॥

क्वचिदीतिः क्वचिद् भीतिः क्वचिद् वृद्धिर्जलं क्वचित् ॥२१॥
श्रावणाब्दे धरा भाति त्रिदशस्पर्द्धिमानवैः ।
धरा पुष्पफलैर्युक्ता परिपूर्णाध्वरादिभिः ॥२२॥
अब्दे भाद्रपदे वृष्टिः क्षेमारोग्य क्वचित् क्वचित् ।
सर्वसस्यसमृद्धिः स्याद् नाशमेत्यपर फलम् ॥२३॥
अब्दे त्वाश्वयुजेऽत्यर्थं सुखिनः सर्वजन्तवः ।
मध्यम पूर्वसस्यं स्यात् पर पूर्णं विपच्यते ॥२४॥

पाठान्तर जीर्णग्रन्थेषु । मेषराशिस्थगुरुफलम्—

मेषराशौ यदा जीव श्चैत्रसंवत्सरस्तदा ।
प्रबुद्धनामा जलदो वर्षा च सर्वतोमुखी ॥२५॥
सुभिक्ष विग्रहो राज्ञां समर्घं वस्त्रकर्पटम् ।
हेमरूप्य तथा ताम्रं कर्पासं च प्रवालकम् ॥२६॥
मञ्जिष्ठानारिकेल च पट्टसूत्रे समर्घता ।
कांस्यं लोहं तथैवेक्षु-पूगादीनां च संग्रहः ॥२७॥
अश्वपीडा महारोगो द्विजानां कष्टसम्भवः ।

२१॥ श्रावणवर्षमें पृथ्वी देवोंकी स्पर्द्धा करनेवाले मनुष्योंसे सुशोभित हो, तथा फल फूल और यज्ञोंसे पूर्ण हों ॥ २२ ॥ भाद्रपदवर्षमें वर्षा हो, कहीं कहीं क्षेम और आरोग्य हो, सब धान्यकी वृद्धि हो परन्तु फलकी हानि हो ॥२३॥ आश्विनवर्षमें सब प्राणी बहुत सुखी हों, प्रथम मध्यम खेती हो और पीछे से पूर्ण खेती हो ॥ २४ ॥

मेषराशिमें जब बृहस्पति हो तब चैत्रसंवत्सर कहा जाता है। उसमें प्रबुद्धनामका मेघ सब ओरसे वर्षा करता है ॥ २५ ॥ सुभिक्ष, राजाओंमें विरोध वस्त्र कपड़ सोना चांदी तांबा कपास और मूंगे ये सस्ते हों ॥ २६ ॥ मजीठ श्रीफल और रेशमीवस्त्र सस्ते, कांसा लोहा ईख और सुपारी आदि का संग्रह करना ॥ २७ ॥ घोड़ोंको पीड़ा, रोग अधिक, ब्राह्मणोंको कष्ट

मासत्रये फलमिदं पश्चाद् भाद्रपदे पुनः ॥ २८ ॥
गोधूमशालिमाषाना-माज्यस्याग्रे समर्घता ।
दक्षिणस्यामुत्तरस्यां खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥ २९ ॥
दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभङ्गोऽपि कुत्रचित् ।
दुर्भिक्षमपि षण्मासा आश्विने फाल्गुने तथा ॥ ३० ॥
पश्चात् सुभिक्ष द्वौ मासौ नाम्ना मेघो जलेन्द्रकः ।
कार्त्तिके मार्गशीर्षे च कर्पासान्नमहर्घता ॥ ३१ ॥
मेदपाटे राजपीडा देशभङ्गोऽल्पवर्षणम् ।
लोकाः सरोगा दुर्भिक्ष पौषे रसमहर्घता ॥ ३२ ॥
वाणिज्ये संशयो लाभे वैशाखे गुर्जरे रणः ।
छत्रभङ्गस्तथाषाढे श्रावणे वा भय पथि ॥ ३३ ॥
नवीनो जायते राजा क्वचिन्मेघोऽपि कार्त्तिके ।
धान्यानि संग्रहे लाभ-स्त्रिगुणो मासि पञ्चमे ॥ ३४ ॥
अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद् राशित्रयं स्पृशेत् ।

यह तीन मास के फल है, पीछे भाद्रपदमें ॥ २८ ॥ गेहूँ चावल उर्द और घी सस्ते हों, दक्षिण तथा उत्तरमें खण्डवृष्टि हो ॥ २९ ॥ दक्षिण तथा उत्तरदेशमें कहीं छत्रभंग और आश्विनसे फाल्गुन तक छः महिने दुर्भिक्ष रहे ॥ ३० ॥ पीछे दो मास सुभिक्ष तथा जलेन्द्र नामका मेघ वरसे । कार्तिक और मार्गशीर्ष मासमें कपास तथा अनाजकी तेजी हो ॥ ३१ ॥ मेदपाटमें राज्यपीडा, देशभंग तथा थोड़ी वर्षा हो, लोकमें रोग और दुर्भिक्ष हो । पौषमें रस तेज ॥ ३२ ॥ व्यापारियोंको लाभमें सन्देह, वैशाखमें गुजरात देशमें युद्ध, आषाढ या श्रावणमें छत्रभंग और मार्गमें भय हो ॥ ३३ ॥ नवीन राजा हो, कहीं कार्तिकमें भी वर्षा हो, धान्यका संग्रह करे तो पांचवें मासमें तीगुना लाभ हो ॥ ३४ ॥ एक वर्षमें यदि गुरु क्रम से तीन राशि को स्पर्श करे तो पृथ्वी करोड़ों मुण्डों से सङ्कुचित हो ॥ ३५ ॥ दादर

तदा सुभटकोटीभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा ॥३५॥
उदग्वीथ्यां चरन् जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः ।
मध्यमे मध्यमं चार्य-मेवमन्येऽपि खेचराः ॥३६॥
एष एव किल मेषविशेषः, शेषमत्र गुरुगम्यमशेषम् ।
शेषमत्र गुरुचारविचार-संग्रहे भजतु जातु न कश्चित् ॥३७॥

वृषराशिस्थगुरुफलम् —

वृषराशौ यदा जीवो वैशाखो वत्सरस्तदा ।
नन्दशालो भवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता ॥३८॥
वैशाखे आश्विने मासे स्त्रीणां रोगाश्च दन्तिनाम् ।
अश्वानां च महापीडा गृहे वैरं परस्परम् ॥३९॥
उत्तरस्यामनावृष्टि-र्दुर्भिक्षं मण्डले क्वचित् ।
पूर्वस्यां च महासौख्यं राजबुद्धिविपर्ययः ॥४०॥
घृतं तैलं च मञ्जिष्ठा मौक्तिकं च प्रवालकम् ।
लवणं रक्तवस्त्रं च नारिकेलं समर्घकम् ॥४१॥

राशि पर गुरु हो तब सुभिक्ष और क्षेम (कल्याण) हो मध्यम में मध्यम फल कहना इसतरह सब ग्रहोंका जानना ॥ ३६ ॥ इसतरह मेषराशिका फल कहा, और विशेष गुरुगमसे जानना। दूसरा कोई पुरुष गुरुचार के विचारसंग्रहमें कभी शङ्का नहीं लावें ॥ ३७ ॥ इति मेषराशिस्थगुरु का फल ॥

जब वृषराशिपर गुरु हो तब वैशाखवर्ष कहा जाता है। इसमें नन्दशाल नामका मेघ बरसे और सब धान्य सस्ते हों ॥ ३८ ॥ वैशाख और आश्विनमें स्त्री तथा हाथियोंको रोग, घोड़ोंको महापीडा और घरों में परस्पर द्वेष हो ॥ ३९ ॥ उत्तरमें अनावृष्टि और देशमें कहीं दुर्भिक्ष हो, पूर्वमें बडा सुख और राजकी बुद्धि विपरीत हो ॥ ४० ॥ घी तेल मँजिठ मोती मूंगा लूण लालवस्त्र और श्रीफल ये सस्ते हों ॥ ४१ ॥ ज्वार गेहूँ चावल चणा मूंग उड़द और तिल ये महँगे हैं, तथा ज्येष्ठ मासका अधिक

गोधूमशालिचणका मुद्गा माषास्तथा तिलाः ।
महर्घाः श्रावणे ज्येष्ठे मेघानां च महाजलम् ॥४२॥
श्रृगालके मालवे च उत्पातो राजविग्रह ।
देशभंगाद् भय शून्य घृतधान्यमहर्घता ॥४३॥
मेदपाटे ग्रीष्मऋतौ समर्घं धान्यमीरितम् ।
मरौ धान्य घृतं तैलं महर्घं धातवोऽन्यथा ॥४४॥
सिन्धुदेशे नागपुरे श्रीविक्रमपुरे स्थले ।
धान्यं महर्घं समर्घं मेदपाटे तदा भवेत् ॥४५॥
मासद्वयं संग्रहः स्याद् धान्यानां च ततः शुभम् ।
दुर्भिक्ष मालवके मार्गरोधः प्रजाक्षयः ॥४६॥
आषाढे श्रावणे वर्षा न वर्षा भाद्रपादके ।
अश्वरोगश्चतुष्पाद-नाशस्त्रीडागमः क्वचित ॥४७॥
मुनिभिर्वृषभैर्वृषभगते गुरौ फलं सकलमेवसमादिष्टम् ।
जिनवृषभध्यानबलादन्यला सर्वत्र सा स्यात् ॥४८॥

मिथुनराशिस्थगुरुफलम्—

मिथुने सङ्गते जीवे ज्येष्ठाख्यवत्सरो भवेत् ।
बालानां दोषमश्वानां खण्डवृष्टिस्तदा वदेत् ॥ ४९॥
कर्कोटकस्तदा मेघो गण्डूपदो मतान्तरे ।
तस्करैः पीड्यते लोकः पापोपहतमानसैः ॥ ५०॥
पश्चिमायां सिन्धुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ।
चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगाः पीडोत्तरापथे ॥ ५१॥
श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कर्पूरं चन्दनादिकम् ।
मञ्जिष्ठं नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च रूप्यकम् ॥ ५२॥
मासानां पञ्चकं यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् ।
पश्चान्महर्घं पूर्वोक्त-धान्यानां च समर्घता ॥ ५३॥
पूर्वाग्निधाम्यनैर्ऋत्या-मीशाने च सुभिक्षता ।
श्रावणे तु महत्कष्टं महिषीणां च हस्तिनाम् ॥ ५४॥
राजा स्वस्थः प्रजावृद्धिः सुभिक्षं मङ्गलं भुवि ।
समर्घं तैलखण्डादिशर्कराधातवोऽपि च ॥ ५५॥

जब मिथुनराशिका बृहस्पति हो तब ज्येष्ठसंवत्सर कहा जाता है, इसमें बालकोंको और घोडेको रोग और खण्डवर्षा हो ॥ ४९॥ कर्कोटक नामका या गडूपद नामका वर्षा बरसे और लोक पापी मनवाले चोरोंसे पीडित हो ॥ ५० ॥ पश्चिममे सिन्धुदेशमें वायव्य और उत्तर दिशाके देशमें चित्र विचित्र रोग और उत्तर प्रदेशमें पीडा हो ॥ ५१ ॥ श्वेत वस्त्र काशी कर्पूर चन्दन मँजिठ श्रीफल सुपारी सोना और चांदी आदि ॥ ५२ ॥ चैत्रसे पांच महीने तक सस्ते हो पीछे पूर्वोक्त धान्यकी तजी या समानता रहे ॥ ५३ ॥ पूर्व आग्नेय दक्षिण नैर्ऋत्य और ईशानमे सुभिक्ष हो श्रावणमें भैंस और हाथियोंको बडा कष्ट हो ॥ ५४ ॥ राजा स्वस्थ, प्रजामें वृद्धि और पृथ्वी पर सुभिक्ष तथा मंगल हो, तेल खांड

शृंगालदेशे चोत्पाताः क्रयाणकेषु मन्दता ।
महावर्षा घृतं धान्यं समर्घं च गुडस्तथा ॥ ५६ ॥
शुंठीमरिचपिप्पल्यो मञ्जिष्ठा जातिकोशलः ।
महर्घमेतद्वस्तु स्यात् फाल्गुने धान्यसङ्ग्रहः ॥ ५७ ॥
कर्पास लवण गुडतिलगोधूमयुगन्धरीचणकमुद्गान् ।
सगृह्य विक्रयक्रितस्त्रिगुणो लाभस्त्रिमासान्ते ॥ ५८ ॥
गुरुरपि मिथुनानिलीनसारस्यमवश्यतः करोति जने ।
व्यभिचारं चारचर्चाबलात् क्वचिद् देशभङ्गभयम् ॥ ५९ ॥

कर्कराशिस्थगुरु फलम्—

कर्के गुरुस्तदाषाढो वत्सरस्तत्र जायते ।
पूर्वदक्षिणयोर्मेघो मध्यमः कम्बलाभिधः ॥ ६० ॥
महर्घं सर्वधान्यानां कार्त्तिके फाल्गुने तथा ।
पश्चिमायां सिन्धुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ॥ ६१ ॥

सक्कर और धातु भी सस्ते हों ॥ ५५ ॥ शृगालदेशमें उत्पात और करियाणामें मंदता हो, महावर्षा हो, घी धान्य और गुड सस्ते हों ॥५६॥ सोंठ मिरच पीपल मँजीठ जायफल कोशल (ककोल) ये वस्तु महँगी हों, फाल्गुनमें धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ ५७ । कपास लूण गुड तिल गेहूँ जुआर चणा और मूंग आदि खरीद कर संग्रह करना तीन मास के पीछे वेचनेसे तीगुना लाभ हो ॥ ५८ ॥ लोकमें मिथुनराशिका गुरु भी व्यभिचार करता है और कभी उसका चार प्रभावसे देशभंगका भय होता है ॥ ५९ ॥ इति मिथुनराशिस्थगुरुका फल ॥

जब कर्कराशिमें बृहस्पति हो तब आषाढसंवत्सर कहा जाता है इसमें पूर्व और दक्षिणमें कम्बल नामका मध्यम मेघ बरसे ॥ ६० ॥ कार्त्तिक और फाल्गुनमें सब धान्यकी तेजी हो, पश्चिममें सिंधदेशमें वायव्यमें और उत्तर दिशामें ॥ ६१ ॥ पशुओंका विनाश हो, मृगों को दुःख,

क्षयश्चतुष्पदानां स्याद् दुर्भिक्ष मृगसैन्यकम् ।
हेमरूप्य तथा ताम्र पट्टसूत्र प्रवालकम् ॥ ६२ ॥
मौक्तिक कुंकमप्रायादि लोके तथा लोकविक्रयः ।
मञ्जिष्ठाश्वेतवस्त्राणां समर्धं सुभटक्षयः ॥ ६३ ॥
गोधूमशालितैलाज्य लवण शर्करा पुनः ।
माषा महर्घा जायन्ते पापकर्मरतो जनः ॥ ६४ ॥
कार्त्तिकद्वितये धान्य-घृततैलमहर्घता ।
पट्टसूत्र च वस्त्राणि जातीफललवङ्गकम् ॥ ६५ ॥
मरिच शीतकालेऽथ सग्राह्याणि वणिग्जनैः ।
वैशाखज्येष्ठयोर्लाभो द्विगुणस्तस्य विक्रयात् ॥ ६६ ॥
वर्षाकाले महावर्षा सर्वधान्यसमर्घता ।
सुभिक्ष तिलकर्पास-चणकानां गुडस्य च ॥ ६७ ॥
गोधूममाषतुवरी-युगन्धरीमुद्गकोद्रवादीनाम् ।
आषाढे संग्रहतो लाभः पुनरग्रतो द्विगुणः ॥ ६८ ॥
सिंहराशिस्थ गुरुफलम् --

दुर्भिक्षता सोना चांदी वस्त्र सूत मगा ॥ ६२ ॥ मोती द्रव्य और अन्न आदि चतुराई की वातोंसे विके मंजीठ और श्वेतवस्त्र सस्ते हों और सुभटोंका नाश हो ॥ ६३ ॥ गेहूँ चावल तेल घी लूण सक्कर और उर्द ये महँगे हों और मनुष्य पापकर्ममें लीन हों ॥ ६४ ॥ कार्त्तिक मार्गशीर्षमें धान्य घी तेलकी तेजी, रेशम वस्त्र जायफल लोंग ॥ ६५ ॥ मिर्च ये व्यापारीयोंको शीतकालमें संग्रह करना उचित है, उनको वैशाख ज्येष्ठमें बेचनसे दूना लाभ होगा ॥ ६६ ॥ वर्षाऋतुमें बड़ा वर्षा हो, सब धान्य सस्ते हों सुभिक्ष हो तिल कपास चणा गुड़ गेहूँ उर्द तुवरी जुआर मूग और कोद्रवा आदि आषाढमें संग्रह करनेसे भी-यऋतुमें दूना लाभ होगा ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ इति कर्कराशिस्थगुरुका फल ॥

सिंहे जीवे श्रावणाख्यवत्सरे वासुकिर्घनः ।
बहुक्षीरभृता गावो जलपूर्णा च मेदिनी ॥६९॥
देवब्राह्मणपूजा स्यान्नराणां मान्यता सताम् ।
रोगा विवादश्चान्योऽन्यं चतुष्पदमहर्घता ॥७०॥
म्लेच्छदेशे महायुद्ध छत्रभङ्गश्च विड्वरम् ।
उत्क्षसः क्रियते लोकाः पश्चिमोत्तरवायुषु ॥७१॥
गोधूमतिलमाषाज्य-शालीनां च महर्घता ।
सुवर्णरूप्यताम्रादेः प्रवालानां समर्घता ॥७२॥
सुभिक्षं सर्पदंशश्च मेघोऽप्याषाढभाद्रयोः ।
श्रावणे वृष्टिरल्पैव सुकालः कार्त्तिके स्मृतः ॥७३॥
सोपारीटोपरा डोडा-मजीठसुंठिखारिका ।
पट्टकूलं जातिफलं कर्पूरं सुमहर्घकम् ॥७४॥
उष्णकाले गुडः खण्डा हिंगुमीश्री च शर्करा ।
महर्घमेतद् वस्तु स्याद् धान्यस्यातिसमर्घता ॥७५॥

जब सिंहका बृहस्पति हो तब श्रावणसंवत्सर कहा जाता है। इसमें वासुकी नामका मेघ वर्षता है, गौ बहुत दूध वाली हों, और पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥ ६९ ॥ देवब्राह्मणोंकी पूजा और सत्पुरुषोंका सत्कार हो, रोग परस्पर कलह और पशुओंकी तेजी हो ॥ ७० ॥ म्लेच्छदेशमें महायुद्ध छत्रभंग और विड्वर हो, पश्चिमोत्तरवायु चलने से लोगोंका विनाश हो ॥ ७१ ॥ गेहूँ तिल उर्द घी और चावल ये महँगे हों तथा सोना रूपा तांबा मूंगा आदि सस्ते हों ॥ ७२ ॥ सुभिक्ष हो, सर्पदंशका भय, आषाढ और भाद्रपदमें वर्षा, श्रावणमें थोड़ी वर्षा, कार्तिकमें सुकाल ॥ ७३ ॥ सुपारी टोपरा डोडा मँजीठ सोंठ खारिक रेशमीवस्त्र जायफल और कपूर आदि महंगे हों ॥ ७४ ॥ ग्रीष्मऋतुमें गुड खांड हींग मीश्री सक्कर ये वस्तु तेज हों, और धान्य सस्ता हो ॥ ७५ ॥ ज्येष्ठमें आठ स्कन्दोंसे एक

ज्येष्ठेऽष्टस्कन्दकैर्धान्यं लभ्यते मणमानतः ।
स्कन्दकैः पञ्चविंशत्या घृतं तैलं तु विंशतेः ॥७६॥
स्कन्दकैर्दशभिर्लभ्या गोधूमा मणसंमिताः ।
धान्यकर्पासतैलादि-रससंग्रहणं शुभम् ॥७७॥
फाल्गुनेऽत्र ततो ज्येष्ठाद् लाभो द्विगुणतः परम् ।
गुरौ सूर्यगृहप्राप्ते सर्वत्र धार्मिकोदयः ॥७८॥

कन्याराशिस्थगुरुफलम् —

कन्याभोगे गुरोर्जाते मेघनामतमस्तमः ।
भाद्रसंवत्सरस्तत्र सप्तमासाश्च रौरवम् ॥७९॥
ततः परं सुभिक्षं स्यात् कार्त्तिकान्माधवावधि ।
आज्यसंग्रहणाद् लाभो द्विगुणो भाद्रमासजः ॥८०॥
चतुष्पदानां पीडापि गोधूमाः शालिशर्कराः ।
तैलं माषा महर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा ॥८१॥
शूद्राणामन्त्यजानां च कष्टं सौराष्ट्रमण्डले ।

मण धान्य मिले, घी पच्चीस स्कन्दोंसे और तेल बीस स्कन्दोंसे मिले ॥७६॥ दश स्कन्दोंसे एक मण गेहूँ मिले, धान्य कपास और तेल आदि रस का फाल्गुन में संग्रह करना अच्छा है ॥७७॥ इसमे जेठतक द्विगुना लाभ हो, सिंह राशिपर बृहस्पति आनसे सब जगह धार्मिक कार्य हो ॥७८॥ इति सिंहराशिस्थगुरुका फल ॥

जब कन्याराशिमें बृहस्पति हो तब भाद्रपदसंवत्सर कहा जाता है इसमें तमस्तम नामका मेघ बरसता है और सात मास दुःख होता है ॥७९॥ इसके पीछे कार्तिकसे वैशाख तक सुभिक्ष हो, इस समय भाद्रपदमें संग्रह किया हुआ घी से दूना लाभ हो ॥ ८० ॥ पशुओंको पीडा, गेहूँ चावल सक्कर तेल उर्द गन्न (इक्षु) गुड आदि महँगे हो ॥ ८१ ॥ शूद्र और अन्त्यज को सोरठदेशमें कष्ट हो, नदियाम सुघटवृष्टि और म्लेच्छनमें उत्पात हो

खगडवृष्टिर्दक्षिणस्या-मुत्पातो म्लेच्छमण्डले ॥ ८२ ॥
मेदपाटे शृंगाले च परचक्रभयं रणः ।
सर्पदंशो वह्निभयं मेघोऽल्पश्च रसेऽल्पता ॥ ८३ ॥
मरुदेशे छत्रभङ्ग-श्चैत्रे वा माधवे भवेत् ।
गोधूमा घृततैलानि महर्घाणि समादिशेत् ॥ ८४ ॥
वस्त्रकम्बलधातूनां रत्नादेश्च समर्घता ।
धान्यसंग्रह आषाढे भाद्रे लाभश्चतुर्गुणः ॥ ८५ ॥

तुलाराशिस्थगुरुफलम्—

गुरोस्तुलायां मेघाख्यः तक्षको वत्सरोऽश्विनः ।
तदातिवृष्टिर्मञ्जिष्ठा नालिकेरसमर्घता ॥ ८६ ॥
अन्योऽन्य राजयुद्धानि समर्घं त्वाज्यतैलयोः ।
मार्गशीर्षे तथा पौषे क्रये धान्यस्य सङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
लाभः स्यात पञ्चमे मासे मार्गात् प्रारभ्य चैत्रतः ।
छत्रभङ्गस्ततो राज-विग्रहः क्वापि मण्डले ॥ ८८ ॥

॥ ८२ ॥ मेदपाट और शृंगालदेशमें शत्रुका भय और युद्ध हो, सर्पदंशका भय, अग्निका भय, थोड़ी वर्षा और रस थोड़ा हो ॥ ८३ ॥ चैत्र वैशाखमें मरुदेशमें छत्रभंग हो, गेहूँ घी और तेल आदि तेज हो ॥ ८४ ॥ वस्त्र कम्बल धातु और रत्न आदि सस्ते हों, आषाढ़में धान्यका संग्रह करनेसे भाद्रपदमें चौगुना लाभ हो ॥ ८५ ॥ इति कन्याराशिस्थगुरुका फल ॥

जब तुलाराशिका बृहस्पति हो तब आश्विनवत्सर कहा जाता है, इसमें तक्षक नामका मेघ बरसता है, वर्षा अधिक और मँजीठ तथा नारियलका भाव सस्ता हो ॥ ८६ ॥ राजाओंमें परस्पर युद्ध, घी और तेल सस्ता, मार्गशीर्ष तथा पौषमें धान्यका संग्रह करना अच्छा है ॥ ८७ ॥ इसका मार्गशीर्षसे लेकर चैत्र तक पांचवें मासमें लाभ होता है, छत्रभंग और कहीं देशमें राजविग्रह हो ॥ ८८ ॥ मरुदेशमें उत्पात तथा मार्गमें चोरोंका भय

उत्पातो मरुदेशे स्यान्मार्गे चौरभयं तथा ।
कोटजेसलमेर्वादौ परचक्रागमो मतः ॥ ८९ ॥
स्कन्दकैर्दशभिश्चैक-मणधान्यं च लभ्यते ।
कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा मेघस्त्वाषाढके महान् ॥ ९० ॥
त्रयोदशस्कन्दकैस्तु खण्डामणमवाप्यते ।
पञ्चाशत्स्कन्दकैर्मिश्री-शर्करामणविक्रयः ॥ ९१ ॥
रसक्रयाणकादीनां संग्रहेण चतुर्गुणः ।
लाभश्चतुर्थमासे स्याद् धातूनां च समर्घता ॥ ९२ ॥

वृश्चिकराशिस्थगुरुफलम्——

वृश्चिकस्थे गुरौ सोम-मेघः कार्त्तिकमासतः ।
संवत्सरः खण्डवृष्टि-र्धान्यमल्प भय महत् ॥९४॥
गृहे परस्परं वैर-मष्टौ मासा न सशाय ।
भाद्राश्विनकार्त्तिकाख्या-स्त्रयो मासा महर्घताः ॥९४॥
ततः सुभिक्षं जायेत मन्दवृष्टिश्च मण्डले ।

हो कोट जेसलमेर आदिमें शत्रुओंका आगमन हो ॥ ८९ ॥ दश स्कदोंसे एक मण धान्य बिके। कार्तिक और मार्गशीर्षमें अथवा माघ और आषाढमें ॥ ९० ॥ तेरह स्कदोंमे मण खाड बिके और पन्द्रह स्कन्दोंसे एक मण मीश्री और सक्कर बिके ॥ ९१ ॥ रस और क्रयाणा आदिका सग्रह करने वालेको चौथे मासमें चौगुना लाभ हो और धातु सस्ती हो ॥ ९२ ॥ इति तुलाराशिस्थगुरुका फल ॥

जब वृश्चिकराशिका बृहस्पति हो तब कार्तिकसंवत्सर कहा जाता है, इसमे सोम नामका मेघ वरसे, खण्डवर्षा धान्य थोडा और भय अधिक हो ॥ ९३ ॥ घरोंमे परस्पर द्वेष आठ मास तक हो इसमें सशय नहीं, भाद्रपद आश्विन और कार्तिक ये तीन मास तेजी रहे ॥ ९४ ॥ पीछे सुभिक्ष हो देशमे थोड़ी वर्षा, पश्चिमप्रान्तमे जीरकी त्रपा और वायव्य प्रा-

पश्चिमायां जीवघृष्टि-र्दुर्भिक्षं वायुमण्डले ॥९५॥
हेमरूप्यकांश्यताम्र-तिलाज्यश्रीफलादिषु ।
महर्घं गुडकर्पास-लवणश्वेतवस्त्रकम् ॥९६॥
महिषी वृषभा ह्यश्वाः समर्घा मध्यमण्डले ।
तीडानां म्लेच्छलोकानां महोत्पातश्च सम्भवेत् ॥९७॥
शृंगालदेशे कटक रोगोऽश्वमहिषीषु च ।
एतानि च महर्घाणि हिंगुखारिकटोपरा ॥९८॥
देशभङ्गोऽप्यल्पवृष्टिः स्त्रीणामपि च दुःखिता ।
मरौ तथा नागपुरे देशे क्लेशाकुलाः प्रजाः ॥९९॥
गोधूमचणकतुवरी युगंधरीमाषमुद्गकगुतिलाः ।
संग्राह्यास्ते मासान् पञ्च पर विक्रयाद् द्विगुणो लाभः ॥१००

धनराशिस्थगुरुफलम्—

घने गुरौ हेममाली मेघः संवत्सरस्तथा ।

न्तमें दुर्भिक्ष हो ॥ ९५ ॥ सोना चांदी कांसी तांबा तिल घी नारियल गुड कपास लूण और श्वेतवस्त्र ये तेज हों ॥ ९६ ॥ भैंस बैल घोड़ा ये मध्यदेशमें सस्ते हों, टीड्डी और म्लेच्छलोकोंका बडा उत्पात हो ॥ ९७ ॥ शृगालदेशमें कटक (सेना) का आगमन, घोड़ाओं को और भैंसोंको रोग हो हिंग खारिक टोपरा ये तेज भाव हों ॥ ९८ ॥ देशका भंग, थोड़ा वर्षा, स्त्रियोंको दुःख, मारवाड तथा नागपुरदेशमें प्रजा क्लेश से व्याकुल हो ॥ ९९ ॥ गेहूँ चणा तुवरी जुआर उर्द मूँग कगु तिल इनका संग्रह करना उनको पांच मास पाछे बेचनेमे दुगुना लाभ होगे ॥ १०० ॥
॥इति वृश्चिकराशिस्थगुरु का फल ॥

जब धनराशिका बृहस्पति हो तब मार्गशीर्षवर्ष कहा जाता है इसमे हेममाली नामका मेघ जानना है, स्त्रियगण और वर घरमें स्त्रियोंको पीड़ा हो ॥ १०१ ॥ पूर्वकालमे धान्य गहूँ चावल और सक्कर अधिक हो, क-

मार्गशीर्षे दिव्यवृष्टिः स्त्रीणां पीडा गृहे गृहे ॥१०१
पूर्वकाले भवेद् धान्य गोधूमशालिशर्कराः ।
कर्पासश्च प्रवालानि कांश्यलोह घृत त्रपु ॥१०२॥
हेमरूप्य महर्घाणि तिलास्तैलं गुडस्तथा ।
पूगीफल श्वेतवस्त्र समर्घं च क्वचिद् भवेत् ॥१०३॥
मार्गशीर्षात् पुनर्ज्येष्ठ यावद् घृतमहार्घता ।
महिषीवाजिधेनूनां मञ्जिष्ठाया महर्घता ॥१०४॥
देशभङ्गश्च दुर्भिक्ष क्वचिन्मरकसम्भवः ।
सञ्जाते शीतकालेऽथ ग्रीष्मे म्लेच्छजनक्षयः ॥१०५॥
श्रावणे धान्यकलशी त्रिंशता स्कन्दकैर्भवेत् ।
पञ्चाशत् स्कन्दकैराज्यमणं भाद्रेऽम्बुदो महान ॥१०६॥
आश्विने रोगिता सर्प-दंशो धान्यमण पुनः ।
दशभिः स्कन्दकैराज्य-मण तावद्भिरेव च ॥१०७॥
खण्डा लभ्या शेरमिता एकेन स्कन्दकेन च ।
गुडे सितोपलायां च महर्घत्वं क्वचिद् भवेत् ॥१०८॥

कुलत्थकामसूरान्नं रक्तवस्त्रं महर्घकम् ।
तथैव गोधूमयवाश्चात्र मङ्गश्च गौर्जरे ॥१०९॥
मार्गशीर्षे तथा पौषे मञ्जिष्ठाहिंगुमौक्तिकम् ।
जाती पूगीफल चैव प्रवालानां महर्घता ॥११०॥
चतुष्पदादिकर्पास-संग्रहो रसमाषकान् ।
तल्लाभः सप्तमे मासे प्रोक्तो व्यक्तैश्चतुर्गुणः ॥१११॥

मकरराशिस्थगुरुफलम —

गुरौ मकरगे मेघो जलेन्द्र पौषवत्सरः ।
चतुष्पदक्षयो भूम्यां दुर्भिक्ष निर्जलो जनः ॥११२॥
मार्गशीर्षाद् धान्यवस्तु-संग्रहः क्रियते तदा ।
विग्रहश्च महाघोरो राज्ञां बुद्धिविपर्ययः ॥११३॥
उत्तरापश्चिमे देशे खण्डवृष्टिः कदापि च ।
पूर्वस्यां दक्षिणे चैव दुर्भिक्ष राजविग्रहः ॥११४॥
पापबुद्धिरतालोका हाहाभूता च मेदिनी ।

जलतैलाज्यदुग्धाम्र-रक्तवस्त्रमहर्घता ॥११५॥
उत्तमा मध्यमाः सर्वे सर्वभक्षणतत्पराः ।
क्षत्रियाणां छत्रभङ्गो म्लेच्छानां च ततः क्षयः ॥११६॥
चैत्राश्विनाषाढमासा-स्त्रयो महर्घहेतवः ।
पश्चाद् धान्यसुभिक्षं स्यात् प्रजां पीडन्ति तस्कराः ॥११७॥
हेमरूप्यताम्रलोह-कर्पूरं चन्दनादिकम् ।
महर्घं नर्मदातीरे महीतीरे शुभं भवेत् ॥ ११८ ॥
माघे मालपदे देश-भंगो वर्षा न भूयसी ।
व्याधयो बहुला रूप्य-धातूनां च महर्घता ॥ ११९ ॥
मेदपाटे च कटक मार्गशीर्षेऽपि पौषके ।
महाजनानां पीडापि छत्रभङ्गो महाभयम् ॥ १२० ॥
देशग्रामपुरादीनां लुण्टन युद्धसम्भवः।
शालयो यवगोधूमा महर्घाः स्युस्तथा रसाः ॥ १२१ ॥
खण्डाधान्यगुडानां मञ्जिष्ठायाः सितोपलादीनाम् ।

और मध्यम सब लोग सर्व प्रकारके भक्षणमें तत्पर हों, क्षत्रियोंका क्षत्रभंग और म्लेच्छोंका विनाश हो ॥ ११६ ॥ चैत्र आश्विन और आषाढ ये तीन महीने अन्नभाव तेज, पीछे सुभिक्ष, प्रजा को चोर अधिक दुःख दें ॥ ११७ ॥ सोना चांदी तांबा लोहा कपूर चन्दन आदि नर्मदानदीके तट पर महँगे हों और महीनदीके तट पर सस्ते हों ॥ ११८ ॥ माघ मासमें मालपद (मालवा) में देशभंग, वर्षा अधिक न हो, व्याधि अधिक और चांदी आदि धातु तेज हो ॥ ११९ ॥ मेदपाट मे कटक (सैना) चाले मार्गशीर्ष और पौष इन दो मास महाजन को पीडा, छत्रभंग और महाभय हो ॥ १२० ॥ देश गाँव पुरमें लूट और युद्ध हो चावल जव गहूँ तथा रस ये तेज हों ॥ १२१ ॥ खांड धान्य गुड मजीठ और सक्कर ये पांच फाल्गुन और चैत्रमें तेज हों ॥ १२२ ॥ घी तेल रेशमीवस्त्र कम्बलवस्त्र और

सर्वत्र महर्घत्वं चैत्रेऽपि च पञ्च फाल्गुने मासे ॥ १२२॥
घृततैलपट्टसूत्र-कम्बलवस्त्राणि चेक्षुरसवस्तु ।
आषाढे तु महर्घं मेघेऽल्पेऽपि च सुभिक्षं स्यात् ॥ १२३॥
दशभिः स्कन्दकैर्धान्य-मणं षोडशभिर्घृतम् ।
तैः पञ्चदशभिस्तैल-माश्विने कार्त्तिके स्मृतम् ॥ १२४॥
अष्टभिः स्कन्दकैर्लभ्या गोधूमामणिमानवम् ।
तैः सप्तदशभिस्तैलं चतुर्भिः शेषधान्यकम् ॥ १२५॥
कुम्भराशिस्थगुरुफलम् -
कुम्भे गुरौ वज्रदण्डो मेघो माघादिवत्सरः ।
सुभिक्षं जायते तत्र ऋषिदेवद्विजार्चनम् ॥१२५॥
कांस्यं च पित्तल लोह मञ्जिष्ठा त्रपुकाञ्चनम् ।
एषां मासत्रय यावत् समर्घत्व प्रजायते ॥१२६॥
मौक्तिक च प्रवालानि मञ्जिष्ठापट्टकूलकम् ।
पूगी रूप्य नारिकेल श्वेतवस्त्रं महर्घकम् ॥१२७॥
माघफाल्गुनचैत्रेषु रोगामामत्रये मताः ।

महर्घं लवणं लोके मरौ धान्यं महर्घकम् ॥१२८॥
चैत्रवैशाखयोः सिन्धु-देशे कटकचालकः ।
वस्त्रकम्बलहिंगूनां महर्घत्व प्रजायते ॥१२९॥
कार्त्तिके चाश्विने रोगा-श्छत्रभङ्गो महद्भयम् ।
रसकर्पासवस्त्राणां सर्वत्र स्यान्महर्घता ॥१३०॥
आषाढे मणगोधूमाश्चतुर्भिः स्कन्दकैर्मताः ।
अष्टादशभिराज्य च तैलं तैर्मनुसंमितैः ॥१३१॥
श्रावणे वा भाद्रपदे धान्यं संगृह्यते तदा ।
पौषे स्याद् द्विगुणो लाभो युगन्धर्याश्च विक्रयात ॥१३२॥

मीनराशिस्थगुरुफलम

मीने गुरौ फाल्गुने स्याद् वत्सरः संभवो घनः ।
खण्डवृष्टिर्महर्घाणि सर्वधान्यानि भूतले ॥१३३॥
वायुरोगस्य पीडा च देशान्तरे व्रजेज्जनः ।
मासानां पञ्चक यावद् भयं राजविरोधतः ॥१३४॥

लूण (नमक) तेज तथा मारवाडमे धान्य भाव तेज हो ॥ १२८ ॥ चैत्र वैशाखमें सिन्धु देशमे कटक चाले, वस्त्र कम्बल हिंग ये तेज हो ॥ १२९ ॥ कार्त्तिक आश्विनमे रोग तथा छत्रभग आदिका बड़ा भय हो, रस कपास और वस्त्र तेज हो ॥ १३० ॥ आषाढमे चार स्कन्दोसे मण भर गेहूँ, अठारह स्कन्दोंमे मण भर घी और चौदह स्कन्दोंमें तेल बिके ॥ १३१ ॥ श्रावण भादोंमे धान्यका संग्रह करे तो पौषमे उनको और जुआरको बेचनसे दूना लाभ हो ॥ १३२ ॥ इति कुम्भराशिस्थगुरुका फल ॥

जब मीनराशिका बृहस्पति हो तब फाल्गुनसंवत्सर कहा जाता है। इसमे संभव नाम का मेघ बरसता है पृथ्वी पर खण्डवृष्टि और सब धान्य तेज हो ॥ १३३ ॥ वायुरोग की पीडा और लोग देशान्तरमे जावे, पांच मास तक राजविरोध होनसे भय हो ॥ १३४ ॥ पीछे सुख और सुभिक्ष

पश्चात् सुखं सुभिक्षं च शालिगोधूमशर्कराः ।
तिलतैलगुडानां च महर्घत्वं समीरितम् ॥१३५॥
मञ्जिष्ठानारिकेलानां श्वेतवस्त्रं च दन्तकाः ।
कर्पूरलवणाज्यानां महर्घत्वं प्रजायते ॥१३६॥
पौषे क्लेशसमुत्पत्ति स्तथा फाल्गुनचैत्रयोः ।
मरुदेशे महापीडा दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥१३७॥
चतुष्पदानां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् ।
आषाढे श्रावणे धान्य घृततैलमहर्घता ॥१३८॥
श्रावणस्योत्तरे पक्षे महावर्षा प्रजायते ।
घृतं समर्घं भाद्रपदे शुभावाश्विनकार्त्तिकौ ॥१३९॥
समर्घास्तिलकर्पासा-श्छत्रभङ्गस्ततोऽर्बुदे ।
मार्गशीर्षे तथा पौषे उत्पातो मरुमण्डले ॥१४०॥
ग्रीष्मे कटकसंग्राम-श्चतुष्पदमहर्घता ।
स्यान्नागपुरे दुर्भिक्षं वर्षाकाले सुभिक्षता ॥१४१॥
इति कतिपय शास्त्रावीक्षणाद् गौरवेण,

हो, चावल गहूँ शक्कर तिल तेल गुड़ आदि महँगे हों ॥ १३५ ॥ मँजीठ नारियल श्वेतवस्त्र दांत कपूर नमक घी ये महँगे हों ॥ १३६ ॥ पौष फाल्गुन और चैत्रमें क्लेश हो, मारवाड़में महापीडा और दुर्भिक्ष हो ॥१३७॥ वैशाख ज्येष्ठमें पशुओंका नाश हो, आषाढ श्रावणमें धान्य घी तेल महँगे हों ॥ १३८ ॥ श्रावणका उत्तरपक्ष (शुक्लपक्ष) में वर्षा अधिक हो, भादों में घी सस्ता, आश्विन कार्त्तिक ये दोनों मास शुभ ॥ १३९ ॥ तिल कपास सस्ते हों अर्बुद देशमें छत्रभंग हो, मार्गशीर्ष तथा पौषमें मरुदेशमें उत्पात हो ॥ १४० ॥ ग्रीष्मऋतुमें संग्राम हो पशुओंकी तेजी, नागपुरमें दुर्भिक्ष और वर्षाऋतु में सुभिक्ष हो ॥ १४१ ॥ इस तरह कईएक शास्त्रों को गौरवसे [illegible] विचार स्पष्ट होनेके लिये संग्रह

गुरुचरितविचार स्फारबोधाय दृब्धः ।
इह मतिरतिशायिन्येव युक्ता प्रयुक्ता-
द्विकलफललाभो वाक्यतोऽयं यतः स्यात् ॥१४२॥
इति नक्षत्रसंवत्सरलाभाय गुरुचारविचारः ।

अथ गुरुवक्रविचारः ।

रौद्रायमघमालायां पुनर्विशेष । मेषराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

अर्घकाण्डं प्रवक्ष्यामि येन धान्ये शुभाशुभम् ।
वर्षाधिपसमायोगो यदा तिष्ठेद् बृहस्पतिः ॥१४३॥
मेषराशिगतो जीवो यदा स्यान्मीनसङ्गतः ।
तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः ॥१४४॥
एते महर्घतां यान्ति मासद्वये न संशयः ।
पश्चाद् भाद्रपदे मासे आश्विने हे महेश्वरि ! ॥१४५॥
चन्दनं कुसुमं वापि ये चान्येऽपि सुगन्धयः ।
तैलपण्यानि सर्वाणि मासद्वयं महर्घता ॥१४६॥

r

वृषराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

वृषराशिगते जीवे वक्री स्यान्मासपञ्चके।
वृषभादिचतुष्पादे तुलाभाण्डे महर्घता ॥१४७॥
संग्रहः सर्वधान्यानां मासाष्टके महर्घता।
श्रीः श्रावणे भाद्रपदे आश्विने कार्त्तिके तथा ॥१४८॥
तत्परं सर्वधान्यानां चतुष्पदान् विशेषतः।
विक्रयाद् द्विगुणो लाभस्त्रिगुणास्तु चतुष्पदे ॥१४९॥

मिथुनराशिस्थगुरुवक्रफलम्

मिथुनस्थः सुरगुरुर्विकारं कुरुते यदा।
अष्टमासी भवेत् क्रूरा चतुष्पदमहर्घता ॥१५०॥
मार्गशीर्षादयो मासाः सुभिक्षं वमन भुवि।
लोकः सर्वो भवेत् स्वस्थो दुर्भिक्षं क्वचिदादिशेत् ॥१५१॥

कर्कराशिस्थगुरुवक्रफलम् —

कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत् तदा।
दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्धतत्पराः ॥१५२॥

राष्ट्रभङ्गं विजानीयाद् वैरोपद्रवसंकुलम् ।
रसादिसर्वसंयोगो घृततैलादिभाण्डकम् ॥१५३॥
कर्पासादीनि वस्तूनि लाभं दद्युर्न संशयः ।
मार्गादिमासाः सप्तैव सर्वधान्यमहर्घता ॥१५४॥

सिंहराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

सिंहराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोकाः प्रहर्षिताः ॥१५५॥
सर्वधान्यानि संगृह्य तुलाभाण्डानि यानि च ।
गतेषु नव मासेषु पश्चाद् विक्रयमादिशेत् ॥१५६॥

कन्याराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

कन्याराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।
अलाभं चैव लाभं च पुण्यकर्मवशात् पुनः ॥१५७॥

तुलाराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

तुलाराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा ।

पद्रव हो, रसादि सब वस्तु - घी तेल कपास आदि से निसंदेह लाभ हो और मार्गशीर्षादि सात मास सब धान्य भाव तेज रहे ॥ १५३, ४ ॥ इति कर्कराशिस्थगुरुवक्र फल ॥

जब सिंहराशिका बृहस्पति वक्री हो तब सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और सब लोक प्रसन्न हों ॥ १५५ ॥ सब धान्योंका और तुलाभाण्ड का संग्रह करना, उसको नव महीने पीछे बेचनेसे लाभ होगा ॥ १५६ ॥ इति सिंहराशिस्थगुरुवक्र फल ॥

कन्याराशिका बृहस्पति जब वक्री हो तब अपने पुण्यकर्मानुसार लाभालाभ होता है ॥ १५७ ॥ इति कन्याराशिस्थगुरु वक्र फल ॥

जब तुलराशिका बृहस्पति वक्री हो तब तुलावस्तु सुगन्धि वस्तु कपास और नमक ये सस्ते हो तथा मार्गशीर्ष आदि ग्यारह मास के उ

तुलाभाण्डसुगन्धीनि कर्पासलवणानि च ॥ १५८ ॥
समर्घाणि भवन्त्येव मार्गशीर्षव्यतिक्रमे ।
दशमासात्यये लाभो द्विगुणस्तत्र सम्भवेत् ॥ १५९ ॥

वृश्चिकराशिस्थगुरुफलम्—

वृश्चिकं यदि सम्प्राप्य वक्रं याति बृहस्पतिः ।
अन्नस्य संग्रहस्तत्र धान्यादेस्तु विशेषतः ॥ १६० ॥
कर्पासस्य घृतादेर्वा मार्गशीर्षे च विक्रये ।
द्विगुणो जायते लाभ-स्तदा संग्रहकारिणः ॥ १६१ ॥

धनराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

धनराशिगतो जीवः करोति वक्रतां यदा ।
अचिरेणैव कालेन सर्वधान्यसमर्घता ॥ १६२ ॥
गोधूमचणकादीनि धान्यानि च क्रयाणकम् ।
समर्घाण्यन्यवस्तूनि गुडश्च लवणादिकम् ॥ १६३ ॥
चैत्रादिसंग्रहस्तेषां मार्गशीर्षादिविक्रयः ।
सर्वाणि लाभं लभते मासैकादशकात्यये ॥ १६४ ।

गन्त दूना लाभ हो ॥ १५८-९ ॥ इति तुलाराशिस्थगुरु वक्र फल ।

जब वृश्चिकराशिका बृहस्पति वक्री हो तब अन्नका और विशेष कर धान्यका संग्रह करना, उसको तथा कपास और घी को मार्गशीर्षमें बेचने में दूना लाभ हो ॥ १६०-१ ॥ इति वृश्चिकराशिस्थगुरु वक्र फल ।

जब धनराशिका बृहस्पति वक्री हो तब थोड़े ही दिनोंमे सब धान्य सस्ते हों ॥ १६२ ॥ गेहूँ चणा आदि धान्य और करियाना, गुड लवण आदि दूसरी वस्तुओंका भाव सस्ता हो ॥ १६३ ॥ चैत्रके आदिमे उसका संग्रह करना और मार्गशीर्षके आदिमे उसको बेचना, ग्यारह मास जाने बाद सब वस्तु लाभदायक होगी ॥१६४॥ इति धनराशिस्थगुरुवक्र फल ।

जब मकरराशिका बृहस्पति वक्री हो तब आरोग्य हो और धान्य

मकरराशिस्थगुरुवक्रफलम्—

मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिता ।
आरोग्य कुरुते धान्य समर्घं नात्र संशयः ॥ १६५ ॥
तुलाभाण्डानि धान्यानि सर्वाणि परिरक्षयेत् ।
षण्मासान्ते च सम्प्राप्ते विक्रये लाभमाप्नुयात् ॥ १६६ ॥

कुम्भराशिस्थगुरुवक्रफलम्

कुम्भराशिगतो जीवः करोति यदि वक्रताम् ।
आरोग्यं सर्वलोकस्थस्य राज्ञां श्रीजयसम्भवः ॥ १६७ ॥
सर्वधान्येषु निष्पत्तिः सर्वधान्यस्य विक्रयः ।
घृतं तैलं तुलाभाण्ड मासाष्टके च संग्रहः ॥ १६८ ॥
पश्चाद् विक्रयतो लाभः सुभिक्षं निर्भया जनाः ।
पूजा गोद्विजदेवानां बुद्धिर्न्यायेऽतिनिर्मला ॥ १६९ ॥

मीनराशिस्थगुरुवक्रफलम्

मीनराशिगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत् ।

करते हैं इसमें संशय नहीं ॥ १६५ ॥ तुलाभाण्ड और सब धान्य का संग्रह करना, छ महीने के बाद उसको बेचने से लाभ होगा ॥ १६६ ॥ इति मकरराशिस्थगुरुवक्र फल ॥

जब कुंभराशिका बृहस्पति वक्री हो तब आरोग्य रहे सब और राजाओंको जय प्राप्त हो ॥ १६७ ॥ सब धान्यकी प्राप्ति सब धान्य का व्यापार, घी तेल तुलावर्त्तन आदि आठ मास संग्रह करना ॥ १६८ ॥ पीछे बेचनेसे लाभ होगा। सुभिक्ष और लोग निर्भय हो, गौ ब्राह्मण देव की पूजा और न्यायमें बुद्धि अधिक निर्मल हो ॥ १६९ ॥ इति कुंभराशिस्थगुरु वक्र फल ॥

जब मीनराशिका बृहस्पति वक्री हो तब लोकमें [illegible] चारोंमें [illegible] ॥ १७० ॥ [illegible]

धनक्षयस्तदा लोके चौराद् राजापि रोषितः ॥१७०॥
निराधारा प्रजापीडा ग्रहभूतादिदोषतः ।
तुलाभाण्डं गुडः खण्डा अर्घे ददति वाञ्छितम् ॥१७१॥
लवणं घृततैलादि-सर्वधान्यमहर्घता ।
कर्पासस्यार्घसम्प्राप्ति र्लाभस्तेषां चतुर्गुणः ॥१७२॥
वक्रे शक्रेशपूज्ये जगति गतिरियं वास्तवी प्राप्तवीर्या,
तत्त्वं मत्वा तदेतद् वदतजनहितं धीधनाः सावधानाः ।
मूलं लोकेऽनुकूलं सुकृतविकृतयः सूर्यमुख्या ग्रहाः स्युः,
तेऽपिप्रायोऽनुसारं दधति ननु गुरोः सत्फले वाऽफलेऽपि ।१७३।

अथ गुरुनक्षत्रभोगविचार —

अथ नक्षत्रभोगेन गुरोर्यादृक्फलं भवेत् ।
तदुच्यते वर्षबोधे निर्णयाय महीस्पृशाम् ॥१७४॥
कृत्तिकारोहिणीऋक्षे यदा तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
मध्यमात्र भवेद् वृष्टिः सस्यं भवति मध्यमम् ॥१७५॥

भूत आदिके दोषोंसे दुःख हो, तुलाभाट गुड खांड ये इच्छित लाभ दे ॥१७१॥ नमक घी तेल और सब धान्य तेज हों, कपाससे चौगुना लाभ हो ॥१७२॥ जगत्‌में बृहस्पति वक्री होने पर वास्तविक प्रबल गति होती है। हे सावधान बुद्धिमानों! इस तत्त्वोंको मान कर मनुष्योंका हितको कहो। लोकमें शुभाशुभको बतलानेवाले अनुकूल मूलरूप सूर्यादि ग्रह हैं वे बृहस्पतिका सफल या निष्फलमें भी प्रायानुसार फलदायक हैं ॥१७३॥ इति मीनराशि स्थगुरु वक्र फल।

बृहस्पतिका नक्षत्रके संयोगसे जैसा फल हो वैसा वर्षाका निर्णय करनेके लिये वर्षबोध ग्रन्थमें कहा जाता है ॥१७४॥ जिस समय बृहस्पति कृत्तिका रोहिणी नक्षत्र पर हो उस समय मध्यम वर्षा हो और मध्यम धान्य पैदा हो ॥१७५॥ मृगशीर्ष और आर्द्रा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो

मृगशीर्षे तथार्द्रायां यदि तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
सुभिक्षं लभते सौख्य वृष्टिजात सदा जने ॥१७६॥
आदित्यपुष्याश्लेषासु गुरुभोगे प्रसङ्गिनी ।
अनावृष्टिर्भयं घोरं दुर्भिक्ष सर्वमण्डले ॥१७७॥
मघायां पूर्वाफाल्गुन्यां यदा तिष्ठेद् बृहस्पतिः ।
सुभिक्ष क्षेममारोग्य देशयोग्य वहूदकम् ॥१७८॥
उत्तराफाल्गुनीहस्ते गुरौ वर्षा सुख जने ।
चित्रायां च तथा स्वातौ विचित्रा धान्यसम्पदः ॥१७९॥
विशाखायां च राधायां सस्य भवति मध्यमम् ।
मध्यमे च भवेद् वर्षा वर्षा सापि च मध्यमा ॥१८०॥
गुरोर्ज्येष्ठामूलचारे मासद्वये न वर्षणम् ।
परतः खण्डवृष्टिः स्यात् नृपाणां दारुणो रणः ॥१८१॥
जीवे पूर्वोत्तराषाढा-युक्ते लोकसुखं मतम् ।
त्रिमासान् वर्षति घनो मासमेकं न वर्षति ॥१८२॥

सुभिक्ष सुख और अच्छी वर्षा हो ॥१७६॥ पुनर्वसु पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब अनावृष्टि घोरभय और सब देशमें दुष्काल हो ॥१७७॥ मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और देशके अनुकूल वर्षा हो ॥ १७८ ॥ उत्तराफाल्गुनी और हस्त नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो वर्षा अच्छी तथा मनुष्यों को सुख हो, चित्रा और स्वाति नक्षत्र पर बृहस्पति हो तब विचित्र धान्यकी प्राप्ति हो ॥१७९॥ विशाखा और अनुराधा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो मध्यम धान्यकी प्राप्ति और चातुर्मासमें मध्यम मध्यम ही वर्षा हो ॥ १८० ॥ ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो दो मास वर्षा न हो, पीछे खण्डवृष्टि हो और राजाओंका घोर युद्ध हो ॥ १८१ ॥ पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र पर बृहस्पति हो तो लोक सुखी, तीन महीना वर्षा और

श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरुसङ्गमे ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी ॥१८३॥
पूर्वोत्तराभाद्रपद-योरनावृष्टिभयादिकम् ।
पौष्णाश्विनी भरणीषु सुभिक्षं धान्यसम्पदा ॥१८४॥
मृगादिपञ्चकं चित्रादि वायमेवाष्टकं तथा ।
नक्षत्रेष्वशुभं जीवे शेषेषु शुभमादिशेत् ॥१८५॥

अथ गुरुचतुष्कानि । अर्घकाण्डे पुनर्मेघोदयदीपकग्रन्थे—

सौम्यादौ पञ्चके स्यात् सुरगुरुरभितो दौस्थ्यदौर्गत्यकर्ता,
पौष्यादौ वा चतुष्के भवति समुदितः सौस्थ्यसद्भिक्षदाता ।
चित्रादेवाष्टधिष्ण्येऽप्यकगामतिभयं सन्ततं संविधत्ते,
कर्णादौ धिष्ण्यपङ्क्तिं जगति वितनुते सौख्यसम्पत्तिसौस्थ्यम् ।१८६।

सारसंग्रहे पुनः—

दशार्कं पञ्चकं चैव चतुष्काष्टकमेव च ।

यदाश्रितो देवगुरु श्रवणादिक्रमादिदम् ॥१८७॥
सुभिक्ष दशके ज्ञेय पञ्चके रौरवं तथा ।
चतुष्के च सुभिक्ष स्यादष्टके युद्धरौरवम् ॥१८८॥
स्वातिमुख्याष्टके जीवे त्वश्विन्यादित्रिकेऽपि च ।
शनिराहुकुजैश्चैव प्रत्येक सहितो भवेत ॥१८९॥
सञ्चरते यदा काले सुभिक्ष जायते तदा ।
मृगादिदशके जीवे धनिष्ठापञ्चकेऽथवा ॥१९०॥
भौमादिसहितो गच्छेद् दुर्भिक्षं तत्र जायते ।
एकराशिगते चैव एकर्क्षे तु मरद्भयन् ॥१९१॥
मीनेऽपि कन्याधनुषोर्यदा याति बृहस्पतिः ।
त्रिभागशेषां पृथिवीं कुरुते नात्र संशयः ॥१९२॥
अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे ।
हाहाभूत जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥१९३॥

एकस्मिन्नपि वर्षे चे-ज्जीवो राशित्रयं स्पृशेत् ।
तदा भवति दुर्भिक्षं शवपूर्णा वसुन्धरा ॥१९४॥
गुरौ महति नक्षत्रे राशिस्वामिनि सद्बले ।
मासांस्त्रयोदश तदा समर्घं धान्यमुच्यते ॥१९५॥

बालबोधे तु सप्तविंशतिनक्षत्रभोगे गुरुफलमेवम्—

"अश्विन्यां गुरौ सुवृष्टिः सुभिक्षं शीतपीडा ॥ १ ॥ भरण्यां दुर्भिक्षं विफलं वर्षे राजभयम् ॥ २ ॥ कृत्तिकायां न वर्षा ग्रिष्मपीडा ॥ ३ ॥ रोहिण्यां न वृष्टिश्चतुष्पदविनाशः ॥ ४ ॥ मृगशीर्षे जने रोगो धान्यमहर्घता ॥ ५ ॥ आर्द्रायां प्रचुरं जलं कर्पासतिलविनाशः ॥ ६ ॥ पुनर्वसौ आरोग्यं सुभिक्षं सुवृष्टिः सर्वधान्यनिष्पत्तिः ॥७॥ पुष्ये लोके नेत्ररोगो वस्त्रमहर्घता रोगा बलीवर्दा महर्घाः ॥८॥ आश्लेषायां सुभिक्षं ॥९॥ मघायां न वर्षा, तृणजातं धान्यमपि दुर्लभं, श्रावणद्वये न जलवर्षा चतुष्पदमहर्घम् ॥ १० ॥ पूर्वाफाल्गुन्यां श्रावणे भाद्रपदे

वा न वर्षा ॥११॥ उत्तराफाल्गुन्यां गावो बहुक्षीरा आरोग्यं सर्वधान्यनिष्पत्तिः ॥१२॥ हस्ते सुभिक्षं ॥१३॥ चित्रायां तिलकर्पासचणकमहर्घता ॥१४॥ स्वातौ सर्वत्र धान्यनिष्पत्तिः ॥१५॥ विशाखायां सर्वधान्यसमर्घता लोकेऽग्निपीडा ॥१६॥ अनुराधायां सुभिक्षं लोकोत्सवः ॥१७॥ ज्येष्ठायां न वृष्टिर्जनपीडा ॥१८॥ मूले सुभिक्षमारोग्यम् ॥१९॥ पूर्वाषाढायां चणकगोधूमतिलविनाशः ॥२०॥ उत्तराषाढायां न वर्षा गुडघृतलवणमहर्घता ॥२१॥ श्रवणे गवां तथा वृद्धानां पीडा ॥२२॥ धनिष्ठायां रोगबहुला अल्पवृष्टिः प्रजाविरोधः ॥२३॥ शतभिषाभिजिद् वर्षा महती ॥२४॥ पूर्वभाद्रपदायामलसीतिलमाषादिविनाशोऽतिशीतम् ॥२५॥ उत्तरा भाद्रपदायां घनो न वर्षति, उत्तमलोकपीडा।२६। रेवत्यां न वर्षा धान्यशोषः" ।२७।

अथ गुरुद्वादशराशिफलम्—

मेषे गुरोदयनस्त्वतिवृष्टिरेव,
दुर्भिक्षमुत्तमनृनिर्वृषभे सुभिक्षम् ।
पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभाव,
स्त्वावस्थया मिथुनके गणिकासु पीडा ॥१॥
स्यात् कर्कटे जनमृतिर्जलवृष्टिरल्पा,
सिंहे तथैव नवर बहुधान्यलाभः ।
कन्यास्थितस्य च गुरोरुदये शिशूनां,
पीडा तथैव गणिकासु च वृद्धलोके ॥२॥
काश्मीरचन्दनफलादिमहर्घता स्या-
ल्लाभो महान् व्यवहृतौ च तुलावलम्बे ।
दुर्भिक्षतालिनि धनुष्यपि चाल्पवर्षा,
लोके रुजो मकरके बहुधान्यवृष्टिः ॥३॥
कुम्भे गुरोरुदयनः सकलेऽपि देशे,
वृष्टिर्वनेऽपि च घनेऽनिमहर्घमन्नम् ।

मीनेऽल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगः,
पीडा जनस्य मकरान्नरकानुरूपा ॥४॥ इति ॥

अथ गुरूदयमासफलम्--

जीवोऽभ्युदेति यदि कार्त्तिकमासि वह्नि-
र्लोके न वृष्टिरपि रोगनिपीडनं च ।
मार्गेऽपि धान्यविगमं सुखमेव पौषे,
नीरोगता सकलधान्यसमुद्भवश्च ॥५॥
माघे तथैव परतो भुवि खण्डवृष्टि-
श्चैत्रे विचित्रजलवृष्टिरतोऽपि राधे ।
सर्वं सुखं जलनिरोधनमेव शुक्रे-
ऽप्याषाढके नृपरणोऽन्नमहर्घता च ॥६॥
आरोग्यं श्रावणे वर्षा बहुला सुखिनो जनाः ।
भाद्रे चौरा धान्यनाश आश्विनः सुखदः स्मृतः ॥७॥ इति ॥

शमें वृष्टि अधिक और अन्नभाव तेज हो । मीनराशिमें बृहस्पति का उदय हो तो थोड़ी वर्षा, राजाओंमें युद्ध का योग और मनुष्यों को मकर से नरक के समान पीडा हो ॥ ४ ॥ इति ।

कार्त्तिकमासमें बृहस्पति का उदय हो तो जगतमें गर्मी पड़े वर्षा न हो और रोगपीडा हो । मार्गशीर्षमें उदय हो तो धान्य का विनाश हो । पौषमें उदय हो तो सुख नीरोगता और सब धान्य पैदा हो ॥ ५ ॥ माघ और फाल्गुनमें उदय हो तो पृथ्वीपर खण्डवर्षा हो । चैत्रमें उदय हो तो विचित्र जलवृष्टि हो । वैशाखमें उदय हो तो सब प्रकारके सुख । ज्येष्ठमें उदय हो तो जलका निरोध । आषाढ मे उदय हो तो राजाओंमें युद्ध और अन्नभाव तेज हो ॥ ६ ॥ श्रावणमें उदय हो तो आरोग्य, वर्षा अधिक और सब लोग सुखी हो । भाद्रोंमें उदय हो तो चोर का उपद्रव और धान्यका नाश हो । आश्विनमें उदय हो तो सुखदायक हो ॥ ७ ॥

अथ द्वादशराशिषु गुरोरस्तफलम्।

मेषास्तमेत्य जगतो गुरुरल्पवृष्टिं,
दुर्भिक्षमेव कुरुते वृषभे गुडस्य।
तैल घृतं च लवणं प्रभवेन्महर्घम्,
मृत्युर्जनेऽल्पजलदो मिथुनेऽस्तमासौ ॥ ८॥
कर्केऽस्ततो नृपभयं कुशल सुभिक्ष,
सिंहे नृनाथरणलोकधनादिनाशः।
कन्यास्ततः सकलधान्यसमर्घता स्यात्,
क्षेमं सुभिक्षमतुल जनरोगनाशः ॥९॥
पीडा द्विजेषु बहुधान्यसमर्घता च,
जाते तुलास्तमयने नयनेषु रोगः।
राज्ञां भयान्यलिनि तस्करलुण्टनानि,
माषास्तिलाश्च बहवो धनुषास्तमासौ ॥१०॥
कुम्भे गुरोरस्तमायात् प्रजायाः,
पीडापरं गर्भवती च जाया।

यदि मेषराशिमें बृहस्पति अस्त हो तो थोड़ी वर्षा और दुर्भिक्ष हो। वृषराशिमें अस्त हो तो गुड तेल घी और लवण ये तेज हो। मिथुनराशिमें अस्त हो तो मनुष्यों में मरण और थोडी वर्षा हो॥८॥ कर्कराशिमें अस्त हो तो राजभय, कुशल और सुभिक्ष हो। सिंहराशिमें अस्त हो तो राजाओंमें युद्ध तथा लोगोंके धनका नाश हो। कन्याराशिमें अस्त हो तो सब धान्य सस्ते हों, क्षेम, सुभिक्ष अधिक और मनुष्योंके रोगका नाश हो ॥ ९ ॥ तुलाराशिमें अस्त हो तो ब्राह्मणोंको पीड़ा और धान्य बहुत सस्ते हों। वृश्चिकराशिमें अस्त हो तो नेत्रोंमें रोग और राजाओंका भय हो, धनराशिमें अस्त हो तो चोर लूट करें और उर्द तिल अधिक हों ॥ १० ॥ कुम्भराशिमें अस्त हो तो प्रजाको तथा गर्भवती स्त्रीको पीड़ा। मीनराशिमें अ-

मीने सुभिक्षं कुशलं समर्घं,
धान्यं घनस्याल्पतयापि वृष्ट्या ॥११॥
मागसिरे गुरु आथमे उगि तेणे पक्खि।
ईति पडे उण्हालीइ जो राखे तो रक्खि ॥१२॥
कलह घत्तेण सुंदरि! कत्तियमासम्मि किण्णपक्खम्मि।
गरुडिअ डिथिओ गुरु आथमे जाणिज्जइ छत्तभंगो वि॥१३॥
मार्गशीर्षे गुरोरस्तं भृगुपुत्रस्य चोदयः।
तदा जगत्स्थितिः सर्वा विपरीता प्रजायते ॥१४॥इति॥

अथ मेघविचार —

मेघा इह द्वादशधा प्रवुद्धा-
दयः किलोक्ता गुरुचारशास्त्रे।
नागाः पुनस्ते ह्यभिधानरागा-
दुदाहृता रामविनोदनाम्नि ॥१॥

तथा च तद्ग्रन्थे द्वादशधा नागा —

गताब्दा द्वियुताः सूर्य-भक्तास्तत्र विशेषतः।
सुवुद्धो नन्दिसारी च कर्कोटकः पृथुश्रवा ॥२॥

स्त हो तो सुभिक्ष तथा कुशल हो और थोडी वर्षा होने पर भी धान्य सस्ते हो ॥ ११ ॥ मार्गशीर्षमें गुरुका अस्त हो और उसी ही पक्षमें उदय हो तो ग्रिष्मऋतुमे ईति का उपद्रव हो ॥ १२ ॥ कार्तिक कृष्णपक्षमें गुरु का अस्त हो और अगस्ति का उदय हो तो छत्रभंग हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षमें गुरु का अस्त हो और भृगुसुत (अगस्ति) का उदय हो तो सब जगत् की स्थिति विपरीत हो ॥ १४ ॥ इति ॥

गुरुचारके शास्त्रमें प्रवुद्धादि बारह प्रकारके मेघ कहे हैं और राम-विनोद नामके शास्त्रमें भी मेघका अधिकार कहा है ॥ १ ॥ रामविनोद ग्रंथमें—गतवर्षमें दो मिला कर बारहसे भाग देना जो शेष बचे सह

वासुकिस्तक्षकश्चैव कम्बलाश्वतुरावुभौ ।
हेममाली जलेन्द्रश्च वज्रदंष्ट्रो वृषस्तथा ॥३॥
सुबुद्धो बुद्धिकर्त्ता च कष्टवृष्टिः शुभावहः ।
नन्दिसारो महावृष्टि र्नन्दन्ति च महाजनाः ॥४॥
कर्कोटके जलं नास्ति मरणं च महीपतेः ।
पृथुश्रवा जलं स्वल्प सस्यहानिः प्रजायते ॥५॥
वासुकिः सस्यकर्त्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः ।
तक्षके मध्यमा वृष्टि-र्विग्रहो मरण ध्रुवम् ॥६॥
कम्बले मध्यमा वृष्टिः सस्यं भवति शोभनम् ।
जायतेऽश्वतरे स्वल्पं जल सस्यं विनश्यति ॥७॥
हेममाली महावृष्टि-र्जलेन्द्रः प्लावयेन्महीम् ।
वज्रदंष्ट्रे त्वनावृष्टि र्वृषे स्यादीतितो भयम् ॥८॥ इति ॥
गताब्दा नवभिस्तष्टाः शेष हराद् विशोधयेत् ।
ततश्चावर्त्तसंवर्त्त-पुष्करद्रोणकालकाः ॥९॥

क्रमसे मेघका नाम जानना । सुबुद्धि, नंदिसारी, कर्कोटक, पृथुश्रवा ॥२॥ वासुकी, तक्षक, कम्बल, अश्वतुर, हेममाली, जलेन्द्र, वज्रदंष्ट्र और वृष ये बारह मेघके नाम हैं ॥ ३ ॥ सुबुद्ध बुद्धिका कारक है, कष्टसे वर्षा और शुभकारक है । नन्दिसारीमें महावर्षा, और महाजन प्रसन्न हों ॥ ४ ॥ कर्कोटकमें जल न बरसे और राजाका मरण हो । पृथुश्रवामें थोडी वर्षा और धान्यका विनाश हो ॥ ५ ॥ वासुकिमें धान्य प्राप्ति, वर्षा अधिक और शुभ हो । तक्षकमें मध्यम वर्षा, विग्रह और मरण हो ॥ ६ ॥ कम्बलमें मध्यम वर्षा और धान्य अच्छे हों । अश्वतुरमें थोड़ी वर्षा और धान्यका विनाश हो ॥ ७ ॥ हेममालीमें बड़ी वर्षा हो । जलेन्द्र मेघ पृथ्वीको जलसे तृप्त करे । वज्रदंष्ट्रमें अनावृष्टि हो और वृषमेघमें ईतिका भय हो ॥८॥ इति ॥
गत वर्षोंको नवसे भाग देना, जो शेष बचे वह क्रमसे मेघका नाम

नीलश्च वरुणो वायुस्तमोमेघः सनातनः ।
आवर्त्ते मन्दतोय स्यात् संवर्त्ते वायुपीडनम् ॥१०॥
पुष्करे बहुल तोय द्रोणे वृष्टिः सुख भवेत् ।
अल्पवृष्टिः कालमेघे नीलः क्षिप्र प्रवर्षति ॥११॥
वारुणे त्वर्णवाकारो वायुर्वर्षाविनाशकः ।
तमोमेघे न वृष्टिः स्यान्मेघानां फलमीदृशम् ॥१२॥

मतान्तरेपुनः—

त्रिभिर्गताब्दाः सहिताश्चतुर्भिः,
शेष भवेदम्बुपतिः क्रमेण ।
आवर्त्तसवर्त्तकपुष्कराश्च,
द्रोणाश्चतुर्थो मुनिभि प्रदिष्टः ॥१३॥
आवर्त्तेच्छिन्नवृष्टिः स्यात सवर्त्ते जलपूर्णता ।
पुष्करेमन्दवृष्टिस्तु द्रोणा वर्षति सर्वदा ॥१४॥

सारसग्रहे तु—

योजयित्वा नग शाके चतुर्भिर्भाजते ततः ।

मेघा आवर्त्तसंवर्त्त-पुष्करद्रोणकाः क्रमात् ॥१५॥
अल्पवृष्टिः खण्डवृष्टि-र्महावृष्टिश्च वायवः ।
एषां चतुर्णां क्रमतः फलमेव सतां मतम् ॥१६॥
पुनः-मेघश्चतुर्विधा प्रोक्ता द्रोणाख्यः प्रथमो मतः ।
आवर्त्तः पुष्करावर्त्त-स्तुर्यः संवर्त्तकाभिधः ॥१७॥
बहुवृष्टिः खण्डवृष्टि-र्मध्यवृष्टिश्च वायवः ।
एषां चतुर्णां क्रमतः फलानि चतुरा जगुः ॥१८॥
सिद्धान्तेऽपि स्थानाङ्गे—

चत्तारि मेहा पण्णत्ता तजहा-पुक्खलसंवट्टते पज्जुन्ने जीमृते जिम्हे । पुक्खलसंवट्टएणं महामेहेणं एगेण वासेण दसवाससहस्साइ भावेइ । पज्जुन्नेण महामेहेण एगेणं वासेण दसवाससयाइ भावेइ । जीमूतेण महामेहेण एगेण दसवासाइ भावेइ । जिम्हेण महामेहे बहूहि वासेहिं एगं वासं भावेइ

घा ण भावेइ ।

रुद्रदेवब्राह्मणकृते मेघमालायां पुनः—

मेघास्तु कीदृशा देव! कथं वर्षन्ति ते भुवि ।
कति संख्या भवेत् तेषां येन मे प्रत्ययो भवेत् ॥१॥

ईश्वर उवाच-शृणु देवि! यथा तथ्यं वर्णरूपं तु यादृशम् ।
मन्दरोपरि मेघास्ते राजानो दश कीर्त्तिताः ॥२॥
कैलाशे दश विज्ञेयाः प्राकारे कोटजे दश ।
उत्तरे दश राजानः शृंगवेरे तथा दश ॥३॥
पर्यन्ते दशराजानो दशैव हिमवन्नगे ।
गन्धमादनशैले च राजानो दश वारिदाः ॥४॥
अशीतिर्मेघा विख्याताः कथितास्तव पार्वति! ।
अन्यत् किं पृच्छसि पुनर्लोकानां हितकारिणि! ॥५॥
अशीतिमेघमध्ये तु स राजा पट्टबन्धतः ।
गुरुणा राशिसंयोगाद् यः पुरस्क्रियते जनः ॥६॥

दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः ।
उन्नमय्य प्लावयन्ति मर्त्यलोके जलैर्महीम् ॥७॥
कमलेऽष्टदले वृष्ट्यै प्रतिष्ठाप्य पयोधरान् ।
धूपदीपैश्च कुसुमै-र्नैवेद्यैः परिपूजयेत् ॥८॥
सिंहको विजयश्चैव कम्बलोऽथ जयद्रथः ।
धूम्रः सुस्वामिभद्रौ च मातङ्गो वरुणस्तथा ॥९॥
त्रिलोचनपतिश्चैव मेघाः प्राच्याममी दश ।
आनन्दः कालदंष्ट्रश्च शूकरो वृषभुक् तथा ॥१०॥
मृगो नीलो भवः कुम्भो निकुम्भो महिषस्तथा ।
दश मेघा दक्षिणस्यां प्रायोऽमी वृष्टिकारिणः ॥११॥
कुञ्जरः कालमेघश्च यामुनः कालकान्तकौ ।
दुन्दुभिर्मेखलः सिन्धुर्मकरश्छत्रकस्तथा ॥१२॥
पश्चिमायाममी मेघा दश वर्षाविधायिनः ।
मेघनादोऽथ नृपते त्रिलोचनसुधाकरौ ॥१३॥
दण्डिनश्च सितालश्च त्रैकालिकजलस्तथा ।

मार राशिसंयोगसे आगे किया जाता है ॥ ६ ॥ प्रत्येक दिशा और वि-दिशामें दश दश मेघाधिपति हैं वे मर्त्यलोकमें उदय होकर जलसे पृथ्वी को तृप्त कर देते हैं ॥ ७ ॥ वर्षाके निमित्त मेघाधिपतिको अष्टदल कमल के बीच स्थापन कर धूप दीप फूल और नैवेद्यसे पूजा करे ॥ ८ ॥ सिंह विजय कम्बल जयद्रथ धूम्र सुस्वामी भद्र मातंग वरुण ॥९॥ और त्रिलोच-नपति ये दश मेघ पूर्व दिशामें रहते हैं, आनन्द कालदंष्ट्र शूकर वृषभुक् ॥ १० ॥ मृग नील भव कुम्भ निकुम्भ और महिष ये दश मेघ दक्षिण दिशामें रहकर वर्षा करते हैं ॥ ११ ॥ कुंजर कालमेघ यामुन कालक अन्तक दुन्दुभि मेखल सिन्धु मकर और छत्रक ये दश मेघ पश्चिममें रहकर वर्षा कर-ते हैं । मेघनाद त्रिलोचन सुधाकर ॥ १३ ॥ दण्डी सिताल त्रैकालिक-

वृषभोऽपि च गन्धर्वो विधुमासिकथः परः ॥१४॥
गह्वरो दशमेघाः स्यु-रुत्तरस्यां प्रवर्षिणः ।
दिङ्मेघानां ब्राह्मणाद्या जातयः क्रमतो मताः ॥१५॥
चत्वारिंशद्विदिग्जाता मेघा अन्येऽपि कीर्त्तिता ।
नामानि तेषां बोध्यानि ग्रन्थान्तरनिरीक्षणात् ॥१६॥
ॐकारो नाम्नि मूर्त्तिश्च मयूरः कन्दिकस्तथा ।
बिन्दुकान्तिश्च करणो हेमकान्तिश्च पर्वतः ॥१७॥
गैरिकश्चाह्वया मेघाः स्वर्गलोके व्यवस्थिताः ।
दिव्यमेघाश्च सप्तैते सर्वाङ्गसुखदायिनः ॥१८॥
दशमेघाः श्वेतवर्णा दशैव लोहितास्तथा ।
दश पीता स्वर्णवर्णा दश धूम्राः प्रकीर्त्तिताः ॥१९॥
अथ मन्त्रं प्रवक्ष्यामि येन मन्त्रेण आहिताः ।
आगच्छन्ति धरां देवा कुर्वन्त्येकार्णवां महीम् ॥२०॥

ॐ ह्रीं मेघदूत्यै नमः आगच्छ २ स्वाहा । ॐ मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवन्निवासिने आगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं नन्दिकेश्वराय

जल वृषभ गन्धर्व विधुमासिकथ ॥१४॥ और गह्वर ये दश मेघ उत्तर में रहकर वर्षा करते हैं । इन दिशाओंके मेघकी ब्राह्मण आदि क्रमसे जाति जानना ॥१५॥ विदिशा के भी चालिस मेघ हैं उनके नाम दूसरे ग्रन्थोंसे समझलेना ॥ १६ ॥ ॐकार युक्त मूर्त्ति मयूरकंदिक बिन्दुकान्ति करण हेमकान्ति पर्वत ॥ १७ ॥ और गैरिक ये मेघ स्वर्गमें रहते हैं, ये सात मेघ दिव्य होनेसे सर्वांग सुख देते हैं ॥ १८ ॥ दश मेघ श्वेतवर्णवाले, दश लालवर्णवाले, दश पीलेवर्णवाले और दश धूम्रवर्णवाले हैं ॥ १९ ॥

अब वह मंत्र कहता हूँ जिनके प्रभाव से मेघ आकर पृथ्वी को जलसे पूर्ण करें ॥२०॥ ऊपर लिखे हुए मंत्रों का दश हजार जाप करें और बोल

जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा। ॐ ह्रीं कुबेरराजाय शृंगवेरनिवासिने आगच्छ २ स्वाहा।

जापोऽस्य दश साहस्रो दशांशो होम एव च।
पुष्पैश्च धवलै रक्तैः करवीरसमुद्भवैः ॥ २१ ॥
ततः पुष्पैः सुगन्धाढ्यै-रर्चयेन्मेघसप्तकम्।
नद्यां चैव वने गत्वा मेघानाबाह्वयेद् बुधः ॥२२॥
शिवालये तडागे वा पुनर्मेघान् विसर्जयेत्।
दिव्यमेघाश्च सप्तैते कुलपर्वतवासिनः ॥ २३ ॥
सर्वेष्वमीषु मेघेषु राजानो द्वादश स्मृताः।
प्रवुद्धा नन्दशालाद्या गुरुणैव प्रयोजिता ॥ २४ ॥
एव गुरोश्चारवसेन नागा, अधिष्ठितास्तैर्यदि चोदवाहाः।
कुर्वन्ति वर्षा प्रतिवर्षमत्र, संवत्सराख्या परिवर्त्तनेन ॥२५॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधापरनाम्नि महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते संवत्सराधिकारश्चतुर्थः।

या लाल कनेर के फूलों के साथ दशांश हवन करें ॥ २१ ॥ फिर सुगन्धित पुष्पों से सात मेघों का पूजन करे। नदी या वनमें जाकर विद्वान् लोग मेघों का आह्वान करे ॥ २२ ॥ फिर शिवालय या तलाव पर जाकर मेघों को विसर्जन करे। ये सात दिव्य मेघ कुलपर्वत के निवासी है ॥२३॥ इन सब प्रकार के मेघों मे बारह राजा हैं, वे प्रवुद्ध नन्दशाल आदि नामवाले हैं ॥ २४ ॥ इस तरह बृहस्पति के चलनवशसे मेघाधिपति है वह संवत्सर का परिवर्त्तन से प्रतिवर्ष वर्षा करता है ॥ २५ ॥

इति सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुर निवासिना पण्डितभगवानदासाख्य जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितः चतुर्थः संवत्सराधिकारः।

अथ पञ्चमः शनैश्चरवत्सरनिरूपणाधिकारः ।

संवत्सरशरीरम् —

रोहिण्यानलभं च वत्सरतनुर्नाभिस्त्वषाढाद्वयं,
सार्पं हृत् पितृदैवतं च कुसुमं शुद्धैः शुभं तैः फलम् ।
देहे क्रूरनिपीडितेऽग्न्यनिलजं नाभ्यां भयं क्षुत्कृतं,
पुष्पे मूलफलक्षयोऽथ हृदये सस्यस्य नाशो ध्रुवम् ॥१॥
अथ शनिरपि वर्षस्याधिपः प्रागुपात्त,
स्तदिहचरितमस्याभ्यस्य वाच्यो विमर्शः ।
जलदविषय एव धीमता येन वर्षं,
शुभमशुभमथाग्रे भावि बुद्ध्याविबोधः ॥२॥

अथ शनिचारविचार —

मेषस्थे भानुपुत्रे त्रिभुवनविदिते याति धान्यं विनाशं,
तूले तैलङ्गवङ्गे हयखुरदलित विग्रहस्तीव्र एव ।

रोहिणी और कृत्तिका नक्षत्र वर्षका शरीर है, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा वर्षकी नाभी है, आश्लेषा नक्षत्र वर्षका हृदय और मघानक्षत्र वर्षका कुसुम है । ये सब यदि शुद्ध हो तो शुभ फलदायक है । संवत्सर (बृहस्पतिवर्ष) का शरीरनक्षत्र यदि पापग्रह से पीडित हो तो अग्नि और वायुका भय हो । नाभिनक्षत्र पीडित हो तो क्षुधाका भय हो । पुष्प (कुसुम) नक्षत्र पीडित हो तो मूल तथा फलका विनाश हो और हृदयनक्षत्र क्रूरग्रहसे पीडित हो तो निश्चयसे धान्यका विनाश हो ॥१॥ शनैश्चरवर्षका अधिपतिको प्रथम ग्रहण करना, पीछे उसका चरित्रका अभ्यास और विचार करके बुद्धिमानसे मेघका विषय कहना चाहिये और भावि शुभाशुभ वर्षको बुद्धिसे विचारना चाहिये ॥ २ ॥

मेषराशिमे शनैश्चर हो तो धान्यका विनाश, तल तैलंग और वंग देश में घोडे के खुर से पृथ्वी चूर्ण हो ऐसा घोर विग्रह हो, पाताल में

पाताले नागलोके दिशि विदिशि गता भीतभीता नरेन्द्राः।
सर्वे लोका विलीनाः प्रथमगतधना याचमाना व्रजन्ति ॥३॥
वैरार्त्तत्वाज्जनानां धनसुखहरण सर्वदेशे महर्घं,
दुःखं वैराग्ययोगः सकलजनमनस्यन्ननाशः पशूनाम् ।
धान्यस्यैवार्द्धनाशो रसकसरहितं सर्वशून्यं जनाना-
मित्येते सर्वदेशाः परिजनविकलाः सूर्यपुत्रे वृषस्थे ॥४॥
आज्यं कार्पासलोहा लवणतिलगुडाः सर्वदेशे महर्घा,
मञ्जिष्ठा हेमतारे वृषभहयगजं सर्वधान्यं समर्घम् ।
सप्त द्वीपे समुद्रे सुखिजनसहिते सर्वसौख्यं नरेन्द्राः,
सर्वत्रौ यान्ति मेघाः सकलमुनिमत मैथुने सूर्यपुत्रे ॥५॥
रोगा नित्यं ग्रसन्ति प्रचुरपरिभवो वित्तनाशस्तथैव,
कार्ये हानिर्विरुद्धैः सकलमयजनो देशचिन्ताविषादः ।
आरावोऽम्बूपपातश्चलदलपृथिवी सर्वलोकाद् विनाशः,

नागलोक में दिशा और विदिशामें राजाओं भयभीत हों और सब लोक दुःखी हों, तथा पहले इकट्ठा किया हुआ धनसे रहित होकर जहां तहां याचना करते फिरें ॥ ३ ॥ वृषराशिमें शनैश्चर हो तो मनुष्य परस्पर वैर से दुःखी, धन और सुखका विनाश, सब देशमें अन्नकी तेजी, सब मनुष्य के मनमें दुःख वैराग्य, पशुका नाश, धान्यका अर्द्ध विनाश, रस कस से हीन और सब शून्यता हो, इस तरह समस्त देशके लोग व्याकुल रहें ॥ ४ ॥ मिथुनराशिमें शनैश्चर हो तो घी कपास लोहा नमक तिल गुड ये वस्तु सब देशमे महँगे हों, मँजीठ सुवर्ण वृषभ घोडा हाथी और सब धान्य सस्ते हों, सातों ही द्वीप समुद्र तकके रहनेवाले लोग सुखी, राजाओं सब सुखी, सर्व ऋतुमें मेघ बरसे यह समस्त फल मुनियोंने कहा हैं ॥५ ॥ कर्कराशिमें शनैश्चर हो तो रोग अधिक, बहुत तिरस्कार, धनका अधिक नाश, कार्यमे हानि, मनुष्योंमें विरोध और भय, देशमे चिन्ता और विषाद,

सर्वस्मिन् राजयुद्ध पशुधनहरण कर्कटे सूर्यपुत्रे ॥६॥
पृथ्व्यां नश्यचतुष्पाद्गजहयवृषभै-र्युद्धदुर्भिक्षरोगैः,
पीड्यन्ते सर्वदेशा उदधिपुरपथे दुर्गदेशेषु भङ्गः।
म्लेच्छान्तो धान्यसार्धो धनसुखमवनीशेन्द्रच प्रतापः,
सर्वे ते यान्ति का[illegible] भ्रमति [illegible] सिंहगे सूर्यपुत्रे ।७।
[illegible] विग्रह नत्र कुर्गोट
[illegible] माहिष च।
[illegible] समर्घ,
कन्यायां सूर्यपुत्रे सकलजनसुख सग्रहः सर्वधान्यम् ॥८॥
धान्यं यात्यूर्ध्वमात्र गरगरलधरा क्लेशपूर्णाश्च देशाः,
पृथिव्याकम्पमासा सकलमुनिवरे देहपीडापि नित्यम्।
सर्वे ते यान्ति नाश नरपुरनगरा-ण्यमुतोऽप्यल्प एव,
चक्रावर्त्तो जनानां सुखधनरहितः सूर्यपुत्रे तुलायाम् ॥९॥

शब्द युक्त जलका गिरना, पृथ्वी उसमे टल टल हो, लोकका विनाश, राजाओंमे युद्ध, पशु और धनका हरण हो ॥ ६ ॥ सिंहराशिमे शनि हो तो पृथ्वीमे पशुओंका नाश हो, सब देश हाथी घोडा वृषभ आदि पशुओं से युद्ध तथा दुर्भिक्ष और रोगोंसे दुःखी हों, समुद्र तटके देशोंका म्लेच्छों से भग हो, धान्य भाव अच्छा, राजाओं धनसे सुखी तथा इन्द्र चन्द्र के जैसे प्रतापवाले हों व सब दुःखी होकर [illegible] युगकालमें भ्रमण करें ॥७॥ कन्याराशिका शनि हो तो काश्मीर देशका नाश, कटक [illegible] से पृथ्वी चूर्ण हो ऐसा विग्रह हो, सब जातु चारों हाथी घोडा वृषभ बकरी भैंस मँजीठ कुंकुम आदि सब रस कमताते हो और समर्घ हों, मनुष्योंका सुख और धान्यका संग्रह करना चाहिये ॥ ८ ॥ तुलाराशिका शनि हो तो धान्य भाव ऊचाही बढे, पृथ्वी रोगसे व्याकुल देश सब क्लेशमें [illegible] पृथ्वी कम्पायमान, समस्त मुनि लोगोंको भी शरीर कष्ट होता हो मनुष्य पुर नगर व

भूमीशा. क्रोधपूर्णा विषधरमुदिताः पक्षिणां सन्निपातः,
सप्त द्वीपप्रकम्पान्नरपतिमरणं यान्ति मेघा विनाशम्।
वैकल्पाद् याच्यमानाः सकलजनरिपुः सर्वकार्यं निहन्ति,
सर्वे ते यान्ति नाशं सकलगुणविधेर्वृश्चिके सूर्यपुत्रे ।१०।
सप्त द्वीपाः समुद्राः सकलमुनिवनं वायुपूर्णा धरित्री,
विप्रा वेदाङ्गलीना जगति जनसुखं सर्वतो याति सस्यम्।
धान्यं चारु प्रभूतं रसकसमधिकं याति धान्यं प्रसारं,
सर्वेषां वा जनानां प्रहसति वदनं सूर्यपुत्रे धनस्थे॥११॥
रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभं सूत्रकर्पास मूल्यम्,
सर्वस्मिन् धान्यमात्रं भवति भुवि तले सर्वनाशश्च सस्ये।
पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णा भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाश-
श्चिन्तावस्था नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे।१२।
लक्ष्मी प्राकारसौख्यं धनकणसहितं देशसौख्यं नृपाणां,

सब नाश हो, मेघ थोडा बरसे, मनुष्य सुख और धन रहित हों ॥ ९ ॥ वृश्चिकराशिका शनि हो तो राजाओं क्रोध करे, सर्प प्रसन्न हो, पक्षियोंका युद्ध, सप्त द्वीप पृथ्वीमें भूचलन हो, राजाका मरण, मेघोंका नाश, वचनोंमें विकल्पता, समस्त लोगमें शत्रुता, सब कार्यका विनाश, तथा समस्त गुणोंका नाश हो ॥ १० ॥ धनराशिका शनि हो तो सात द्वीप, समुद्र, और सब मुनिजनों का वन आदि समस्त पृथ्वी वायुसे पूर्ण हो, ब्राह्मण वेदाध्ययनमें लीन हों, जगत्में मनुष्योंको सुख हो, अनेक प्रकारके तृणकी उत्पत्ति तथा बहुत अच्छा धान्य हो, रसकस अधिक, श्रेष्ठ धान्य हो, सब मनुष्य प्रसन्न वदन हों॥ ११॥ मकरराशिका शनि होतो चांदी सोना तांबा हाथी घोडा वृषभ सूत कपास इन सबके भाव तेज हो धान्य थोडा ही हो, पृथ्वी पर धान्य का सर्वस्व नाश, राजाओं क्रोधसे पूर्ण हों, मार्गमें भय, रोगसे प्रजाका नाश, और राजाओंको चिन्ता अधिक हो ॥ १२ ॥ कुंभ

धार्माधर्मौ विधत्ते सुखनिरतजनो मेघपूर्णा धरित्री।
माङ्गल्यं सर्वलोके प्रभवति बहुशः सस्यनिष्पत्तिर्हर्षो,
भूमीरम्या विवादै र्जनसुखसमयः कुम्भगे सूर्यपुत्रे ॥१३॥
पृथ्वी व्याकम्पमाना प्रचलति पवनः कम्पते नागलोकः,
सप्तद्वीपेषु सिन्धौ गिरिवरगहने सववृक्षादिहानिः।
नाशः पृथ्वीपतीनां जनपदविलयो यान्ति मेघाः प्रणाश,
वाराह्यामेवमुक्त चतुरजनमुदे मीनगे सूर्यपुत्रे ॥१४॥

गार्गीयसंहितायामपि—

आप्लवन्ते समुद्राः प्रचलितगगन कम्पते नागलोक -
श्चन्द्रार्कौ रश्मिहीनौ ग्रहगणसहितौ वाति वातः प्रचण्डः।
प्रभ्रंशः पार्थिवानां जनपदमरणं यान्ति मेघाः प्रणाश,
चक्रावर्त्तैः समस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे चार्कपुत्रे ॥१५॥

इति संक्षेपत शनिचारः

राशिमे शनि हो तो लक्ष्मीकी प्राप्ति, देशमें सुख, धन धान्यसे पूर्ण राजाओं धर्माधर्मको जाननेवाले हों मनुष्यों सुखमें लीन हों पृथ्वी जलसे पूर्ण हो सब लोगमें मंगल, धान्यकी प्राप्ति, पृथ्वी रमणीक और विवाहादि मंगलों से पूर्ण हो ॥ १३ ॥ मीनराशिका शनि हो तो पृथ्वी कम्पायमान हो, वायु चले, नागलोक कम्पायमान हो, सात द्वीप समुद्र और पर्वतोंमें वृक्षादिकों की हानि हो, राजाओंका नाश, देश का प्रलय और मेघ का विनाश हो इस प्रकार चतुर मनुष्योंकी प्रसन्नताके लिये वाराही संहितामें कहा है ॥१४॥ समुद्र सूक हो जाय, आकाश चलायमान हो, नागलोक कंपायमान हो, चंद्र सूर्य आदि सब ग्रह तेज हीन हो, प्रचंड पवन चले, राजाओंका नाश, मनुष्योंका मरण, मेघोंका विनाश, चक्रावर्त्तकी तरह यह जगत भ्रमण करे इस प्रकारसे मीनराशि गत शनिका फल गर्गसंहितामें भी कहा है ॥१५॥

सद्यो बोधाय गद्येन विस्तरेण निगद्यते ।
शनैः शनैः शनेश्चार-फल शास्त्रविमर्शतः ॥ १ ॥

मेषराशौ यदा सौरिस्तदा पश्चिमायां राजविग्रहः, वस्तुमहर्घता, नृपतेर्भयः, गुर्जरगौडसौराष्ट्रेषु धान्यमहर्घता द्विगुणोऽन्नव्यापारे लाभः, छत्रभंगो राश्यर्द्धभोगात् परत उत्पातबहुला मही, तथा महीनदीपार्श्वे पीडा राज्ञामुपद्रवाः, मेघा बहवः, सप्त धान्यानि युगन्धर्यादीनि संगृह्यन्ते, मासचतुष्टयानन्तरं विक्रये द्विगुणलाभः, गुर्जरदेशेऽहिफेनगुडशर्कराखण्डगोधूमबाजरचवलाविक्रये लाभः, सुवर्णरूप्यलाभः, प्रथमं शनैश्चरः सप्तमासराशिभोगतः पश्चादुत्पातचालकः, भूकम्पगर्जितं क्वचित्, फाल्गुने उपद्रवस्तदा वस्तुमहर्घता, व्यापारे जयः, मालवदेशे घृतशर्करातैलटोपरारायण इत्येतानि महर्घाणि कटकचालकोऽष्टौ मासान् ।

इत्येतद् गौतमस्वामि-भाषितं राशिमण्डलम् ।

अनेक शास्त्रोंसे विचार कर शनैश्चर का फलको शीघ्र ही जाननेके लिए गद्यरीतिसे विस्तार पूर्वक कहा जाता है ॥ १ ॥ मेषराशि का शनि हो तो पश्चिममे राजविग्रह, वस्तु महँगी, राजाका भय, गुजरात गोड और सोरठ देश में धान्यभाव तेज, धान्य का व्यापारमें दूना लाभ. राशिके १५ अश भोगने के पीछे छत्रभग, पृथ्वीमे बहुत उत्पात, महीनदीके तटपर दु खपीडा, राजाओंका उपद्रव, वर्षा अधिक, जुआर आदि सात धान्यका सग्रह करना उचित है चार मास पीछे बेचनेसे दूना लाभ हो, गुजरात देशमें अफीम गुड सक्कर खाड गेहूँ बाजरा चौला आदि बेचनेसे लाभ, सोना रूपासे लाभ, पहले शनैश्चर सातमास तक राशि भोगने बाद उत्पात चाले, कहीं भूकप गर्जना हो, फाल्गुमें उपद्रव हो तो वस्तु तेज, व्यापारमें जय, मालवादेशमें घी सक्कर तेल टोपरा रायण (खीरी) ये तेज भाव, आठमास कटक (सैना) चाले।

शनैश्चरप्रचारेण ज्ञातव्यं वर्षहेतवे ॥ १ ॥

वृषे यदा शनिस्तदा विग्रहो दक्षिणदिशि परचक्रभयम्, वराडदेशेऽव्यवस्थता, पश्चिमापतिर्दक्षिणस्यां याति, देशा उद्वसा अन्न महर्घं, गोधूमचणकलवणव्यापारे लाभः, सुवर्ण-रूप्यपित्तलकांश्यलोहव्यापारे लाभो मासपट्क यावत्, आषा-ढादिमासत्रये लाभः, आशोरदेशे युद्ध म्लेच्छहिन्दुकयोः क्षयः, हिन्दुराजस्य जयः, भाद्रपदे अहिफेनाल्लाभः, देव-गढदेशे विग्रहः, दुर्गभङ्गः, शनैश्चरस्य राशिभोगे एकवर्षा-नन्तरं वस्तुमहर्घता तन्मध्येऽजमकस्तस्य माघमासे विक्रये लाभः। ' इत्येद गौनमस्यामि, इत्यादि पूर्ववत् ॥ २ ॥

मिथुने शनिस्तदा पश्चिमायां दुर्भिक्षं, राजविग्रहः, माल-वदेशे विरोधः, राशिभोगान्मासपञ्चकत पश्चादुज्जयिन्या-मुत्पातः, दुर्गभगः मासद्वयात पर दुर्भिक्ष मासैकयावत् ततो वत्सरे शुभ धान्यनिष्पत्तिः पूर्वदेशे उत्पातः, गुडे

समता , लविंगकेसरएलाएारदहिंगुपानडीरेशमकथीरशुंठि एतानि महर्घाणि, क्षत्रियाणां मालवदेशे खण्डे जयः, दुर्गरोधः, उच्चवस्तुविक्रयः।' इत्येतद् गोतमस्वामि ' इत्यादिपूर्ववत्॥३॥

कर्कराशौ शनिस्तदा मेदपाटदेशे मालवसीमान्तं उद्ध्वसता , छत्रभंगो महीपतेः , राजयुद्ध सबल , मालपदे मुगलकटकं, तापीनदीतीरं यावद् विग्रहः परं कुशलं , दक्षिणदिशि लोकनाशः, ग्रामभंगः, श्रावणे धान्य महर्घं , भाद्रपदे जलोपद्रवः, मेघा बहवः , आश्विने वर्षा, अहिफेन महर्घता ,मासद्वये पुनः समर्घता, वस्तु महर्घं घोटकमहिषमहर्घता व्यापारे लाभः । ' इत्येद् गौतमस्वामि ' इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥

सिंहराशौ शनिस्तदाऽन्न सर्वत्र निष्पद्यते , जलवृष्टि बहुलता, मालवदेशे व्यापारे लाभः, राशिभोगानन्तरं मासदेशगमन पातिसाहि चलाचलत्व परमन्नं समर्घं शाकघन्धतुल्याः

दुर्गभग, दो मासके पीछे एक मास तक दुर्भिक्ष, एक वर्षके पीछे धान्य प्राप्ति अच्छी हो, पूर्वदेशमें उत्पात, गुटभार सम, लौंग केसर इलाइची पारा हिंगलु पानटी रेशम कथीर और सोंठ ये सब तेज, क्षत्रियोंका मालवादेशमे जय, दुर्गरोध, उच्च वस्तुका व्यापार ॥ ३ ॥

जब कर्कराशिका शनि हो तब मेदपाटदेशमे मालवाके सीमा तक देश का विनाश, राजका छत्रभग, घोर राजयुद्ध, मालपददेशमे मोगलोंके सेनाका उपद्रव, तापीनदीके तट तक विग्रह और आगे कुशल हो, दक्षिणदिशामे लोकका नाश, गॉवका भग, श्रावणमे धान्यभाव तेज, भादोंमे जलका उपद्रव, वर्षा अधिक, आसोजमें वर्षा, अफीम तेज, दो मास पीछे सस्ता, घोडा भैंस महँगे, व्यापारमें लाभ हो ॥ ४ ॥

जब सिंहराशि का शनि हो तब सब जगह अन्न पैदा हो, जलवर्षा विशेष, मालवादेशमें व्यापारमे लाभ, राशिभोगका एक मास के पीछे देशमें

संग्रामाः प्रतिग्रामं गुडगोधूमचणकतंदुलशालिमसूरान्नघृतादिवस्तुव्यापारे लाभः, पूर्वं सुभिक्ष परं मारिभय सर्वदेशेषु पीडा व्याकुलता, अशुभ सवत्सरफल मरिचशुंठिप्रमुखक्रयाणकाल्लाभः, ताम्रपित्तलमहर्घता घृततैलादिरसमहर्घता, कुंकणदेशे तृणमहिषीसमर्घता मालवमध्ये उपद्रवः पर राज्य सुख कटकविग्रहः पूर्वदेशे वस्त्रलाभः सर्ववस्तु समर्घम्। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥७॥

कन्यायां यदा शनिस्तदा दुर्भिक्ष चतुर्दिशासु पिता पुत्र विक्रीणाति, अन्ननाशः, जलवर्षा नास्ति, मरुदेशे शिवपुर्यां द्राविडदेशे राजपीडा छत्रभग, शेषाः सर्वे देशा' शुभाः, अर्बुदे सुभिक्षं, शीरोहीमध्येऽन्नलाभः, सर्वधान्यसंग्रहे द्विगुणो लाभः, मासनवकं यावद् धान्यं रक्षणीय पश्चाद्विक्रयः, धातुवस्तुसमर्घं, उत्तमवस्तु महर्घं, अन्नभय, महावृष्टिः, त्रीणि क्रयाणकानि स-

मर्घाणि। 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥६॥

तुलाराशौ यदा सौरिः सुभिक्षं स्याच्चराचरे।
प्रजानां सुखसौभाग्यं धन धान्यं च सम्पदः ॥१॥

वंगालदेशे विग्रहस्तत्रैव प्रजापीडा, रोगबहुलता, कार्त्तिके महाजनत्रये कष्टं बहुलं, बंगाले उत्पातः, छत्रभङ्गः, अर्द्धराशिभोगात् परमुत्पातः, दक्षिणदिशि उपद्रवः, गोधूमचणकचोखा (चावल) मारुगी कांगुणी उडिद एते महर्घाः, ज्येष्ठमासाद् विक्रये द्विगुणो लाभः,अन्ये सर्वे देशाः सुभिक्षवन्तः सुस्थाः। 'इत्येद् गौतमस्वामि'इत्यादि ॥७॥

वृश्चिके यदा शनिस्तदा हस्तिनागपुरे तद्देशे वैराटदेशे च विग्रहः, मालपदमेदपाटवागडगुर्जरसौराष्ट्रउत्तरार्द्धदेशेषु कटकचालकः, अन्नाल्लाभः, गोधूमकार्पासमसूरान्नतिलकापडादिव्यापारे लाभः, मासनवकात् परमुपद्रवः राजराणाम्ले-

---

में परस्पर विरोध, राजभय, पृथ्वीमें किञ्चिद् उत्पातादि अशुभ हो, गुड भाव सम, धान्यभाव तेज, अन्न का भय, महावर्षा,तीन वर्ण वणिक वस्तु सस्ती ॥६॥

जब तुलाराशिका शनि हो तब जगत्मे सुभिक्ष, प्रजाको सुख सौभाग्य और धन धान्यादि सपदा हो, बगालमें विग्रह प्रजापीडा, रोग अधिक, कार्त्तिक मे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यको कष्ट, उत्पात, छत्रभग, राश्यर्द्ध भोगसे पीछे उत्पात, दक्षिण दिशामें उपद्रव, गेहूँ चना, चावल मारुगी कागुल और ऊर्द ये तेजभाव हों, ज्येष्ठ मासमें बेचनेसे दूना लाभ, अन्य सब देश सुभिक्षवाले और शान्त हो ॥ ७ ॥

जब वृश्चिकराशिका शनि हो तब हस्तिनापुर और विराट देशमे विग्रह, मालवा मेदपाट वागड गुजरात सोरठ और उत्तरार्द्ध देशमें सैना का उपद्रव, अनाजसे लाभ, गेहूँ कपास मसूर अन्न तिल और कपड़ा आदिका व्यापारमें लाभ, नव मास पीछे उपद्रव, राजा राणा और म्लेच्छोंका परस्पर

च्छानां परस्पर युद्ध, पातिसाहिगृहे क्लेशः, मालवदेशे तीडा आयान्ति, सर्ववस्तुमूल्यवृद्धिः, अहिफेनाल्लाभः, ज्येष्ठमासि वृद्धिः, अजमोदमेथी प्रमुखविक्रय , रोगचालकः, वर्षा बहुला । 'इत्येतद् गौतमस्वामि'इत्यादि ॥८॥

धने शनिस्तदा सर्वत्र महर्घता लोकदुर्बलः पिता पुत्रं विक्रीणाति, अन्ननाशः, पृथिव्यां निर्जलता, लोका व्याकुलाः, राशिभोगाद् मासषट्कानन्तर फलं धान्यसंग्रहः, अहिफेनाल्लाभः, तैलतिलद्राक्षा गोधूमचणकचोखा खण्डालुगडोडा-असालिओअजमोद मेथी घृत एतानि वस्तूनि महर्घाणि । श्रावणादिमासचतुष्टये मारीपीडा राजसुख उत्तरापथे कटकचालकः । 'इत्येतद् गौतमस्वामि' इत्यादि ॥९॥

मकरे शनिस्तदाऽऽनन्दः सर्वत्र सुभिक्ष राजा निर्भय आरोग्यं समाधान तथा कर्पूरपारदजातिफललुगटोपराहिगु-जीरकसोआविरहालीघृतलवणामहर्घता मूल्यवृद्धिराषाढादि-

युद्ध, पातशाही घरमें कलह, मालवादेशमें टीडीका उपद्रव, सब वस्तुके मूल्यकी वृद्धि, अफीममें लाभ, ज्येष्ठमें वृद्धि, अजमोद मेथी आदिका व्यापारसे लाभ, रोग फैले, वर्षा अधिक हो ॥ ८ ॥

जब धनराशिका शनि हो तब सब जगह तेज भाव, लोक दुर्बल, पिता पुत्रको वेचे, अन्नका नाश, पृथ्वी जलरहित, लोक व्याकुल, राशि भोगसे छमास पीछे धान्यका संग्रहमें लाभ, अफीममें लाभ, तेल तिल दाख गेहूँ चणा चावल खांड लाल टोडा असालिया अजमोद मेथी घी ये सब वस्तु तेज हो, श्रावणादि चार मास महामारीका पीड़ा, राजसुख, उत्तरापथमें सेनाका उपद्रव ॥ ९ ॥

मकरराशिका शनि हो तब सब जगह आनन्द और सुभिक्ष हो, राजा भयरहित, रोगरहित, कपूर पारा जायफल लौंग सुपारी हिंग जीरा सोआ

मासससकं यावद्, अहिफेन महर्घता, चोरभयदेशान्तरे महा-
जनपीडा, प्रथमवर्षा भवति ततो मासमेक न वृष्टिः महर्घता
पश्चात् सुभिक्षं, लवणे मूल्यवृद्धिर्दिनानि पञ्चदश यावत्,
चित्रकूटदुर्गे कटके युद्ध च मनुष्यपीडा धनहानिः शाखाप्र-
माणेन, मालपददेशे रोगपीडा, प्रथम वर्षं भयङ्कर पश्चात् शु-
भं देशभङ्गो राशिभोगान्ते। 'इत्येतद् गौतमस्वामि'इत्यादि।१०

कुंभे शनिस्तदा दक्षिणकुङ्कणदेशे महाविग्रहः, राजक्ष-
य, प्रजाभय धनप्रलयः, राशिभोगान्मासससक यावत् सर्व-
धान्यमहर्घता, आषाढादिमासपञ्चक यावद् 'गोधूममंडुईचि-
णाभसूरयुगन्धरी चोखा उडद वटलातुवरी कांगणी चउला-
बाजरो' एतानि महर्घाणि, दुष्कालः, माघवृष्टिप्रबला ततो
धान्यविनाशश्छत्रभंगः, फाल्गुनचैत्रतो वस्तुधान्यसग्रहः, अ-
नम्राजना नमन्ति, अमार्गेणा मार्गयन्ति, धान्यद्विगुणलाभः।
'इत्येतद् गौतमस्वामि'इत्यादि ॥११॥

सोंप घी नमक ये महँगे हो इनकी मूल्यमें वृद्धि आषाढादि सात मास तक, अफीम तेज, परदेशमे चोर भय, महाजनको पीडा, पहले वर्षा हो पीछे एक मास वर्षा न हो, पहले महँगा पीछे सुभिक्ष, नमकमे मूल्य वृद्धि पन्द्रह दिन तक चित्रगढदुर्ग मे युद्ध, मनुष्यको पीडा, धनकी हानि, मालवा में रोगपीडा, पहला वर्ष भयकर पीछे शुभ और राशिभोगके अन्तमें देशका नाश ॥ १० ॥

जब कुभराशिका शनि हो तब दक्षिण कुकणदेशमें बडा विग्रह, राजा का क्षय, प्रजाको भय, धनका नाश, राशिभोगसे सातमास तक सब धान्य तेज, आषाढादि पाच मास तक गेहूँ चणा मसूर जुआर चावल उर्द, वटाना, तुअरी, कागणी चौला बाजरी आदि तेजभाव, दुष्काल, माघमें प्रबल वर्षा जिससे धान्यका विनाश, छत्रभग, फाल्गुन चैत्रसे वस्तुका और धान्यका

मीने शनिस्तदा दुर्भिक्षं लोके दुर्बलता, माता पुत्र विक्रीणाति, मालपदे महर्घता, उत्पानः 'कांगणी गेहुं चणा ज्वार माषगुडलवणवस्त्रनालिकेरटोपरा सुंठिकर्पूरजातिफल' एषां मासपञ्चकात् परतो विक्रयो द्विगुणलाभः, धान्याल्लाभः, दक्षिणस्यां धान्य महर्घं मालपदे राजविरोधः, प्रजा वसति, वाषरवस्तुमहर्घता धातुवस्तुसुवर्णरूप्यताम्रत्रपुलोहं महर्घं सर्ववस्तुवाणिज्ये लाभः। इत्येतद् गौतमस्वामि'भाषित राशिमण्डलम्। शनैश्चरप्रचारेण ज्ञातव्य वर्षहेतवे ॥१२॥

शनैः शनैश्चारफलं विचिन्त्यं, राशीशमैत्रीगृहचिन्तनाद्यैः।
शुभस्य वेधोऽर्द्धफल शनेः स्यात्, क्रूरस्यवेधे कथितातिरिक्तम्॥१
देशांश्च वस्तूनि शनिस्वमित्र-राशीनि किञ्चित् परिपीडयेत।
राज्ञो रिपूणां बहुधा विनाश्य, ददाति दुःखानि रहस्यमेतत॥२

अथ शनिनक्षत्रभागफलम

पूर्वाभाद्रपदा पौष्ण्यं मघा मूल पुनर्वसु ।
पुष्यं शनिर्यदा भुंक्ते प्रयुक्तेऽकारणं रणम् ॥ १ ॥
छत्रभङ्ग देशभङ्ग-मुर्वी कुर्वीत चाकुलाम् ।
चतुष्पदां रोगयोगं शनिर्व्यसनिनो जनात् ॥ २ ॥
उत्तरात्रितयं पैत्र्यं रोहिणी रेवती तथा ।
शनिः श्रयति यद्यत्र भूमिकष्टं भवेत्तदा ॥ ३ ॥
मूल मघा ने रोहिणी रेवइ, हस्त पुनर्वसु जो शनि सेवइ ।
चउपद मरे दुपद संतावइ, सघली पृथवी चक्र चढावइ ॥ ४ ॥
लोके पुनः- माहमासि वक्रे शनि, तो भङ्गली सुणि वत्त ।
पश्चिम वरसे आघ हुइ, एगह मुसल तत्तः ॥ ५ ॥
श्रावणे कृष्णपक्षे च शनिर्वक्री यदा भवेत् ।
उत्पातस्तु तदा ज्ञेयो मासमध्ये न संशयः ॥ ६ ॥
श्रवणानिलहस्तार्द्राभरणीभाग्योपगः सुतोऽर्कस्य ।
प्रचुरसलिलोपगूडां करोति धात्रीं यदि स्निग्धः ॥७॥

पूर्वाभाद्रपदा रेवती मघा मूल पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्र पर शनि हो तो विना कारण युद्ध हो ॥ १ ॥ छत्रभग और देशभग हो, पृथ्वी आकुल व्याकुल हो, पशुओंको और व्यसनी मनुष्योंको रोग हो ॥ २ ॥ तीनों उत्तरा मघा रोहिणी और रेवती इन नक्षत्र पर शनि हो तो भूमिपर कष्ट हो ॥ ३ ॥ मूल मघा रोहिणी रेवती हस्त और पुनर्वसु इन नक्षत्र पर शनि हो तो पशुमें अधिक मरण हो, मनुष्योंको कष्ट हो, और समस्त पृथ्वी उपद्रव वाली हो ॥ ४ ॥ यदि माघ मासमें शनि वक्री हो तो पश्चिम में मेघका उदय होकर मुसलधार वर्षा हो ॥ ५ ॥ श्रावण कृष्ण पक्षमें यदि शनि वक्री हो तो एक मास के भीतर उत्पात हो इस में संशय नहीं ॥ ६ ॥ श्रवण स्वाति हस्त आर्द्रा और भरणी इन नक्षत्र पर शनि हो तो बहुत जलसे पूर्ण पृथ्वी होती है ॥ ७ ॥

अथ शनिभोगादिनफल या सतयमजिह्वा—

शनिभ दिनभे योज्यं तदङ्क सप्तभिर्भजेत् ।
अन्न वात तथा युद्धं दुर्भिक्ष छत्रपातनम् ॥८॥
शून्यता रौरव प्रोक्त फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ।
एता सप्ताप्यग्निजिह्वा यमजिह्वा प्रकीर्त्तिता ॥९॥
पाठान्तरे—सूर्यभादिनभ यावत् सप्त भागे जल कलिः ।
रोगोऽग्निर्वायुः पशु-पीडा दुर्भिक्षकृच्छनिः ॥१०॥

अथ शनेरुदयविचार ।

मेषे शनेरुदयने जलवृष्टिरुच्चैः ,
सौख्यं जने वृषभगे तृणकाष्ठकष्टम् ।
अश्वेषु रोगकरण च महर्घमिक्षु –
जन्यं गुडादि मिथुनेऽतिसुभिक्षमेव ॥११॥
वृष्टिर्न कर्कगृहगे सरसा च शोषः ,
सर्वत्र मारिभयमाशु जनेऽतिपीडा ।
तिड्डागमः क्वचन सिंहगते शिशुनां ,

नाशः प्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ १२ ॥
कन्याशनेरुदयतः किल धान्यनाशः,
पृथ्वीशसन्धिरतुलस्तुलया न वर्षा ।
गोधूमवर्जितमही तदसौ फल स्या-
दस्वस्थता धनुषि मानुषजातिरोगम् ॥ १३ ॥
स्त्रीणां शिशोश्च विपदोऽखिल धान्यनाशः,
सौरेर्मृगेऽभ्युदयने नृपयुद्धबुद्धिः ।
नाशश्चतुष्पदकुले कलशेऽथ मीने,
दीने जने ननु शनेरुदयान्न धान्यम् ॥ १४ ॥

अथ शनेरस्तविचार.—

मेषेऽस्तं गमने शनेर्भुवि जने धान्य महर्घं वृषे,
सर्वत्रापि गवादिपीडनमहो पण्यांगना मैथुने ।
दु.खार्त्ता पथि कर्कटे रिपुभयं कार्पासधान्यादिषु,

का उदय हो तो वर्षाका अभाव, रसों मे शुष्कता, सब जगह महामारी का भय, मनुष्योंमें अतिपीडा और कहीं टीड्डीका आगमन हो। सिंहराशिमें शनिका उदय हो तो बालकोंका नाश और राजाका अधर्मशासन प्रगट हो ॥ १२ ॥ कन्याराशिमें शनिका उदय हो तो धान्यका नाश और पृथ्वीमें सधि हो। तुला और वृश्चिकराशिमे शनिका उदय हो तो वर्षा न वरसे, गेहूँ आदिसे रहित पृथ्वी हो। धनराशि मे शनि का उदय हो तो अस्वस्थता, मनुष्य जातिमें रोग ॥ १३ ॥ स्त्री और बालकको दु ख, समस्त धान्य का नाश हो। मकरराशिमें शनिका उदय हो तो राजाओं मे युद्ध करने की बुद्धि हो और पशुओंका नाश हो। कुभ और मीनराशिमे शनिका उदय हो तो मनुष्योंमे दीनता और धान्य न हो ॥ १४ ॥

मेषराशिमे शनिका अस्त हो तो पृथ्वीमे धान्यभाव तेज हो। वृषराशिमें शनिका अस्त हो तो सर्वत्र गौ आदि को पीडा। मिथुनराशिमें वेश्या

दौर्लभ्य जलदेष्ववर्षणविधिः सिंहे तुरङ्गव्यथा ॥१५॥
धातूनां च महर्घताऽन्नविगमः कन्यास्थितावग्रतो,
लोकेऽन्येऽपि तुलाबलेन सततं निष्पत्तिरानन्दतः।
स्वल्प धान्यमलौ जने नृपभय पीडापि तीडादिजा,
चापे लोकसुख मृगेऽपि पवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः॥१६॥
कुम्भे शीतभय चतुष्पदपरिग्लानिश्च हानिर्गवां,
मीने हीननया घनस्य न जल क्वापीह वापीस्थले।
सन्तापी नृपतिः स्वधर्मविमुखः पापी जनः पीडया,
मन्दमन्दसमन्दभूपतिरणो मन्देऽस्तमप्याश्रिते ॥१७॥
कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः।
शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्ध परस्परम् ॥१८॥
आग्नेयेऽपि च वायव्ये वारुणे वा महेन्द्रके।
वक्री शनिर्मण्डले स्यात् फल देशेषु तादृशम् ॥१९॥

अथ शनिनक्षत्रफलज्ञानाय कूर्मापरनामक पद्मचक्र प्रागुक्ततरय विवरणम्—

आकाशोपरि वायुर्घनोदधिस्तदुपरि प्रतिष्ठान ।
तस्मिन्नुदधौ पृथिवी प्रतिष्ठिताधिष्ठिता जीवैः ॥१॥
कठिनतया वृत्ततयाऽष्टदिग् विभागेन पद्मिनी ।
पृथिवी उदधेर्मध्यभवत्वाद् भूचक्रं पद्मिनीचक्रम् ॥२॥
जलधिशयत्वात् कूर्मोऽप्यसौ निवेद्या परैर्द्विजन्माद्यैः ।
सर्वंसहापि वज्रादि-काण्डयोगेन कठिनतरा ॥३॥
इवादीनामप्रयोगा-दुपमापि च रूपकम् ।
भ्रममूलमलङ्कार-स्तेषां जज्ञे धियान्ध्यतः ॥४॥
ऐन्द्रीबुद्धिः पयोवाहे रामादौ भुवनेशधीः ।
दुष्टे जने दैत्यमति-रूपचारेऽपि तात्त्विकी ॥५॥

इन चार मण्डलोंमे शनि वक्री हो तो इनके नामसदृश देशमें फल होना है ॥१८॥

आकाशमें सर्वत्र तनवात और घनवात रहा हुआ है, उसके ऊपर घनोदधि नामका वायुमिश्रित जल है और उसके उपर पृथ्वी ठहरी हुई है यही जीवोंका आधार है ॥ १ ॥ वह पृथिवी कठीन और गोल है, उसका आकार आठ दिशाओंकी अपेक्षासे आठ पाखडीवाले कमलके सदृश होता है। कमल उदधि (समुद्र) मे होता है और पृथिवी भी घनोदधि (वायु मिश्रित सघन जल)में है इसलिये भूचक्रको पद्मिनीचक्र कहा जाता है ॥२॥ किसीके मतसे पद्मिनीचक्रको कूर्मचक्र भी कहते है, क्योंकि कूर्म (कछुवा) भी वज्रदंडके जैसे कठिन, सब सहन करनेवाला और जलधिशायी (जलाशयमे रहनेवाला) है ॥ ३ ॥ 'इव' आदि शब्दोंका प्रयोग नहीं करने से उपमा और रूपक भी भ्रममूलक है और बुद्धिका विपर्ययमें अलंकाररूप हो जाते हैं ॥ ४ ॥ जैसे मेघमें इद्रकी कल्पना, राम आदिमें जगदीश्वरकी कल्पना, दुष्ट पुरुषोंमें दैत्यकी कल्पना और उपचारमें भी तात्त्विक कल्पना करना ॥ ५ ॥ तथा अर्हन्तोंकी प्रतिमामें कछवा बनाना या उसके उपर

घिम्वस्थानेऽर्हतां तेन कूर्मनामापि लिख्यते ।
नागेन्द्रः शेषनामापि तस्यैवोच्चैः प्रतिष्ठितः ॥६॥
महाशिरा महीपालः प्रागभूच्छूकराननः ।
अन्यायात् पृथिवीखण्ड प्लाव्यमानं महाब्धिना ॥७॥
ररक्ष रक्षसां नाशात् कृत्वा वाराहविद्यया ।
तादृग्रूप दृष्ट्वैवो द्धरणेन भुवस्तदा ॥८॥
ततो मिथ्यादृशामेषा निर्निमेषा व्यजृम्भता ।
मनीषा यद्वराहेण दंष्ट्राग्रेण धृता मही ॥९॥

यदुक्त रुद्रदेवन स्वकृतमघमालायाम---

कूर्मचक्र प्रवक्ष्यामि यदुक्त कौशलागमे ।
येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते देशनिर्णय ॥१०॥
त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवाः कूर्मैकदेशवासिनः ।
सुमेरुः पृथिवीमध्ये श्रूयते न च दृश्यते ॥११॥
तादृशाः पर्वताश्चाष्टौ सागरा द्वीपदिग्गजाः ।
सर्वेते विधृता भूम्या सा धृता येन सोऽत्र कः ॥१२॥

दंष्ट्राग्रां सा वराहेण विधृतास्ति वसुन्धराः ।
मुस्ताखननतो यस्यां शोभते मृत्तिका यथा ॥१३॥
ईदृशोऽपि महाकायो वाराह शेषमस्तके ।
तस्य चूडामणेरूर्ध्वे संस्थितो मशकोपमः ॥१४॥
एवंविधः स शेषोऽपि कुण्डलीभूय संस्थितः ।
कूर्मपृष्ठैकभागेन सूत्रे तन्तुरिवाबभौ ॥१५॥
वपुः स्कन्धः शिरः पुच्छं मुखांघ्रिप्रभृतीनि च ।
माने मानेन कूर्मस्य कथयन्ति च तद्विदः ॥१६॥
क्रोशः शतसहस्राणि योजनानि वपुः स्थितम् ।
तदर्द्धेन भवेत् पुच्छ पुच्छार्द्धेन तु कुक्षिके ॥१७॥
ग्रीवा चायुतकोटिस्था मस्तकं सप्तकोटिभिः ।
नेत्रयोरन्तर तस्य कोटिरेका प्रमाणतः ॥१८॥
मुखं कोटिद्वयं तस्य द्विगुणेन तु पादयोः ।

हैं वैसे सागर (समुद्र) और द्वीप भी आठ आठ है वे सब पृथिवी पर हैं, ॥१२॥ ऐसी पृथिवी को वराहावतारने दांतके अग्रभाग पर ऐसे धारण किया है, जैसे वराह मुस्ता (नागरमोथा) खोदनेसे दांत पर मिट्टी शोभती है॥१३॥ इतना बड़ा शरीरवाला वराह शेषनागके मस्तक पर मशक (मच्छर) के सदृश रहा हुआ है ॥ १४ ॥ इस प्रकार वह शेष नाग भी वर्तुलाकार (गोल) होकर रहा है, जिससे कि कूर्मके पीठके एक भागमें ऐसा शोभता है जैसे सूतमे रहा हुआ तनु शोभा पाता है ॥१५॥ उसका माप, कूर्म का शरीर स्कध मस्तक पुच्छ मुख और चरण आदिके मानसे ज्योतिर्विदोंने इस प्रकार कहा हैं– ॥१६॥ उसका एक लाख योजनका शरीर है, शरीर से आधा पुच्छ है, पुच्छ से आधा पेट है॥ १७ ॥ दश हजार करोड योजन लबी ग्रीवा (गला) है, सात करोड योजनका मस्तक है, दोनों नेत्रों का अतर एक करोड़ योजनका है ॥ १८ ॥ दो करोड योजनका मुख है,

अङ्गुलीनां नखाग्रे तु योजनाऽयुतसंख्यया ॥१९॥
एवं कूर्मप्रमाणं च कथितं चादियामले ।
तस्योपरि स्थिता चेयं सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥२०॥
कूर्माकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम ।
पूर्वभागे मुख तस्य पुच्छं पश्चिममण्डले ॥२१॥
पूर्वापर लिखेद्वेध वेध वा दक्षिणोत्तरम् ।
ईशानरक्षसोर्वेधं वेधमाग्नेयमारुतम् ॥२२॥
नाभिशीर्षचतुष्पाद-पुच्छकुक्षिषु संस्थिते ।
ताराश्रयाङ्के ह्येतस्मिन् सौरिं यत्नेन चिन्तयेत् ॥२३॥
कृत्तिका रोहिणी सौम्य कूर्मनाभिगतं त्रयम् ।
पृथिव्यां मिथिला चम्पा कौशाम्बी कौशिकी तथा ॥२४॥
अहिच्छत्रं गया विन्ध्या अन्तर्वेदिश्च मेखला ।
कान्यकुब्ज प्रयागश्च मध्यदेशोऽयमुच्यते ॥२५॥

रौद्रं पुनर्वसुः पुष्यं कूर्मशिरसि संस्थितम् ।
रामाद्रिर्हस्तिबन्धश्च पञ्चतालश्च कामरूः ॥२६॥
बरेलीसरयूगङ्गा पूर्वदेशोऽयमुच्यते ।
आश्लेषा च मघा पूर्वा आग्नेयपादगोचरे ॥२७॥
अङ्गवङ्गकलिङ्गाख्या पञ्चकूट च कौशलाः ।
डाहलाश्च जलेन्द्रश्च हुगलीवल्लभेश्वरम् ॥२८॥
उड्डीशारयस्तिलङ्ग-श्चाग्निदेशोऽयमुच्यते ।
उत्तरा हस्तश्चित्रा च त्रयं दक्षिणकुक्षिगम् ॥२९॥
दर्दुरं च महीध्र च वनं सिंहलमण्डलम्।
तापी भीमरथी लङ्का त्रिकूटो मलयाचलः ॥३०॥
स्वातिर्विशाखा मैत्रं च पादेनैर्ऋतिगोचरे ।
नाशिक्य बगलाणं च धृतमालवकस्तथा ॥३१॥
वुल्लीतला प्रकाशं च भृगुकच्छं च कुंकणम् ।

न्यकुब्ज (कन्नोज) और प्रयाग ये देश है, इन सबको मध्यदेश कहते है ॥२५॥ आर्द्रा पुनर्वसु और पुष्य ये तीन नक्षत्र कूर्मके मस्तक पर लिखना चाहिए । रामाद्रि, हस्तिबंध, पचताल, कामरु ॥ २६ ॥ बरेली, सरयू नदी और गगा ये पूर्वदेश है । आश्लेषा मघा पूर्वाफाल्गुनी ये तीन नक्षत्र कूर्मके आग्नेयपाद पर लिखना चाहिए ॥ २७॥ और अग, वग, कलिग, पचकूट, कौशल, डाहल (त्रिपुर नामका देश), जलेन्द्र, हुगली, वल्लभेश्वर ॥२८॥ उडीसा, और तैलग ये अग्निदिशाके देश हैं । उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रा ये तीन नक्षत्र कूर्मकी दक्षिण कुक्षि (बगल) में लिखना॥ २९ ॥ दर्दुर, महीध्रवन, सिंहलदेश, तापी, भीमरथी, लका, त्रिकूट, मलयाचल, ये दक्षिणदेश है ॥ ३० ॥ स्वाति विशाखा और अनुराधा ये तीन नक्षत्र नैर्ऋत्यपैर पर लिखना । नाशिक, बगलाण, धारमालव ॥ ३१ ॥ वुल्ली, तला, प्रकाश, भृगुकच्छ (भरूच), कुंकण, विद्यापुर और मोढेर ये दश

विद्यापुंस्त्वमोढेरदेशा नश्यन्ति तादृशाः॥३२॥
ज्येष्ठा मूलं पूर्वाषाढा पुच्छमण्डले च संस्थिताः।
पर्वता अर्बुदं कच्छ-मवन्तीपूर्वमालवः॥३३॥
पारसीबर्बरौ द्वीपौ सौराष्ट्रं सैन्धवं तथा।
जलस्थानानि नश्यन्ति स्त्रीराज्यं पुच्छपीडने॥३४॥
उत्तरादित्रिनक्षत्रं पादे वायव्यगोचरे।
गुर्जरत्रामहीदेशो मरुदेशो विनश्यति॥३५॥
जालन्धरस्तथाऽऽभीरो दिल्लीदेशोदधिस्थलम्।
मेरुशृङ्गं विनश्यन्ति ये चान्ये कोणसंस्थिताः॥३६॥
वारुणादित्रिनक्षत्र-मुत्तराकुक्षिसंस्थितम्।
नेपालकीरकाश्मीर-गर्जनीखुरासाणकम्॥३७॥
मथुरा म्लेच्छदेशाश्च खरकेदारमण्डले।
हिमालयश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्तराश्रिताः॥३८॥
रेवती चाश्विनीयाम्यं पादे ईशानगोचरे।

गंगाद्वारं कुरुक्षेत्र श्रीकण्ठं हस्तिनापुरम् ॥३९॥
अश्वचक्रैकपादश्च गजकर्णस्तथैव च ।
एते देशा विनश्यन्ति परेऽपीशानसंस्थिताः ॥४०॥
यत्र देशे स्थितः सौरि-स्तत्र दुर्भिक्षविग्रहः ।
परदेशस्थितिः कुर्याद् विग्रह पृथिवीभुजाम् ॥४१॥
नरपतिजयचर्याग्रन्थे पुनः—
पृथ्वीकूर्मे समाख्यातः कृत्तिकादिभमान्तकः ।
देशादिस्वस्वऋक्षादि वीक्ष्य कूर्मचतुष्टयम् ॥४२॥
पूर्ववच्चक्रमालिख्य देशनामर्क्षपूर्वकम् ।
देशकूर्मे भवेत्तत्र यत्र सौरिः क्षयस्ततः ॥४३॥
नगरे नागरं धिष्ण्यं कृत्वादौ विलिखेत् ततः ।
क्षेत्रजे क्षेत्रभान्यादौ कुर्यात् कूर्मं यथास्थितम् ॥४४॥
कूर्माख्यया चक्रमवक्रबुद्ध्या,

हस्तिनापुर ॥३९॥ अश्वचक्र, एकपाद, गजकर्ण ये ईशान कोण के देश हैं उनका विनाश हो ॥४०॥ जिस नक्षत्र पर शनि हो उस नक्षत्र की दिशाके देश का विनाश हो, या उसमें दुर्भिक्ष पड़े, विग्रह हो, परदेश स्थिति हो, और राजाओंमे परस्पर विग्रह हो ॥ ४१ ॥

कृत्तिकासे भरणी नक्षत्र तक के नक्षत्रों का पृथ्वीकूर्मचक्र कहा, उसमे अपने अपने देश आदिके नक्षत्रका विचार कर शुभाशुभ फल कहना। कूर्मचक्र विद्वानोंने चार प्रकारके माने है—देश नगर क्षेत्र और गृह ॥४२॥ ये चार प्रकारके कूर्मचक्रमें पूर्ववत् देशके नाम और नक्षत्र पूर्वक याने कूर्म के नक्षत्र और देश आदि मध्यके हो तो मध्यमें और दिशा विदिशाके हो तो दिशा और विदिशामें लिखना चाहिए। इसमें जिस पर शनिका वेध हो या स्थित हो उसका विनाश होता हैं ॥४३॥ कूर्मचक्रमे नगर सबधी नक्षत्र नगरमे और देश संबधी नक्षत्र देशमें यथास्थित लिखना चाहिये ॥४४॥ विद्वान जन कूर्मनामके चक्र

शनैश्चरैकादि विदुषोऽधिगम्य ।
शुभाशुभ देशगत मनीषी ,
जानाति पद्माकृतिनामतः स्यात् ॥४८॥
॥ इति कूर्मचक्रविवरणम् ॥

अथ राहुविचारः ।

राहुमाहुरिह वार्षिकमीशं, पूर्वजा हि सुधपः प्रियबोधाः ।
तेन तस्य भुवि चारविचारं, ब्रूमहे परिविमृश्य विकारम् ॥१॥
मीनमेषगते राहौ सुभिक्षं राजविड्वरम् ।
तुलाकुम्भे महावृष्टिं मेंहर्घं मकरे वृषे ॥२॥
धनुर्वृश्चिकयो राहौ प्रजायेन प्रजाक्षयः ।
ईतयोऽमीनयो राज्ञां घोरचोरभय पथि ॥३॥
दुर्भिक्षं सिंहगे राहौ कर्कटे नृपनिक्षयः ।
देशभङ्गश्छत्रपातो यत्र दृष्टिः शनेर्जने ॥४॥

भौमगृहे सति राहौ राजविरोधप्रजाभवनदाहौ ।
बालगणे कुलकालः शशिसुतभवनस्थिते तमसि ॥५॥
गुरुभवने द्विजपीडा रोगा बहुलाः परस्परं वैरम् ।
शुक्रगृहे विपुलं जलं समर्घतान्ने सुभिक्षं च ॥६॥
शनिभवने युद्धभयं सरोगता वस्तुनो महर्घत्वम् ।
शनिवच्छेषं वाच्यं प्रायस्तमसः प्रकृतिसाम्यात् ॥७॥

पुनर्विशेषः—

यस्मिन् संवत्सरे राहु-र्मीनराशौ प्रजायते ।
तस्मिन् मासे भयं विद्यात् प्राघूर्णिकसमागमः ॥८॥
एवं ज्ञात्वा कर्त्तव्यो यवादस्यातिसंग्रहः ।
संग्रहः सर्वधान्यानां लाभो द्वित्रिचतुर्गुणः ॥९॥
वर्षमेकं तु दुर्भिक्ष रौरवं परिकीर्त्तितम् ।
मासे त्रयोदशे मासे सुभिक्षमतुलं भवेत् ॥१०॥

के घरमें राहु जानेसे राजाओंमे विरोध, प्रजा तथा घरमे अग्निका उपद्रव, बुधके घरमें राहु हो तो बालकोंको कष्ट हो ॥ ५ ॥ गुरुके घरमें राहु हो तो ब्राह्मणोंको कष्ट, रोग अधिक और परस्पर द्वेष हो। शुक्रके घरमे राहु हो तो वर्षा अधिक, अन्नभाव सस्ता और सुकाल हो ॥ ६ ॥ शनिके घरमें राहु हो तो युद्धका भय रहे, रोग हो और वस्तुका भाव तेज हो। विशेष इसका फलादेश शनिकी तरह समझना, क्यों कि राहुकी और शनि की प्रकृति समान है ॥ ७ ॥

जिस वर्षमें राहु मीनराशि का हो उस महीनेमें भय हो, किसी अतिथिका आगमन हो ॥ ८ ॥ ऐसा जानकर यव आदि सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये, इससे दूना तीगुना या चौगुना लाभ हो ॥ ९ ॥ एक वर्ष तक बडा दुष्काल तथा दुःख रहे, और तेरहवें मासमे खूब सुकाल हो ॥ १० ॥ जब कुंभराशि पर राहु हो और यदि उसके संग मंगल भी हो तो

कुंभे राशौ यदा राहु-दैवाद् भौमोऽपि सङ्गतः ।
तदालोक्य विधातव्यः शणसूत्रादिसङ्ग्रहः ॥११॥
भाण्डानि च समस्तानि कांश्यादीनि विशेषतः ।
संगृह्यन्ते मासषट्कं विक्रेतव्यानि सप्तमे ॥१२॥
लाभश्चतुर्गुणो ज्ञेयो भौमराहुद्वयस्थितौ ।
नान्यथेति च वक्तव्यं यावद्भुक्तिस्थिताविमौ ॥१३॥
सैंहिकेयो यदा याति राशिं मकरनामकम् ।
तदा सवीक्ष्य कर्त्तव्यः पट्टसूत्रस्य सङ्ग्रहः ॥१४॥
धृत्वा मासत्रयं यावत् पट्टसूत्रं विषं तथा ।
प्राप्ते चतुर्थके मासे लाभः स्यात् त्रिकपञ्चकः ॥१५॥
सैंहिकेयो यदा याति धनराशौ क्रमात् ततः ।
महिष्यादेस्तदा कार्यः सङ्ग्रहो वसुधातले ॥१६॥
हयानां च गजानां च गन्धादीनां विशेषतः ।
लाभश्चतुर्गुणः प्रोक्तो मासे द्वितीयपञ्चमे ॥१७॥
वृश्चिकस्थो यदा राहु-दैवाद् भौमसमागमः ।
तदा ज्ञात्वा च कर्त्तव्यः सङ्ग्रहो घृतवाससाम् ॥१८॥

पञ्चमासान् व्यतिक्रम्य षष्ठे कार्योऽस्य विक्रयः ।
लाभश्च द्विगुणो ज्ञेयो निश्चितं शास्त्रभाषितम् ॥१९॥
तुलाराशिं यदा राहुः संस्थितः संक्रमे रवेः ।
तदा भवति दुर्भिक्षं पितुः पुत्रस्य विक्रयः ॥२०॥
वार्षिकं सङ्ग्रहं कुर्याद् व्रीहीणां च विशेषतः ।
नाणकानां तथा लोके लाभः कम्बलकांश्यतः ॥२१॥
कन्यागतो यदा राहुः सम्भवेन्मासपञ्चके ।
तदा विज्ञाय संग्राह्य धातकीपिप्पलीद्वयम् ॥२२॥
मासमेकं च संग्राह्य धातकीपुष्पविक्रयः ।
मासद्वयान्ते पिप्पल्या लाभो भवति वाञ्छितः ॥२३॥
सिंहराशौ क्रमाद् वक्रो यदा राहुः प्रवर्त्तते ।
अवश्यं सङ्ग्रहः कार्य-स्तदा चोष्येषु वस्तुषु ॥२४॥
आदौ धान्यकमादाय शुंठीमरिचपिप्पली ।

साथ हों तो कपडेका और घीका सग्रह करना चाहिये ॥ १८ ॥ पाच मास के बाद छठे मासमें वेचनेसे दूना लाभ निश्चयसे हो ऐसा शास्त्रमें कहा है ॥ १९ ॥ जब तुलाराशि का राहु सूर्यकी सक्रान्ति के दिन हो तो महा दुष्काल पडे, यहा तक कि पिता पुत्रको और पुत्र पिताको भी वेच डाले ॥ २० ॥ ऐसे समय में विशेष कर चावलों का सग्रह करना उचित है, उससे तथा कम्बल (ऊनीवस्त्र) और कांसे से लोकमें द्रव्यका लाभ हो ॥ २१ ॥ यदि कन्याराशि का राहु हो तो धातकी तथा पीपल ये दोनों पाच महीने तक सग्रह करना उचित है ॥ २२ ॥ धातकी पुष्प को एक मास सग्रह कर पीछे बेचे और पीपल को दो मास पीछे वेचे तो इच्छित (मन चाहा) लाभ होता है ॥ २३ ॥ यदि सिंहराशि में राहु वक्री हो तो चोष्य वस्तु (चूसने योग वस्तु) का सग्रह करना उचित है ॥ २४ ॥ प्रथम धनिया सोंठ मिरच पीपल जीरा लवण, कालानोन, सैंधानमक और खैर इनका इस

जीरकं लवणं सौवर्चलसैन्धवखादिरम् ॥२५॥
धृत्वा संवत्सरं यावत् षण्मासान्तेऽस्य विक्रयः ।
लाभश्चतुर्गुणस्तस्य यदि सौम्येन वेध्यते ॥२६॥
कर्कटे तु यदा राहुस्तिष्ठत्येव महाबलः ।
अवश्यं तस्कराः सर्वे लोकपीडां प्रकुर्वते ॥२७॥
अल्पतैव भवेद् व्रीहेः समर्घं स्वर्णरूप्यकम् ।
कांस्यं ताम्रं च संग्राह्यं षण्मासे लाभदायकम् ॥२८॥
मिथुने च यदा राहुः स्वोच्चस्थानवशात्तदा ।
घृतधान्यं समर्घं स्यान्माणिक्यानां समर्घता ॥२९॥
सैंहिकेयो यदा याति सौम्यग्रहनिरीक्षितः ।
वृषराशौ क्रमेणैव निधानं लभते जनः ॥३०॥
संग्रहस्सर्वधान्यानां घृतं तैलं विशेषतः ।
कुंकुमं गन्धद्रव्यं च कार्पासश्च गुडस्तथा ॥३१॥
मासषट्कं च धृत्वैव विक्रेयं सप्तमे पुनः ।
ज्ञेयश्चतुर्गुणो लाभः सत्यमेव हि नान्यथा ॥३२॥

कांस्यं च लाक्षा मञ्जिष्ठा शुंठीमरिचहिंगवः ।
एषां सग्रहणं कार्यं षण्मासावधिनिश्चितम् ॥३३॥
मेषराशौ यदा राहुः संस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः ।
दैवाद् ग्रहणसंयोगे दुर्भिक्षं भवति ध्रुवम् ।३४। इतिराहुः ।

द्वादशराशिषु ग्रहयोग राहुफलम् —

उपरागो यदा मेषे पीड्यतेऽथ तदा जनः ।
काम्बोजांध्रि किरातश्च पाञ्चालाश्च तैलङ्गकाः ॥ ३५ ॥
वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ ३६ ॥
सूर्यचन्द्रमसोर्ग्रासो मिथुने च वराङ्गना ।
पीड्यन्ते वाल्हिका वत्सा (लोका) यमुनातटवासिनः ॥३७॥
कर्कटे ग्रहणे पीडा गर्दभानां च जायते ।
आभीरबर्बराणां च पीडा च महती मता ॥ ३८ ॥
सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ ३९ ॥

कासी लाख मँजीठ सोंठ मिर्च और हिंगु (हींग) इनका भी छः महीने तक अवश्य सग्रह करना चाहिए ॥ ३३ ॥ जब मेषराशिमे राहु हो, तब दैव-योगसे सूर्य या चन्द का ग्रहण भी हो तो निश्चयसे दुष्काल हो ॥ ३४ ॥

मेषराशिके ग्रहणमे मनुष्योंको पीडा, तथा कबोज, अध्र, किरात, पांचाल और तैलंगदेशमे पीडा हो ॥ ३५ ॥ वृषराशिके ग्रहणमें गोप (गौ पालक), पशु, मुसाफिर लोग और बडे लोगोंको पीडा हो ॥३६॥ मिथुनराशिमे सूर्य चन्द्रमाका ग्रहण हो तो वेश्या, वाल्हिक देशके और यमुना नदीके तट पर बसनेवाले लोगोंको पीड़ा हो ॥ ३७ ॥ कर्कराशि में ग्रहण हो तो गर्दभों (गदहों) को तथा आभीर और बर्बरोंको बडी पीड़ा हो ॥ ३८ ॥ सिहराशिके ग्रहणमे सब वनवासी दुःखी हों राजा और

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराशालिजातिषु ।
कवीनां लेखकानां च गायकाना धनक्षयः ॥ ४० ॥
तुलायामुपरागे च दशार्णवककाह्वः ।
मरवश्चापरान्तश्च पीड्यन्ते येऽतिसाधवः ॥ ४१ ॥
वृश्चिके ग्रहणे दुःख सर्वजातेः प्रजायते ।
यदुम्बरस्य मन्द्रस्य चौलयौधेयकस्य वा ॥ ४२ ॥
यदोपरागश्चापे स्यात् तदामान्त्याश्च वाजिनः ।
विदेहमल्लपाञ्चालाः पीड्यन्ते भिषजो विशः ॥ ४३ ॥
मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादीनाम् ।
स्थविराणां नटानां च चित्रकूटस्य संक्षयः ॥ ४४ ॥
कुम्भोपरागे पीड्यन्ते गिरिजाः पश्चिमा जनाः ।
तस्करा छिरदाभीरा वेश्याश्च वैदिकादयः ॥ ४५ ॥
मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।

जलोपजीविनो लोका भट्टाद्या ये च पण्डिताः ॥ ४६ ॥

इति राशिग्रहणेन राहुफलम्

अथनक्षत्रपीडाफलम्—

यन्नक्षत्रे स्थितश्चन्द्र-स्तत्र चेद् ग्रहणं भवेत् ।
पीडितं तद् बुधाः प्राहु-स्तत्फल प्रोच्यतेऽधुना ॥४७॥
अश्विन्यां पीडितायां स्यान्-मुद्गादीनां महर्घता ।
भरण्यां श्वेतवस्त्रेभ्यो लाभ मासत्रये भवेत् ॥४८॥
कृत्तिकायां हेमरूप्य-प्रवालमणिमौक्तिकम् ।
सङ्गृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥४९॥
रोहिण्यां सूत्रकार्पास-सङ्ग्रहो लाभदायकः ।
दशमासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो न चेदिह ॥५०॥
मृगशीर्षेऽपि मञ्जिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकम् ।
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ॥५१॥
घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपञ्चके ।
तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोर्मासः पञ्चकतः परम् ॥५२॥

पण्डित आदि पीडित हों ॥ ४६ ॥

जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा स्थित हो उसमे यदि ग्रहण हो तो विद्वान लोग उस नक्षत्र को पीडित मानते है उसका फलादेश को अब कहता हूँ ॥ ४७ ॥ अश्विनीमें ग्रहण हो तो मूग आदि का भाव तेज हो । भरणीमे ग्रहण हो तो सफेद वस्त्रोंसे तीन मासमे लाभ हो ॥ ४८ ॥ कृत्तिकामें हो तो सोना चाँदी प्रवाल (मूगा) मणि और मोती इनका सग्रह करनेसे नव वें महीने लाभ हों ॥४९॥ रोहिणी में हो तो सूत कपास का सग्रह करनेसे दश महीने पीछे लाभ हो, यदि चन्द्रमा वेधित न हो तो ही लाभ होता है । ॥ ५० ॥ मृगशीर्षमे हो तो मँजीठ लाख क्षार और कुसुब आदिका सग्रह करनेसे दश महीने पीछे उचित लाभ हो ॥ ५१ ॥ आर्द्रा में हो तो घी

पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभो भवेद् गोधूमसङ्ग्रहे ।
आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपञ्चके ॥५३॥
मघाचतुष्टये चोला चणकाः खलु तुष्टये ।
चित्रायां च युगन्धर्यां मासो लाभद्वयात्यये ॥५४॥
त्रिपञ्चनवभिर्मासैः स्वातौ लाभस्तथा तथा ।
विशाखाया कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसम्भवः ॥५५॥
राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ।
ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पञ्चमासे धनोदयः ॥५६॥
तन्दुलेभ्यस्तथा मूले पूषाया श्वेतवस्त्रतः ।
उषायां श्रीफलात् पूग्याः सर्वत्र मासपञ्चकम् ॥५७॥
श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्ठाया तु माषतः ।
चणकेभ्योऽपि वारुण्यां तेभ्यः पूभानि पीडने ॥५८॥
लाभस्त्रिमासे निर्दिष्ट-मुभाभ्यां लवणादितः ।

मासषट्कात् भवेल्लाभो रेवत्यां मुद्गमाषतः ॥५९॥
प्रागुक्तोत्पातयोगेऽपि नक्षत्रफलमीदृशम् ।
ज्ञात्वैव सङ्ग्रही यः स्याद् वश्यास्तस्याशु सम्पदः ॥६०॥

अथ केतुविचारः।

रविमण्डलवद्वाग्नौ प्रविष्टाः केतवः सदा ।
वहन्ते तेजसा पूर्णा दृश्यन्ते ते कदाचन ॥६१॥
रविरस्ताचले प्राप्तौ पश्चिमायां निरीक्ष्यते ।
यदा वह्निशिखाकार-स्तदा केतूदयो वदेत् ॥६२॥
प्रातस्तद्दर्शने लोके शिखालतारकोदयः ।
स पुच्छस्तारकः सोऽय-मित्येवोक्तिः प्रवर्त्तते ॥६३॥
जातिर्मासवशाद्देषा-मुत्पातान्तनिरूपिता ।
फलं यत् प्रतिनक्षत्रं विचित्रं तदथोच्यते ॥६४॥
अश्विन्यामुदितः केतु-र्हन्यादश्मकपालकम् ।

लाभ हो ॥ ५९ ॥ इस तरह पहले उत्पात प्रकरणमें नक्षत्रोंके फल कहे है वे सब जानकर कोई सग्रह करे तो लक्ष्मी उसके वशीभूत (प्राप्त) होती है ॥ ६० ॥

केतु हमेशा रविमण्डलकी तरह अग्निमें रहते हैं, अर्थात केतु अग्नि के समान चमकदार हैं और तेज करके पूर्ण है, वे कभी कभी दिखाई पडते हैं ॥ ६१ ॥ सूर्य जब अस्ताचलको प्राप्त हो तब पश्चिम दिशामें देखना, यदि अग्निकी शिखाके सदृश आकार मालूम हो तो केतु का उदय कहना चाहिए ॥ ६२ ॥ उस शिखावाले ताराके उदयका लोक में प्रात समय दर्शन हो तो उसे पुच्छडिया तारा कहते हैं ऐसी प्रथा चल रही है ॥ ६३ ॥ महीनेके कारणसे उसकी जाति उत्पातके अन्तसे निरूपण की गई, अब उसके प्रत्येक नक्षत्रके विचित्र विचित्र फलको कहते हैं ॥ ६४ ॥

भरण्यां च किरातेश कृत्तिकायां कलिङ्गपम् ॥६५॥
रोहिण्यां शूरसेनेश मृगे चोशीनराधिपम् ।
आर्द्रायां जालणाधीश-मश्मकेश पुनर्वसौ ॥६६॥
पुष्ये च मगधाधीश सार्पे केरलका(काशिका)धिपम् ।
मघायामङ्गनाथं च पूफाया पाण्ड्यनायकम् ॥६७॥
उज्जयिन्यां नृपं हन्या दुत्तराफाल्गुनी गतः ।
दण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूपतिम् ॥६८॥
स्वात्यां काश्मीरकम्बोज-भूपतीनां विनाशकः ।
इक्ष्वाकुकुरलेशानां विशाखायां च घातकः ॥६९॥
मैत्रे पौण्ड्रमहीनाथ सार्वभौमं तथेन्द्रभे ।
अन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥७०॥
पूर्वाषाढा काशिराज-मुत्तरा हन्ति कैकयम् ।

बौधे शिविपवेदीश श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥७१॥
वासवे पञ्चजन्येश वारुणे सिंहलेश्वरम् ।
पूर्वभायामङ्गनाथं नैमिषेशमुभागतौ ॥७२॥
रेवत्यामुदितः केतुः किराताधिपघातकः ।
धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥७३॥
करत्रयेवैष्णवरोहिणीषु, मृगे तथादित्ययुगाश्विनीषु ।
कुर्याच्छिशूनां नृपतेश्च चूडामन्दोलितास्ते शिखिनो भवन्ति ॥
वाराहसंहितायाम्—
शतमेकाधिकमेके सहस्रमपरे वदन्ति केतूनाम् ।
बहुरूपमेकमेव प्राह मुनिर्नारदः केतुम् ॥७५॥
केतुग्रहणविचार —
आदित्यग्रासकाले च दुर्भिक्षं प्रायसः पुनः ।

कयदेशके राजाको कष्ट हो ॥७१॥ धनिष्ठामें पाचालदेशके अधिपति को, शतभिषामें सिंहलदेशके राजाको, पूर्वाभाद्रपदमें अगदेशके राजाको. उत्तराभाद्रपदमें नैमिषदेशके अधिपतिको कष्ट हो ॥ ७२ ॥ रेवतीमें केतुका उदय हो तो किरातदेशके राजाको कष्ट हो । यदि केतु धूम्राकार और बड़ी पुच्छवाला हो तो वह जगत्को दु ख देता है ॥७३॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृगशीर्ष पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा और अश्विनी इन नक्षत्रोंमें बालकोंका तथा राजाओंका चूडा कर्म करना चाहिए, चूडाकर्मसे सस्कार किये हुए वे लोग शिखावाले होते है ॥ ७४ ॥

वाराहसहिता मे कहा है कि— कोई पडित कहते हैं कि केतु की सख्या एकसौ एक है, कोई कहते है कि एक हजार है, नारदमुनि कहते है कि केतु एकही है मगर यह एकही बहुरूपी है ॥ ७५ ॥

केतुका सूर्य के साथ ग्रहण हो तो दुष्काल हो और उस के तिथि

तत्तिथिधिष्ण्यवाच्यानि महर्घाणि भवन्ति हि ॥७६॥
आषाढयोर्ज्येष्ठयोर्मध्ये यदा पर्वत्रयं भवेत् ।
क्षितौ भवेन्महायुद्धं नृपमृत्युं समादिशेत् ॥७७॥
यत्र राशौ भवेत् पर्व, तस्य वाच्यं क्रयाणकम् ।
अत्यर्घं लभते मूल्यं पीड्यमानं च राष्ट्रगा ॥७८॥
लोकेऽपि-सीसे गुरुने पूछीओ होइ इस्यो विचार ।
मागसिर ससिगहण हुई प्रजा करेसी भार ॥७९॥
कत्तियमासे रविगहण जइ हुइ धरणिसुण्ण ।
अगणागणना विना मरे सुभटनी सेण ॥८०॥
एवं वर्षाधिपपरिणते-र्वत्सरः श्रीगुरोः स्याद्,
नक्षत्राख्यः सकलजगति र्थपयोधस्य बीजम् ।
मन्दस्यापि प्रकटमहिमा वत्सरः स्वीयनाम्ना,
मत्त्वा तत्त्वाद् द्वयमिदमितो भावितव्यं विचार्यम् ॥८१॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षबोधग्रन्थे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते शनैश्चरवत्सर निरूपणनामा पञ्चमोऽधिकारः ।

अथ अयनमासपक्षादिननिरूपणनामषष्ठोऽधिकारः ।

अयनम्—

यदि कर्कार्कसंक्रांतौ कुजार्कशनिसोमजाः ।
अल्पनीरं रण घोरं स्यात् तदा नीचबुद्धिदः ॥१॥
मेघाधिकारे विज्ञेयं प्रथमं दक्षिणायनम् ।
ऋतवः प्रावृडाद्याश्च मासा हि श्रावणादयः ॥२॥
वारेष्वर्कार्किभौमानां संक्रान्तिर्मृगकर्कयोः ।
यदा तदा महर्घं स्या-दीतियुद्धादिकं तदा ॥३॥
कर्कार्के ससरव्यादि-वारेषु दश विंशतिः ।
अष्टार्काश्च धृतिद्वौ च शून्यं विश्वास्त्रयोऽथवा ॥४॥

सौराष्ट्राष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितः शनैश्चरवत्सरनिरूपणनामा पञ्चमोऽधिकार ।

यदि कर्कसंक्रांति के दिन मंगल रवि शनि या बुधवार हो तो थोडी वर्षा, घोरयुद्ध तथा नीचबुद्धि दायक हो ॥ १ ॥ मेघका अधिकारमें प्रथम दक्षिणायन वर्षादि ऋतु तथा श्रावण आदि मास जानना ॥ २ ॥ यदि मकर और कर्क संक्रांति के दिन रवि शनि या मंगलवार हो तो धान्य तेज हो, ईति का उपद्रव तथा युद्ध हो ॥ ३ ॥ विश्वा साधन—कर्कसंक्रान्ति के दिन रवि-वार हो तो दश विश्वा, सोमवार हो तो वीस विश्वा, मंगल हो तो आठ विश्वा, बुध हो तो बारह विश्वा, गुरु और शुक्रवार हो तो अठारह, शनिवार हो तो शून्य विश्वा, किन्तु देश विशेषता से अथवा अन्य शुभग्रह का योगसे तीन विश्वा माना है ॥ ४ ॥ कहीं ऐसा भी कहा है—गुरुवार को सोलह और शुक्र-

अत्रायमर्थः— कर्कसंक्रान्तौ रविवारे दश विंशोपका वर्षे, चन्द्रे विंशतिः, मङ्गलेऽष्टौ, बुधे द्वादश, द्वौ-गुरुशुक्रवारौ त योरष्टादश, शनौ शून्यम्, यद्वा देशविशेषेऽन्यस्मिन शुभ योगे वा त्रयो विंशोपकाः।

क्वचित्—गुरौ षोडश शुक्रे स्यु-रष्टादशविंशोपकाः।
दीपोत्सवे वारवशात् केचिदाहुर्विंशोपकान् ॥५॥
दिशो नखाश्च विश्वाख्या सप्त रुद्रा नयाम्बरम्।
वर्षविंशोपकानेव जानीयात् कर्कसंक्रमे ॥६॥

अन्यत्र—कार्त्तिके शुक्लपक्षे च पञ्चम्या वारवीक्षणात्।
वर्षं वर्षा च धान्यार्थं त्रीण्येतानि विचारयेत् ॥७॥
रवौ चन्द्रे कुजे सौम्ये गुरौ शुक्रे शनैश्चरे।
दिग्विंशतीभाश्चनृप-कलाष्टादश विश्वका ॥८॥

लौकिकास्तु— मङ्गल आठ बुधे वलि बारह,
सोम शुक्र गुरु करे अठारह।
काकडि सङ्कमि रवि शनि वेठो,

निश्चय सुंदरि! समो विणठो ॥९॥
शनि आइचइ मंगलइ जो कक्कडसंक्रंति ।
तीडा मूसा कातरा त्रिहु मांहे एक हुवंति ॥१०॥
मेषकर्कमकरेऽर्कसंक्रमे, क्रूरवारसहिते जलं नहि ।
धान्यमल्पतरमेव वत्सरे, विग्रहो विपुलरोगतस्कराः ॥११॥

अथ मासाः—

चैत्रे च श्रावणे मासे पञ्चजीवो यदा भवेत् ।
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥१२॥
द्वादश्यां यदि वा कृष्णे शनिवारो यदा भवेत् ।
ततश्चतुर्दशे मासे पञ्चार्कवारसम्भवः ॥१३॥
पञ्चार्कवासरे रोगाः पञ्चभौमे भयं महत् ।
दुर्भिक्षं पञ्चमन्देषु शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥१४॥
यदुक्तम्—एकमासे रवेर्वाराः पञ्च न स्युः शुभावहाः ।
अमावास्यार्कवारेण महर्घत्वविधायिनः ॥१५॥

हो तो निश्चयसे शून्यता हो ॥ ९ ॥ यदि कर्कसंक्राति शनि रवि और मंगलवार को हो तो टीड़ी चूहा या कातरा इन तीनमें से एक का उपद्रव हो ॥ १० ॥ जो मेष कर्क तथा मकर संक्राति क्रूरवारको हो तो जल न बरसे, धान्य थोड़ा, विग्रह रोग और चोरोंका बहुत उपद्रव हो ॥ ११ ॥

चैत्र और श्रावणमासमें जो पाच बृहस्पति हो तो दुर्भिक्ष महा घोर दुःख तथा छत्रभंग हो ॥ १२ ॥ यदि कृष्ण द्वादशी को शनिवार हो तो उससे चौदहवें महीने में पाच रविवार आते हैं ॥ १३ ॥ जिस मासमे पाच रविवार हो तो रोग, पाच मंगलवार हो तो भय अधिक, पाच शनिवार हो तो दुर्भिक्षता और इनसे अतिरिक्त दूसरा वार पाच हो तो शुभदायक होता है ॥ १४ ॥ एकमासमे पाच रविवार शुभ फलदायक नहीं है । अमावास्या रविवारको हो तो धान्य महँगा हों ॥ १५ ॥ चैत्र और श्रावणमास मे पाच रविवार हो तो

चैत्रे च श्रावणे मासे भवेद् यद्यर्कपञ्चकम् ।
दुर्भिक्षं तत्र जानीयात् छत्रनाशो न संशयः ॥१६॥
मङ्गले म्रियते राजा प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे ।
बुधे रसवत्या भूम्या दुर्भिक्षं तु शनैश्चरे ॥१७॥
लोकेऽपि– पांच शनिश्चर पांच रवि, पांचे मङ्गल होय ।
चढ़ि चहोडे मे ढर्नी, जीवे विरला कोय ॥१८॥
सामान्यदिवसे सोम गुरुवारो यदा भवेत् ।
धान्यं महर्घं त्रीन् मासान् सावित्र्येऽपि दुःखकृत् ॥१९॥
यतः–शुचश्चेत् प्रथम वारः सर्वसामान्यवासरः ।
ततः परं त्रिभिर्मासैर्महर्घं राजविड्वरः ॥२०॥
पञ्चार्कयोगे वैशाखे वृष्टिगर्भविनाशिनी ।
पञ्चसोमे भयं चेद्-वृष्टिर्न याय क्वचित् ॥२१॥
प्रतिपत्सर्वमासेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी ।

ज्येष्ठमासे विशेषेण वर्षभङ्गाय जायते ॥२२॥
चित्रास्वातिविशाखासु यस्मिन् मासे न वर्षणम् ।
तन्मासे निर्जला मेघा इति गर्गमुनेर्वचः ॥२३॥
ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति षण्णां निवसति-
स्तदा गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते ।
नृपाणां नाशः स्याज्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी,
भवेल्लोको रंकः परिहरति पुत्रं च जननी ॥२४॥
मार्गादिपञ्चमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षये ।
दौस्थ्यं वा छत्रभङ्गोऽपि जायते राजविड्वरः ॥२५॥
मार्गादिपञ्चमासेषु तिथिवृद्धिर्निरन्तरम् ।
कृष्णपक्षे तदाऽसौस्थ्यं प्रजामारिः प्रवर्त्तते ॥२६॥
मासे मासे ह्यमावास्याप्रमाण प्रविलोकयते ।
तिथिवृद्धौ कणावृद्धिः ऋक्षवृद्धौ कणक्षयः ॥२७॥

वर्षा का नाश करे ॥ २२ ॥

जिस महीनेमें चित्रा स्वाति और विशाखामे वर्षा न हो उस महीने में मेघ निर्जल रहें ऐसा गर्गमुनिका वचन है ॥ २३ ॥ जिस महीने मे छह ग्रह एक राशि पर हों तो वह गोल योग कहा जाता है, इसमें इन्द्र भी प्रलयपद को प्राप्त होता है, राजाओं का विनाश हो, पृथ्वी गरमी से प्रज्वलित हो, नदी सूख जाय और लोक ऐसे निर्धन हो जाय कि माता पुत्रको भी त्याग कर दे ॥ २४ ॥ मार्गशीर्षादि पाच महीनेके शुक्लपक्ष में तिथि का क्षय हो तो अस्वस्थता छत्रभग और राजविग्रह हो ॥ २५ ॥ मार्गशीर्षादि पाच महीनेके कृष्णपक्षमें तिथिकी वृद्धि हो तो अस्वस्थता तथा प्रजामें महामारी हो ॥ २६ ॥ प्रत्येक मासकी अमावास्याका प्रमाण देखे, यदि उसमें तिथिकी वृद्धि हो तो धान्यकी वृद्धि और नक्षत्रकी वृद्धि हो तो धान्य का क्षय हो ॥ २७ ॥ महीनेके नक्षत्र से पूर्णिमा न्यून, समान या

चैत्रे मेघमहारम्भो वर्षस्तम्भविनाशकः ।
मूलाद् भरणीपर्यन्त त्व निरभ्र सुभिक्षकृत् ॥४१॥
चैत्रे वृष्टिकरो मेघोऽथवा मेघाः सुनिर्मलाः ।
वैशाखे पञ्चवर्णाः स्यु-स्तदा निष्पत्तिरुत्तमा ॥४२॥

अत्रेदं विचार्यते–ननु चैत्रे निर्मलता शुभा साभ्रता वा-ताद्याश्चैत्रे किञ्चित् पयो हितमिति वचनम्। स्थानांगवृत्तौ 'प-वनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभाः सपरिवेषा' इत्यागमा-च्च । उक्तं च लोके—

चैत्रमास जो बीज विलोवे, धूरि वैशाखे केसू धोवे ।
जेठमास जो जाई तपनो, कुण राखे जलहर वरसंतो ॥४३॥

न वादल विना विद्युद् न द्वितीयं नैर्मल्यस्य बहुधा व-चनात् । यतः–

चैत्रमास जइ हुई निरमलो, चारमास वरसे गलगलओ।
जिहां २ वादल तिहां २ विणास, मानव धाननी मेल्है आस ।४४।

चैत्रमासमें अधिक वर्षा हो तो गर्भका विनाश हो । मूल से भरणी पर्यन्त आकाश बादल रहित निर्मल दीखे तो सुभिक्ष कारक होता है ॥४१॥ चैत्रमासमे वृष्टिकारक बादल हो या अच्छे निर्मल बादल हो और वैशाखमें पच वर्णवाले बादल हो तो उत्तम जानना ॥ ४२ ॥ चैत्रमास निर्मल हो तथा बादल सहित हो, वायु चले और कुछ वर्षा हो तो शुभ समय होता है । स्थानागसूत्रकी वृत्तिमें पवन बादल और वर्षावाला तथा परिमडलवाला गर्भ चैत्रमासमें शुभमाना है । लौकिक भाषामें कहा है कि–चैत्रमास में वि-जली चमके, वैशाखमे किंशुकपुष्प की धूलि धो जाय याने वरसाद के द्वारा किंशुकपुष्पका रगसे धूलि रगवाली हो जाय और ज्येष्ठमास बहुत तपे तो बहुत अच्छी वर्षा हो ॥४३॥ चैत्रमासमें बादल तथा बिजली न हो और आकाश निर्मल हो, इत्यादि बहुत प्रकारके मत भेद हैं । जैसा कि– चैत्र

चैत्रे खडहडि नहुकरे, मलयपवन नहु होय ।
तो जाणे तुं भड्डली, गब्भविणास न कोय ॥४५॥

अत्रोच्यते– स्याद्वाद एव प्रमाणं, विद्युतोऽभ्राणि वा न दोषाय; जलप्रवाहे तु दोष एव महावृष्टिरूपात्। चैत्रे हि मीने सूर्ये सति विद्युदभ्रं वा उक्तमेव, यतस्त्रैलोक्यदीपके–

मीनसङ्क्रान्ति काले च पौषणभोग्यदिने भवेत् ।
यत्र विद्युच्छुभो वात-स्ततो गर्भो ध्रुव भवेत् ॥४६॥

जलच्छटानां गर्भरूपादेव न दोषः । अथ यदि मेषे सूर्यः कदापि तत्राभ्रमप्युक्तं प्राक । तदेवश्रीहीरसूरयोऽप्याहुः-

चित्तस्य बीय तइया चउत्थि तह पञ्चमीसु अब्भाई ।
पुव्वोत्तरवायाओ महासुभिक्ख वियाणाहि ॥४७॥

स्थानांगे घनवृष्टिरुक्ता सा तु बिन्दुमात्रैव चैत्रे किञ्चित्

मास यदि निर्मल हो तो चार मास बहुत अच्छी वर्षा हो। जहां २ बादल हों वहां २ वर्षाकी हानि और मनुष्य धान्यकी आशा छोड दे ॥ ४४ ॥ चैत्रमें जलप्रवाह न चले और मलयाचल का पवन न चले, तो गर्भ का नाश न हो, ऐसा भडलीका वाक्य है ॥४५॥ यहां स्याद्वाद ही प्रमाण माना है– चैत्र मे विजली या बादल हों तो दोष नहीं, किंतु अधिक वर्षा हो कर जलप्रवाह चले तो दोष है। चैत्र मास मे मीन के सूर्य होने पर विजली और बादलका होना श्रेय माना जाता है। जैसे त्रैलोक्यदीपकमे कहा है कि– मीन सक्रान्तिमे रेवतीनक्षत्र के भोग्य दिनों मे जहां विजली और वायु हो वहां निश्चयसे गर्भ होता है ॥ ४६ ॥ गर्भ के कारण यदि जलके छींटा गिरे तो दोष नहीं। मेषके सूर्य मे किसी समय बादल होना पहले कहा उसको श्री हीरविजयसूरि भी कहते है– चैत्र मास की दूज, तीज, चौथ और पचमी के दिन बादल हो और पूर्व या उत्तर दिशा का पवन चले तो बड़ा सुकाल जानना ॥ ४७ ॥ स्थानागसूत्र मे जो वर्षा होना

पयोहितमित्युक्ते । यदुक्तम्—

घनावृष्टौ यदा माघ-श्चैत्रो निर्मलतां गतः ।
बहुधान्या तदा भूमि-र्वृष्टिश्चैव मनोरमा ॥४८॥

पुनरपि–

चित्तस्स कसिण पञ्चमी नहु वरसइ दुद्दिणं पुणो ।
फुणइ गहिऊण उच्चभूमिं ता वावह सयल धन्नाणि ॥४९॥

'चैत्रे च गौरिसक्रान्तौ' इत्यादिनाग्रे वृष्टिर्वक्ष्यते । तथापि–

चैत्रमासे च देवेशि! शुक्ले च पञ्चमीदिने ।
सप्तम्यां च त्रयोदश्यां यदा मेघः प्रवर्षति ॥५०॥
तारकापतनं चाब्द-गर्जनं विद्युता सह ।
वर्षाकालस्तदासन्नो नात्र कार्यविचारणा ॥५१॥
ततश्चैत्रे यथायोग्यं साभ्रता वा निरभ्रता ।
शुभाय चोभयं लोके विपरीत न सौख्यदम् ॥५२॥

तत एव वृष्टिनिषेधे दिननियमः–

पंचमिरोहिणी सत्तमिअद्दा, नवमिपुष्फ नइ पुनमचित्ता।

लिखा है वह विन्दुमात्र होना श्रेयस्कर कहा है । यदि माघ मासमें अधिक वर्षा हो और चैत्रमास निर्मल हो तो भूमि पर अच्छी वर्षा हो और धान्य बहुत हो ॥ ४८ ॥ फिर भी कहा है कि– चैत्रकी कृष्ण पंचमीके दिन वर्षा न हो मगर दुर्दिन हो तो अच्छी भूमि देखकर सब प्रकारके धान्य बोना चाहिये ॥ ४९ ॥ हे पार्वति! चैत्र मासकी शुक्ल पंचमी सप्तमी और त्रयोदशीके दिन वर्षा हो ॥ ५० ॥ तारा गिरे और विजलीके साथ मेघ गर्जना हो तब वर्षा काल समीप आया जानना इसमें संदेह नहीं ॥५१॥ चैत्र मासमें यथायोग्य वादल का होना या वादलका न होना ये दोनों लोक में शुभ माने हैं और उससे विपरीत हो तो सुखकारी नहीं होता ॥५२॥ इसलिये ही वर्षाके निषेधके नियम दिन बतलाते हैं– चैत्रमासमे पंचमीके दिन

चैत्रमास वरसंता दिट्ठा, तौ सीयालु गब्भ विणट्ठा ॥५३॥
आषाढं रोहिणी हन्ति रौद्र च श्रावणं हरेत् ।
पुष्यो भाद्रपदं हन्या-चित्राप्याश्विनमृ'छहत् ॥५४॥
साभ्रता तूक्ता—
चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां रोहिण्यां यदि दृश्यते ।
साभ्रं नभस्तदाऽऽदेश्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥५५॥
वैशाखे गर्जितं भूमिः सजला पवनो घनः ।
उष्णो ज्येष्ठो विशिष्टः स्यात् किमन्यैर्गर्भचेष्टितैः ॥५६॥
खं पञ्चवर्णं वैशाखे विद्युत्पाते खटत्कृतिः ।
तदातिवर्षा नभसि धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा ॥५७॥

अथाधिकमासः—

शाके बाणकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते,
शेषाग्नौ च मधुश्च माधवःशिवे ज्येष्ठस्तु खे चाष्टके ।

रोहिणी,सप्तमी के दिनआर्द्रा,नवमीके दिन पुष्य और पुर्णिमाके दिन चित्रा वर्षता हुआ देख पडे याने उस दिन वर्षाद हो तो गर्भका विनाश हो ॥५३॥ रोहिणी शुक्ल पचमी के दिन वर्षा हो तो आषाढ मास में वर्षा न हो, इसी तरह आर्द्रा श्रावणमासमें, पुष्य भाद्रपदमासमें और चित्रा आश्विनमासमें वर्षाका नाश कारक है ॥५४॥ चैत्रशुक्ल पचमीके दिन रोहिणी हो और उसी दिन आकाश बादल सहित देखनेमें आवे तो गर्भकी पूर्णता जाननी ॥ ५५ ॥ वैशाख में मेघ गर्जना हो, भूमि जलवाली हो, वर्षा हो, पवन चले और ज्येष्ठ मासमें अधिक गरमी पडे तो श्रेष्ठ है ॥ ५६ ॥ वैशाख मास में आकाश पंच वर्णवाला हो, बिजली गिरे, तो बहुत वर्षा हो और धान्यकी उत्पत्ति उत्तम हो ॥ ५७ ॥

वर्त्तमान शकसवत्के अकोंमें से ६२५ घटा दो, जो शेष बचे उसमे १६ का भाग दो, जो तीन शेष रहे तो चैत्रमास अधिक जानना, ग्यारह शेष

आषाढो नृपतौ नभश्च शरके भाद्रश्च विश्वांशके,
नेत्रे चाश्विनकोऽधिमास उदितो शेषेऽन्यके स्यान्नहि ॥५८॥
द्वात्रिंशत् समितैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा।
चतुर्नाडीसमेतैश्च पतत्येकोऽधिमासकः ॥५९॥
यस्मिन् मासे सिते पक्षे पञ्चम्यामेव भास्करः।
संक्रामत्यधिको मासः स स्यादागामि वत्सरे ॥६०॥
असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्,
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्त्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्,
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥६१॥

यथा संवत् १७३८ वर्षे पौषमासक्षयः, आश्विनचैत्रौ वृद्धौ। न चैवं द्वात्रिंशत् मासेभ्योऽर्वागपि मलमाससम्भवः। यदा एकस्मिन् वर्षे अमावास्यान्तमासद्वये संक्रान्तिरहितत्व स्यात्, तदा तत्रैक एव मलमासो यो द्वात्रिंशत् मासेभ्य उप

रहे तो वैशाख, शून्य या आठ शेष रहे तो ज्येष्ठमास, सोलह बचे तो आषाढ, पांच बचे तो श्रावण, तेरह बचे तो भाद्रपद और दो शेष रहे तो आश्विन अधिक मास जानना। किंतु इन से अन्य शेष रहे तो कोई मास अधिक नहीं होता ॥ ५८ ॥ ३२ मास, १६ दिन और ४ घडी बीतने पर अधिक मासका संभव होता है ॥ ५९ ॥ जिस महीनेकी शुक्ल पक्षकी पञ्चमीके दिवस सूर्यसंक्रांति हो वही महीना आगेके वर्षमें अधिक मास होगा ॥ ६० ॥जिस महीनेमें सूर्यसंक्रान्ति न हो वह अधिक मास कहा जाता है। और जिसमें दो संक्रांति हो वह क्षय मास कहलाता है। प्राय क्षयमास कार्त्तिकादि तीन महीनोंमें ही होता है और जब कभी क्षय मास होता है तो उस वर्षमें अधिकमास दो होते हैं। परन्तु यहां चान्द्र-माससे गणना करना चाहिये। अर्थात् अमावास्यासे अमावास्या पर्यन्त॥६१॥

रि जायते । अपरः संक्रान्तिरहितोऽपि न मलमासः, अका-
लाधिक्यात् कालाधिकस्यैव मलमासत्वात्, पूर्वादधिमासा-
दारभ्य द्वात्रिंशन्मासादर्वाग् यः पूर्वोऽसंक्रान्तिमासः स शु-
द्धोऽन्यस्तु मलमासः ।

तस्य फलम्– दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः ।
भाद्रपद्वितये धान्य-निष्पत्तिः स्याद् यथेहितम् ॥६२॥
आश्विनद्वितये भूम्यां सैन्यचौररुजां भयम् ।
सुभिक्षं केचनाप्याहु–र्दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ॥६३॥
सुभिक्षं कार्त्तिकयुग्मे क्वचिद् दुःखं रणान्नृणाम् ।
मार्गशीर्षयुगे देशे जायते परम सुखम् ॥६४॥
पौषयुग्मे सुभिक्ष च मङ्गल नृपतेर्जयः ।
राजदण्डपरो लोको लोके मतिविपर्ययः ॥६५॥
माघद्वये भुवि क्षेमं राज्यानां च भय तथा ।
सुभिक्ष फाल्गुनयुगे क्षत्रियानां शिव भवेत् ॥६६॥
चैत्रद्वये शुभं धान्ये वैश्यानामुदयो महान् ।

श्रावण दो हो तो दुष्काल, पृथ्वीका नाश और प्रजाका क्षय हो । दो भाद्रपद हो तो इच्छित धान्यकी प्राप्ति हो ॥ ६२ ॥ दो आश्विन हो तो सैन्य, चोर और रोगका भय हो । कोई कहते हैं कि सुभिक्ष हो परन्तु दक्षिण दिशामें दुर्भिक्ष हो ॥ ६३ ॥ दो कार्त्तिक हो तो सुभिक्ष हो और युद्धसे मनुष्योंको दुःख हो । दो मार्गशीर्ष हो तो परम सुख हो ॥६४॥ पोष मास दो हो तो सुभिक्ष मंगल और राजाओंका जय हो । तथा लोकमें राजदंड हो और मति विपरीत हो ॥६५॥ माघ मास दो हो तो पृथ्वी पर मंगल हो और राजाओंका भय हो । दो फाल्गुन हो तो सुभिक्ष हो और क्षत्रियों को कुशल हो ॥६६॥ चैत्र मास दो हो तो शुभ है, धान्य प्राप्ति हो और वैश्योंका अच्छा उदय हो । दो वैशाख हो तो धान्य की

वैशाखयुग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुभं क्वचित् ॥६७॥
ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।
द्वयाषाढे यथाकिञ्चित् खण्डवृष्टिः क्वचित् पुनः ॥६८॥
मासद्वादशके वृद्धेरेव फलमुदीरितम्।
चैत्रादि सप्तके वृद्धि रित्येतत् प्रायिक मतम् ॥६९॥
क्वचिद् द्विकार्त्तिके दुःख द्विमाघेऽप्यशुभमतम्।
द्विफाल्गुने वह्निभय-मशुभ माधवद्वये ॥७०॥
उदये कृष्णतृतीया ततश्चतुर्थीह संक्रमो यत्र।
तस्मादधिको मासश्चतुर्दशे मासि सम्भवति ॥७१॥

तिथिक्षयवृद्धिफलम्—

एकत्र पक्षे द्वितिथिप्रपाते, महर्घमन्नं जनमध्यवैरम्।
तत्पक्षनाशे मरणं नृपाणां,मासक्षये म्लेच्छवती वसुन्धरा ॥७२॥
त्रयोदशदिनैः पक्षो भवेद् वर्षाष्टकान्तरे।

निष्पत्ति हो और क्वचित् अशुभ हो ॥ ६७ ॥ ज्येष्ठ मास दो हो तो राजाका विनाश और धान्य की प्राप्ति उत्तम हो। दो आषाढ हो तो कुछ व्यथा और कहीं खडवृष्टि हों ॥६८॥ इसी तरह अधिक बारह मासका फल कहा, परतु चैत्रादि सात मास अधिक होते हैं ऐसा बहुत लोगोंका मत है ॥ ६९ ॥ क्वचित्— दो कार्तिक हो तो दुःख, दो माघ मास हो तो अशुभ, दो फाल्गुन हो तो अग्निका भय और दो वैशाख हो तो अशुभ ऐसा भी किसीका मत है ॥ ७० ॥ जिस दिन उदयमें कृष्ण तृतीया हो और पीछे चतुर्थी हो उस दिन यदि सक्रान्ति हो तो उस से चौदहवें मास अधिक मासकी संभावना होती है ॥७१॥ इति अधिक मासफल।

यदि एक ही पक्षमें दो तिथिका क्षय हो तो अनाज महँगे हो और लोकमें वैर भाव हों। पक्षका क्षय हो तो राजा का मरण हो और महीना का क्षय हो तो पृथ्वी पर म्लेच्छोंका उपद्रव हों ॥ ७२ ॥ आठ वर्ष के

तदा नगरभङ्गः स्या-च्छत्रभङ्गो महर्घता ॥७३॥
मतान्तरे—अनेकयुगसाहस्रयाद् दैवयोगात् प्रजायते ।
त्रयोदशदिनैः पक्ष-स्तदा संहरते जगत् ॥७४॥
यद्यन्धकारपक्षस्य त्रुटिर्मासचतुष्टये ।
निरन्तर तदा भूम्यां सुभिक्ष विपुलं जलम् ॥७५॥
सम्पते वरिसकाले पढमे पक्खे वि जइ पडेइ ।
तिहि तह देसभङ्ग-रोरव हवइ बहुलोगसंहारो ॥७६॥
पञ्चमी श्रावणे हीना सप्तमी भाद्रपादके ।
आश्विने नवमी नेष्टा पौर्णिमासी च कार्त्तिके ॥७७॥
भाद्रपदे पौषयुगे सितपक्षे पतति या तिथिस्तस्याः ।
द्विगुणादिनैर्नृपमरणं यदि वा दुर्भिक्षमतिरौद्रम् ॥७८॥
यस्मिन् मासे शुक्लपक्षे तृतीया वा चतुर्थिका ।
पतेत्तदा मुद्गघृतमहर्घत्व भवेद् भुवि ॥७९॥

अन्तर में तेरह दिनका पक्ष होता है इसमें नगर का भग, छत्रभग और धान्यकी महर्घता हो ॥ ७३ ॥ मतान्तरसे— अनेक हजारों युग बीत जाने पर दैवयोगसे तेरह दिनका पक्ष होता है, इसमें जगत् का नाश होता है ॥ ७४ ॥ यदि चौमासेके चार मासमें कृष्णपक्षका क्षय हो तो भूमि पर सर्वदा बहुत वर्षा हो और सुभिक्ष हो ॥ ७५ ॥ यदि वर्षा कालमें प्रथम पक्ष याने शुक्लपक्षमें तिथिका क्षय हो तो देशका नाश, घोर उपद्रव और मनुष्योंका सहार हो ॥ ७६ ॥ श्रवणमें पचमी, भादोंमे सप्तमी, आश्विनमें नवमी और कार्त्तिकमें पूर्णिमाका क्षय हो तो अनिष्ट है ॥ ७७ ॥ भाद्रपद, पौष और माघ मासमें शुक्लपक्षकी तिथिका क्षय हो तो उससे दूगुने दिनों में राजा का मरण अथवा महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥ ७८ ॥ जिस महीने में शुक्लपक्षकी तृतीया या चतुर्थीका क्षय हो तो उस महीनेमें पृथ्वी पर मूग और घी महँगे हों ॥७९॥ भाद्रपद पौष और माघ मासमें उपरोक्त तिथिका

भाद्रे पौषे तथा माघे विशेषेण महर्घता ।
यन्मासे दशमीच्छेद-स्तदा घृतमहर्घता ॥८०॥
श्वेतपक्षे प्रतिपदा पञ्चमी वा चतुर्दशी ।
वर्द्धिता चेत् सुभिक्षाय छिन्ना दुर्भिक्षकारिका ॥ ८१ ॥
चतुर्दशीत आषाढी हीना वर्षे यदा भवेत् ।
भावाश्रयेण तद्धान्य महर्घं च समे समः ॥८२॥
आषाढी त्वधिका तस्या समर्घं तु तदा मतम् ।
संवत्सरस्य वर्त्तिन्याः शून्यमाने तु निष्कणम् ॥ ८३ ॥
चैत्राद् भाद्रपदं याव-च्छुक्लपक्षे यदा त्रुटिः ।
तदा क्वचिच्चोपपत्ति-रल्पधान्योदयः क्वचित् ॥ ८४ ॥
आर्द्रा ज्येष्ठे नष्टचन्द्रे प्रथमायां पुनर्वसुः ।
द्वितीया पुष्यसयुक्ता जलं धान्यं तृण न च ॥ ८५ ॥
कृष्णपक्षे श्रावणस्यैकादश्यां रोहिणी च भम् ।
यावद् घटीप्रमाणं स्याद् धान्ये तावद् विशोपकाः ॥ ८६ ॥
आदित्याद वारगणनात् प्रतिपत्प्रमुखा तिथिः ।

क्षय हो तो विशेष करके अन्नादिककी तेजी हो । जिस मासमें दशमी का क्षय हो तो घी महँगा हो ॥८०॥ शुक्लपक्षमे प्रतिपदा, पचमी या चतुर्दशी बढे तो सुभिक्ष और घटे तो दुर्भिक्ष करे ॥ ८१ ॥ जिस वर्षमे यदि चतुर्दशीसे आषाढ पूर्णिमा हीन हो तो अन्न महँगा हो और सम हो तो समान भाव रहे ॥ ८२ ॥ यदि अधिक हो तो अन्न सस्ते हों और क्षय हो तो धान्य प्राप्ति न हो ॥८३॥ यदि चैत्रमाससे भाद्रपद तक शुक्लपक्षमे तिथि का क्षय हो तो कचित् ही थोड़ी धान्य प्राप्ति हो ॥ ८४ ॥

ज्येष्ठ मासकी अमावस के दिन आर्द्रा, पडवा के दिन पुनर्वसु और द्वितीयाके दिन पुष्य नक्षत्र हो तो तृण, धान्य और जलका अभाव हो ॥ ८५ ॥ श्रावण मासकी कृष्ण एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी हो, उतने ही प्रमाण धान्य का विशोपका (विश्वा) जानना ॥८६॥

आश्विन्यादि च नक्षत्रं संमील्य द्विगुणीकृतम् ॥ ८७ ॥
त्रिभिर्भागैर्द्वय शेष तदा सुभिक्षमादिशेत् ।
शून्ये भवति दुर्भिक्ष-मेकशेषे शुभाशुभम् ॥ ८८ ॥
आषाढमासे प्रथमे च पक्षे, दृष्टे निरभ्रे रविमण्डले च ।
नैवाशनिर्नैव भवेच्च वर्षा, मासद्वयं वर्षति वासवस्तु ॥ ८९ ॥
षष्ठी यदर्कवारेण यन्मासे यत्र पक्षके ।
अन्नं घृतं महर्घं स्याद् न्यूने न्यून तिथौ ततः ॥ ९० ॥
आश्विने च सिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।
गर्जितं विद्युतं कुर्यात् तद्गोधूमविनाशकम् ॥ ९१ ॥
ज्येष्ठे मूलं पूर्णिमायां शुभं वर्षं हिताय तत् ।
मध्यमं प्रतिपद्योगे द्वितीयायां तु दुःखकृत् ॥ ९२ ॥
यदुक्तम्-ज्येष्ठे मूलं द्वितीयायां सर्वबीजविनाशकृत् ।
अवृष्ट्या चातिवृष्ट्या वा इत्येव मुनिरब्रवीत् ॥ ९३ ॥

रविवारसे वार प्रतिपदा आदि गत तिथि और अश्विनी आदि गत नक्षत्र, इनको जोड़कर दूना करो ॥ ८७ ॥ पीछे इसमें तीन का भाग दो, यदि दो शेष बचे तो सुभिक्ष, शून्य शेष बचे तो दुर्भिक्ष, और एक शेष बचे तो शुभाशुभ (समान) जानना ॥ ८८ ॥ आषाढ मासके शुक्लपक्ष में रवि मण्डल यदि बादल रहित हो तथा गाज बीज या वर्षा न हो तो आगे दो महीने तक वर्षा हो ॥८९॥ जिस महीनेमें जिस पक्षमें षष्ठी यदि रविवार युक्त हो तो घी और अन्न महँगे हों, तिथि थोड़ी हो तो थोड़ा और अधिक हो तो अधिक तेज हो ॥९०॥ आश्विन मासके शुक्लपक्ष में दशमी आदि तीन दिन गर्जना और बिजली हो तो गेहूँ का नाश हो ॥ ९१ ॥ ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमाके दिन मूल नक्षत्र हो तो वर्ष भर शुभ करे, प्रतिपदा के दिन हो तो मध्यम और द्वितीया के दिन हो तो दुःखकारक होता है ॥ ९२ ॥ कहा है कि- ज्येष्ठ मासकी दूज के दिन मूलनक्षत्र हो तो

अत्रेदं विचार्यं मासः शुक्लादिः कृष्णादिर्वा, यदि शुक्लादिस्तदा-

यदि भवति कदाचित् कार्त्तिके नष्टचन्द्रे,
शनिकुजरविवारे ज्येष्ठमासेऽपि दर्शे ।
द्विगुणगुणवितर्काद् रत्नतुल्य च धान्यम्,
बुधगुरुभृगुचन्द्रे मृत्तिकातुल्यमन्नम् ॥९४॥

ग्रन्थान्तरे—

यदि भवति कदाचित् कार्त्तिके नष्टचन्द्रे,
शनिकुजरविवारे स्वातिनक्षत्रयोगः ।
इहभवति तथायु-ष्माश्च योगस्तृतीयः,
क्षयविलयविपत्तिः छत्रभङ्गस्त्रिपक्षे ॥९५॥

लोकेऽपि—काती वदि अमावसी, रवि शनि मङ्गल होय।
स्वाति आयुष्मान् जो मिले, दुरभिख छत्रभंग जोय ।९६

श्रावणे प्रथमे पक्षे यद्यश्विन्यां जलं भवेत् ।

सब प्रकारके बीजोंका नाश करे, वर्षा न हो या अतिवृष्टि हो एसा मुनियों ने कहा है ॥ ९३ ॥ यहा शुक्लादि या कृष्णादि मास का विचार करना, यदि शुक्लादि हो तो— कार्त्तिक मासकी अमावस के दिन शनि मगल या रविवार हो ऐसे ज्येष्ठ मासकी अमावस के दिवस भी शन्यादि हों तो रत्नके तुल्य धान्य विके अर्थात् बहुत महँगे हों। यदि बुध, गुरु, शुक्र और चन्द्र वार हो तो मृत्तिका तुल्य अर्थात् अत्यन्त सस्ता धान्य विके ॥९४॥ अन्य ग्रन्थमें— यदि कार्त्तिककी अमावस शनि, मगल या रविवार को हो तथा स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग भी हो तो क्षय, प्रलय, विपत्ति हो और तीन पक्षमें छत्रभंग हो ॥९५॥ लोक भाषामें भी कहा है कि— कार्त्तिक कृष्ण अमावास्या रवि, शनि या मगलवार को हो तथा साथ में स्वातिनक्षत्र और आयुष्मान् जोग भी हो तो दुर्भिक्ष तथा छत्रभग हो ॥९६॥ श्रावणके प्रथम पक्षमें यदि अश्विनी नक्षत्रके दिन जल बरसे तो-दुर्भिक्षकारी

तदातीव सुभिक्ष स्यादपयोगेषु च सत्स्वपि ॥६७॥

शुक्लस्य प्रथमत्वेऽश्विन्या असम्भव एव । 'आषाढां धुरि अष्टमी' इत्यग्रे वक्ष्यमाणामपि न मिलति । कृष्णाष्टम्या लक्षणे 'धुरि' इति शब्दवाच्यस्यादरभावात्। अन्यदपि आषाढकृष्णपक्षस्य तिथिवाराभ्रादिसर्वं चतुर्मासमध्ये वीक्षणीयं स्यात् । ज्येष्ठामावासीचिह्न चाषाढपूर्णिमायाः प्राक् षोडशदिने च ।

एतेन ज्योतिःशास्त्रोक्तं मासश्चैत्रः सितादिति ।
कथित तत्प्रमाणं स्यान्मेघमालाविदां पुनः ॥६८॥

यद्यपि लोके–

धुरि अजुआलो पक्खडो, पिछै अंधारो होइ ।
इणपरि जोइसगणि सदा, मकरिस सांसो कोइ ॥६९॥

तथा मेघमालायामपि—

पौषस्य कृष्णसप्तम्यां यद्यभ्रैर्वेष्टितं नभः ।

दुष्ट योगों के होने पर भी अत्यन्त सुभिक्ष होता है ॥ ६७ ॥ यहा पहला शुक्लपक्ष में अश्विनी नक्षत्र का असभव होता है । आषाढ कृष्ण अष्टमी का फल जो आगे कहेंगे वह भी नहीं मिलता । कृष्णाष्टमी लक्षण में धुरि शब्द है वह शब्द वाचक है । दूसरी जगह भी आषाढ कृष्णपक्ष से चतुर्मास माना जाता है । तिथि वार और बादल आदि सब चातुर्मास में देखना चाहिये । ज्येष्ठ अमावस आषाढ पूर्णिमा के पहले सोलह दिन पर माना है । यही ज्योतिश्शास्त्रों में मास की गणना चैत्र शुक्लपक्ष से माना है और यही प्रमाण मेघमाला के जानकार भी कहते हैं ॥६८॥ लोकभाषा में भी कहा है कि पहला शुक्लपक्ष और पीछे कृष्णपक्ष होता है, इसमें ज्योतिषियोंको शका नहीं करना चाहिये ॥६९॥ मेघमालामें भी कहा है कि पौष मास की कृष्ण सप्तमी के दिन आकाश

अष्टमासवशाद् युक्तो दिव्यगर्भः प्रजायते ॥१००॥
श्रावणे शुक्लपक्षे स्यात् स्वातीऋक्षेण सप्तमी ।
तत्र वर्षति पर्जन्यः सत्यमेतद् वरानने ! ॥१०१॥

अत्र शुक्लादिमासपक्ष एव गर्भपाकस्तत्फलं चोक्तम्, तथा कृष्णपक्षादिमासमतेऽपि । अष्टमासवशादिति कथनादेव तन्मतं दृढीकृतं पौषकृष्णपक्षादित्वेन श्रावणशुक्लेऽष्टमासीभावात् । अत एव चैत्रस्यान्ते कृष्णपक्षमाश्रित्य चैत्रोऽयं बहुरूप इत्युक्ति-र्ज्योतिर्मतेन, तदा कृष्णपक्षादिमतेन वैशाखात्, तत्र पञ्चरूपताया युक्तत्वात्, तेनैव कार्त्तिकामावास्यां वीरनिर्वाणात् । सिद्धान्ते कृष्णपक्षादिर्मासः । पूर्णो मासो यस्यां सा पौर्णमासीति सत्योक्तिः । अत्रापि सम्मतिर्यथा-
पौषे मूलाद् भरण्यन्तं चन्द्रचारेण साभ्रखे ।

बादलों से घेरे हुए हो तो आठ मासका सुंदर गर्भ होता है ॥ १०० ॥
हे श्रेष्ठ मुखवाली ! श्रावण मासका शुक्ल पक्षमें सप्तमीके दिन स्वाति नक्षत्र हो तो अवश्य वर्षा होती है ॥ १०१ ॥

यहां जैसे शुक्लादि मास और पक्ष में गर्भ पाक का फल कहा वैसे कृष्णादि मासमें भी यही मत (अभिप्राय) समझना । आठ मास ऐसा कहा है जिससे पौष कृष्ण पक्षसे श्रावण शुक्ल पक्ष तक आठ मास हो जानेसे यही मत निश्चय किया । इसलिये चैत्रमास के अंत में कृष्ण पक्ष आश्री 'चैत्रोऽयं बहु रूप' ऐसी युक्ति ज्योतिष मतसे है, क्योंकि ज्योतिष सिद्धान्तों में शुक्लादि मास माना है और कृष्ण पक्षादिके मतसे वैशाख माससे वर्षा के गर्भ पंच रूप (वायु, गर्जना, विद्युत आदि) समझना । कार्त्तिक अमावास्याके दिन श्रीमहावीरजिनवरका निर्वाण होनेसे सिद्धान्तमें कृष्णादि मास की प्रवृत्ति है जिस समय महीना पूर्ण हो उसको पूर्णमासी कहते हे यह सत्य उक्ति है । पौष मास में मूलसे भरणी तक चन्द्रनक्षत्रों में आकाश-

आर्द्रादो च विशाखान्तं रविचारेण वर्षति ॥१०२॥
न चैव शुक्लपक्षाद्यैः पौषेऽपि मूलसङ्गतिः ।
तया गर्भोदयो ज्ञेय इति वाच्य वचस्विना ॥१०३॥
मूलादि गर्भहेतुः स्याद् नक्षत्र धन्वगे रवौ ।
सम्बन्धाद् धनुषः पौषे कृष्णादौ चापगो रविः ॥१०४॥

उक्त मेघमालायाम्—

धन्वराशौ स्थिते सूर्ये मूलाद्या गर्भधारणा ।
गर्भोदयाद् ध्रुव वृष्टिः पञ्चोनद्विशतिदिनैः ॥१०५॥
दिनसंख्यानुसाराच्च वर्षत्यत्र न संशयः ।
मूलाद् वर्षति चार्द्राभं पूषायाश्च पुनर्वसुः ॥१०६॥
उषाया गर्भतः पुष्य श्रावणात् सर्पदैवतम् ।
धनिष्ठाया मघावृष्टि-र्वारुणात् पूर्वफाल्गुनी ॥१०७॥

बादलोंसे घेरा हुआ हो याने बादल सहित हो तो आर्द्रासे विशाखा तक सूर्यनक्षत्रों मे वर्षा हो ॥१०२॥ यहा शुक्ल या कृष्ण पक्षका विचार नहीं करना, पौष मासमें जबसे मूल नक्षत्र पर सूर्य हो तबसे गर्भकी वृद्धि समझना ऐसे विद्वान् लोग कहते हे ॥१०३॥ धनुराशि पर सूर्य आने से मूलादि नक्षत्र गर्भके हेतु होते हैं । पौष माममे धनुराशि का सबन्ध से कृष्णादिमें धनु सक्रान्ति आती है ॥ १०४ ॥

धनुराशि पर सूर्य आनसे मूल आदि नक्षत्र गर्भको धारण करनेवाले होते है । गर्भका उदय होनेसे १९५ दिनोंमे निश्चयसे वर्षा होती है ॥१०५॥ दिन संख्या तुषार (हीम) गिरने लगे वहा से गिनना, उपरोक्त दिन पूर्ण अवश्य वर्षा होती है इसमे संशय नहा । मूल नक्षत्रका गर्भमे आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होती है, ऐसे पूर्वाषाढाका गर्भमे पुनर्वसुमे ॥१०६॥ उत्तराषाढा का गर्भसे पुष्यमे श्रवणका गर्भमे आश्लेषा मे, धनिष्ठाका गर्भ से मघामें, शतभिषाका गर्भमे पूर्वाफाल्गुनी मे वर्षा होती है ॥१०७॥ पूर्वाभाद्रपदका

पूर्वभद्रपदागर्भाद् वृष्टिरार्यमदैवते ।
उभायां हस्तवर्षा स्याद् रेवत्यां त्वाष्ट्रवर्षणम् ॥१०८॥
आश्विन्यां स्वातिवर्षा स्याद् भरण्यां तु द्विदैवतम् ।
पूर्णगर्भे भवेद् वृष्टिः सर्वलोकाः सुखावहाः ॥१०९॥
एवं च गर्भपूर्णत्व कृष्णपक्षक्रमाद् भवेत् ।
पौषादिज्येष्ठमासान्ता षण्मास्यर्द्धं शुचेः पुनः ॥११०॥

अत्रोदाहरणं—सवत् १७३७ वर्षे पौषकृष्णचतुर्थ्यां धनुष्यर्कः ५४, ततः संवत् १७३८ वर्षे कृष्णपक्षादिके आषाढे अमावास्यां रौद्रे रविः १४ । इति गर्भसम्पूर्णता ।

वृष्टौ चार्द्रायां एव मुख्यत्वं तथा चोक्त प्राक् 'मेषसंक्रान्तिकालात्तु' इत्यादि । लोकेऽप्याह—

मिगसर वाय न वाइआ अद्द न वूठा मेह ।
तो जाणेवो भड्डली, वरसह आयो वेह ॥१११॥

ग्रन्थान्तरेऽपि—

मेषराशिगते सूर्ये अश्विनीचन्द्रसंयुता ।
यदा प्रवर्षति देवि ! मूलगर्भो विनश्यति ॥११२॥
भरण्याः सर्पदेवान्तं क्रमेण वर्षणे प्रिये ! ।

गर्भसे उत्तराफाल्गुनिमे, उत्तराभाद्रपदाका गर्भसे हस्तमें, रेवती का गर्भ से चित्रामें वर्षा होती है ॥ १०८ ॥ अश्विनीका गर्भमे स्वातिमें और भरणी का गर्भसे विशाखामे गर्भकी पूर्णता से वर्षा होती है, और सब लोग सुखी होते हैं ॥१०९॥ इसी तरह कृष्ण पक्षादिका क्रमसे पौषसे ज्येष्ठ तक छ महीने और आधा आषाढ मासमें गर्भकी पूर्णता होती है ॥ ११० ॥

मार्गशिरमासमें वायु न चले और आर्द्रा म वर्षा न हो तो वर्ष अच्छा न हो ॥१११॥ मेषराशि पर सूर्य हो तब चद्रमा का अश्विनी नक्षत्र में यदि वर्षा हो तो मूलनक्षत्रके गर्भका विनाश होता है ॥ ११२ ॥ इसी तरह भरणी

पूर्वाषाढादि पौष्णान्तं गर्भश्चैव विनश्यति ॥११३॥
पञ्चमे पञ्चमे स्थाने गर्भः पतति चाव्ययात् ।
आर्द्राप्रवर्षणं देवि ! गर्जने वा कथञ्चन ॥११४॥
सर्वे गर्भाश्च विज्ञेया तत्रैव वृष्टिकारकाः ।
आर्द्रादिपञ्चके दृष्टे छिद्रं वर्षति माधवः ॥११५॥

न चैवं गर्भनियमः स्यान्मासाष्टकनिमित्तेन चतुष्टयमभीष्टमिति मेघमालावचनात्, निमित्तरूपगर्भसंख्यायां न्यूनाधिकत्वस्यापि दर्शनात् । यदाहुः श्रीहीरविजयसूरयः स्वमेघमालायाम्—

कत्तिय बारसि गब्भा छाया, आसाढां धुरि वरसे माया ।
मिगसिर पञ्चमि मेघाडंबर, तो वरसे सघलो संवच्छर ।११६।

इति कृतं प्रसङ्गेन प्रकृतमनुस्रियते—

पूर्वात्रयं रोहिणी च हस्तश्च प्रतिपद्दिने ।
पक्षादौ वारुणं नेष्टं सर्वधान्यमहर्घकृत् ॥११७॥
आग्नेय पौष्णयुगलं मूलश्चेत् प्रतिपद्दिने ।

नक्षत्रसे आश्लेषा तक नक्षत्रोंमें किसी भी दिन वर्षा हो तो क्रमसे पूर्वाषाढा से रेवती नक्षत्र तक के गर्भका विनाश होता है ॥ ११३ ॥ पाचवें २ मास में स्थिरगर्भ का पात हो जाता है । कभी आर्द्रा में वर्षा हो या गर्जना हो तो गर्भपात होता है ॥ ११४ ॥ जहा गर्भ हो वहा सब वृष्टि करनेवाले जानना । आर्द्रादि पाच नक्षत्रोंमें वर्षा बरसती है ॥ ११५ ॥ कार्त्तिकमासकी द्वादशी के दिन गर्भ आच्छादित हो तो आषाढ में निश्चयसे वर्षा हो और मार्गशीर्ष पचमीके दिन भी वर्षाका आडम्बर हो तो सम्पूर्ण वर्षमें वर्षा हो ॥ ११६ ॥

पक्षकी आदिमें प्रतिपदा के दिन यदि तीनों पूर्वा, रोहिणी, हस्त और शतभिषा ये नक्षत्र हों तो सब प्रकारके धान्य तेज हों ॥ ११७ ॥ कृत्तिका, रेवती अश्विनी और मूल ये नक्षत्र हों तो समान भाव रहे और बाकी के

तदा धान्ये समार्घत्व शेषऋक्षे समर्घता ॥११८॥

अथ दिनविचार —

घावन्ने दुब्भिक्खं तेवन्ने होइ मज्झिमं कालं।
चउवन्ने समभाव पञ्चावन्ने य सुभिक्खं ॥११९॥
द्विपञ्चशद् युते वर्षे दिवसानां शतत्रये।
सुभिक्षं केचिदप्याहुः पर देशेषु विग्रहः ॥१२०॥
बाणेषुत्रिदिनैः कालो मध्यमोऽद्रिशरत्रिभिः।
वर्षे खषटत्रिभिः श्रेष्ठ सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥१२१॥

अथ रोहिणीवृष्टौ दिनमानवर्षणस्य—

रविणा भुज्यमानायां रोहिण्यां मेघवर्षणे।
द्वासप्ततिदिनान्यब्द-वृष्टिर्नाद्यदिने तदा ॥१२२॥
द्वितोयदिवसे वृष्टा-वष्टपञ्चाशता दिनैः।
वृष्टिरोधस्तृतीयेऽह्नि चत्वारिंशन्नवोत्तराः ॥१२३॥

द्विचत्वारिंशत् तुर्येऽह्नि वृष्टौ वृष्टिर्न जायते ।
पञ्चमे त्रिंशदेवात्र नवाहर्महिता मता ॥१२४॥
चतुस्त्रिंशद्दिनानां हि षष्ठेऽह्नि नहि वर्षणम् ।
एकत्रिंशत् सप्तमेऽह्नि नवमे चाष्टविंशतिः ॥१२५॥
दशमेऽह्नि चतुर्विंश-त्येकादशदिनेऽम्बुदे ।
दिनानामेकविंशत्या षोडशद्वादशेऽह्नि ॥१२६॥
त्रयोदशदिने वृष्टौ दिनद्वादशके पुनः ।
वृष्टिरोधः पयोदस्य ततो मेघमहोदयः ॥१२७॥

मतान्तरे—

पहिले चरण बहोत्तर दीह, बीजे बासट्ठि न टले लीह ।
तीजे बावन्न चोथ बयाल, रोहिणी खेंच करे तिणकाल ॥१२८

अथ वृष्टिसर्वोघदिनसंख्या—

पञ्चाशद्दिवसा वृष्टि-र्वर्षदीपोत्सवे रवौ ।

हो तो ३६ दिन वर्षा न हो ॥ १२४॥ छट्ठे दिन वर्षा हो तो ३४ दिन वर्षा न हो । सातवे दिन वर्षा हो तो ३१ दिन वर्षा न हो । नववे दिन वर्षा हो तो २८ दिन वर्षा न हो ॥ १२५ ॥ दशवें दिन वर्षा हो तो २४ दिन वर्षा न हो । ग्यारहवे दिन वर्षा हो तो २१ दिन बाद वर्षा हो । बारहवें दिन वर्षा हो तो १६ दिन बाद वर्षा हो ॥ १२६ ॥ तेरहवें दिन वर्षा हो तो १२ दिन तक वर्षा न हो, बादमें वर्षा हो ॥ १२७॥ प्रकारान्तरसे—रोहिणीके प्रथम चरण पर सूर्य रहने पर वर्षा हो तो ७२ दिन नहीं बरसे बाद वर्षा बरसे । दूसरे चरणमें वर्षा हो तो ६२ दिन बाद वर्षा हो । तीसरे चरणमें वर्षा हो तो ५२ दिन और चौथे चरणमें वर्षा हो तो ४२ दिन तक वर्षा न हो बाद वर्षा बरसे ॥ १२८॥

यदि दीपमालिका (दीवाली) के दिन रविवार हो तो उस वर्षमें ५० दिन वर्षा हो । सोमवार हो तो १०० दिन, मंगलवार हो तो ४० दिन

सोमे दिनशतं वृष्टिश्चत्वारिंशच्च मङ्गले ॥१२९॥
बुधे षष्टिदिनैर्वृष्टि-रशीति दिवसा गुरौ।
शुक्रे दिनानां नवतिः शनौ विंशतिरेव च ॥१३०॥

तिथिवारमध्ये रोहिणीदिनफलम्—

पक्षान्तः प्रतिपद्दिने भवति चेद् ब्राह्मो तदा चिन्तितः,
कालस्तत्परतः सुभिक्षमशनं स्तोकं तृतीयादिने।
धान्यं भूरितरं तुरीयदिवसे किञ्चिन्न किञ्चित् पुनः,
पञ्चम्यां गगनेऽतिवार्दलघन-च्छायाथ षष्ठीदिने ॥१३१॥
सप्तम्यां जलशोष उत्तरदिशि स्यादन्ननाशोऽष्टमी-
तिथ्यां कष्टमतीव वाणिजकुले भूम्यां नवम्यां भवेत्।
सौभिक्ष्यं दशमीदिने जनभयं धान्यं महर्घं तथै-
कादश्यां वणिजां भयं परिभवः स्याद् द्वादशीसङ्गमे।१३२।
वृष्टिः स्वल्परसा त्रयोदशदिने वर्षा पुनर्भूयसी,
नूनं भूततिथौ जलं नभसि न स्यात् पूर्णिमादर्शयोः।

वर्षा हो ॥१२९॥ बुधवार हो तो ६० दिन, गुरुवार हो तो ८० दिन, शुक्रवार हो तो ९० दिन और शनिवार हो तो २० दिन वर्षा बरसे ॥१३०॥

पक्षके अन्तमें एकमके दिन रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे तो दुष्काल, दूजके दिन रोहिणी हो तो सुभिक्ष, तीजके दिन हो तो थोड़ी अन्न प्राप्ति, चोथके दिन हो तो अधिक अन्न प्राप्ति, पचमीके दिन हो तो कुछ भी अन्न न हो या थोडासा हो, छठके दिन हो तो आकाश मेघाडवरसे आच्छादित रहे ॥ १३१ ॥ सप्तमीके दिन रोहिणी हो तो उत्तर दिशा में जल सूख जाय, अष्टमीके दिन हो तो अन्नका नाश हो, नवमीके दिन रोहिणी हो तो भूमि पर वणिक् कुलको अधिक कष्ट पडे। दशमीके दिन हो तो सुकाल, एकादशीके दिन हो तो धान्य महँगे और मनुष्योंको भय हो, द्वादशीके दिन हो तो वैश्योंको भय और परिभव हो, तेरसके दिन हो तो थोड़ा रसवाली

दुर्भिक्षं च सुभिक्षमग्निदहनं रोगाः शिशूनां मृति-
र्वृष्टिः काल इति क्रमात् प्रथमतो वृष्टे घनेऽर्कादिषु ।१३३।
ज्येष्ठमासे तथाषाढे गाढे वृष्टे घनाघने ।
फलमेतदुपाख्यायि मेघोदयनिवेदिभिः ॥१३४॥

प्रथमवृष्टिदिनफलम् —

चैत्रस्य कृष्णपञ्चम्या आरभ्य दिवसा नव ।
खे नैर्मल्यं तदार्द्रादि-नवके विपुलं जलम् ॥१३५॥
अत्र पक्षे विनिर्णीयः स्वदेशव्यवहारतः ।
मरौ फाल्गुनपूर्णायाः परश्चैत्रः सितेतरः ॥१३६॥
गूर्जरत्रादिषु पुनः स्वपूर्णायाः परोऽसितः ।
सर्वमासफलं चैवं यथायोग्यं विचार्यते ॥१३७॥
सितपक्षादिके चैत्रे मीने सूर्यसमागमे ।

वर्षा हो, चौदशके दिन हो तो बहुत वर्षा, पूर्णिमा और अमावस के दिन रोहिणी हो तो आकाशमें जल प्राप्ति न हो। सूर्यादि वारों में रोहिणी पर सूर्य आवे तो क्रमसे दुष्काल, सुकाल, अग्निदाह, रोग, बालकों की मृत्यु, वर्षा और दुष्काल ये फल हों ॥१३३॥ ज्येष्ठ तथा आषाढमें रोहिणी नक्षत्र पर जिस दिन सूर्य आवे उस दिन यदि घनघोर वृष्टि हो जाय तो पूर्वोक्त समग्र फल मेघमहोदयको जाननेवालेने कहा है ॥ १३४ ॥

चैत्रमासमें कृष्ण पचमीसे नव दिन तक आकाश निर्मल हो तो आर्द्रा आदि नव नक्षत्रोंमें वर्षा अच्छी हो ॥१३५॥ यहा अपने अपने देशके व्यवहार से पक्षका निर्णय करना— मारवाड आदि देशोंमें फाल्गुन पूर्णिमा के पीछे चैत्र कृष्णपक्ष मानते हैं ॥ १३६ ॥ और गुजरात आदि देशों में अपने मास की पूर्णिमा के पीछे कृष्णपक्ष माना जाता है, इसी तरह यथायोग्य व्यवहारके अनुकूल समस्त मासका फल विचारना ॥१३७॥ चैत्र शुक्लपक्ष म मीनराशि पर सूर्य आने से मूल आदि नव नक्षत्र निर्मल हो तो वर्षा

मूलादिनवनक्षत्र-नैर्मल्ये वत्सरः शुभः ॥१३८॥

'मेषसंक्रान्तिकालात्तु' इत्यादि । लोके पुनर्विशेषः-

चैत्र अजुआली चउथथी, मेस थका नव दीह ।
जल आभु विज्जु लवे, तो कुडंबी मम बीह ॥१३९॥

वैशाखमासे प्रतिपद्दिनाच्चे-न्मेघोदयः सप्तदिनानि यावत् ।
अभ्रेषु गर्जो घनविद्युदादि, तदा सुभिक्षं मुनयो वदन्ति ।१४०।

माघमासस्य सप्तम्यां पञ्चम्यां फाल्गुनस्य च ।
चैत्रस्यापि तृतीयायां वैशाखे प्रथमेऽहनि ॥१४१॥
मेघस्य गर्जितं श्रुत्वा जलदस्य तु दर्शने ।
चतुरो वार्षिकान् मासान् जलवृष्टिं तदा वदेत् ॥१४२॥

हीरसूरयस्त्वाहुः—

कत्तियमासह बारसइ, मगसिर दसमी भाल ।
पोसहमासि पंचमी, सत्तमी माह निहाल ॥१४३॥
जइ वरसे विज्जु लवे, अह उन्नमण करेय ।
मासा च्यारे पावसह, धाराधरवरिसेय ॥१४४॥

अच्छा होता है ॥ १३८ ॥ चैत्र मासकी शुक्ल चतुर्थीके बाद मेष संक्रान्तिसे नव दिन वर्षा हो या बिजली चमके तो हे कृषिकार ! तुम डर नहीं ॥ १३९ ॥ वैशाख मासमें प्रतिपदासे सात दिन तक मेघ का उदय हो, गर्जना हो, वर्षा और बिजली आदि हो तो सुभिक्ष होता है ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ १४० ॥ माघमासकी सप्तमी, फाल्गुनकी पंचमी, चैत्र की तृतीया और वैशाखका प्रथम दिन ॥१४१॥ इनमें मेघकी गर्जना हो और उनका दर्शन भी हो तो चौमासेके चार मासमें वर्षा अच्छी होती है ॥१४२॥ श्रीहीरविजयसूरिने भी कहा है कि– कार्त्तिक मासकी बारस, मार्गशीर्षकी दशमी, पौष मासकी पंचमी और माघ मासकी सप्तमी ॥१४३॥ इन दिनोंमें यदि वर्षा हो, बिजली चमके तो चौमासेमें धाराबद्ध वर्षा हो ॥१४४॥

एवं शाकसमायनादिसमयं ज्योतिर्विदां वाङ्मयाद्,
नित्याभ्यासवशाद् विमृश्य सुदृढ प्राज्यप्रभाभासुरः ।
श्रीमन्मेघमहोदयं सविजयं जानाति नातिश्रमात् ,
भूपानामनुरञ्जनात् स लभते सिद्धिं सदा सम्पदाम् ॥१४५॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षबोधे तपागच्छीय-महोपाध्याय-
श्रीमेघविजयगणिविरचितेऽयनमासपक्षनिरू-
पणनामा षष्ठोऽधिकारः ।

अथ वर्षराजादिकथने सप्तमोऽधिकारः।

अथ अगस्तिद्वारम् -

अथ यदि समुदेति चेतिमानं दधानः,
सकलकलशजन्मा सिन्धुपानप्रधानः ।
भगवति भगदैवे भे स्थिते पद्मिनीशे,
निशि दिशि दिशि लक्ष्म्यै स्यादयं सप्तमेऽह्नि ॥१॥

इस प्रकार शकसंवत्सर अयन आदि समयको ज्योतिर्विदों के शास्त्रों से और हमेशा के अभ्यासवश से प्रभावशाली ज्योतिषी अच्छी तरह विचार कर के सफलीभूत ऐसा मेघमहोदय को थोड़ा परिश्रम से जानता है, और वह राजाओंको खुश करके हमेशा सिद्धि और सपदाको प्राप्त करता है ॥ १४५ ॥

सोरठराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितोऽयन-
मासपक्षनिरूपणनामा षष्ठोऽधिकारः ।

जब सूर्य पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर आवे तब उससे सातवें दिन रात्रि में प्रकाशको धारण करनेवाला और समुद्रको पीजानेमें प्रधान ऐसा अगस्ति ऋषिका उदय हो तो चारोंही दिशामें लक्ष्मीके लिये शुभ होता है ॥१॥

यद्युदेति दिने प्रातः पीताब्धिर्मुनिपुङ्गवः ।
दुर्भिक्षं रौरवं घोरं राष्ट्रभङ्गं तदादिशेत् ॥२॥
रवौ च पूर्वफाल्गुन्यां प्राप्ते चेदष्टमेऽहनि ।
अगस्तेरुदयो लोके न शुभाय क्वचिन्मते ॥३॥
कृत्तिकायां रवौ जाते सप्तमे चाष्टमेऽहनि ।
ऋषेरस्तंगतिः श्रेष्ठा दिवसे यदि जायते ॥४॥
रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टश्चास्तङ्गमो मुनेः ।
दिवसेऽस्तङ्गमः श्रेष्ठो नेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥५॥

लोकेऽपि—

सिंहा हुंती मऊली, दिन इकवीसे जोय ।
अगस्ति महाऋषि उगीया, घन बहु बरसे लोय ॥६॥

हीरसूरयोऽप्याहुः—

दुब्भिक्खं वीस दिणे इगवीसे होइ मज्झिमं समयं ।

यदि अगस्त्यका उदय प्रात कालमें हो तो दुर्भिक्ष, घोर उपद्रव और राज्य भग हों ॥२॥ सूर्य जब पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर आवे तब उस से आठवें दिन अगस्त्यका उदय हो तो लोकमें शुभ नहीं होता ऐसा किसीका मत है ॥३॥ सूर्य जब कृत्तिका नक्षत्र पर आवे तब उसमे सातवें या आठवें दिन अगस्त्यका अस्त यदि दिनमें हो तो श्रेष्ठ होता है ॥४॥ अगस्त्यका उदय रात्रि में श्रेष्ठ माना जाता है और अस्त अशुभ माना है । दिन में अस्त होना श्रेष्ठ और उदय होना श्रेष्ठ नहीं ॥५॥ लोक भाषामें बोलते है कि— सिंह राशि पर सूर्य आवे तबसे इक्कईस दिनोंमें अगस्त्यका उदय होता है तब भूमि पर वर्षा बहुत होती है ॥६॥ श्रीहिरविजयसूरि ने भी कहा है कि— सिंहराशि पर सूर्य आवे तबसे बीस दिन पर अगस्त्य का उदय हो तो दुर्भिक्ष हो, इक्कईस दिन पर उदय हो तो मध्यम समय हो और बाईस दिन पर उदय हो तो सुकाल हो ॥७॥ जिस महीनेमें बुधसे

बावीसे प सुभिक्खं सिंहाओ महारिसी उदए ॥७॥
दसे दिहाडे बुध थकी, ऋषि उगे जिणमास।
धार न खडे वरसतो, परजा पूगे आस ॥८॥
ग्रन्थान्तरे तु–जो वीसे तो वाणिओ, इकवीसे तो विप्र।
बावीसे जो उगमे, मालीघरे जनम ॥९॥
वणिग्मुनिः खण्डवृष्ट्यै दुर्भिक्षाय द्विजो मुनिः।
मालाजीवी सुभिक्षाय सिंहे सूर्यात् परं फलम् ॥१०॥
यश्चैत्रशुक्लप्रतिपद्दिनस्य, भुंक्ते कलां च प्रथमां स वारः।
वर्षस्य राजा खलु मेषसूर्ये, दिनस्य वारः स हि तत्र मंत्री ॥११॥
मिथुनार्केऽह्नि यो वारः स स्यात् सर्वरसाधिपः।
सस्याधिपः कर्करवौ दिनवारो हि धान्यकृत् ॥१२॥
मतान्तरे पुनः—
"ज्येष्ठार्कः प्रथमो मन्त्री तच्चतुर्थः कणाधिपः।

दशवें दिन अगस्त्यका उदय हो तो धाराबध वरसाद वरसे और प्रजा की आशा पूर्ण करे ॥८॥ ग्रन्थान्तरसे– सिंह संक्रान्तिसे यदि वीस दिन पर अगस्त्य उदय हो तो वैश्य, इक्कीस दिन पर उदय हो तो ब्राह्मण और बाईस दिन पर उदय हो तो माली, इनके घर क्रमसे अगस्त्य का जन्म समझना ॥९॥ यदि वैश्य मुनि हो तो खंडवृष्टि करता है, ब्राह्मण मुनि हो तो दुर्भिक्ष करता है और मालिके घर जन्म हो तो सुभिक्षकारक होता है ऐसा अगस्त्यका फल सिंहराशिपर सूर्य आने से जानना चाहिये ॥१०॥

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षमे प्रतिपदाकी प्रथम कला में जो वार हो वह वर्षका राजा होता है और मेषसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह मंत्री होता है ॥११॥ मिथुनसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह सब रस का अधिपति होता है। कर्कसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति होता है ॥१२॥ मतान्तरमे– ज्येष्ठा के पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह

फाल्गुनान्ते च यो वारः सोऽब्दपः परिकीर्त्तितः' ॥१३॥
आषाढे रोहिणी सूर्ये दिनवारो जलाधिपः।
आर्द्रार्कदिनवारो यः स मेघानामधीश्वर. ॥१४॥
दिनवारो वृषे सूर्ये कोट्टवालः प्रकीर्त्तितः।
एते वर्षस्य पूर्वार्द्धे प्रोक्ता वार्षिकधान्यदाः ॥१५॥
कश्चित्तु-चैत्रमासादिवारो यः स धनाधिपतिर्मतः।
चैत्रे मेषार्कवेलायां लग्ने वर्षे प्रजायते ॥१६॥
खरतगच्छीय-मेघजीनामोपाध्यायास्तु—
चैत्र अमावसिवार नृप, मन्त्री मेषरविवार।
मिथुनरवौ सो रसधणी, कर्क सस्याधिपवार ॥१७॥
आषाढे रोहिणरूपे, जलाधिपति जो वार।

मन्त्री और उस से चोथा जो वार हो वह धान्य का अधिपति होता है। फाल्गुन मासके अन्तमें जो वार हो वह वर्षका राजा कहा जाता है॥१३॥ आषाढ मासमें जब रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह जलका अधिपति है और आर्द्रार्क के दिन जो वार हो वह मेघ (वर्षा) का अधिपति है॥१४॥ वृषसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह कोटवाल होता है। ये सब वार्षिक धान्यको वर्षका पूर्वार्द्धमें देनेवाले कहे ॥१५॥ किसीका ऐसा मत है कि– चैत्र मासकी आदिमें जो वार हो वह धनका अधिपति माना है और चैत्र मासमें मेष संक्रान्तिके समय लग्नेशको वर्षका अधिपति माना है ॥ १६ ॥ खरतरगच्छीय श्री मेघजी नामके उपाध्याय कहते हैं कि– चैत्र मास की अमावसके दिन जो वार हो वह राजा, मेष संक्रान्ति के दिन जो वार हो वह मंत्री, मिथुन संक्रान्तिके दिन जो वार हो वह रस का अधिपति, कर्कसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति है ॥१७॥ आषाढमें रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन जो वार हो वह जल का अधिपति है और कार्त्तिक मासमें मूल नक्षत्र पर सूर्य आवे उस दिन

कातिं माहि मूलदिन, कोटवाल जो चार ॥१८॥

एते वर्षराजादयः पूर्वधान्यनिष्पत्तये ।

विजयदशम्यां वारो यः स राजाग्रभागवः ।
मकरार्केऽस्य मन्त्री स चैत्रमासाद्यपो धनी ॥१९॥
तुलार्के दिनवारो यः स हि सर्वरसाधिपः ।
धनुष्यर्केऽह्नि वारस्तु स सस्याधिपतिर्मतः ॥२०॥
कार्तिके मूलनक्षत्रे वारः स कोट्टपालकः ।
एते राजादयश्चोग्रा-कालिक धान्यमादधुः ॥२१॥

अत्रापि मतान्तरे–

धनमन्त्री कुम्भ सस्यपति, फागुण अंतिवार ।
निश्चयराजा परखीइ, एहि जोस विचार ॥२२॥

केवलकीर्त्ति-दिगम्बरकृतमेघमालायां पुनरेव–

आगच्छति यथा भूपे गेहे गेहे महोत्सवः ।

जो वार हो वह कोटवाल होता है ॥ १८ ॥ ये सब वर्ष के राजा आदि धान्य निष्पत्तिके लिये पहले कहे ॥

विजयदशमी के दिन जो वार हो वह राजा, मकरसक्रान्तिके दिन जो वार हो वह मंत्री और चैत्रकी प्रतिपदा के दिन जो वार हो वह धन का अधिपति है ॥ १९ ॥ तुलासक्रान्तिके दिन जो वार हो वह सब रसका अधिपति और धनुसक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्यका अधिपति है ॥ २० ॥ कार्तिक मे मूलनक्षत्र के दिन जो वार हो वह कोटवाल है । ये सब राजा आदि धान्य को देनेवाले हैं ॥ २१ ॥ मतान्तरसे–धनुसक्रान्ति के दिन जो वार हो वह मंत्री, कुंभसक्रान्ति के दिन जो वार हो वह धान्याधिपति और फाल्गुनमास का अंतिम दिन जो वार हो वह निश्चय करके वर्षका राजा है, यही ज्योतिषियों का विचार है ॥ २२ ॥ केवलकीर्त्ति–दिगम्बराचार्यने अपनी मेघमालामें कहा है कि– जैसे नवीन राजा आते है तब घर घरमें बड़ा

तथा वर्षाधिपे लोके दीप्तदीपोत्सवः स्मृतः ॥२३॥
श्रीहीरविजयसूरिकृतमेघमालायां तु—
कार्त्तिके शुक्लद्वितीया-दिने यो वार ईक्षितः।
ज्ञेयः स वर्षपः स्वामी तत्फलं वक्ष्यते त्वदः ॥२४॥

'एतत्तु वृष्टिगर्भकालिकत्वाद् वृष्टिनाथपरम्' अत्रैवं वितर्कश्चान्द्रवर्षस्य प्रतिपदादिक्षणे प्रवेशात् तत्रत्य एव वारो वर्षेशस्तेन प्रतिपत्तिथिः, प्रतिपत्तिथिः प्रथमां कलां भुंक्ते स वारो वर्षपतिरिति। तथा फाल्गुनान्ते कुहुः राजेति मतद्वयेन कोऽपि भेदः। एतत्तु प्राचुर्येण गुर्जरदेशे प्रवर्त्तते। दाक्षिणात्या औदयिकप्रतिवासरमेव राजानमाहु'। पठन्ति च-
चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो, वारः स उक्तो नृपतिस्तदब्दे।
मेषप्रवेशः किल भास्करस्य,यस्मिन् दिने स्यात् स तु तस्य मंत्री २५
कर्कप्रवेशे दिनपः स उक्तः, प्राक्सस्यनाथो मुनिभिः पुराणैः।

उत्सव होता है वैसे वर्ष का राजा लोकमें बड़ा प्रकाशमान-दीपोत्सव माना है ॥ २३ ॥ श्री हीरविजयसूरिकृत मेघमालामें कहा है कि—कार्त्तिक शुक्ल द्वितीयाके दिन जो वार हो वह वर्षका स्वामी जानना उसका फल आगे कहेंगे ॥२४॥

मेघाधिपति वर्षा का गर्भकालिक होनेसे उसका विचार करना—चान्द्र वर्षका चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का प्रथम क्षणमें जो वार हो वह वार वर्षका अधिपति होता है, इसलिये प्रतिपदादि तिथि हैं। प्रतिपद् तिथिकी प्रथम कला में जो वार हो वह वर्षका स्वामी होता है। तथा फाल्गुनमासकी अमावस के दिन जो वार हो वह वर्ष का राजा है ऐसा भी किसी का मत होने से दो मत माने हैं। यह बहुत करके गुजरातदेशमें माना है। दक्षिणदेश के लोग तो उदयकालिक प्रतिपदा के वार को ही राजा मानते हैं। कहा है कि—चैत्रशुक्ल पडवा के दिन जो वार हो वह वर्षका राजा है। मेषसंक्रांति के दिन जो वार हो वह मंत्री होता है ॥ २५ ॥ कर्कसंक्रान्ति के दिन जो

आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो, मेघाधिपः प्राक्तनविप्रमुख्यैः ।२६।
तुलाप्रवेशेऽहनि यस्य वारो, रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः ।
चापप्रवेशे दिवसाधिनाथो, धान्याधिनाथः कथितो मुनीन्द्रैः ।२७।
केचित्तु–चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथ्यादौ स्युर्नृपादयः ।
चैत्रादिवत्सरमते फलन्तीत्येवमुचिरे ॥२८॥
विजयदशम्यां वार इत्यादिमतं स्वतन्त्रमतिफलदम् ।
स्यात् कार्त्तिकादिवत्सरमतेऽब्दगर्भोद्भवात् तत्र ॥२९॥

फाल्गुनान्तकथनात् फाल्गुनामावस्यां चैत्रशुक्लप्रतिपत् संयोगस्य प्रायसो बाहुल्याद् दर्शदिने यो वारः स अब्दपः। उत्तरार्द्धे तु "विजयदशम्यां यो वारः स राजा, तुलार्कवारो मन्त्री, वृश्चिकार्कवारो हि कोट्टपालः, धनुष्यर्के यो वारश्च रसाधिपः, मकरे सस्याधिपः, ज्येष्ठार्कवारो जलाधिपः, कार्त्तिके

वार हो वह प्राचीन मुनियोंने धान्याधिपति कहा है । आर्द्रा नक्षत्रमें जब सूर्य प्रवेश करे उस दिन जो वार हो वह मेघाधिपति प्राचीन विद्वानोंने कहा है ॥२६॥ तुलासक्रान्तिके दिन जो वार हो वह रसका अधिपति माना है। धनुसंक्रांतिके दिन जो वार हो वह मुनियोंने धान्याधिपति कहा है ॥२७॥ कोई ऐसा कहते है कि–चैत्रशुक्ल पडवाके आदिमें जो वार हो वह राजा है वह चैत्रादि वर्षके मत से फलदायक होता है ॥ २८ ॥ विजयदशमीके वार का जो मत है वह स्वतंत्र मति से फलदायक है यह कार्त्तिकादि वर्षके मत से जानना ॥ २९ ॥ फाल्गुनमासकी अमावस्या के दिन चैत्रशुक्ल प्रतिपदाका सयोग बहुत करके होता है, इसलिये 'फाल्गुनान्त' ऐसा कथन किया गया है। उत्तरार्द्धमें तो "विजयदशमी के दिन जो वार हो वह राजा, तुलार्कके दिन जो वार हो वह मंत्री, वृश्चिकसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह कोटवाल, धनुसंक्रान्ति के दिन जो वार हो वह रसका अधिपति, मकरसंक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्याधिपति, ज्येष्ठार्क के दिन जो वार हो वह जलाधि-

मूलनक्षत्रदिनवारो मेघाधिप" इति मतं सम्यक् प्रतिभाति। परेषां मताभिप्रायः प्रायो ज्योतिर्विदां गम्यः। वस्तुतस्तु अब्दपमन्त्रिसस्याधिपानां त्रयाणामेवोपयोगः। तत्फलं त्वेवं गिरधरानन्दे—

यत्र वर्षे नृपो मन्त्री धान्यपश्चैक एव हि।
तद्वर्षे युद्धदुर्भिक्षं प्रजामार्यादि जायते ॥३०॥

ग्रन्थान्तरे–स्वयं राजा स्वयं मन्त्री स्वयं सस्याधिपो यदा।
तदा तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महोदधिम् ॥३१॥

वर्षाधिपतिफलम् —

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाः पयोदाः, धान्यं तथाल्पं फलमल्पवृक्षाः।
अल्पप्रयोगेषु जनेषु पीडा, चौराग्निशङ्का च भयं नृपाणाम्।३२।
सोमे नृपे शोभनमङ्गलानि, प्रभूतवारिप्रचुरं च धान्यम्।

पति, कार्त्तिकमें मूल नक्षत्र के दिन जो वार हो वह मेघाधिपति" ऐसा कहा है वह मत यथार्थ प्रतिभास होता है और दूसरों के मतोंका अभिप्राय बहुत करके ज्योतिषियों को जानने योग्य है। वास्तवमें तो वर्ष का स्वामी, मंत्री और धान्याधिपति इन तीनोंका ही विशेष उपयोग पड़ता है। इनका फल गिरधरानन्दमें इस तरह कहा है–जिस वर्षमें राजा, मंत्री और धान्याधिपति ये तीनों एकही हो तो उस वर्षमें दुष्काल पड़े और प्रजामें महामारी आदि हो। ३०॥ ग्रन्थान्तरमें भी कहा है कि–जिस वर्षमें राजा, मंत्री और धान्याधिपति ये एकही ग्रह हो तो समुद्र को छोड़कर कहीं भी जल देखनमें नहीं आवे अर्थात् वर्षा न हो ॥ ३१ ॥

जिस वर्षमें सूर्य राजा हो तो बादल थोड़ा जल बरसावे, धान्य थोड़े, वृक्षोंमें थोड़े फल हों, मनुष्योंमें किंचित् पीड़ा, चोर और अग्नि की शंका रहे और राजाओं का भय हो ॥ ३२ ॥ चन्द्रमा राजा हो तो अच्छे मांगलिक कार्य हों, वर्षा अधिक हो, धान्य बहुत हों, मनुष्यों की व्याधि

प्रशाम्यति व्याधितरो नराणां सुखं प्रजानामुदयो नृपाणां ।३३
भौमे नृपे वह्निभयं जने स्या-च्चौराकुलत्वं नृपविग्रहश्च ।
दुःस्थाः प्रजा व्याधिवियोगपीडा, क्षिप्रं जलं वर्षति भूमिखण्डे ॥
बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमङ्गलम् ।
सौख्यं सुभिक्षं धनधान्यसङ्कुलं, वसुन्धरायां नृपनन्दगोकुलम् ॥
गुरौ नृपे वर्षति सर्वभूतले, पयोधराः कामदुघाश्च धेनवः ।
सर्वत्र लोका बहुदानतत्पराः, पराभवो नैव सदैव नन्दनम् ।३६।
शुक्रस्य राज्ये बहुधान्यसम्पदो, वृक्षाः फलाढ्या बहुगोप्रसूतयः ।
प्रभूततोयं मधुराम्रपाचनं, प्रसन्नदैन्यं सजलं भुवस्तलम् ।३७। ।
शनौ घनो वर्षति खण्डशः क्षितौ, जनास्तु रोगा उदिता प्रभञ्जनाः
करा नृपाणां विषमाश्च तस्करा, भ्रमन्ति लोका बहुधा क्षुधातुराः ॥
वर्षमन्त्रिफलम्——

शान्त हों प्रजाको सुख और राजाका उदय हो ॥३३॥ मंगल राजा हो तो अग्निका भय, मनुष्योंमें चोरोंकी आकुलता, राजाओंमे विग्रह, प्रजा व्याधि और वियोगकी पीडा से दुःखी हो और पृथ्वी पर शीघ्र ही जलवर्षा हो ॥३४॥ बुध राजा हो तो भूमितल जलमय हो याने वर्षा अच्छी हो, घर घरमें विवाह मंगलके बाजे बजे, सुख सुभिक्ष और धन धान्यसे भूमि पूर्ण हो तथा राजा और गौ आनंदित हो ॥३५॥ बृहस्पति राजा हो तो समस्त पृथ्वी पर वर्षा हो, गौ इच्छानुसार दूध दे सब जगह लोग दान देने में तत्पर हों, पराभव न होकर सदा आनंद रहे ॥ ३६ ॥ शुक्र राजा हो तो धान्य बहुत हों, वृक्ष फलोंसे पूर्ण हों, गौ बहुत दूध दे, वर्षा अधिक हो, अच्छे मीठे आम बहुत हों, प्रसन्नता रहे और भूमितल पर वर्षा अच्छी हो ॥ ३७ ॥ शनि राजा हो तो पृथ्वी पर खंडवृष्टि हो, मनुष्य रोगोंमे पीडित हों, महान् वायु चले, राजाओंके कर (टेक्स) असह्य हो, चोरोंका उपद्रव और लोक क्षुधासे व्याकुल होकर भ्रमण करते फिरे ॥३८॥

रवावमात्ये भुवि रोगपीडा, देशेषु सर्वत्र चरन्ति तीडाः ।
रसेषु धान्येषु महर्घता स्या-च्छलानि लोके च सुरा विनाश्याः ॥
सुधाकरे भूः सचिवेऽन्नपूर्ण-फलैरसाढ्यास्तरवश्च गावः ।
पुत्रप्रसूतिर्बहुला वधूनां, जनेषु वाणी जयिनी मधूनाम् ॥४०॥
निदानतः स्याद् गुरुदेवनिन्दा, भ्रमावतीसारगदस्य भूमा ।
धूमाकुला भूर्जननेत्ररोगाः, कुजे भवेन्मन्त्रिणि युद्धयोगः ॥४१॥
राज्ञां सुदृष्टिर्बहुलान्नवृष्टिः सच्छास्त्रवृद्धिर्धनिनां समृद्धिः ।
पत्यावतिस्नेहरतिर्युवत्या,बुधे पुनर्मन्त्रिणि रागसिद्धिः ॥४२॥
मन्त्रित्वमासे सुरमन्त्रिणि स्यात्, प्रजासु सौख्यं धनधान्यवृद्धिः ।
विवाह मांगल्यकला जनानां, नानारसैर्मेघमहोदयः स्यात्। ४३
जाते कवौ मन्त्रिणि गोषु दुग्धं, बहुक्षितौ धान्यसमर्घता च ।
वृक्षाः फलाढ्या जनतासु रोगो,भिषक्प्रयोगःक्वचीदीतिभीतिः॥

जिस वर्षमें मन्त्री सूर्य हो तो पृथ्वीमें रोगपीडा, सर्वत्र देशमें टिड्डीका उपद्रव, रस और धान्य महँगे हों, मनुष्योंमें कपटता और देवों का प्रभाव नाश हो ॥३९॥ चन्द्रमा मन्त्री हो तो पृथ्वी धान्यसे और वृक्ष फलोंसे पूर्ण हों, गौ अधिक प्रसव करें और वधूओंकी वाणी मनुष्योंमे प्रिय हो ॥४०॥ मंगल मन्त्री हो तो भूमि पर गुरु और देव की निन्दा, अतीसार रोग का उपद्रव, धुम से पृथ्वी आकुल, मनुष्यों को नेत्ररोग की पीडा और युद्ध का योग हो ॥४१॥ बुध मन्त्री हो तो राजा प्रसन्न दृष्टिवाले हों, धान्य और वर्षा अधिक, अच्छे २ शास्त्र और धनी लोगोंकी समृद्धिकी वृद्धि हो, स्त्री पति से प्रेम करनेवाली हों ॥ ४२ ॥ बृहस्पति मन्त्री हो तो प्रजामे सुख, धन धान्यकी वृद्धि, मनुष्यों का विवाह आदि मंगल हो और अनेक प्रकार के रसोंसे मेघका उदय हो याने अच्छी वर्षा हो ॥४३॥ शुक्र मन्त्री हो तो गौ अधिक दूध दें, पृथ्वीमे धान्य सस्ते हों, वृक्षोंमें फलोंकी अधिकता, मनुष्यों में रोग, वैद्यका प्रयोग चले और कहीं ईतिका भय हो ॥४४॥ शनि मन्त्री

मान्द्य जनानां व्यवहारनाशः, क्रूरा नृपास्तस्करवह्निदुःखम्।
गवां विनाशोऽतिमहर्घधान्य, शनैश्चरे मंत्रिणि राज्ययुद्धम्॥

सस्याधिपतिफलम्—

क्वचित् पचन्ति सस्यानि क्वचिन्नश्यन्ति भूतले।
व्याधिर्दुःखं महायुद्धं धान्यानामधिपे रवौ ॥४६॥
समर्घं जायते धान्य सर्वत्र जलवर्षणम्।
सर्वधान्यानि जायन्ते यत्र सस्याधिपः शशी ॥४७॥
ईतिभूतं जगत्सर्वं व्याधिरोगप्रपीडितम्।
महर्घाणि च धान्यानि सस्यानामधिपे कुजे ॥४८॥
सजला वसुधा सर्वा भयनाशः सुखी जनः।
चणकादीनि धान्यानि धान्यानामधिपे बुधे ॥४९॥
आनन्दः सर्वलोकानां सुवृष्टिस्तु प्रजायते।
निष्पत्तिर्बहुधान्यानां यत्र सस्याधिपो गुरुः ॥५०॥

हो तो मनुष्योंके व्यवहारका नाश, राजाओं क्रूर स्वभाववाले हों, चोर और अग्निका दुःख, गौ जातिका विनाश, धान्य महँगे हो और राजाओं में युद्ध हो ॥ ४५ ॥

जिस वर्षमें धान्याधिपति रवि हो तो भूमिपर कहीं धान्य पकें, कहीं विनाश हों, व्याधि दुःख और महायुद्ध हों ॥ ४६ ॥ चंद्रमा सस्याधिपति हो तो धान्य सस्ते हों, सब जगह जलवर्षा हो और सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ॥ ४७ ॥ मंगल सस्याधिपति हो तो सब जगत् ईति का उपद्रव से और व्याधि रोगसे पीडित हो, तथा धान्य मँहगे हों ॥ ४८ ॥ बुध धान्याधिपति हो तो समस्त पृथ्वी जलवाली याने वर्षा अच्छी हो, भयका नाश और मनुष्य सुखी हों, चनें आदि धान्य अधिक हों ॥ ४९ ॥ बृहस्पति धान्याधिपति हो तो सब लोगोंमें आनंद हो, वर्षा अच्छी हो और धान्य प्राप्ति अधिक हो ॥ ५० ॥ शुक्र धान्याधिपति हो तो समस्त जगत् रोग

रोगैर्मुक्तं जगत्सर्वं भयमुक्ता भवेन्मही ।
पच्यन्ते सर्वधान्यानि यत्र सस्याधिपः कविः ॥५१॥
अग्निचौराकुला पृथ्वी महाव्याधिप्रपीडिता ।
मृत्युरोगभयं युद्धं वर्षे सस्याधिपे शनौ ॥५२॥

गिरधरानन्दे पुनः सस्याधिपफलम्—

वर्षेश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा दिनेश्वरः ।
तस्मिन्नब्दे नृपाः क्रूराः स्वल्पसस्याल्पवृष्टयः ॥५३॥
अब्दपो वा चमूपो वा सस्यपो वा क्षपाकरः ।
तस्मिन् वर्षे करोति क्ष्मां पूर्णां धान्यार्घवृष्टिभिः ॥५४॥
अब्देश्वरश्चमूपो वा सस्येशो वा धरासुतः ।
अवृष्टिवह्निचौरेभ्यो भयमुत्पादयत्ययम् ॥५५॥
अब्दाधिपश्चमूपो वा सस्येशो वा शशाङ्कजः ।
न करोति कलिं कष्ट-मवृष्टिमतिमारुतम् ॥५६॥
चमूपो वाथ सस्येशो वर्षेशो वा गिरांपतिः ।

रहित हो और पृथ्वी भय रहित हो, तथा सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ॥५१॥ शनि सस्याधिपति हो तो अग्नि और चोरोंसे पृथ्वी आकुल हो, महाव्याधि से पीडित हो मृत्यु और रोगका भय, तथा युद्ध हो ॥५२॥

जिस वर्ष में वर्षपति मन्त्री और धान्यपति सूर्य हो, उस वर्ष में राजा क्रूर स्वभाववाले हों, थोड़ा धान्य और थोडी वर्षा हो ॥५३॥ वर्षपति, मन्त्री और धान्याधिपति चन्द्रमा हो तो उस वर्ष मे पृथ्वी धन धान्य और वर्षा से परिपूर्ण हो ॥५४॥ वर्षपति मन्त्री और धान्याधिपति मंगल हो तो वर्षाका अभाव, अग्नि और चोरोंसे भय उत्पन्न हो ॥५५॥ वर्षपति मन्त्री और धान्याधिपति बुध हो तो कलह कष्ट न हो, वर्षाका अभाव और पवन अधिक चले ॥५६॥ वर्षपति मन्त्री और धान्यपति बृहस्पति हो तो भूमि में अधिक यज्ञ और वर्षा हो ॥५७॥ वर्षपति मन्त्री और धान्यपति शुक्र

करोत्यतुलितां भूमिं बहुयज्ञार्थवृष्टिभिः ॥५७॥
वर्षेशोऽप्यथ सस्येश-श्चमूपो वाथ भार्गवः ।
महीं करोति सम्पूर्णां बहुधान्यफलादिभिः ॥५८॥
अब्देश्वरश्चमूपो वा सस्येशो वार्कनन्दनः ।
तस्मिन् वर्षे तु चौराग्नि-धान्यभूपभयप्रदः ॥५९॥
यदाब्देशश्चमूनाथः सस्यपानां बलाबलम् ।
तत्कालग्रहचारश्च सम्यग् ज्ञात्वा फलं वदेत् ॥६०॥
इति वर्षेशमंत्रिधान्यपतीनां फलानि ।

अथ राजादिविचारो गार्गीयसंहितायाम्—

चैत्रशुक्लाद्यदिवसे यो वारः सोऽब्दपः स्मृतः ।
शुभं वाप्यशुभं सर्वं तस्मादेव फलं स्मृतम् ॥६१॥
उदये प्रतिपद्येवं मुहूर्तद्वयमस्ति चेत् ।
तस्मिन् दिने तु यो वारः स तु संवत्सराधिपः ॥६२॥
चैत्रमेषादिचापार्द्रा-तुलाकर्कटकेषु च ।
नृपो मंत्री धान्यमेघ-रससस्याधिपाः क्रमात् ॥६३॥

हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत धन धान्यसे पूर्ण हो ॥ ५८ ॥ वर्षपति मन्त्री और धान्यपति शनि हो तो उस वर्षमें चोर अग्नि धान्य और राजा ये भय-दायक हों ॥ ५९ ॥ इसी तरह वर्षपति मन्त्री और धान्याधिप इनके बला-बलका तथा तात्कालिक ग्रहचार का अच्छि तरह जानकर फल कहना ॥ ६० ॥ इति वर्षपतिमन्त्रिधान्यपतीना फलानि ॥

चैत्र शुक्ल के आद्य दिनमें जो वार हो वह वर्षपति है, उससे शुभा-शुभ समस्त फल जानना ॥६१॥ सूर्योदयके समय दो मुहूर्त भी प्रतिपदा हो और उस समय जो जो वार हो वह वर्ष का अधिपति है ॥६२॥ चैत्र शुक्लाद्य दिन, मेषसंक्रान्ति, धनुसंक्रान्ति, आर्द्रार्क तुलासंक्रान्ति और कर्क संक्रान्ति इन दिनोंमे जो वार हो ये क्रमसे राजा, मन्त्री, धान्येश, मेघाधि-

जगन्मोहने तु—

चैत्रादिमेषादिकुलीरतौली, मृगादिवाराधिपतिः क्रमेण ।
राजा च मंत्री ह्यथ सस्यनाथो, रसाधिपो नीरसनायकश्च ॥६४॥
आर्द्रादिनाथो जलनायकश्च, धान्याधिपश्चापदिनादिवारः ।
गौर्जरमते— यो फाल्गुनान्ते कुहुभुक् स वारो,
राजा भवेद् गौर्जरसंमतोऽयम् ॥६५॥
कश्यपः— चैत्रशुक्लादिदिवसे स किंस्तुघ्नेऽथ बालवे ।
अर्कोदये तु यो वारः सोऽब्दपः परिकीर्तितः ॥६६॥

अथैषा फलानि रामविनोदे, तत्र वर्षराजफलम्—

मेघाः स्वल्पोदका धान्यं स्वल्पं स्वल्पफला द्रुमाः ।
चौराग्निभूपतिभयं भास्करे भूपतौ सति ॥६७॥
चान्द्रेऽब्दे निखिला गावः प्रभूतपयसोद्धुराः ।
भाति सस्यार्थपानीयं शुचरस्पर्द्धिमानवैः ॥६८॥

पति, रसाधिपति और धान्याधिपति हैं ॥६३॥ जगन्मोहन ग्रन्थमें कहा है कि— चैत्र शुक्ल के आद्य दिन, मेषसक्रान्ति, कर्कसक्रान्ति, तुलासक्रान्ति, और मकरसक्रान्ति इन दिनोंमें जो वार हो वे क्रमसे राजा, मत्री, धान्याधिपति, रसाधिपति और नीरसाधिपति हैं ॥६४॥ आर्द्राके दिन जो वार हो वह जलाधिपति है, धनुसक्रान्तिके दिन जो वार हो वह धान्याधिपति है । गौर्जरमत से तो जो फाल्गुन के अन्त अमावस के दिन जो वार हो वह राजा होता है ॥६५॥ कश्यपऋषि कहते है कि— चैत्र शुक्लके आदि दिन किंस्तुघ्न या बालव करणमे सूर्योदय के समय जो वार हो वह वर्ष का राजा है ॥ ६६ ॥

जिस वर्ष में वर्षपति सूर्य हो उस वर्षम वर्षा थोडी, धान्य थोड़, वृक्षोंमें फल थोड़, और चोर अग्नि तथा राजाका भय हो ॥६७॥ चद्रमा हो तो समस्त गौ बहुत दूध देनेवाली हों, धन धान्य और जल वर्षा बहुत

अग्नितस्कररोगाः स्युर्नृपे विग्रहदायकाः ।
हृतसस्यजला भौमे वर्षेशे भूः सुदुःखिता ॥६९॥
प्रभूतवायुः सौम्येऽब्दे मध्याः सस्यार्थवृष्टयः ।
नृपसंक्षोभसम्भूता भूरिक्लेशभुजः प्रजाः ॥७०॥
गुरौ संवत्सरे भूपाः शतधाध्वरशालिनः ।
सम्पूर्णवृष्टिसस्यार्था नीरोगाः सुखिनो जनाः ॥७१॥
यवगोधूमशालीक्षु-फलपुष्पार्थवृष्टिभिः ।
सम्पूर्णा निखिला धात्री भृगुपुत्रस्य वत्सरे ॥७२॥
सौराब्दे मध्यमा वृष्टि-रीतिर्भीतिर्भयं रुजः ।
सङ्ग्रामो घोरधात्रीशः बलक्षुण्णाखिला धरा ॥७३॥

मन्त्री फल तत्र वशिष्ठ —

दिनकृति मन्त्रिणि सततं विचित्रवर्षाणि सर्वसस्यानि ।
क्षितिपतिकोपो विपुलो विपिनारामाश्च सीदन्ति ॥७४॥

अच्छी हो, मनुष्य देवों की स्पर्द्धा करे ॥६८॥ मंगल हो तो अग्नि चोर और रोग अधिक हों, राजाओंमे विग्रह, पृथ्वी धान्य और जल से रहित हो और दुःखी हो ॥६९॥ बुध वर्षपति हो तो वायु अधिक चले, धन धान्य और वृष्टि मध्यम हो, राजाओंका क्षोभसे उत्पन्न हुआ बहुत क्लेशको भोगनेवाली प्रजा हो ॥७०॥ गुरु वर्षपति हो तो राजा सैंकड़ों यज्ञ करने वाले हों, सम्पूर्ण पृथ्वी धन धान्य और वृष्टिसे पूर्ण हो और मनुष्य रोग-रहित सुखी हों ॥७१॥ शुक्र हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी जव, गेहूँ, चावल, फल, पुष्प और वर्षा आदिसे पूर्ण हो ॥७२॥ शनि वर्षपति हो तो मध्यम वर्षा, ईतिका भय, रोग का भय और राजाओं का घोर संग्राम हो, समस्त पृथ्वी सैन्यसे क्षुभित हो ॥७३॥

जिस वर्षमें सूर्य मंत्री हो उस वर्षमे निरन्तर विचित्र वर्षा हो, सब प्रकारके धान्यका विनाश, राजाओं अधिक कोपवाले हों, बाग बगीचे और

तुहिनकरे सचिवे अनेकविधसस्यवृष्टिसम्पूर्णा ।
द्विजसज्जनपशुवृद्धिः काननफलपुष्पजन्तूनाम् ॥७५॥
दहनप्रहरणसञ्चरमरुदामयभीतिरीतिरतुला स्यात् ।
क्षितितनये सति मन्त्रिणि शोषं समुपैति निम्नभवसस्यम् ॥७६॥
मन्त्रिणि शशांकतनये प्रभूतवायुर्निरन्तरं वाति ।
मध्यमफलदा धरणी विभाति सुरसदृशलोकैश्च ॥७७॥
सचिवे वाचामीशे बहुधननिचयं च सस्यसम्पूर्णम् ।
जगदखिलं जलपूर्णं प्रभूतराज्योत्सवैश्च युतम् ॥७८॥
उच्चरति ध्वनिरनिशं विप्राणामध्वरे जगत्यखिले ।
अनिमिषहृदयानन्दं कुर्वंश्च सचिवे सुरारिगुरौ ॥७९॥
मन्दफला निखिलधरा न वापि मुञ्चन्ति वारि वारिधराः ।
दिनकरतनये सचिवे प्रभया रहितं जगत्सर्वम् ॥८०॥

धान्येशफलम्—

सूर्ये धान्यपतौ वैर-मनावृष्टिर्भयं तथा ।

जंगल आदिका नाश हो ॥ ७४ ॥ चन्द्रमा हो तो अनेक प्रकार के धान्य हों, वृष्टि पूर्ण हो, ब्राह्मण, सज्जन, पशु, फल पुष्प और प्राणियों की वृद्धि हो ॥ ७५ ॥ मंगल हो तो अग्निसे आघात, वायु का संचार अधिक, रोगका भय और ईतिका अधिक उपद्रव हो, तथा उत्पन्न होनेवाले धान्य सूख जाय ॥ ७६ ॥ बुध हो तो निरंतर बहुत वायु चले, पृथ्वी मध्यम फलदायक हो, देवताके सदृश लोक शोभा पावें ॥ ७७ ॥ बृहस्पति हो तो धन प्राप्ति अधिक, समस्त धान्य उत्पन्न हों, समस्त पृथ्वी जलपूर्ण हो और राज्योंमें उत्सव हों ॥ ७८ ॥ शुक्र मंत्री हो तो समस्त पृथ्वीमें ब्राह्मणों का वाणी देवों के हृदयको आनन्द करनेवाला यज्ञ के लिये निरंतर हो ॥ ७९ ॥ शनि मंत्री हो तो समस्त पृथ्वी मंद फलदायक हो, मेघ वर्षा करें या न भी करें, समस्त जगत कान्ति हीन हो ॥ ८० ॥

अधर्मनिरता लोका राजानः क्रूरशासनाः ॥८१॥
चन्द्रे धान्येश्वरे धान्य सुलभ जायतेऽखिलम् ।
द्विजगोकुलवृद्धिश्च राजानो मुदितास्तथा ॥८२॥
भौमे धान्येश्वरे धान्य प्रिय स्याच्चौरतो भयम ।
वैरिवह्नेश्च बाहुल्य प्रजाहानिः प्रजायते ॥८३॥
धान्येश्वरे चन्द्रसुते राजानः प्रीतिमाश्रिताः ।
क्वचित् क्वचिदवृष्टिः स्यात् सस्य निष्पद्यते क्वचित् ॥८४॥
धान्येशे देवपूज्ये स्यादाम्नायस्य प्रवर्त्तनम् ।
वृष्टिः स्यान्महती धान्य प्रचुर सुलभ तथा ॥८५॥
शुक्रे धान्याधिपे लोका मुदिताः स्युः परस्परम् ।
पशुसस्याभिवृद्धिः स्याद् धर्मोत्सवविवर्द्धनम् ॥८६॥
मन्दे धान्येश्वरे धान्य प्रिय स्यात् क्षितिपालकाः ।
परस्पर विरुध्यन्ते दस्युभीतिरवर्षणम् ॥८७॥

जिस वर्ष मे सूर्य धान्याधिपति हो उस वर्ष मे अनावृष्टि तथा भय उत्पन्न हो, लोक पापकार्य में तत्पर हों और राजा क्रूर शासनवाले हों ॥ ८१ ॥ चन्द्रमा धान्याधिपति हो तो सब प्रकारके धान्य उत्पन्न हों ब्राह्मण तथा गौकी वृद्धि हो और राजा आनन्दित हों ॥८२॥ मगल धान्यपति हो तो धान्य प्रिय यान महँगा हो, चोर शत्रु और अग्निम भय, प्रजाकी हानि अधिक हों ॥८३॥ बुध धान्येश्वर हो तो राजाओं अन्योऽन्य प्रीति करे, कहीं कहीं वर्षा न हो और क्वचित् धान्य उत्पन्न हो ॥ ८४ ॥ बृहस्पति धान्येश हो तो प्राचिन रीतिके अनुसार कार्य हो, महान् वर्षा तथा धान्य बहुत सस्ते हो ॥८५॥ शुक्र धान्येश हो तो सब लोग अन्योऽन्य आनन्दित हों, पशु और धान्यकी वृद्धि ओर धर्मोत्सव अच्छे हो ॥ ८६ ॥ शनैश्चर धान्येश हो तो धान्य प्रिय अर्थात् महँगा राजाओं अन्योऽन्य विरोध करें, चोरोंका भय हो और वर्षा न हो ॥८७॥

मेघाधिपति फलम्—

मेघाधिपतौ सूर्ये स्वल्पं मेघा जलं विमुञ्चन्ति ।
राजक्षोभस्तस्करभीतिः स्यादर्घबाहुल्यम् ॥८८॥
चन्द्रे मेघाधिपतौ सस्यद्विजसौख्यवृद्धिरतुला स्यात् ।
सम्पूर्णजला पृथिवी विद्वज्जनसम्प्रवृद्धिश्च ॥८९॥
भौमे जलदस्वामिनि वह्निभयं दस्युभीर्भुजङ्गभयम् ।
दुर्भिक्षाऽवृष्टिकृतैरुपद्रवैः पीड्यन्ते त्रिजगत ॥९०॥
सौम्ये मेघस्वामिनि वृष्टिर्बहुलाज्जनानन्दः ।
लिपिलेख्यकाव्यगणितज्ञातिसुखं सस्यसम्पदपि ॥९१॥
गुरुरब्दाधिपतिश्चेत् सुवृष्टिसस्याभिवृद्धयः ।
क्षेम याज्ञिक जनसम्पत्तिः साम्राज्यं धर्मससिद्धिः ॥९२॥
शुक्रो मेघाधिपतिः कामिजनानां सुखावहो भवति ।
गावः प्रभूतदुग्धा वसुधा बहुसस्यसम्पूर्णा ॥९३॥
शनौ मेघाधिनाथे स्याद् वात्यामण्डलसम्भ्रमः ।

जिस वर्ष म सूर्य मेघाधिपति हो उस वर्ष में वर्षा न हो, राजा क्षुभित हो, चोरोंका भय और अर्घ की बहुलता हो ॥८८॥ चन्द्रमा मेघाधिपति हो तो धान्य द्विज और सुखकी बहुत वृद्धि हो, सम्पूर्ण पृथ्वी जल से आर्द्रित हो और विद्वान लोगोंकी वृद्धि हो ॥८९॥ मंगल हो तो अग्नि का भय, चोरोंका भय, सर्पोंका भय, दुर्भिक्ष, और अनावृष्टि आदि उपद्रवों से तीनों ही जगत् पीडित हो ॥ ९० ॥ बुध हो तो अधिक वर्षासे लोग आनन्दित हो, लिपि, लेखक काव्य, गणित आदि कार्य करनेवाली जाति को सुख हो और धान्य संपदा प्राप्त हो ॥ ९१ ॥ गुरु मेघाधिपति हो तो अच्छी वर्षा हो, धान्यकी वृद्धि हो, कुशल, याज्ञिक, जनसम्पत्ति, साम्राज्य और धर्म की सिद्धि इनकी वृद्धि हो ॥ ९२ ॥ शुक्र मेघपति हो तो कामी लोगोंको सुख हो, गौ अधिक दूध दे, पृथ्वी बहुत प्रकारके धान्यसे पूर्ण हो

क्वचिद् वृष्टि क्वचित् क्षेमं सस्यनाशः प्रजायते ॥९४॥

रसेशफलम्—

चन्दनकुंकुमगुग्गुल-तिलतैलैरण्डतैलमुख्यानि ।
प्रचुराणि रसान्यतुलं रसनाथे भास्करे सततं ॥९५॥

रसानीत्यत्र लिङ्गव्यत्यय आर्षः—

इक्षुविकारं त्वखिलं क्षीरविकार च सर्वतैलानि ।
गन्धयुतानि च सर्वा-ण्यतिसुलभानि च रसाधिपे चन्द्रे।९६।
भुवि रसनिचयचन्दन-कुसुमविशेषाश्च चन्दनाद्यं च ।
दुर्लभमवनीसूनौ रसाधिपे मधुरवस्तूनि ॥९७॥
शशितनये रसनाथे विषाग्नी सूठी च हिंगुलशूनानि ।
घृततैलाद्यं निखिलं दुर्लभमिक्षूद्भवं सर्वम् ॥९८॥
रसनाथे दिविजगुरौ चन्दनकर्पूरकन्दमूलानि ।
सुलभानि रसान्यतुलान्यतुलं सीदन्ति कुंकुमाद्यानि ॥९९॥
सुगन्धवस्तूनि सिते रसेशे, निर्गन्धवस्तूनि रसादिकानि ।

॥९३॥ शनि मेघाधिपति हो तो अधिक वायु चले, कचित वर्षा, कचित् कल्याण और धान्यका नाश हो ॥ ९४ ॥

जिस वर्षमें रसाधिपति सूर्य हो उस वर्षमें चदन, कुकुम, गूगल, तिल, तैल, रेडी का तैल आदिकी बहुत वृद्धि हो ॥९५॥ चद्रमा रसाधिपति हो तो इक्षुरस और दूध इन से बनी हुई सब चीज, सब प्रकार के तैल और सुगधी वस्तु ये सब सस्ते हों ॥९६॥ मंगल रसाधिपति हो तो सब प्रकार के रस, चदन कुसुम और मधुर वस्तु ये सब दुर्लभ हों ॥ ९७ ॥ बुध रसाधिपति हो तो विष चित्रक सोंठ हिंग,लशून घी तैल और इक्षुरस से बनी हुई सब वस्तु दुर्लभ हों ॥९८॥ बृहस्पति रसाधिपति हो तो चदन कपूर कदमूल और सब प्रकारके रस सस्ते हों, तथा कुकुम आदिका नाश हो ॥९९॥ शुक्र रसाधिपति हो तो सुगधित वस्तु, तथा गधरहित वस्तु, दूध आदि सब

क्षीराणि सर्वाणि च कन्दमूल-फलानि पुष्पाणि बहूनि तानि॥
रसेश्वरे सूर्यसुते धरित्र्यां, दुःखेन लभ्यानि रसायनानि।
सुगन्धवस्तूनि घृतेक्षुकन्द-मूलानि चान्यत् सुलभं भुवि स्यात्।।१

सस्याधिपतिफलम्—

सस्यं चाग्रजधान्यं तदधीशेऽर्केऽल्पमर्वसस्यानि।
अतिविपुलं त्वीतिभयं कुलत्थचणकादिसम्पूर्णम् ॥१०२॥
सस्यपतौ तुहिनकरे रमणीयजनाश्रया स्मृता धरणी।
फलपुष्पसस्यवारिभिरमिता ह्यधिराजसौख्यसुता ॥१०३॥
सीदन्ति सस्यनिचया भुवि भौमे सस्यपे किलोत्पातभयात्।
अपराखिलधान्यभयं क्वचित् क्वचिद् भवति सस्यभयम् ॥४॥
अनिलहतं सस्यमिदं क्वचिद् भवेन्मध्यवृष्टिसम्पन्नम्।
शशितनये सस्यपतौ त्वपरं धान्यं प्रभूतफलम् ॥१०५॥
सस्यपतौ द्विजगुरौ बहुविधसस्यार्थवृष्टिसम्पूर्णा।

प्रकारके रस, कन्दमूल, फल और पुष्प ये सब बहुत उत्पन्न हों ॥१००॥ शनैश्चर रसाधिपति हो तो पृथ्वी में रसायन सुगन्धित वस्तु घी, गुड, कन्दमूल आदि ये सब कठिन प्राप्त हों और सब सुलभ हों ॥ १०१ ॥

जिस वर्षमें सस्याधिपति सूर्य हो उस वर्षमें सब प्रकारके धान्य थोडे हों, ईतिका भय अधिक हो और कुलथी चणा आदि पूर्ण उत्पन्न हों ॥१०२॥ चन्द्रमा धान्याधिपति हो तो मनुष्यों को आश्रय करने लायक मनोहर पृथ्वी हो, फल पुष्प धान्य और जलसे पूर्ण ऐसी राजाओंको सुख देनेवाली पृथ्वी हो ॥ १०३ ॥ मंगल धान्येश हो तो पृथ्वी पर धान्यके समूह नाश करे, उत्पातों का भयसे समस्त प्रकारके धान्य का भय रहे और क्वचित् सस्य भय हो ॥ १०४ ॥ बुध धान्यपति हो तो मध्यम वर्षासे उत्पन्न हुए धान्य वायुमें क्वचित् विनाश हो और दूसरे धान्य तथा फल अधिक हों ॥१०५॥ बृहस्पति धान्येश हो तो बहुत प्रकारके धान्य और तथा पूर्ण हों, [illegible] तथा

टङ्कणमागधदेशे मध्यमसस्यार्घवृष्टिः स्यात् ॥१०६॥
दैत्येज्ये सस्यपतौ बहुविधफलपुष्पसस्यसम्पूर्णम् ।
अमरविडम्बितजनतासम्पूर्णं भाति भूमितलम् ॥१०७॥
मध्यमसस्यं क्षितितल-मीनतनये सस्यपे न राजभयम् ।
कोद्रवकुलत्थचणकै-र्माषैर्मुद्गैश्च विपुलनरम् ॥१०८॥

नीरसाधिपतिफलम्—

नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि ।
रत्नमाणिक्यमुक्तादे-रर्घवृद्धिः प्रजायते ॥१०९॥
शुक्लवर्णादिवस्तूनां मुक्तारजतवाससाम् ।
प्रजायते ह्यर्घवृद्धिः शशांके नीरसाधिपे ॥११०॥
नीरसेशो यदा भौमः प्रवालरक्तवाससाम् ।
रक्तचन्दनताम्राणा-मर्घवृद्धिर्दिने दिने ॥१११॥
चित्रवस्त्रादिकं चैव शङ्खचन्दनपूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥११२॥
हरिद्रापीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत् ।

मगधदेश में धान्य और वर्षा मध्यम हो ॥ १०६ ॥ शुक्र धान्येश हो तो बहुत प्रकार के फल पुष्प तथा धान्य से पूर्ण शोभायमान भूमितल हो ॥ १०७ ॥ शनैश्चर धान्याधिपति हो तो भूमितलमें मध्यम धान्य हो, राज भय न हो, कोद्रव, कुलथी, चणा, उर्द और मूँग ये अधिक हों ॥१०८॥

जिस वर्षमें नीरसाधिपति सूर्य हो उस वर्षमें तांबा, चंदन, रत्न, माणिक्य, मोती आदि की मूल्यवृद्धि हो ॥ १०९ ॥ चन्द्रमा नीरसाधिपति हो तो सफेदवर्ण की वस्तु, मोती चांदी और वस्त्र इनकी मूल्यवृद्धि हो ॥ ११० ॥ मंगल नीरसेश हो तो मूंगा, लालवस्त्र, रक्तचंदन और तांबा इन की दिन दिन वृद्धि हो ॥ १११ ॥ बुध नीरसपति हो तो चित्र विचित्र वस्त्र तथा शंख और चंदन आदि की वृद्धि हो ॥११२॥ बृहस्पति नीरसाधिपति

नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा ॥११३॥
कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिकवाससाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके ॥११४॥

अथ मेषादिप्रवेशाद् आर्द्राप्रवेशे तिथ्यादिफल जगन्मोहन —

प्रतिपद्यपि चार्द्रायां प्रवेशः शुभदो रवेः ।
द्वितीयायां सस्यवृद्धि-स्तृतीयायामीतिकारणम् ॥११५॥
चतुर्थ्यामशुभः प्रोक्तः पञ्चम्यामुत्तमोत्तमः ।
षष्ठ्यां धनसमृद्धिः स्यात् सप्तम्यां क्षेममुत्तमम् ॥११६॥
अष्टम्यामल्पवृद्धिः स्या-न्नवम्यामीतिबाधनम् ।
दशम्यां शुभदः प्रोक्त एकादश्यां सुभिक्षकृत् ॥११७॥
द्वादश्यामन्नसम्पत्त्यै त्रयोदश्यां जलप्रदः ।
भूते त्वर्थविनाशाय पूर्णा पूर्णफलप्रदा ॥ ११८॥
अमायां राज्यनाशाय पक्षयोरुभयोरपि ।

हो तो हल्दी आदि सब पीत वस्तु और पीतवस्त्र की वृद्धि हो, सबके उपर उत्तम प्रीति हो । शुक्रका फल भी इसी तरह समझना ॥११३॥ शनि रसाधिपति हो तो कपूर अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं की तथा सुवर्ण मोती और वस्त्र इनकी मूल्यवृद्धि हो ॥ ११४ ॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर यदि प्रतिपदाको प्रवेश करे तो शुभ दायक है, द्वितीयाको धान्य वृद्धि, तृतीयाको ईतिका भय ॥११५॥ चतुर्थीको अशुभ, पंचमी को उत्तम, षष्ठी को धनसमृद्धि, सप्तमी को कुशल ॥११६॥ अष्टमी को वर्षा थोडी, नवमी को ईतिका उपद्रव, दशमी को शुभदायक, एकादशी को सुभिक्ष कारक ॥११७॥ द्वादशीको धान्यसम्पत्ति, त्रयोदशीको जलदायक चतुर्दशीको धर्थनाशकारक, पूर्णिमाको पूर्णफलदायक हो ॥११८॥ और अमावस के दिन आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य आवे तो राज्यका नाश हो, स्वकीय और पर (शत्रु) पक्षीय ये दोनो पक्षके राज्यका विनाश हो और अपना पक्ष

राज्ञां स्वपक्षदेशीया रिपवः परपक्षगाः ॥११६॥

वारफलम्—

रौद्रे रवेर्भानुवारे प्रवेशः पशुनाशनः ।
सोमे सुभिक्षदः प्रोक्तो भौमे निधनमाप्नुयात् ॥१२०॥
बुधे क्षेमं सुभिक्षं च गुरौ चार्थसमृद्धये ।
शुक्रे शान्तिकरः प्रोक्तो मन्दे मन्दफलं भवेत् ॥१२१॥

नक्षत्रयोगफलम्—

प्रविष्टे रौद्रनक्षत्रे ह्यश्विन्यां तु शुभं भवेत् ।
भरण्यामशुभं प्रोक्तं कृत्तिकायामवर्षणम् ॥१२२॥
धातृद्वये सुभिक्षं च रौद्रर्क्षे रौद्रकृद् भवेत् ।
पुष्ये जलप्लुता लोका अदितिश्चाभिवृद्धये ॥१२३॥
सार्पे भे दारुणं दुःखं सर्वसौख्यविनाशनम् ।
मघायां स्वल्पवृष्टिः स्याद् भाग्ये कीर्त्तिकरं भवेत् ॥१२४॥

के भी शत्रु के पक्षमें मिल जावें ॥ ११६ ॥

सूर्यका आर्द्रा नक्षत्रमें रविवारके दिन प्रवेश हो तो पशुओंका नाश करे, सोमवार के दिन सुभिक्ष और मंगल के दिन मरण करे ॥ १२० ॥ बुधवार के दिन क्षेम और सुभिक्ष करे, गुरुवार के दिन अर्थसिद्धि हो, शुक्र के दिन शान्तिदायक और शनिवार के दिन प्रवेश हो तो मंदफल दायक है ॥ १२१ ॥

सूर्य आर्द्रानक्षत्र में अश्विनीनक्षत्र के दिन प्रवेश हो तो शुभ, भरणी नक्षत्रके दिन अशुभ, कृत्तिकाके दिन वर्षा का नाश हो ॥१२२॥ रोहिणी और मृगशिरके दिन सुभिक्षकारक, आर्द्राके दिन भयानक, पुनर्वसुके दिन वृद्धिकारक, पुष्यके दिन प्रवेश हो तो देश जल से प्लवित हो याने अच्छी वर्षा हो ॥१२३॥ आश्लेषा के दिन भयंकर दुःख और समस्त सुखों का विनाश, मघाके दिन थोड़ी वर्षाकारक और पूर्वाफाल्गुनीके दिन कीर्त्तिकारक

उत्तरात्रितये वृद्धिः करे सर्वसुखावहम् ।
चित्रायां चित्रधान्यानि सदा शुभफलं भवेत् ॥१२५॥
स्वातौ सस्याभिवृद्धिः स्याद् विशाखारोगनाशनम् ।
मैत्रे सर्वमहीपालाः सन्तुष्टाः सर्वजन्तवः ॥१२६॥
ऐन्द्रे सर्वभयं कुर्याद् मूले सर्वभयावहः ।
जलर्क्षे चातियुद्धं स्याद् विश्वभे श्रवणे शुभम् ॥१२७॥
वासवर्क्षे तु धरणी सम्पूर्णफलदायिनि ।
शतभे जलसम्पूर्णा पूर्वाभाद्रे तु शोभनम् ॥१२८॥
नृपध्वंसः पौष्णऋक्षे विष्कम्भपञ्चकं शुभम् ।
सुकर्मा ध्रुववृद्धी च हर्षणः सिद्धिसाधकौ ॥१२९॥
शिवसिद्धौ शुभः शुक्र ऐन्द्र एते शुभावहाः ।
शेषास्तु मध्यमाः सर्वे स्वमानानुगता फले ॥१३०॥

पूर्वाह्णकाले जगतो विपत्ति र्माध्याह्निके त्वल्पफला च पृथ्वी ।
अस्तंगताद्रा बहुसस्यसम्पत् ,क्षेमं सुभिक्ष स्थिरमर्द्धरात्रौ ।१३१।
आर्द्राप्रवेशो यदि भास्करस्य, चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगो वा ।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च, सम्पूर्णसस्या वसुधा तदा स्यात् ॥
दिवार्द्रा सस्यनाशाय रात्रौ सस्यविवृद्धये ।
अस्तगेऽर्केऽर्द्धरात्रे वा समर्घं बहुवृष्टयः ॥१३३॥

अथ वर्षेशमन्त्रिप्रसङ्गाद् वर्षजन्मलग्न विचार्यते —

चैत्रमासे पुनः प्राप्ते लोकानां हितहेतवे ।
मेषसंक्रान्तिवेलायां लग्न शोध्य शुभाशुभम् ॥१३४॥
यदा शुभग्रहैर्दृष्ट लग्न स्यात् तु तदा शुभम् ।
धनधान्यादिसम्पूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम् ॥ १३५ ॥
भावा द्वादश ते मासाः सौम्याः क्रूराः ग्रहाः पुनः ।
तेषु मासेषु दिशि च फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥१३६॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर पूर्वाह्णमे प्रवेश हो तो जगत को दुःख कारक, मध्याह्नमे प्रवेश हो तो पृथ्वी थोडा फलदायक हो, दिनान्त के समय प्रवेश हो तो धान्य सम्पत्ति बहुत हो और अर्द्धरात्रिमे प्रवेश हो तो क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ १३१ ॥ जब सूर्यका आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश हो उस समय चन्द्रमा त्रिकोण या केन्द्रमे हो, तथा जलचर राशि में हो और शुभग्रह देखते हों तो सम्पूर्ण पृथ्वी धान्यमे पूर्ण हो ॥ १३२ ॥ दिनमे आर्द्रा का प्रवेश हो तो धान्यका विनाश, रात्रिमे प्रवेश हो तो धान्यकी वृद्धि, और अस्त समय अथवा अर्द्धरात्रिमे प्रवेश हो तो अन्न सस्ते हों और वर्षा अच्छी हो ॥ १३३ ॥

लोगोंके हित के लिये चैत्रमास में मेषसंक्रान्ति के समय लग्नका शुभाशुभ विचार करें ॥१३४॥ यदि लग्नमें शुभग्रह की दृष्टि हो तो शुभ और धन धान्य से पूर्ण समस्त वर्ष सुखकारी हो ॥१३५॥ बारह भाव है वे बारह मास है, जिसमे सौम्य या क्रूर ग्रह हो उस मासमे और उनकी दिशामे शुभा-

मेषप्रवेशलग्ने च यदि स्याद् वर्षजन्मनि ।
सप्तमस्थो यदा पापो धान्यजातं विनाशयेत् ॥१३७॥
धने व्यये च सौम्यश्चेत् केन्द्रे वा मेषसंक्रमे ।
स्वर्क्षे शुभसुहृद्दृष्टः सुभिक्ष व्यत्ययोऽन्यथा ॥१३८॥

मतान्तरे पुनरेवम्—

गणकैश्चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य मूलतः ।
प्रतिपल्लग्नवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥१३९॥
मेषलग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्ष राजविग्रहः ।
दक्षिणस्यां सुभिक्ष स्याद् बहुधान्यरसा च भूः ॥१४०॥
धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेघमहोदयः ।
घृततैलादिवस्तूनां पण्यानां च महर्घता ॥१४१॥
उत्तरस्यां सुभिक्ष स्याद् राजामुद्वेगकारणम् ।
मध्यदेशे महावृष्टि-निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥१४२॥
दृष्टेऽपि पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राजविग्रह ।

शुभ फल का विचार करना ॥१३६॥ मेषप्रवेशलग्नमें यदि वर्ष प्रवेश हो और सप्तम स्थानमें पाप ग्रह हो तो धान्यका नाश हो ॥ १३७॥ अथवा मेषसंक्रान्ति के प्रवेशमें धनस्थान, व्यय स्थान और केन्द्र इनमें शुभग्रह हो, तथा अपने नक्षत्र पर शुभग्रह की या मित्रग्रह की दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ १३८ ॥

ज्योतिषियोंको चैत्र मासके शुक्लपक्षका प्रतिपदाके दिन प्रारम्भ में लग्नका शुभाशुभ विचार करना चाहिये ॥१३९॥ मेष लग्न में वर्ष प्रवेश हो तो पूर्व दिशामें दुर्भिक्ष और राज्य विग्रह । दक्षिण में सुभिक्ष, पृथ्वी धान्य और रसमें पूर्ण हो ॥१४०॥ धान्यका बेचनमें लाभ, पूर्ण मेघ बरसे, घी, तेल आदि वस्तुओंकी महर्घता हो ॥१४१॥ उत्तरमें सुभिक्ष, राजाओं में उद्वेग, मध्यदेशमें महावर्षा और धान्यकी प्राप्ति हो ॥१४२॥ दृष्टमें

उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्ति-र्दक्षिणस्यां विकालता ॥१४३॥
मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्यविक्रयः ।
उदग्दक्षिणयोर्मेघा बहवो धान्यसङ्ग्रहः ॥१४४॥
पश्चिमायां स्वल्पमेघा-श्छत्रभंगश्च विग्रहः ॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्ति-श्चतुष्पदसरोगता ॥१४५॥
कर्के सुखानि पूर्वस्या-मुत्तरस्यां तु विग्रहः ।
स्यान्मासनवकं यावद् दुर्भिक्ष पश्चिमे दिशि ॥१४६॥
धान्ये मासाष्टकं याव चतुष्पदे च विक्रयः ।
दक्षिणस्यां मध्यदेशे सुखं पीडा चतुष्पदे ॥१४७॥
सिंहलग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीर्यते ।
धान्ये समर्घता मास-षट्क यावद् घनो महान् ॥१४८॥
पश्चिमायां धातुवस्तु-फलादीनां महर्घता ।
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च ॥१४९॥
पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिः श्रेयोग्रे मासपञ्चकात् ।

वर्ष प्रवेश हो तो पश्चिममें दुष्काल । पूर्वमें राजविग्रह । उत्तरमें धान्यकी प्राप्ति मध्यम और दक्षिणमें विशेष काल हो ॥१४३॥ मिथुन लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो युद्ध विशेष हो, पूर्वमें धान्यका विक्रय करना, उत्तर और दक्षिणमें वर्षा बहुत हो धान्यका सग्रह करना उचित है ॥१४४॥ पश्चिममें वर्षा थोडी, छत्रभग और विग्रह हो, मध्यदेशमें अर्द्ध प्राप्ति और पशुओं में रोग हो ॥ १४५ ॥ कर्क लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो पूर्व मे सुख, उत्तर में विग्रह हो, पश्चिम में नव मास दुष्काल रहे ॥१४६॥ आठ मास पर्यन्त धान्य और पशुओंको वेचें, दक्षिणामें मध्यदेशमें सुख और पशुओंको पीडा हो ॥१४७॥ सिंह लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो दक्षिणमे दाढवाले जन्तुओंका भय, धान्य छ मास तक सस्ते रहे और वर्षा अधिक हो ॥१४८॥ पश्चिममें धातु वस्तु और फलादिक महँगे हों । उत्तरमे महावर्षा, राजा और प्रजाको सुख हो ॥१४९॥

मध्यदेशे राजयुद्धं मासपञ्चकमुद्भसः ॥१५०॥
कन्यायां सुखिता प्राच्यां घृते महर्घता मता ।
मञ्जिष्ठादिसमर्घत्वं यावन्मासत्रयं भवेत् ॥१५१॥
मारिर्दक्षिणदेशे स्यात् तथा वह्नेरुपद्रवः ।
लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोऽन्नमहर्घता ॥१५२॥
चतुष्पदसुख प्राच्या-मुदीच्यां राजविग्रहः ।
मध्यदेशे प्रजाभङ्गः समर्घत्वं घृते पुनः ॥१५३॥
तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभङ्गश्च विग्रहः ।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रभङ्गमुपद्रवः ॥१५४॥
दुर्भिक्ष बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम ।
पश्चिमायां महायुद्ध दंष्ट्राभय महर्घता ॥१५५॥
दक्षिणस्यां सुख लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे ।
मासद्वय पश्चिमायां किञ्चिदुत्पातसम्भवः ॥१५६॥
वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्ष नवमासिकम् ।

उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घा धातवस्तदा ॥१५७॥
पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःख मासत्रयं जने ।
पश्चात् सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ॥१५८॥
दक्षिणस्यां देशभङ्गो भाविवर्षे प्रजायते ।
धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपञ्चकात् ॥१५९॥
धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम् ।
सुभिक्षं प्रबला वृष्टि-र्मध्यदेशे सरोगता ॥१६०॥
पश्चिमायां घृतं धान्य समर्घं मासपञ्चकात् ।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किञ्चित्पीडा चतुष्पदे ॥१६१॥
मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः ।
वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम् ॥१६२॥
मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्ति. किञ्चिद् धान्यमहर्घता ।
अकाले मेघवृष्टिः स्या-ल्लाभो धान्यस्य विक्रयात् ॥१६३॥

में दो महीने कुछ उत्पातका सभव रहे ॥१५६॥ वर्ष प्रवेशमें वृश्चिक लग्न हो तो पश्चिम देशमें नवमास तक दुर्भिक्ष रहे । उत्तर मे अन्नकी अर्द्धप्राप्ति, और धातु सस्ती हों ॥१५७॥ पूर्वदेश के राजाओं में विग्रह, तीन महीने मनुष्योंको दु ख, पीछे सुख और मध्यदेश मे धान्य नाश हो ॥१५८॥ दक्षिणमें आगामी वर्षमें देशभग हो, पाच महीने बाद धातुओं का विक्रय करना ॥१५९॥ धनु लग्नमें वर्ष का प्रवेश हो तो उत्तर और पूर्व देश के मनुष्योंको सुख, सुकाल और प्रबल वर्षा हो। तथा मध्यदेश में रोग हों ॥१६०॥ पश्चिममें पाच महीने बाद घी धान्य सस्ते हों, दक्षीण में लोगों को सुख और पशुओंको कुछ पीडा हो ॥१६१॥ मकर लग्नमें वर्ष प्रवेश हो तो उत्तर में बडा उत्पात, नृपक्षय, पश्चिम में एक वर्ष धान्य अच्छे उत्पन्न हो और बडा सुख हो ॥१६२॥ मध्यदेश में अर्द्ध प्राप्ति होने से धान्य कुछ महँगे हों, अकालमें मेघ वर्षा हो और धान्यको वेचनेसे लाभ

कुम्भे सुखानि पूर्वस्या-मुदग्दुर्भिक्षसम्भवः ।
हाहाकारः पश्चिमायां भवेद् धान्यमहर्घता ॥१६४॥
दक्षिणस्यां विग्रहः स्याद् मध्यदेशे महासुखम् ।
मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्नसङ्ग्रहः ॥१६५॥
मध्यदेशे धान्यनाश-श्छत्रभङ्गः क्वचिद् भवेत् ।
एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ॥१६६॥

इतिजन्मलग्नफलम् ।

अथाभ्रद्वारम्—

प्रागुक्तमनिलद्वारं यथास्थानं विचार्यते ।
यावांश्च पवनस्तावान् घनस्तेन सुखी जनः ॥१६७॥

चैत्रमासफलम्—

चैत्रेकृष्णाद्वितीयायां निरभ्रं चेन्नभो भवेत् ।
तदा भाद्रपदे मासे ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥१६८॥
चैत्र कृष्णतृतीयायां वार्दल प्रबल यदा ।
जलं पतति चेत्तत्र तदा वृष्टिस्तु कार्त्तिके॥१६९॥

चतुर्थ्यां चैत्रकृष्णस्य वर्षा दुर्भिक्षकारिणी ।
पञ्चम्यामसिते चैत्रे न दृष्टं दुर्दिनं शुभम् ॥१७०॥

मतान्तरे पुनः—

चैत्रकृष्णद्वितीयादि-पञ्चके जलवर्षणम् ।
अग्रे जलदरोधाय कथितं पूर्वसूरिभिः ॥१७१॥

यदुक्तं श्रीहीरसूरिपादैः—

चित्तस्स किसणि पक्खे बीया तीया चउथि पंचमीया ।
वरसेइ पुव्ववाओ दूरे मेहुब्भवो तासु ॥१७२॥

लौकिकमपि—

चैत्रह छट्टि भडुली, नवि वद्दल नवि वाय ।
तौ नीपजे अन्न सवि, किम्हो म करजे धाय ॥१७३॥

कृष्णपञ्चम्याः पर नैर्मल्यं नव दिनानि यावत् प्रागुक्तम् ।

चैत्रस्य कृष्णपञ्चम्यां हस्तनक्षत्रसङ्गमे ।
न विद्युद्गर्जिताभ्राणि तदा स्याद् वत्सरः शुभः ॥१७४॥

प्रबल हो और वर्षा भी हो तो कार्तिकमासमें वर्षा हो ॥ १६९ ॥ चैत्रकृष्ण चतुर्थीके दिन वर्षा हो तो दुर्भिक्ष कारक हैं और पंचमीके दिन दुर्दिन अर्थात् बादलोंसे आकाश घिरा हुआ देखनेमें न आवे तो शुभ होता है ॥ १७० ॥ चैत्रकृष्ण द्वितीया आदि पांच दिन में जलवर्षा हो तो आगे वर्षा का रोध (रूकावट) हो ऐसा प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ १७१ ॥ श्रीहीरविजय-सूरिने कहा है कि—चैत्र कृष्ण पक्षकी दूज, तीज, चौथ और पंचमी के दिन वर्षा हो तथा पूर्वका वायु चले तो मेघ का उदय विलंब से हो ॥ १७२ ॥ लौकिकमें भी कहते है कि—चैत्रकृष्ण षष्ठी को बादल और वायु न हो तो समस्त धान्य उत्पन्न हों इसमें संशय नहीं ॥ १७३ ॥ चैत्रकृष्ण पंचमी से नव दिन निर्मलता हो ऐसा पहले कहा है । चैत्रकृष्ण पंचमी के दिन हस्त नक्षत्र हो, तथा बिजली गर्जना या बादल न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥

त्रयोदशी च नवमी पञ्चमी कृष्णचैत्रगा ।
एतासु विद्युद्गर्जाभ्र-सम्भवो वृष्टिहानिकृत् ॥१७५॥
चैत्रस्य कृष्णसप्तम्या-मभ्रैश्छन्नं यदा नभः ।
रक्तवस्तुसमर्घत्व भवत्येव न संशयः ॥१७६॥
यदुक्तं-अहवा पचमी नवमी तेरस दिवसम्मि जइ हवइ गज्जो।
ता चत्तारिय मासा होइ न-वुट्ठि न संदेहो ॥१७७॥
चैत्रस्य शुक्ला पडिपद द्वितीया वा तृतीयका ।
चतुर्थी वृष्टियुक्ता चे-च्चातुर्मास्यस्तदा घनः ॥१७८॥
मतान्तरे पुन —
चैत्राद्यप्रतिपन्मेघ-गर्जितं वर्षण तथा ।
श्रावणे भाद्रमासे च तदा वृष्टिर्न जायते ॥१७९॥
लोकोऽप्यत्र साक्षी—
गाज वीज आभा नवि होय, अजुआली चैत्रइ पुरि जाय।
पुनिमचित्रा हुई अनिघणं, दामइ होणा हुइ वमणुं ॥१८०॥

पञ्चमी सप्तमी शुक्ला चैत्रे तथा त्रयोदशी ।
एतासु वार्दलं श्रेष्ठं तत्र वर्षा तु दुःखकृत् ॥१८१॥
चैत्रे शुक्ले यदार्द्रादिस्वात्यन्तेषु साभ्रता ।
जलप्रवाहवृष्टिर्नो तदा संवत्सरः शुभः ॥१८२॥
एकादश्या रवौ वारे चैत्रे शुक्लेऽपि दुर्दिनम् ।
तदा युगन्धरी ग्राह्या लाभो मासचतुष्टये ॥१८३॥
चैत्रमासे तिथिः कृष्णे चतुर्दशी तथाष्टमी ।
तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय जगतो भवेत् ॥१८४॥
चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां रजोऽनिलः ।
अथवा धूमरीपातो मेघस्तत्र न वर्षति ॥१८५॥
चैत्रे दशम्यां शनिना मघायोगे यदाम्बुदः ।
वर्षेत्तदा सर्ववर्षे धान्यस्यार्घो न जायते ॥१८६॥ इति चैत्रः ॥

वैशाखमासफलम्—

वैशाखकृष्णाप्रतिपद्युद्यच्छन्नेव भास्करः ।

शुक्ल पचमी सप्तमी और त्रयोदशी के दिन बादल हो तो अच्छा (श्रेष्ठ) है परतु वर्षा हो तो दु खकारक हो ॥१८१॥ यदि चैत्र शुक्लपक्ष आर्द्रा आदि नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र तक में बादल सहित हो किंतु जलप्रवाह रूप वर्षा न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥१८२॥ चैत्र शुक्ल एकादशी रविवारको दुर्दिन रहे तो युगधरी (जुआर) का संग्रह करना इससे चार मासमें लाभ होता है ॥१८३॥ चैत्र मासके कृष्णपक्षमें चतुर्दशी तथा अष्टमीके दिन बादल हो और उत्तरका वायु चले तो जगत्‌को शुभके लिये होता है ॥१८४॥ चैत्र शुक्ल त्रयोदशीके दिन रज युक्त वायु चले या धूमरीपात हो तो मेघ न बरसे ॥१८५॥ चैत्र शुक्ल दशमी शनिवार मघानक्षत्र सहित हो और उस दिन वर्षा भी बरसे तो समस्त वर्षमें धान्यकी मूल्य प्राप्ति न हो ॥ १८६ ॥

वैशाख कृष्ण प्रतिपदाके दिन आकाशमें प्रातःकाल सूर्य मेघ से आ-

मेघैराच्छाद्यते व्योम्नि संवत्सरहिताय सः ॥१८७॥
शुक्ले कृष्णे च वैशाखे चतुर्दश्यष्टमीदिने ।
गर्जाविद्युत्पयोवर्षा वर्षानन्दविधायिका: ॥१८८॥
मतान्तरे श्रीहीरगुरवः—
जइ वैसाख चारइ तिथि सारी, आठमि चउदसि सु कलअ
गाज विज आभु नवि दिसइ, चार मास वरसइ निसदि
वैशाखकृष्णैकादश्यां बार्दल प्रबल भवेत ।
तदा धान्यानि विक्रीय कार्यं कृषि कर्माणि ॥१९०॥
वैशाखशुक्लप्रतिपद्द्वितीया-दिनद्वये बार्दलकं शुभाय
यदा तृतीयादिवसेऽपि चाभ्र वृष्टिर्विशिष्टा परमन्नरोगः॥१
वैशाखशुक्लदशमी-द्वये न बार्दल शुभम ।
राधेऽश्विनी दिने वृष्ट्या रक्तवस्तुमहर्घता ॥१९२॥
वैशाखसितपञ्चम्या मेघवार्दलसम्भवे ।

सङ्ग्रहः सर्वधान्यानां लाभो भाद्रपदे भवेत् ॥१९३॥
राधे शुक्ले प्रतिपदि सप्तम्यादिदिनत्रये ।
वार्दलानां समुदये शीघ्र वृष्टिं विनिर्दिशेत् ॥१९४॥
एकादशीत्रये शुक्ले दुर्भिक्ष वृष्टिर्वार्दलात् ।
राधे च पूर्णिमावृष्टि-र्भाद्रे धान्यमहर्घकृत् ॥१९५॥
पञ्चम्यामथ सप्तम्यां नवम्येकादशीदिने ।
त्रयोदश्यां च वैशाखे वृष्टौ लोके शुभं भवेत् ॥१९६॥इति॥

ज्येष्ठमासफलम्—

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां ज्येष्ठे शुक्ले तथाऽसिते ।
कृष्णे दशम्यां वृष्टिः स्याद् भाद्रमासेऽतिवृष्टये ॥१९७॥
ज्येष्ठस्य दशमीरात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते ।
जलरोधाय तद्वर्षे निश्छत्रापि मही भवेत् ॥१९८॥
ज्येष्ठस्य कृष्णैकादश्यां द्वादश्यां वाऽभ्रगर्जितम् ।

तो सब धान्य का संग्रह करना भाद्रपद मासमें लाभदायक है ॥ १९३ ॥ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा और सप्तमी आदि तीन दिनों वादलों का उदय हो तो शीघ्र वर्षा होती है ॥१९४॥ शुक्लपक्ष की एकादशी आदि तीन दिनोंमें वृष्टि या वादल हो तो दुर्भिक्षकारक है और पूर्णिमा के दिन वर्षा हो तो भाद्रपद मासमें धान्य महँगे हों ॥१९५॥ वैशाख मासकी पंचमी, सप्तमी, नवमी एकादशी और त्रयोदशी इन दिनोंमें वर्षा हो तो लोकमें शुभदायक है ॥१९६॥ इति वैशाखमासफलम्।

ज्येष्ठ मासकी शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी तथा कृष्णपक्षकी दशमी इन दिनोंमें वर्षा हो तो भाद्रमासमें वर्षा अधिक हो ॥१९७॥ ज्येष्ठ मासकी दशमीको रात्री मे चन्द्रमा न दीखे तो उस वर्षमें वर्षाका रोध हो और छत्रहीन पृथ्वी हो ॥ १९८ ॥ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष की एकादशी और द्वादशीके दिन मेघ गर्जना हो, विजली चमके और वर्षा हो

विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद् वत्सरः स्यात् तदा शुभः ॥१९९॥
ज्येष्ठाषाढसमुद्भूते रोहणीदिवसे नभः ।
साभ्रं वृष्टिविनाशाय समेघं वृष्टिवर्द्धनम् ॥२००॥
ज्येष्ठे मूलदिने वृष्टि-र्ज्येष्ठान्ते दिनमद्वये ।
दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठा विद्युत्पांशुयुतानिलः ॥२०१॥
ज्येष्ठमासे तथाषाढे यत्र यत्राहृवर्षणम् ।
श्रावणे भाद्रमासे वा तद्दिने वृष्टिनिर्णयः ॥२०२॥
ज्येष्ठे श्रुतिद्वये विद्यु-द्गर्जितं वा सुभिक्षदम् ।
निरभ्रा रोहिणी चेन्दु-युक्ता वृष्टिविनाशिनी ॥२०३॥
ज्येष्ठे शुक्लद्वितीयाया गर्भपाताय गर्जितम् ।
शुक्ले तृतीयार्द्रायोगे वृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शिनी ॥२०४॥
ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयाद्या-वाऽऽर्द्रादिका विलोक्यते ।
स्वात्यन्ता दशनक्षत्री तद्वृष्टिर्गर्भपातिनी ॥२०५॥

यदि ज्येष्ठस्य पञ्चम्यां वृषार्के वृष्टिम्भवेत् ।
पूर्वाषाढादिने वा स्यान्मूले वृष्टिन दोषकृत् ॥२०६॥
ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूल प्रस्रवते यदि ।
दिनषष्टि व्यतिक्रम्ये ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥२०७॥
पादानां संख्यया वृष्टि-वृष्टिरोध विनिर्दिशेत् ।
यदा श्रुतिधनिष्ठाहे न भवेज्जलवर्षणम् ॥२०८॥
ज्येष्ठानुज्ज्वलपक्षे तु नक्षत्रे श्रवणादिके ।
अवर्षणे न वर्षा स्याद् वृष्टौ तु विपुल जलम् ॥२०९॥
चित्रास्वातिविशाखासु वार्दलानि तदा शुभम् ।
नाषाढवृष्टिर्नैर्मल्ये श्रावणे तासु वर्षणम् ॥२१०॥ इति
आषाढमासफलम् -
ज्येष्ठे व्यतीते प्रथमा प्रतिपद् घनगर्जितैः ।
विद्युता वर्षणेनापि द्विमास्यां मेघबाधिका ॥२११॥

यदि ज्येष्ठ मासमे पचमीके दिन, वृषभसंक्राति के दिन, पूर्वाषाढा और मूल नक्षत्रके दिन वर्षा हो तो दोषकारक नहीं होती ॥२०६॥ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा के दिन मूलनक्षत्रमें वर्षा हो तो साठ दिनके बाद वर्षा हो ॥२०७॥ यदि श्रवणके प्रथम चरणमें वर्षा हो तो आषाढमें, द्वितीय चरणमें श्रावणमें, तृतीय चरणमें भाद्रपदमे और चतुर्थ चरण में वृष्टि हो तो आश्विन मासमें वर्षा का अवरोध होता है । इसी प्रकार धनिष्ठा के चरणों में भी जानना चाहिये ॥२०८॥ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष मे श्रवणादि नक्षत्रों में वर्षा न हो तो आगे वर्षा न बरसे और वर्षा हो तो आगे बहुत वर्षा हो ॥२०९॥ चित्रा स्वाति और विशाखा नक्षत्रके दिन बादल हो तो शुभ, आषाढ में वर्षा न हो और निर्मल हो तो श्रावणमें वर्षा हो ॥२१०॥ इति ज्येष्ठमासफलम् ।

ज्येष्ठ मास की समाप्ति में पहला प्रतिपदा के दिन मेघ गर्जना हो, बिजली चमके और वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा न बरसे ॥ २११ ॥

कृष्णाषाढचतुर्थ्यां चेद् दुर्यन्नाच्छादितो रविः ।
सार्द्धत्रिमास्याः प्रान्ते स्यात् तदा मेघमहोदयः ॥२१२॥
आषाढकृष्णतुर्यायां-मस्ते भास्करमण्डले ।
न वर्षति यदा मेघ-स्तदा कष्टतरं जलम् ॥२१३॥
आषाढे कृष्णपक्षम्यां-ष्टम्यां चन्द्रोदयक्षणे ।
मेघैराच्छादितं व्योम नीरपूर्णा तदा मही ॥२१४॥
यदा लोकः-आसाढाधुरी आठमी, नवमीनी रत्ति जोय।
चांदो बादल छाइओ, तो अन्न सुहँगा होय ॥२१५॥
अन्यत्रापि-आसाढ धुरे आठमी, चादा बादल छाय।
चार मास वरसालुआ, पाके भाडे राय ॥२१६॥
आषाढे नवमी कृष्णा विद्युद्दम्भोदगोस्वरे ।
तदा धान्यानि विक्रीय करणे हानिना भव ॥२१७॥
आषाढकृष्णपक्षे च धनिष्ठा श्रवण तथा ।

गर्जाविद्युद्विहीनं स्याद् देशभंगस्तदादिशेत् ॥२१८॥
आषाढमासे रोहिण्यां विद्युद्वर्षा शुभाय सा।
स्वातियोगेऽपि चाषाढे तथैव फलमिष्यते ॥२१९॥
आषाढशुक्लप्रतिपत्-त्रये वर्षा यदा भवेत् ।
एको द्वादश च द्रोणाः षोडशापि क्रमाज्जलम् ॥२२०॥
यदुक्तम्—आसाढी पडिवा दिने, जइ घन गरजंत बीज ।
एक द्रोण पाणी पडे, बार द्रोण वली बीज ॥२२१॥
द्रोण सोल पाणी पडे, त्रीज तणे दिन जोय।
चउथे कण मुहंगो करे, जो घन बरसा होय ॥२२२॥
आषाढे शुक्लपञ्चम्या-दिके तिथिचतुष्टये ।
यावन्त्यभ्राणि वर्षासु तावन्मेघमहोदयः ॥२२३॥
शुक्लाषाढनवम्यां च दशम्यां वर्षणं शुभम् ।
दुर्भिक्षं जायते नूनं वाते वृष्टिं विना कृते ॥२२४॥
आषाढस्याप्यमावस्यां नवम्यां शुक्लकृष्णयोः ।

॥२१८॥ आषाढमासमें रोहिणी नक्षत्रके दिन विजली या वर्षा हो तो लोक के हितकारी है। यहि फल आषाढमें स्वाति योग होने पर होता हे॥२१९॥ आषाढ शुक्ल प्रतिपदा आदि तीन तिथियोंमे यदि वर्षा हो तो क्रमसे एक, वारह तथा सोलह द्रोण जल बरसे॥ २२० ॥ कहा है कि— शुक्ल पडिवा के दिन यदि मेघ, गर्जना, विजली हो तो एक द्रोण, इसी तरह दूज के दिन हो तो वारह द्रोण, और तीज के दिन हो तो सोलह द्रोण पानी बरसे। यदि चोथ के दिन वर्षा हो तो धान्य महँगे हो॥२२१-२२२॥ आषाढ शुक्ल पचमी आदि चार तिथियों में जितने वादल हों उतने ही वर्षा ऋतुमें मेघका उदय जानना ॥ २२३ ॥ आषाढ शुक्ल नवमी और दशमी को वर्षा होना शुभ हे और केवल वायु ही चले और वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष होता है॥२२४॥ आषाढ की अमावास्या और शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की नवमी के दिन सूर्य

उदये तु सहस्रांशु-र्निर्मलो यदि दृश्यते ॥२२५॥
मध्याह्ने वृष्टिरूप स्यात् सूर्यस्यास्तक्रमे तथा ।
अग्रे तोयं न पश्येत वर्जयित्वा महानदीम् ॥२२६॥
लोके तु—आसाढी अमावसी, जइ नवि वरसे मेह ।
तो किम बूजे मारुआ, वरसत नावे छेह ॥२२७॥
चतुर्थ्यां तु सिताषाढे विद्युद्वर्षाश्च गर्जितम् ।
तदा जलं समुद्रे स्यात् पुस्तके वा प्रदृश्यते ॥२२८॥
आषाढ्यां प्रथमे यामे वार्दले न सुभिक्षता ।
मासमेकं जल धान्य स्तोक लोके महाभयम् ॥२२९॥
धान्यस्वल्प बहुजल वार्दले प्रहरद्वये ।
तुल्यं धान्यतृणा याम-चतुष्टये सवार्दलैः ॥२३०॥
यामषट्के ग्रीष्मधान्यं न किञ्चिदपि जायते ॥ इत्याषाढमासः ।

श्रावणमासफलम्—

श्रावणस्यादिमे पक्षेऽश्विन्यां वार्दलवृष्टयः ।

सर्वान् दोषान् निहन्त्येष सुभिक्षं भुवि जायते ॥२३१॥
श्रावणे बहुला विद्युद्गर्जितं च पुनर्घने ।
वृष्टिस्तदा मनोऽभीष्टा कुरुते वत्सरं शुभम् ॥२३२॥
श्रावणे कृष्णपक्षे चे-चतुर्थ्यामरुणोदये ।
वार्दलं वृष्टिरनिशं सर्वत्र सुखवृष्टिकृत् ॥२३३॥
श्रावणे कृष्णपञ्चम्यां निर्मलं गगनं शुभम् ।
तदाष्टादशयामान्त-र्घनस्तोयं व्यपोहति ॥२३४॥
चतुर्दश्यां च कृष्णायां वार्दलानि भवन्ति न ।
तदा दानवदुःखानि न भवन्ति महीतले ॥२३५॥
अमावास्यां श्रावणस्य यदि वृष्टो घनाघनः ।
चराचरं तदा विश्वं सुखभाग् न चलाचलम् ॥२३६॥
चित्रास्वातिविशाखासु श्रावणे न जलं यदा ।
तदा कुल्यादिकं कृत्वा नदीतीरे गृहं कुरु ॥२३७॥
नभःप्रथमपञ्चम्यां यदि वृष्टः पयोधरः ।

श्रावण मास के प्रथम पक्ष (कृष्णपक्ष) में अश्विनीनक्षत्र के दिन मेघ बरसे तो सब दोष दूर होकर सुभिक्ष होता है ॥२३१॥ श्रावण मे बहुत बिजली चमके, गर्जना हो और वर्षा हो तो मनोवाञ्छित वर्षा हो और सवत्सर शुभ हो ॥२३२॥ श्रावण कृष्णा चतुर्थीको सूर्योदयके समय बादल तथा वर्षा हो तो सर्वत्र निरन्तर सुखदायक वर्षा हो ॥२३३॥ श्रावणकृष्णा पञ्चमीके दिन आकाश निर्मल हो तो श्रेष्ठ है, इसमे अठारह प्रहरके बाद मेघ वर्षा हो ॥ २३४ ॥ श्रावण कृष्णा चतुर्दशीके दिन बादल न हो तो दानवोंसे दुःख पृथ्वी पर न हों ॥२३५॥ श्रावणकी अमावसके दिन वर्षा हो तो चराचर विश्व सुखी नहीं होता ॥२३६॥ श्रावण में चित्रा स्वाति और विशाखा नक्षत्र के दिन वर्षा न हो तो कूप आदि खोदकर नदीके किनारे घर बनाना उचित है ॥२३७ ॥ श्रावणके प्रथम पक्षकी पञ्चमीको वर्षा हो

तदा भूश्चतुरो मासान् भवेज्जलसमाकुला ॥२३८॥
श्रावण पहिली पचमी, जो वरसे सखि मेह ।
चार मास नीझर झरे एम भणे महदेव ॥२३९॥

मतान्तरे पुनः—

श्रावण अथवा भद्दवइ, पचमी जइ वरसेय ।
ईति उपद्रव चालवो, अणचिन्त होसी तेय ॥२४०॥

(कृष्णपञ्चमी विषय वा)

श्रावणे शुक्लसप्तम्या-मस्त याते दिवाकरे ।
न वर्षति यदा मेघो जलाशा मुञ्च सर्वथा ॥२४१॥
अष्टम्या श्रावणे शुक्ले प्रातर्वार्दलडम्बरम ।
रविराच्छादितस्तेन पृथिव्येकार्णवा भवेत ॥२४२॥
मेघैराच्छादितश्चन्द्रः पूर्णायां समुदीयते ।
तदा स्वस्थं जगत सर्वं राज्यमारोग्य घनो महान ॥२४३॥
श्रावणे कृष्णपक्षे वा पूर्वाभाद्रपदासु च ।
चतुर्थ्यां मेघवृष्टिश्चेत तदा मेघमहोदयः ॥२४४॥

शुक्ला चतुर्दशी पूर्णा चतुर्थी पञ्चमी तथा ।
सप्तमी चेच्छ्रावणस्य वृष्टियुक्ता शुभं तदा ॥२४५॥
कर्कटो यदि भिद्येत सिंहो गच्छत्यभिन्नकः ।
तदा धान्यस्य निष्पत्ति-र्जायते पृथिवीतले ॥२४६॥
यदुक्तम्—सुह भिन्नो पंचायणह, कक्कह भिन्नि पुट्टि ।
तो जाणिज्जइ भड्डुली, मासब्भन्तर वुट्टि ॥२४७॥
श्रावणे शुक्ल सप्तम्यां स्वातियोगे जल यदा ।
प्रजानन्दः सुख राज्ये बहु भोगान्विता मही ॥२४८॥
एकादश्यां नभः कृष्णे यदि वर्षा मनागपि ।
तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥२४९॥
नभश्चतुर्दशी राका चतुर्थी पञ्चमी तथा ।
सप्तमी वृष्टियुक्ता चेद् वर्षं शुभ न चान्यथा ॥२५०॥

भाद्रमासफलम् –

भाद्रमासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते ।

पूर्णिमा, चतुर्थी, पचमी और सप्तमी इन दिनों में वर्षा हो तो वर्ष शुभ-दायक होता है ॥२४५॥ यदि कर्कसक्रातिके दिन वर्षा हो और सिंहसक्राति के दिन वर्षा न हो तो पृथ्वी पर धान्य बहुत उत्पन्न हो ॥२४६॥ कहा है कि— सिंह सक्रातिकी आदिमें और कर्कसक्रातिके अंतमें वर्षा होतो हे भड्डली! एक मासके भीतर वर्षा हो ॥२४७॥ श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वाति योग में जल बरसे तो प्रजाको आनन्द, राज्यमें सुख और अनेक भोगों से युक्त पृथ्वी हो ॥२४८॥ श्रावण कृष्ण एकादशी को यदि थोडी भी वर्षा हो तो अगला वर्ष शुभ हो इसमे सशय नहीं ॥२४९॥ श्रावण मास की चौदश, पूर्णिमा, चतुर्थी, पञ्चमी तथा सप्तमी के दिन वर्षा हो तो वर्ष अच्छा हो अन्यथा नहीं ॥२५०॥ इति श्रावणमासफलम् ॥

भाद्रमासमें द्वितीया के दिन यदि चद्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण प्रकारसे वर्षा

तदा सम्पूर्णवर्षा स्या-दन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥२५१॥
भाद्रे च शुक्लपञ्चम्या जलं दत्ते न चेद् घनः ।
दैवकोपात् तदा ज्ञेयो सज्जनोऽपि च दुर्जनः ॥२५२॥
यद्यगस्तेरुदयने वर्षा हर्षाय जायते ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्ति-र्न चेद् भिक्षापि दुर्लभा ॥२५३॥
सप्तम्या भाद्रमासस्य न वर्षा न च गर्जितम् ।
विद्युच्छिद्योतने नैव दैव कालस्य नाशकः ॥२५४॥
नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टिर्दुष्कालमादिशेत् ।
एकादश्यां तु तस्यैव घनो धान्यसमर्घदः ॥२५५॥
भाद्रपदे दशम्यां चेन्निर्मलं गगनं यदा ।
मुद्गा माषाश्च चवला निष्पद्यन्ते घना जने ॥२५६॥
सिंहेऽर्कदिवसे वृष्टि-र्न शुभाय नृणां स्मृता ।
दैवाज्जाते घने पश्चाद् वृष्टिर्दिनद्वयान्तरे ॥२५७॥
तदा तद्दूषण नास्ति मासमेक प्रवर्षति ।

भाद्रे चतुर्दशीवृष्टिर्जने रोगाय जायते ॥२५८॥ इति ।

आश्विनमासफलम्—

आश्विनस्य चतुर्थ्यां चेद् वार्दलान्यरुणोदये ।
तदा क्षेमाय लोकानां वृष्टिः सञ्जायते शुभा ॥२५९॥
आश्विनस्यासिते पक्षे दशम्यां यदि वार्दलम् ।
विद्युद्वर्षाथवा माष-तिलानामर्घवृद्धये ॥२६०॥
सप्तम्याऽऽश्वयुजिमासे सितेऽष्टमी जलान्विता ।
सुभिक्षं तत्र चादेश्यं राजानः शान्तविग्रहाः ॥२६१॥ इति ।

कार्तिकमासफलम्—

एकादश्यां कार्त्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ।
आषाढे च तदा वृष्टि-र्जायते नात्र संशयः ॥२६२॥
द्वितीयायां तृतीयायां कार्त्तिके वृष्टिलक्षणम् ।
भाविवर्षे बहुजलं न चेत् तस्मिन्न वर्षणम् ॥२६३॥
द्वादश्यां कार्त्तिके रात्रौ मार्गस्य दशमीदिने ।

है। भाद्रमासकी चतुर्दशी को वर्षा हो तो मनुष्यों को रोग करती है ॥२५८॥ इति भाद्रमासफलम् ॥

आश्विनमासकी चतुर्थी के दिन यदि सूर्योदयके समय बादल हो तो मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रेष्ठ वर्षा हो ॥ २५९ ॥ आश्विन कृष्ण दशमी के दिन यदि बादल बिजली या वर्षा हो तो उड़द और तिल महँगे हो ॥ २६०॥ आश्विन शुक्ल सप्तमी और अष्टमी जलयुक्त हो तो सुभिक्ष और राजाओं में सग्राम आदिकी शान्ति रहे ॥ २६१ ॥ इति आश्विनमासफलम् ॥

कार्त्तिकमासकी एकादशी के दिन बादल दीखे तो आषाढमासमें वर्षा हो इसमें सदेह नहीं ॥२६२॥ कार्त्तिक की द्वितीया और तृतीया के दिन वर्षाका लक्षण हो तो अगले वर्षमें अधिक वर्षा हो अन्यथा वर्षा न हो ॥ २६३॥ कार्त्तिक द्वादशी को रात्रिके समय, मार्गशिर दशमीको दिनमें, पौष०

पञ्चम्यां पौषमासस्य सप्तम्यां माघमासके ॥२६४॥
धाराधरो यदा वृष्टिं कुरुते वासुगर्जितम् ।
तदा च श्रावणे मासे सलिलं नैव दृश्यते ॥२६५॥
कार्त्तिके च द्वितीयायां तृतीयानवमीदिने ।
एकादश्यां त्रयोदश्यामभ्राद् वृष्टिर्घनो महान् ॥२६६॥
कार्त्तिके यदि सङ्क्रान्तेः पर्यन्ते दिवसद्वये ।
महावृष्टिस्तदा वर्षे शुभा भाविनि वत्सरे ॥२६७॥ इति ।

मार्गशीर्षमासफलम् —

मार्गशीर्षप्रतिपदि न विद्युन्नैव गर्जितम् ।
न वृष्टिश्चेत् तदा गर्भे कुशल कुशलोदितम् ॥२६८॥
चतुर्थ्यामथ पञ्चम्यां मार्गशीर्षस्य वार्दलम् ।
तदा भाविनि वर्षे स्याद् वर्षापूर्णं महीतलम् ॥२६९॥
मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नैर्मल्यं चेद्दिवानिशम् ।
धान्यं महर्घं वैशाखे साभ्रतायां महर्घता ॥२७०॥

मार्गस्य शुक्लद्वादश्या-ममायामथ वर्षणम् ।
तदा वर्षं शुभ भावि भावनीयं सुभावनैः ॥२७१॥ इति ।

पौषमासफलम्—

कृष्णाष्टम्यां पौषमासे यदा वृष्टिर्न जायते ।
तदार्द्राऽर्कसमायोगे एकीकुर्याज्जलैः स्थलम् ॥२७२॥
पौषे कृष्णादशम्यां चेद् रात्रौ वर्षति वारिदः ।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥२७३॥
पौषे विद्युच्चमत्कारो गर्जिताभ्रादिसम्भवः ।
जानीयान्निश्चितं तेन जगत्यां मेघदोहदः ॥२७४॥
विद्युच्चमत्कृतिर्वर्षा पौषे वार्दलसम्भवात् ।
मेघस्यवर्द्धते गर्भो जगदानन्ददायकः ॥२७५॥
वृष्टे मेघे पौषषष्ठ्यां भाद्रे कृष्णे घनोदयः ।
पौषशुक्ले मेघवृष्टौ श्रावणे स्यादवर्षणम् ॥२७६॥
सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले विद्युच्च गर्जितम् ।

-की शुक्ल द्वादशी को या अमावसको वर्षा हो तो अगला वर्ष शुभ हो ॥ २७१ ॥ इति मार्गशीर्षमासफलम् ॥

पौष कृष्ण अष्टमीके दिन यदि वर्षा न हो तो सूर्यका आर्द्राके संयोग में जल स्थल एकही हो जाय याने आर्द्रार्कमें अच्छी वर्षा हो ॥ २७२ ॥ पौष कृष्णादशमीको रात्रिमें वर्षा हो तो भाद्रमासमें बहुत वर्षा हो ॥ २७३ ॥ पौष मासमें बिजली चमके, गर्जना और बादल आदि हो तो पृथ्वीमें मेघ का गर्भ रहा जानना ॥ २७४ ॥ पौष में बिजली चमके, वर्षा तथा बादल हो तो जगत् को आनन्द देनेवाला मेघ का गर्भ वृद्धि को प्राप्त होता है ॥ २७५ ॥ पौष मासकी षष्ठीके दिन वर्षा हो तो भाद्रमास के कृष्णपक्ष में वर्षा हो। पौष शुक्लमें वर्षा हो तो श्रावणमें वर्षा न हो ॥ २७६ ॥ पौष शुक्ल सप्तमी आदि तीन दिन बिजली और गर्जना हो तो सुख संपदा देने

तदा मेघस्य गर्भः स्या-दचलः सुखसम्पदे ॥२७७॥
एकादश्यां तथा षष्ठ्यां पूर्णायां दर्शकेऽथवा ।
न वृष्टिः स्यात् तदाषाढे घनः प्रोक्तो घनाघनः ॥२७८॥
पौषशुक्लचतुर्दश्यां विद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।
कृष्णपक्षे तथाषाढे भवेन्मेघमहोदयः ॥२७९॥
विद्युन्मेघो धनुर्मत्स्यो यद्येकमपि नो भवेत् ।
न ऋक्षं वर्षति तदा चिह्नकाले तु वर्षति ॥२८०॥
अनेन ज्ञायते सर्वं वर्षणं वाप्यवर्षणम् ।
एतद्धि परमं गुह्यं गर्भाधानस्य लक्षणम् ॥२८१॥
विद्युत्संयोगजं चिह्नं न देयं यस्य कस्यचित् ।
गुरुभक्तस्य बोधाय तथापि किञ्चिदुच्यते ॥ २८२॥
नभःप्रदीप प्रच्छाद्य गजदैरावतान्वितः ।
विद्युत्कुमारीसंयोगाद् देवेन्द्रो गर्भकारकः ॥ २८३ ॥
उत्तरस्यां यदा विद्युत्-स्वर्णवर्णा प्रदीप्यते ।

सा विद्युज्जलदा ज्ञेया शीघ्रं मेघमहोदयः ॥ २८४ ॥
ऐन्द्री च जलदा विद्युदाग्नेयी जलनाशिनी ।
याम्या चाल्पजला प्रोक्ता वातं करोति वायवी ॥२८५॥
प्रभूतजलदा ज्ञेया वारुणी सस्यसम्पदे ।
नैर्ऋतिर्निर्जला प्रोक्ता कौबेरी क्षिप्रवर्षिणी ॥२८६॥
ऐशानी लोकशुभदा विद्युद्भेदा इति स्मृताः ।
यत्र देशे सुभिक्षं स्याद् विद्युत्तत्रैव गच्छति ॥२८७॥
दिक्षु भूता स्थितिर्गुप्ता मेघानां मार्गदर्शिनी ।
विद्युद्धीना न गर्जन्ति न वर्षन्ति जलं विना ॥२८८॥
अतिवातश्च निर्वातश्चात्युष्णमनुष्णता ।
अत्यभ्रं च निरभ्रं च षडेते वृष्टिलक्षणाः ॥२८९॥
चतुःकोटिसहस्राणि चतुर्लक्षोत्तराणि च ।
मेघमालामहाशास्त्र तन्मध्यादेतदुद्धृतम् ॥२९०॥

शीघ्र ही मेघका उदय जानना ॥ २८४ ॥ पूर्व दिशामे बिजली चमके तो जलदायक है । आग्नेय दिशामें चमके तो जलका नाशकारक है । दक्षिण में चमके तो थोडा जल बरसे । वायव्य दिशा में चमके तो वायु चले ॥ २८५॥ पश्चिम दिशामें बिजली चमके तो बहुत वर्षा हो और धान्य सम्पति अच्छी हो । नैर्ऋत्य दिशामे चमके तो जलवर्षा न हो । उत्तर दिशा में चमके तो शीघ्र ही जल बरसे ॥२८६॥ ईशान दिशामें बिजली चमके तो मनुष्य को सुखदायक है , ये बिजली के लक्षण कहे । जिस देश में सुभिक्ष हो वहा ही बिजली जाती है ॥२८७॥ यह दिशाओंमे स्थित रह कर मेघों को मार्ग दिखाती है । बिजली के बिना गर्जना नहीं होती और जलके बिना वर्षा नहीं होगी ॥२८८॥ वायु का अधिक चलना या नहीं चलना, अधिक उष्णता या ठंडी, अधिक बादल या बादल रहित, ये छ वृष्टिके लक्षण हैं ॥२८९॥ चार करोड़ हजार और चार लाख अधिक जो

अश्वप्लुतं माधवगर्जितं च, स्त्रीणां चरित्रं भवितव्यतां च।
अवर्षणं चाप्यतिवर्षणं च, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः॥
पौषमासे श्वेतपक्षे ऋक्ष शतभिषग् यदा।
वाताभ्रविद्युत्पञ्चम्यां गर्भश्चैव प्रजायते॥२०२॥
स चाषाढे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम्।
द्रोणसञ्ज्ञस्तत्रमेघः सप्तरात्रं प्रवर्षति॥२०३॥
सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले षोडशादिमत्रयम्।
विद्युत्तुषारवाताभ्र-हिमैर्गर्भसमुद्भवः॥२०४॥
एकादशी पौषशुक्ले सहिमा विद्युता युता।
सजला रोहिणीयोगाच्छुभाऽऽदेश्या विचक्षणैः॥२०५॥
मतान्तरे तु–एकादश्यामहोरात्रं कृत्तिकाभोगसम्भवे।
पौषशुक्ले साभ्रताया रक्तवस्तुमहर्घता॥२०६॥
पौषे मूलार्क्षके दर्शे विद्युदभ्रातिगर्जितम्।

वर्षायां चतुरो मासान् दत्ते मेघमहोदयम् ॥२९७॥
पौर्णमासी द्वितीया च विद्युता वा हिमान्विता ।
वर्षा निष्पत्तिरादेश्या मेघैश्छन्नैस्तथाम्बरे ॥२९८॥
आषाढस्य त्वमावास्यां प्रबलं जलमादिशेत् ।
निष्पत्तिः सर्वसस्यानां प्रजानां च निरुपद्रवाः ॥२९९॥
गावः पयाण्यः सर्वत्र सर्वाण्यामोदिता प्रजा ।
प्रथमे श्रावणस्यापि पक्षे द्रोणं समादिशेत् ॥३००॥
नागदेवो द्वितीयायां किञ्चित् सर्पभयं भवेत् ।
अमावास्यामर्कवारे भौमे वा मेघवर्षणात् ॥३०१॥
पूर्णिमास्यां यदा पौषे चन्द्रमा नैव दृश्यते ।
उत्तरस्यां दक्षिणस्यां यदा विद्युत्प्रदर्शनम् ॥३०२॥
अभ्रच्छन्नं नभो वापि महावृष्टिं तदादिशेत् ।
अमावास्यां श्रावणस्य नूनं भाविनि वत्सरे ॥३०३॥

२९६॥ पौषकी अमावसको मूल नक्षत्र हो और उस दिन बिजली, बादल और अधिक गर्जना हो तो वर्षाके चारों मास मेघका उदय जानना ॥२९७॥ पौषकी पूर्णिमा और द्वितीयाके दिन बिजली चमके, हिम पडे, तथा आकाश बादलों से आच्छादित रहे तो वर्षा अच्छी होती है ॥२९८॥ यह चिह्न हो तो आषाढ अमावास्याको प्रबल जलवर्षा हो, सब प्रकारके धान्य की प्राप्ति और प्रजा उपद्रव रहित हो ॥२९९॥ सब जगह गौ दूध देनेवाली हों तथा समस्त प्रजा आनंदित हो । श्रावणके प्रथमपक्षमें द्रोणनामक मेघ बरसे ॥३००॥ द्वितीयाके दिन आश्लेषा हो तो कुछ सर्पका भय हो। अमावास्या को रविवार या मंगलवार हो और उस दिन मेघ बरसे तो ॥ ३०१॥ तथा पौषकी पूर्णिमा के दिन बादलों से चन्द्रमा न दीखे, उत्तर दक्षिणमें बिजली चमके ॥३०२॥ और आकाश बादलोंसे आच्छादित रहे तो आगामी वर्षमें श्रावणकी अमावास्याको निश्चयसे महावर्षा हो ॥३०३॥

पौषस्य कृष्णसप्तम्यां* स्वातियोगे जलं यदा ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं जायते नात्र संशयः ॥३०४॥
अभ्रच्छन्ने जलं स्वल्पं जलपाते महाजलम् ।
त्रयोदशीत्रये कृष्णे पौषे विद्युच्च गर्भदा ॥३०५॥
ऐन्द्री विद्युदमावस्या दर्शनं वा हिमस्य चेत् ।
अभ्रच्छन्नं नभो वापि सुभिक्षं जायते तदा ॥३०६॥

माघमासफलम् --

न माघे पतितं शीतं ज्येष्ठे मूलं न रक्षितम् ।
नार्द्रायां पतितं तोयं तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥३०७॥
सप्तम्यादित्रये माघे शुक्ले बार्दलयोगतः ।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद् विवाहाद्युत्सवा जने ॥३०८॥

अष्टम्यां चन्द्रनैर्मल्ये राज्ञां राज्यपरिक्षयः ।
अभ्राच्छादितसूर्यस्यो-दयस्त्रासाय देहिनाम् ॥३०९॥
यतः-अहवा सत्तमि निरमलो, अट्ठमि वादल होय ।
तो आषाढे कट्ठ करी, श्रावण पायस होय ॥३१०॥
माघनवम्यां शुक्ले परिवेषः शशिनि दृश्यतेऽवश्यम् ।
आषाढे वर्षायास्तदान्तरायो भवेदग्रे ॥३११॥
माघे दशम्यां हि शुभाय वर्षा, तन्नवम्यां यदि चेद्वर्षा ।
हर्षाय वर्षातिशयो न कश्चिद्, वर्षागमे मेघमहोदयेन ॥१२॥
माघमासे चतुर्दश्यां प्रहरे यत्र वार्दलम् ।
वर्षाकाले तत्र मासे न वर्षति पयोधरः ॥३१३॥

श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—

माहमासे जो हिमपडे, वरसे विज्जु लवेइ ।
तो जाणिजे डोहला, पुरे पुन्न करेइ ॥३१४॥

हो ॥३०८॥ अष्टमीके दिन चन्द्रमा निर्मल हो तो राजाओंमें विग्रह हो। और सूर्य बादलोंसे आच्छादित उदय हो तो मनुष्यों को भयके लिये हो ॥३०९॥ अथवा सप्तमी निर्मल हो और अष्टमीको बादल हो तो आषाढमे वर्षा न वरसे और श्रावणमें वर्षा हो ॥३१०॥ माघ शुक्ल नवमीको चंद्रमा का परिवेष मंडल अवश्य हो तो आगे आषाढ मासमें वर्षाका रोध (रूकावट) हो ॥ ३११ ॥ माघकी दशमीको वर्षा हो और नवमीको वर्षा न हो तो शुभ प्रसन्नताके लिये हो और वर्षाऋतुमे मेघका महा उदय हो इसमें कुछ अतिशयोक्ति नहीं है ॥३१२॥ माघमासकी चतुर्दशी के दिन जिस प्रहरमे जिस दिशामें वादल हो तो वर्षाकालके उस मासमें मेघ नहीं बरसे ॥३१३॥ श्रीहीरसूरिकृत मेघमाला मे कहा है कि- माघमास में हिम पडे, वर्षा हो, बिजली चमके तो गर्भका पूर्ण उदय जानना ॥३१४॥ माघमासकी कृष्ण

माहे घहुली * सत्तमी फग्गुण पंचमी य चित्त पीयाए।
वइसाह पढम पडिवय हवइ मेहाओ सुभिक्खं ॥३१५॥
नवमी दसमी इगारसी माहे किसणम्मि जइ हवइ विज्जू।
भद्दवय सुद्ध नवमी दसमी एगारसी य पउरजलं ॥३१६॥
महासुभिक्षमादेश्यं राजानो निरुपद्रवाः।
सप्तमी निर्मला नेष्टा श्रेष्टा वृष्टिबलान्ननु ॥३१७॥
केवलकीर्तिदिगम्बरोऽप्याह—
माघस्य शुक्लसप्तम्या यदाभ्र जायतेऽभितः।
तदा वृष्टिर्घना लोके भविष्यति न संशयः ॥३१८॥
स्वातियोग —
माघे च कृष्णसप्तम्या स्वातियोगेऽभ्रगर्जितम्।
हिमपाते चण्डवाते सर्वधान्यैः प्रजासुखम् ॥३१९॥
तथैव फाल्गुने चैत्रे वैशाखे स्वाति योगजम्।

विद्युदभ्रादिकं श्रेष्ठ-माषाढेऽपि सुभिक्षकृत् ॥३२०॥

वराह प्राह—

यद्रोहिणीयोगफलं तदेव, स्वातावषाढासहिते च चन्द्रे ।
आषाढशुक्ले निखिल विचिन्त्य, योऽस्मिन् विशेषस्तमहं प्रवक्ष्ये
स्वातौ निशांशे प्रथमेऽभिवृष्टे, सस्यानि सर्वाण्युपयान्ति वृद्धिम्
भागे द्वितीये तिलमुद्गमाषा, ग्रैष्मं तृतीयेऽस्ति न शारदानि ॥
वृष्टेऽह्निभागे प्रथमे सुवृष्टि-स्तद्वद्द्वितीये तु सकीटसर्पाः ।
वृष्टिस्तु मध्याऽपरभागवृष्टे-र्निश्छिद्रवृष्टिर्द्युनिश प्रवृष्टे ।२३।
समुत्तरेण तारा चित्रायाः कीर्त्यते ह्यपांवत्सः ।
तस्यासन्ने चन्द्रे स्वातेर्योगः शुभो भवति ॥३२४॥ इति ।

वैशाखमें स्वातियोगमें बिजली और बादल आदि हो तो आषाढमें अधिक सुभिक्षकारक है ॥३२०॥ वराहमिहिराचार्य कहते हैं कि– जैसे चन्द्रमाके साथ रोहिणीयोग का फल है उसी तरह आषाढ नक्षत्र (पूर्वा उत्तराषाढा) और स्वातिनक्षत्रके साथ चन्द्रमाके योगका फल भी वैसा ही है । आषाढके समस्त शुक्लपक्षमें इनका अच्छी तरह विचार करें, इनमें जो विशेष है उसको कहता हूं ॥३२१॥ स्वाति नक्षत्र के दिन रात्रि के प्रथम अंशमें वर्षा हो तो सब प्रकारके धान्य की वृद्धि हो । दूसरे अंश (भाग) में वर्षा हो तो तिल, मूग और उड़द की वृद्धि हो । तीसरे अंशमें वर्षा हो तो ग्रीष्मऋतु के धान्य 'यव गेहूँ आदि' हों, परन्तु शरदऋतु के धान्य जुआर, बाजरी आदि उत्पन्न न हो ॥ ३२२ ॥ दिनके प्रथम भागमें वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा हो । दूसरे भागमें वर्षा हो तो आगे वर्षा अच्छी हो परन्तु कीडे और सर्प आदि अधिक हों । तीसरे भागमें वर्षा हो तो आगे मध्यम वर्षा हो और दिनरात वर्षा हो तो आगे उपद्रव रहित अच्छी वर्षा हो ॥३२३॥ चित्रा नक्षत्रके समसूत्र ठीक उत्तरमें तारा दीख पड़ता है उसको 'अपांवत्स' कहते है, उसके समीप चन्द्रमाके साथ स्वातिका योग हो तो शुभ होता है ॥३२४॥

वर्षाहीनाभ्रनिकरघृता दृश्यते चेत्तृतीया* ॥३३०॥
न वृष्टिर्न गर्जारवो वार्दलेषु,
×चतुर्थ्यां च गोधूमका दुर्लभाः स्युः ।
यदा पंचमी वृष्टिहीनापि साभ्रा,
तदा भाद्रमासे महा वृष्टियोगः ॥३३१॥
कार्पासस्य महर्घता भुवि भवेत् षष्ठी यदा निर्मला,
सप्तम्यामपि चन्द्रनिर्मलतया राज्ञां महान् विग्रहः ।
अष्टम्यां यदि भास्करस्समुदितः प्रात पर निर्मलो,
रौद्रे वृष्टिनिरोधकृन्नभसि च प्रायोऽल्पवर्षाकर. ।३३२। इति ।

फाल्गुनमासफलम्—

सप्तम्यादित्रये कृष्णे फाल्गुने घनगर्जितम् ।
संग्रामाय प्रतिग्राम धान्यानां च समर्घता ॥३३३॥
फाल्गुने मासि वर्षा चे-ज्जायतेऽष्टमिकादिने ।

पान महँगे हों ॥३३०॥ चतुर्थीके दिन वर्षा या गर्जना न हो तो गेहूं दु-र्लभ हो । यदि पचमीको वर्षा न हो और बादल हो तो भाद्रमासमें अधिक वर्षा हो ॥३३१॥ यदि षष्ठी निर्मल हो तो पृथ्वी पर कपास महँगे हों । सप्तमीको चन्द्रमा निर्मल हो तो राजाओंमे बड़ा विग्रह हो । अष्टमी को प्रात -कालमें सूर्योदय निर्मल हो तो आर्द्रामे वर्षाका निरोध करता है अर्थात् थोडी वर्षा करे ॥३३२॥ इति माघमासफलम् ॥

फाल्गुनकृष्ण सप्तमी आदि तीन दिन मेघ गर्जना हो तो गाव गावमे कलह हो और धान्य सस्ते हो ॥३३३॥ फाल्गुन मास की अष्टमीके दिन वर्षा

टि— कश्चित्तृतीयाचतुर्थ्यो फले विपर्यय॰, यत –
* माह ज तीज उजली, बादल गाज सुजोइ ।
गेहूं जव सचो करे, मुहघा होसी वेइ ॥१॥
×माहे चोथ सुनिर्मली, बादल मेह न होय ।
पान अने नालेरडा, मुहघा हुता जोय ॥२॥

माह ह काली अट्ठमी, चंदो मेहच्छन्न ।
तो मैं बोल्यो भड्डली, बरसे काल संपन्न ॥३२५॥
माघे कृष्णनवम्यां च मूलऋक्षदिनेऽथवा ।
विद्युन्मेघो धनुर्योगे चाभ्रैर्नभसि संवृते ॥३२६॥
एतस्माद् गर्भतो वृष्टि-र्भाविवर्षेऽभिजायते ।
आषाढे वा भाद्रपदे नवमीदिवसे शुभा ॥३२७॥
माघमासे च सप्तम्यां कृष्णे त्रयोदशीद्वये ।
पूर्वस्यामुन्नते मेघे वार्दलैः सकुलेऽपि खे ॥३२८॥
बहूदककरा वृष्टि-राषाढे सप्तरात्रिकी ।
अमावस्यामभ्रयोगाद् भाद्रेऽब्दे पूर्णिमादिने ॥३२९॥
माघे शुक्लप्रतिपदि पर वार्दलैस्तैलगन्धा-
द्यानामर्घं परिदिनभवे धान्यवृन्द महर्घम् ।
सामुद्रं श्रीफलमल्लिलता-पत्रमुख्य महर्घं,

माघकृष्ण अष्टमी को चन्द्रमा बादलोंसे आच्छादित हो तो अच्छा समय हो॥ ३२५॥ माघकृष्ण नवमी को तथा मूलनक्षत्र के दिन और धनुसंक्रांति के दिन आकाश बादलोंसे आच्छादित रहे तथा बिजली चमके और वर्षा हो तो ॥ ३२६ ॥ इस गर्भसे अगला वर्षमें आषाढ और भाद्रमासकी नवमी के दिन अच्छी वर्षा अवश्य हो ॥ ३२७ ॥ माघकृष्ण सप्तमी और त्रयोदशी आदि दो दिन पूर्वदिशामें मेघका उदय हो और बादलों से आकाश आच्छादित रहे तो ॥३२८॥ आषाढ मासमें सात दिन तक बहुत जलदायक वर्षा हो । अमावास्याको मेघका उदय हो तो भाद्रमासकी पूर्णिमाके दिन वर्षा हो ॥ ३२९ ॥ माघशुक्ल प्रतिपदा और दूज को बादल हो तो तेल, सुगंधीवस्तु और धान्य तेजभाव हो । यदि तृतीया को वर्षा न हो परन्तु आकाश मेघके बादलों से घिरा रहे तो लवण, श्रीफल और नागरवेल के

वर्षाहीनाभ्रनिकरवृता दृश्यते चेत्तृतीया* ॥३३०॥
न वृष्टिर्न गर्जारवो वार्दलेषु,
×चतुर्थ्यां च गोधूमका दुर्लभाः स्युः।
यदा पञ्चमी वृष्टिहीनापि साभ्रा,
तदा भाद्रमासे महा वृष्टियोगः ॥३३१॥
कार्पासस्य महर्घता भुवि भवेत् षष्ठी यदा निर्मला,
सप्तम्यामपि चन्द्रनिर्मलतया राज्ञां महान् विग्रहः।
अष्टम्यां यदि भास्करस्समुदितः प्रात पर निर्मलो,
रौद्रे वृष्टिनिरोधकृन्नभसि च प्रायोऽल्पवर्षाकर ।३३२। इति।

फाल्गुनमासफलम्——

सप्तम्यादित्रये कृष्णो फाल्गुने घनगर्जितम्।
संग्रामाय प्रतिग्राम धान्यानां च समर्घता ॥३३३॥
फाल्गुने मासि वर्षा चे-ज्जायतेऽष्टमिकादिने।

पान महँगे हों ॥३३०॥ चतुर्थीके दिन वर्षा या गर्जना न हो तो गेहूं दुर्लभ हो। यदि पञ्चमीको वर्षा न हो और बादल हो तो भाद्रमासमें अधिक वर्षा हो ॥३३१॥ यदि षष्ठी निर्मल हो तो पृथ्वी पर कपास महँगे हों। सप्तमीको चन्द्रमा निर्मल हो तो राजाओंमें बड़ा विग्रह हो, अष्टमीको प्रातःकालमें सूर्योदय निर्मल हो तो आर्द्रामें वर्षाका निरोध करता है अर्थात् थोडी वर्षा करे ॥३३२॥ इति माघमासफलम् ॥

फाल्गुनकृष्ण सप्तमी आदि तीन दिन मेघ गर्जना हो तो गांव गांवमें कलह हो और धान्य सस्ते हों ॥३३३॥ फाल्गुन मासकी अष्टमीके दिन वर्षा

टि— क्वचित्तृतीयाचतुर्थ्यो फले विपर्यय, यत —
* माह ज तीज उजली, बादल गाज सुयोड़।
गेहूं जव सचो करे, मुहघा होसी वेड़ ॥१॥
×माहे चोथ सुनिर्मली, बादल मेह न होय।
पान अने नालेरडा, मुहघा हुता जोय ॥२॥

तदा सुभिक्षमादेश्यं देशे क्षेम सुखं बहु ॥३३४॥
सप्तम्यादित्रये साभ्रे गर्भे कुशलनिश्चयः ।
अमावास्यां भाद्रपदे जल सुलभमब्दत ॥३३५॥
फाल्गुने शुक्लसप्तम्या पौर्णिमास्या तथा दिने ।
निर्वात गगन मेघा विजला विद्युदन्विताः ॥३३६॥
भविष्यद्वत्सरे तत्र सुभिक्ष क्षेममादिशेत् ।
भाद्रेऽसौ कृष्णसप्तम्या दर्शे गर्भफलं जलम् ॥३३७॥
तव्यास्तु-समये चेद् हुताशन्या ज्वलनस्याऽस्ति वार्दलम् ।
गोधूमकुकुमापानान्महर्घं धान्यमादिशेत् ॥३३८॥
दशम्येकादशीशुक्ले फाल्गुनेऽभ्रादिगर्भयुक् ।
तदा चतुर्थपञ्चम्या-माश्विने वृष्टिदायिनी ॥३३९॥ इति॥
पीताब्धेरुदयास्तसङ्गमफला-दारभ्य लभ्यधिया,
मासद्वादशकस्य वार्दलबल यावन्मया वाङ्मयात् ।

हो तो सुभिक्ष, देशमे कल्याण और सुख अधिक हो ॥ ३३४ ॥ सप्तमी आदि तीन दिन बादल रहे तो मेघके गर्भमे कुशलता जानना ऐसा होनेसे भाद्रमासकी अमावास्याको वर्षा हो ॥ ३३५ ॥ फाल्गुन शुक्ल सप्तमी और पूर्णिमा के दिन वायु रहित आकाश हो, बिजली चमके और वर्षा रहित बादल हो तो ॥ ३३६ ॥ अगले वर्षमे सुभिक्ष और कल्याण हो, यही गर्भ भाद्रकृष्ण सप्तमी और अमावसको जल बरसावे ॥ ३३७ ॥ यदि होली जलन के समय बादल हो तो गहू, कुकुम और धान्य महँगे हो ॥ ३३८ ॥ फाल्गुन शुक्ल दशमी, एकादशी के दिन बादल हो तो गर्भ के निमित्त है यह आश्विनकी चतुर्थी पचमी के दिन वर्षा को करनेवाला है ॥ ३३९ ॥ इति फाल्गुनमासफलम् ॥

अगस्तिका उदय और अस्तका फलादेशसे प्रारंभकर बारह महीनोंके बादलोंका उदय तक का फल शास्त्रसे और बुद्धिसे मानकर, वायु और वर्षा

मत्वासारसमागमोदयविदा-मभ्यासस्सेवाकृता-
प्याद्दिष्ट ननु वर्षबोधनधनं हर्षाय वर्षार्थिनाम् ॥३४०॥

इति श्री मेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधग्रन्थे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचितेऽगस्तिवर्षराजादिजन्मलग्नाभ्रविद्युदादिकथने सप्तमोऽधिकारः ।

अथ गर्भकथननामाष्टमोऽधिकारः ।

मेघगर्भलक्षणम्—

अथ वायुजलादीनां संघातः स्त्यानपुद्गलः ।
गूढस्स गर्भशब्देन वाच्योऽस्योत्पत्तिरुच्यते ॥१॥
कार्त्तिके प्रतिपन्मुख्या-स्तिथयः कृष्णजाः कलाः ।
अमावसी षोडशीयं ऋतोः षोडशरात्रयः ॥२॥
गर्भादिः कार्त्तिकस्तेन रक्तवर्णनभोधरः ।
कृत्तिकार्के गर्भपाकाद् वृष्टिः कल्याणकृत्तदा ॥३॥

का समागम के उदय को जाननेवालों से अभ्यास करके तथा उनकी सेवा करके वर्षाके अर्थिजनोंके हर्षके लिये यह वर्षप्रबोधरूप धनको मैंने कहा ॥३४०॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितोऽगस्तिवर्षराजादिनिरूपणनामा सप्तमोऽधिकारः ।

वायु और बादल आदिके इकट्ठे हुए पुद्गलोंके समूहरूप जो गूढ मेघ है उसको गर्भ कहते है। उसकी उत्पत्ति कहते हैं ॥१॥ कार्त्तिक कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे जो कला संज्ञक तिथि हैं वे ऋतु की सोलह रात्रियें हैं, जिनमें अमावस की रात्रि सोलहवीं है। अर्थात् पूर्णिमा से अमावस पर्यंत सोलह रात्रि कला संज्ञक है वे पुष्पवती मानी है ॥२॥ कार्त्तिकमें गर्भादि के कारणसे आकाश लाल वर्णवाला होता है। वह गर्भ कृत्तिकाके सूर्यमें

माघादिगर्भः सिद्धान्ते मार्गादिर्वार्त्तिके मते ।
कार्त्तिकान्माघपर्यन्त लौकिकः क्वचिदुच्यते ।।४।।
यतः—गरभ कहिजे माह लगि, फागुण परायो गब्भ ।
जार गब्भ स्यो जिसो, होइ सकरमण सब्भ ।।५।।
शुक्लायां कार्त्तिके मासे द्वादश्यां प्रोज्ज्वला निशा।
सकला निर्मला चेत् स्यात् तदा पुष्पोदयो दिवः ।।६।।
यावत् स्यात् कार्त्तिकीपूर्णा-दिनावधिस्तुनिर्मलम् ।
दिनानि त्रीणि चत्वारि ऋतुस्नातं तदा नभः ।।७।।
कार्त्तिके पुष्पनिष्पत्तौ मार्गे स्नानं ततो मतम् ।
पौषे तुषारवातोर्मि-र्नित्यं माघो घनान्वितः ।।८।।
लोके तु—काती मासह बारसी, आभा गयण करेय ।
बीज खिवे वरसे मही, तो चार मास बरसेय ।।९।।
अन्यत्रापि—

परिपक्व होता है तब कल्याणकारक वर्षा होती है ।। ३ ।। सिद्धान्त में—माघ मासमें, वार्त्तिककारकके मतमें मार्गशीर्षादि माससे और लौकिक मतमें कार्त्तिकसे माघमास पर्यन्त गर्भकी उत्पत्ति मानी है ।।४।। कार्त्तिक से माघ तक गर्भ पवित्र माना है और फाल्गुनमें जार गर्भ माना है, यह नाम सदृश फलदायक है ।।५।। यदि कार्त्तिक शुक्ल बारसकी रात्रि समस्त बादल रहित निर्मल हो तो मेघ के गर्भ का पुष्पोदय जानना ।। ६ ।। कार्त्तिक शुक्ल द्वादशीसे पूर्णिमा तक तीन या चार दिन आकाश निर्मल रहे तो ऋतुमता कहना ।।७।। कार्त्तिकमें रज का उत्पत्ति, मार्गशीर्षमें स्नान, पौषमें तुषार और वायु हो तथा माघमास बादल सहित हो तो वर्षाके गर्भको पूर्ण प्राप्ति समझना ।। ८ ।। लोक भाषामें भी कहा है कि— कार्त्तिक शुक्ल बारस को आकाशमें बादल हों, बिजली चमके और वर्षा हो तो चार मास पूर्ण वर्षा हो ।।९।। कार्त्तिक शुक्ल बारसके दिन मेघ देखनेमें आवे तो मार्गशीर्षकमें

काती बारसी मेहा दीसे, निश्चय वरसे मिगसिरसोसइ*।
पांचमी मेहा चमके दामणि, तो वरसे सघलोई श्रावणि।१०।

वराहस्तु प्राह—

केचिद्वदन्ति कार्त्तिक-शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः।
न तु तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये॥११॥
मार्गशिरसितपक्षे प्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरे षाढाम्।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणां लक्षण ज्ञेयम्॥१२॥
यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्रवशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति॥१३॥

मेघमालायां तु—

वारस्तुर्यस्तृतीयं भं तिथिः सा याऽस्तिगर्भिणी।
गर्भपातं विना मेघ-स्तत्तत्काले प्रजायते॥१४॥
दशप्रकाराः प्रागुक्ता गर्भाः शीतर्त्तुसम्भवाः।

निश्चय से वर्षा हो और पचमी के दिन मेघ हो या बिजली चमके तो पूर्ण श्रावणमासमे वर्षा हो॥१०॥ कोई कहते हैं कि कार्तिक शुक्लपक्षको लांघ कर गर्भके दिन होते हैं, परन्तु ऐसा बहुतोंका मत नहीं है इसलिये बहुतसे गर्गादि ऋषियोंका मत कहता हूँ॥ ११॥ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में प्रतिपदा आदि जिस दिन चद्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र पर होता है, उसी दिन से गर्भ का लक्षण जानना चाहिये॥१२॥ जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो उस दिन जो मेघ का गर्भ उत्पन्न होता है वह चन्द्रमा के वश से माना जाता है। यह चन्द्रमाके वशसे उत्पन्न हुआ गर्भ १९५ दिनमे प्रसवता (वर्षा करता) है॥१३॥

जिस तिथि को चौथा वार और तीसरा नक्षत्र हो उस तिथिको वर्षा के गर्भ उत्पन्न होते हैं, वह स्थिर हो कर उस२ कालमें वर्षा होती है॥ १४॥ शीतऋतुमें उत्पन्न होनेवाले दश प्रकारके गर्भ पहले कहे हैं, वे

* टी—मृगशीर्षशब्देन मृगशीर्षमर्कसोगनक्षत्र तत्समये वृष्टिरित्यर्थः।

गलन्ति नो चैत्रशुक्ले तदा वर्षा यथास्थिताः ॥१५॥
यदुक्तम्—चैत्रस्यादौ दिवसदशकं कल्पयित्वा क्रमेण,
स्वात्यन्तार्द्राप्रभृतिमुनिभिर्वृष्टिहेतोर्विलोक्यम्।
यावत्संख्ये भवति दिवसे दुर्दिनं वाऽथ वृष्टि-
स्तावत्संख्यं भवति नियतं वार्षिकं दग्धमृक्षम् ॥१६॥
करकाधूम्रिकापातो रजोवृष्टिः सधूम्रिका।
त्रिभिरेतैर्महोत्पातैः सद्यो गर्भो विनश्यति ॥१७॥
कार्तिकाद् राधपर्यन्तं गर्भाः स्युः सप्तमासजाः।
उत्पत्तेः सार्द्धषण्मासै-र्विना पात प्रसूतिदाः ॥१८॥
यदाहुः—गर्भिते कार्तिके मासे मासाश्चत्वार ईरिताः
वृष्ट्याकुलाः सुभिक्षं च सस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥१९॥
कृष्णपीतहरिच्छ्वेत-वर्णा मेघास्तदा स्मृताः।
सिन्दूरताम्रवर्णास्तु क्वचिद्वृष्टिविधायिनः ॥२०॥
अत एव लोकेऽपि—कातीमासह धुरि करवि, वैसाखह पज्जंत।

यदि चैत्र शुक्लपक्षमे गले (गर्भ) नहीं और यथास्थित रहे तो वर्षा होती है ॥ १५ ॥ चैत्र शुक्लपक्ष के दश दिन आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र तक क्रमसे वृष्टिके लिये अवलोकन करना चाहिये, इनमे यदि जिस दिन दुर्दिन या वर्षा हो उतनी संख्यावाला वर्षाका नक्षत्र दग्ध होता है ॥ १६ ॥ ओला तथा धूम्रिका का गिरना और धूम्रिका के साथ रज की वर्षा होना ये तीन महा उत्पात है, इनसे गर्भका शीघ्र ही नाश होता है ॥ १७ ॥ कार्तिकसे वैशाख तक ये सात मास गर्भ रहते है। वे उत्पत्ति से साढे छमास बाद प्रसूति दायक होते है ॥१८॥ कार्तिक मासमे उत्पन्न हुए गर्भ चार मास वर्षा से परिपूर्ण होता है और सुभिक्ष तथा धान्य की प्राप्ति उत्तम करता है ॥ १९ ॥ कृष्ण, पीला, हरा और श्वेत ये वर्णवाले मेघ वर्षादायक है और सिंदूर तथा ताम्रवर्ण वाले मेघ क्वचित ही वर्षादायक है ॥२०॥ लोकमें भी—कार्तिक

रोहिणी पूरि नविगले, तो पूरओ गब्भंत ॥२१॥
रोहिण्याः शशिनो भोगः कार्तिके वा तदुत्तरे ।
मासे गर्भोदयायैनद् वर्षगे कृत्तिकाद्वयम् ॥२२॥
सूत्रे षुत्कर्षनो गर्भः षाण्मासिको निवेदितः ।
अधिकस्याविवक्षान-स्तत्र सूर्यायुरादिवत्* ॥२३॥
बाहुल्यनयतो यद्वा सूत्र प्रायिकमिष्यताम् ।
गजादिपाठवत् स्वप्ने नवमास्यादिवर्जिने ॥२४॥
मार्गशीर्षादिपक्षे तु कार्तिके पुष्पसम्भवात् ।
कृता भेदविवक्षान्यै-र्गर्भाष्टमे व्रतादिवत् ॥२५॥

आदिस वैशाख तक रोहिणी नक्षत्रमें वर्षा न हो तो गर्भ की पूर्ण प्राप्ति जानना ॥ २१ ॥ कार्तिक और मार्गशीर्षमें चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्रके साथ भोग गर्भका उदय के लिये होता है, वह कृत्तिका आदि दो नक्षत्रोंमें बरसता है ॥ २२ ॥ प्राय सूत्रोंमें षाण्मासिक गर्भ कहा है क्योंकि अधिककी विवक्षा न होनेसे, जैसे सूर्य आदि का आयुष्य ॥ २३ ॥ अथवा बाहुल्यताके नयसे सूत्रको प्रायिक सज्ञा माना है, जैसे उत्तम स्वप्नोंमें प्रथम गज (हाथी) और जिनेश्वरों की गर्भमें नवमासादि स्थिति ॥ २४ ॥ तथा मार्गशीर्षका आदि (कृष्ण) पक्षमें गर्भके पुष्पकालका सभव है उसको कार्तिक मानकर पुष्प का सभव बतलाया, ऐसी अन्य आचार्योंने भेदविवक्षा की, जैसे गर्भ से अष्ठ वर्षमें यज्ञोपवीत आदि व्रत इत्यादि ॥ २५ ॥

*टी— श्रीभगवत्या लोकपालाधिकारे चन्द्रसूर्ययोरायुः पल्योपममात्रमुक्तं च लक्ष सहस्र वायुरधिकं तस्यापि विवक्षणात् । ऋषभे वार्षिकतपोऽधिकं तन्न विवक्षितम् । ह्रासततिसमायुर्वीर यान्यधिकं । यथा लोके पक्ष पञ्चदशाहि मासस्तु त्रिंशता, मासैर्द्वादशभिर्वर्षमधिकं न विवक्ष्यते । 'गयवसह' इति स्वप्नगाथा सर्वत्र पर सर्वार्हतां पूर्वं गजदर्शनं नास्ति तथापि बाहुल्यात्पाठ । गर्भेऽपि 'नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाणराइंदियाणं' इति पाठः सर्वत्र पर सर्वार्हतां गर्भस्थितिस्तथा नास्ति ।

यदाह वराहः—

सितपक्षभवाः कृष्णे कृष्णाः शुक्ले द्युसम्भवा रात्रौ ।
नक्तं प्रभवाश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम् ॥२६॥
मार्गसिताद्या गर्भा ज्येष्ठाऽसितपक्षके प्रस्रुवतेऽब्दम् ।
तत्कृष्णपक्षजाता आषाढसिते प्रवर्षन्ति ॥२७॥
पौषसितोत्था गर्भा आषाढस्यासिते च मेघकराः ।
पौषस्य कृष्णपक्षाद् विनिर्दिशेच्छ्रावणस्य सिते ॥२८॥
मार्गसिताद्याः केचित् पतन्ति करकानिलादिकोत्पातैः ।
मार्गासितजा गर्भा मन्दफलाः पौषशुक्लजाताश्च ॥२९॥
माघसितोत्था गर्भा श्रावणकृष्णे प्रसूतिमायान्ति ।
माघस्य कृष्णपक्षेण विनिर्दिशेद् भाद्रपदशुक्लम् ॥३०॥
फाल्गुनशुक्लसमुत्था भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्याः ।
तस्यैव कृष्णपक्षोद्भवाः पुनश्चाश्वयुजि शुक्ले ॥३१॥

चैत्रसितपक्षजाताः कृष्णेऽश्वयुजस्तु वारिदा गर्भाः ।
चैत्रासितसम्भूताः कार्त्तिकशुक्लेऽभिवर्षन्ति ॥३२॥
तस्मान्मतेऽपि वाराहे पुष्पं स्यात् कार्त्तिकासिते ।
अनुक्ते परिशेषेण निर्णयोऽत्र बहुश्रुतात् ॥३३॥

मार्गकृष्णादिगर्भा यथा—

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे मघायां गर्भसम्भवे ।
यद्वा कृष्णचतुर्दश्यां सविद्युन्मेघदर्शने ॥३४॥
आषाढे शुक्लपक्षे तच्चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम् ।
मार्गकृष्णे चतुर्थ्यादि-त्रयेऽश्लेषात्रयेक्रमात् ॥३५॥
गर्भितेष्वेषु ऋक्षेषु मार्गकृष्णे फलं भवेत् ।
आषाढे पूर्वफाल्गुन्यां त्रिरात्रं वृष्टिसम्भवात् ॥३६॥
उत्तरा हस्तश्चित्रा च सप्तम्यादित्रये यदा ।
मार्गशीर्षे गर्भिता चेद् अभ्रैर्वातैश्च विद्युता ॥३७॥

क्लपक्षमें पैदा हुआ गर्भ आश्विनकृष्णपक्षमें और चैत्रकृष्णपक्षका गर्भ कार्त्तिकशुक्लपक्षमें बरसता है ॥ ३२ ॥ ऐसा वराहमिहराचार्यका मत है इसलिये कार्त्तिककृष्णपक्षमें मेघके पुष्प (रज) की प्राप्ति समझना चाहिये और जो बाकी नहीं कहे हैं उनका निर्णय बहुत से आगमों द्वारा यहां कर लेना चाहिये ॥ ३३ ॥

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में मघानक्षत्र के दिन गर्भ उत्पन्न हो या कृष्ण चतुर्दशी को बिजली सहित बादल हो तो ॥ ३४ ॥ आषाढ शुक्लपक्ष में चतुर्थीके दिन अवश्य वर्षा होती है । मार्गशिर कृष्णपक्षकी चतुर्थी आदि तीन तिथि और आश्लेषा आदि तीन नक्षत्र इन में गर्भकी उत्पत्ति हो तो आषाढमासमें पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रके दिन तीन रात्रि वर्षा हो॥ ३५-३६ ॥मार्गशीर कृष्णपक्षमें उत्तराफाल्गुनी हस्त और चित्रानक्षत्र तथा सप्तमी आदि तीन तिथि इनमें गर्भ उत्पन्न हो और बिजलीके साथ बादल तथा वायु हो तो॥ ३७॥ आषाढ

आषाढे श्वेतपक्षे तु अष्टम्यां स्वातिभे तथा ।
त्रिरात्रं मेघवृष्ट्या स्याज्जलैरेकार्णवा मही ॥३८॥
दशम्यादित्रये मार्गे कृष्णे चामावसीतिथौ ।
चित्रास्वातिविशाखासु सञ्जाते गर्भलक्षणे ॥३९॥
आषाढे शुक्लपक्षान्त-स्तिथौ तस्यां घनोदयः ।
तस्मिन्नेव च नक्षत्रे जायते नात्र संशयः ॥४०॥
पौषमासे कृष्णपक्षे ऋक्षं शतभिषग् यदा ।
इत्यादिश्लोक दशकं प्रागुक्तमिह भाव्यते ॥४१॥
सप्तम्यादित्रये पौषे कृष्णे गर्भस्य लक्षणात् ।
श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वातौ स्याद् वृष्टये ध्रुवम् ॥४२॥
त्रयोदशीत्रये कृष्णे विद्युन्मेघैश्च गर्भिते ।
श्रावणे पूर्णिमायां स्याद वृष्टिः सर्वत्र मण्डले ॥४३॥
माघे कृष्णनवम्यां चेदित्युक्तं प्राक् ।
फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां कृत्तिकाऋक्षसङ्गमे ।

शुक्लपक्षमें अष्टमीका तथा स्वातिनक्षत्रको तीन रात्रि मेघवृष्टि हो, पृथ्वी जल से एकाकार हो ॥३८॥ मार्गशिर कृष्णपक्ष की दशमी आदि तीन तिथि और अमावास्या इन तिथियोंमें तथा चित्रा स्वाति और विशाखा इन नक्षत्रोंमें गर्भ उत्पन्न हो तो ॥३९॥ आषाढ शुक्लपक्षके अन्तकी उन्हीं तिथिओंमें और उन्हीं नक्षत्रोंमें वर्षा हो इसमें सन्देह नहीं ॥४०॥

पौष मासका कृष्णपक्षमें यदि शतभिषग्नक्षत्रके दिन वायु बादल इत्यादि दश श्लोक पहले कहे हैं वहा से यहा विचार लेना ॥४१॥ पौष कृष्णपक्षकी सप्तमी आदि तीन तिथिओं में गर्भका लक्षण होन से श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वातिनक्षत्रके दिन निश्चय से वर्षा होती है ॥४२॥ पौष कृष्ण त्रयोदशी आदि तीन तिथियों में बिजली और बादल सहित गर्भ हो तो श्रावण मासकी पूर्णिमाके दिन सर्वत्र देशमें वर्षा हो ॥४३॥

गर्भाद्माघसी भाद्रे द्रोणमेघप्रवर्त्तिनी ॥४४॥
अष्टम्यादिचतुष्के तु चतुर्थ्यादित्रये घनः ।
भवेद् भाद्रपदे मासे जगतः सुखसाधनम् ॥४५॥
पञ्चमी सप्तमी चैत्रे नवम्येकादशी सिता ।
त्रयोदशी पूर्णिमा च दिनेष्वेतेषु वर्षणात् ॥४६॥
करकापातनाद्विद्युद्दर्शनाद् गर्जितादपि ।
वर्षाकाले जलधरश्छिद्रादेव प्रवर्षति ॥४७॥
यथा वायुरिव त्रेधा ज्ञापकः स्थापकः पुनः ।
उत्पादकश्च गर्भोऽत्र सार्द्धषाण्मासिकोऽन्तिमः ॥४८॥
कार्त्तिकद्वादशीगर्भो ज्ञापकः शुचिवर्षणे ।
मार्गशुक्लस्य पञ्चम्याः श्रावणादिचतुष्टये ॥४९॥
पौषकृष्णाष्टमीगर्भो सप्तम्यां नभमः सिते ।
पौषकृष्णदशम्यां हि गर्भो भाद्रासितस्य वा ॥५०॥

फाल्गुन शुक्ल सप्तमी कृत्तिका युक्त हो उस दिनका गर्भसे भाद्रपदकी अमावसको एक द्रोण जलवर्षा हो ॥४४॥ फाल्गुनमे अष्टमी आदि चार दिन गर्भ हो तो भाद्रपदमें चतुर्थी आदि तीन दिन जगत्को सुखकारक वर्षा हो ॥४५॥

चैत्र शुक्ल पचमी सप्तमी नवमी एकादशी त्रयोदशी और पूर्णिमा इन दिनोंमें वर्षा हो, ओला गिरे, बिजली चमके और गर्जना हो तो वर्षाकालमें छिद्रसे ही वर्षा हो ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

जैसे वायु तीन प्रकार के हैं ऐसे गर्भ भी ज्ञापक, स्थापक और उत्पादक ये तीन प्रकार के हैं, इनमें अन्तिम साढे छमासका गर्भ उत्तम माना है ॥४८॥ कार्त्तिक शुक्ल द्वादशीका गर्भ आषाढमें वर्षता है । मार्गशीर्षशुक्ल पञ्चमीका गर्भ श्रावण आदि चार मास बरसता है ॥ ४९ ॥ पौषकृष्ण अष्टमी का गर्भ श्रावणशुक्ल सप्तमी को बरसता है । पौषकृष्ण दशमी का-

पौषस्य शुक्लषष्ठीजो गर्भो भाद्रपदाऽसिते ।
माघे धवलसप्तम्या आश्विनाऽशुक्लशुक्लयोः ॥५१॥
लोकेऽपि–आसाढे सिहरा करे, वज्जे उत्तर वाय ।
तउ जाणे काती थकी, दसमे मास विहाय ॥५२॥
पोस अंधारि आठमि, विणुजल आभा छांह ।
सावण सुदि सातमि, जलधर दीधी बांह ॥५३॥
पोसह छट्ठे हुइ घणसारो, तो वरसे भद्दव अंधारो ।
माही सत्तमी सत्ते जोड,इण गुण निरतो वरसे आसोइ ॥५४॥
पोसदशमी जो मेह संभारे, तो वरसे भद्दव अंधारे ।
माही सातमी गब्भो दीसे, आसू वरसे दीह बत्तीसे ॥५५॥
छट्ठि इगारसि पूनिम पूरी, पोसअमावसि होइ अनीरी ।
इम जंपे सवि पढिया पंडिय, वरसे मेह असाढ अखंडिय ॥५६॥
पोसअंधारी सातमे, जइ घणा नवि वरसेइ ।

गर्भ भाद्रकृष्ण मे बरसता है ॥ ५० ॥ पौषशुक्ल षष्ठी का गर्भ भाद्रपदकृष्णपक्षमे बरसता है । माघशुक्ल सातमीका गर्भ आसोज कृष्ण और शुक्ल ये दोनो पक्षमे बरसता है ॥ ५१ ॥

आषाढमे गर्जना हो और उत्तरदिशाका वायु चले तो भाद्रपदमे वर्षा हो ॥५२॥ पौष कृष्णाष्टमीको आकाश बादलों से आच्छादित हो किंतु वर्षा न हो तो श्रावण शुक्ल सप्तमीको वर्षा हो ॥५३॥ पौष मासकी षष्ठीके दिन वर्षाका गर्भ हो तो भाद्रपदका कृष्णपक्षमे वर्षा हो । माघ शुक्लसप्तमी को वर्षाके गर्भ हो तो आसोजमासमे निरन्तर वर्षा हो ॥५४॥ पौष दशमी को मेघाडंबर हो तो भाद्रपदके कृष्णपक्षमे वर्षा हो । माघ मासकी सप्तमी को वर्षाके गर्भ हो तो आसोज महीनेके बत्तीस दिन वर्षा हो ॥५५॥ पौष मासकी षष्ठी एकादशी पूर्णिमा और अमावास्याके दिन गर्भकी परिपूर्णता हो तो आषाढमासमें अविच्छिन्न मेघ बरसे ऐसे सब पंडित कहते है ॥५६॥ पौष

तो आद्रा मांहे आदरे, जलथल एक करेइ ॥५७॥
ततः स्युर्ज्ञापके गर्भे मासा षट् सप्त चाष्ट* वा ।
स्थापको ज्येष्ठमूलादि-पूर्वाषाढाग्रुदोदयः ॥५८॥
यतः-गली रोहिणी गली पडिवा, गलिया जेट्ठा मूल ।
पूर्वाषाढ धडुकिओ, नीपना सातु नूर ॥५९॥
उत्पादकस्तु द्विविधस्तात्कालिकः स लक्षणः ।
सार्द्धषाण्मासिकस्त्वन्यः प्रथमः समयोद्भवः ॥६०॥
द्वित्रिपञ्चादिदिवसमासाद्यन्तजलप्रदाः ।
ते मध्यमाः परिज्ञेया स्तात्कालिकाः पुनस्त्वमी ॥६१॥
मेघचक्र रौद्रीयमघमालायाम्—
पूर्वास्यां यदि सन्ध्यायां मेघैराच्छादित नभः ।

कृष्ण सप्तमीको यदि वर्षा न हो तो आर्द्रानक्षत्रमें वर्षाका आरंभ हो याने जल स्थल एकाकार हो ॥ ५७ ॥

ज्ञापकगर्भ छ सात या आठ मास के बाद बरसता है । स्थापक गर्भ ज्येष्ठ मूल और पूर्वाषाढानक्षत्रमें उदय होता है ॥५८॥ इसलिये कहा है कि— प्रतिपदा तिथि, रोहिणी, ज्येष्ठ और मूलनक्षत्र इनमें वर्षा हो और पूर्वाषाढामें गर्जना हो तो सातों नूर उत्पन्न हों ॥५९॥ उत्पादक गर्भ दो प्रकारके हैं- एक 'तात्कालिक' शीघ्र ही बरसनेवाला और दूसरा समय पर बरसनेवाला साढे छमासिक ॥ ६० ॥ गर्भ होने बाद जो दो तीन पांच आदि दिनोंमें या मासके भीतर ही बरसनेवाला हो यह मध्यम तात्कालिक गर्भ जानना ॥६१॥

पूर्व दिशामें यदि सन्ध्या समय आकाश बादलों से आच्छादित हो

---

*टी— अत्राष्टौ मासा पौषदशमीत्यादावपि तथैव, माघशुक्लसप्तम्यां गर्भोऽप्याश्विनेऽष्टमासज, आश्विनकृष्णे सार्द्धाष्टमासज । पौषपूर्णिमागर्भ आषाढशुक्ले षाण्मासिक कृष्णे तु सार्द्धषाण्मासिक कृष्णादिमते, शुक्लादिमते तु आषाढशुक्ले सार्द्धषाण्मासिक, कृष्णपक्षे सप्तमासिक ।

मध्यकाले जनेत्ताप ईदृशे मेघलक्षणे ।
अर्द्धरात्रे गते वृष्टिः प्रजातोषाय जायते ॥७५॥
भाद्रशुक्ले चतुर्थेऽह्नि पञ्चमे सप्तमेऽष्टमे ।
पूर्णिमायां च गर्भेण सद्यो मेघमहोदयः ॥७६॥
पञ्चभिः सप्तभिर्वा स्या-द्दिनैरेकार्णवा मही ।
चतुर्थ्यामपि पञ्चम्या-माश्विने शीघ्रगर्भदा ॥७७॥
दक्षिणः प्रबलो वातः सकृदेव प्रजायते ।
वारुणेश्चैव नक्षत्रैः शीघ्रं वर्षति माधवः ॥७८॥
धूम्रिताः स्युर्दिशः सर्वाः पूर्ववाते वहत्यपि ।
चतुर्याम्यन्तगे मेघः सरांसि परिपूरयेत् ॥७९॥

वराहस्त्वाह-उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्षोऽतिदीप्त्या,
द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैडूर्यकान्तिः ।
तदहनि कुरुतेऽम्भ-स्तोयकाले विवस्वान्,
प्रतिपदि यदि वोच्चैः ख गतोऽतीव तीव्रः ॥८०॥

वर्षा होती है ॥७४-७५॥ भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, पचमी, सप्तमी, अष्टमी और पूर्णिमा इन दिनोंमे गर्भ हो तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥७६॥ पाचवें या सातवे दिनमें ही पृथ्वी जलसे पूर्ण हो जाय। आश्विन मासकी चतुर्थी और पचमीको भी शीघ्रही वर्षाकारक गर्भ होते हैं ॥७७॥ शतभिषानक्षत्र के दिन दक्षिण दिशाका प्रबल वायु एकवार भी चले तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥७८॥ सब दिशाएँ धूम्र वर्णवाली हों और पूर्वदिशाका वायु चले तो चौथे प्रहर जलकी वर्षा सरोवरको परिपूर्ण करें ॥७९॥ वर्षाऋतु में जिस दिन उदयाचल पर रहा हुआ सूर्य अपनी कान्ति से प्रचड तेजस्वी हो, पिघले हुए सुवर्णकी समान या स्निग्ध वैडूर्यमणिकी समान चिकनी कान्ति वाले हो तो उस दिन जलवर्षा हो। यदि आकाश में ऊचे स्थान पर जा कर तीक्ष्ण किरणोंसे तपे तो उसी समय वर्षा हो ॥८०॥

गर्भविनाशलक्षणम्—

गर्भोपघातलिङ्गान्युल्काशनिपांशुपातदिग्दाहाः ।
क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः ॥८१॥
रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंषि दर्शनं राहोः ।
इत्युत्पातैरेतैस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतो गर्भः ॥८२॥
स्वर्तुः प्रभावजनितैः सामान्यैर्यैश्च लक्षणैर्वृद्धिः ।
गर्भाणां विपरीतैस्तैरेव विपर्ययो भवति ॥८३॥
भाद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदैवपैतामहेष्वथर्क्षेषु ।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥८४॥
शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतः शुभो गर्भः ।
पौष्णांस्तु बहून् दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हतैस्त्रिविधैः ॥८५॥
मार्गशिरादिष्वष्टौ षट्षोडशविंशतिश्चतुर्युक्ताः ।

अब गर्भ विनाश कारक लक्षण कहते है– गर्भके समय उल्कापात, वज्राघात, धूलिकी वर्षा, दिग्दाह, भूमिकम्प, गन्धर्व नगर, कीलक, केतु, ग्रहयुद्ध, निर्घातशब्द, रुधिर आदिकी वर्षा होनेसे विकारपन, परिघ, इन्द्र-धनुष और राहु का दर्शन इन सब उत्पातों से और दूसरे तीन प्रकार के उत्पातोंसे गर्भका विनाश हो जाता है ॥८१-८२॥ अपने ऋतुके स्वभाव में उत्पन्न हुए गर्भ साधारण लक्षण द्वारा बढते हैं और यही लक्षण विपरीत होनेसे गर्भकी हानि होती है ॥८३॥ पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा और रोहिणी इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुए गर्भ सब ऋतु में वृद्धि पाते हैं और बहुत जलदायक होते है ॥८४॥ शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघा इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुए गर्भ शुभ होते हैं और बहुत दिन तक पोषण करते हैं परन्तु तीन उत्पातों से हने हुए हो तो नष्ट हो जाते हैं ॥८५॥ मार्गशिरमें शतभिषा आदि पाच नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुए गर्भ साढे छ मास बाद आठ दिन तक बरसते हैं। इसी तरह पौष के उत्पन्न

त्रिंशतिरथदिवसैस्त्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः ॥८६॥
क्रूरग्रहसंयुक्ते करकाशनिवर्षदायिनो गर्भाः ।
शशिनि रवौ चापि शुभैर्युतलक्षिते भूरि वृष्टिकराः ॥८७॥
गर्भसमयेऽतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निम्रखेदकृता ।
द्रोणाष्टांशाभ्यधिके वृष्टेगर्भश्च्युतो भवति ॥८८॥
गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातादिभिर्यदि न वृष्टः ।
आत्मीयगर्भसमये करकामिश्र ददात्यम्भः ॥८९॥
काठिन्यं याति यथा चिरकालधृतं पय पयस्विन्याः ।
कालातीतं तद्वत्सलिलं काठिन्यमुपयाति ॥९०॥
पञ्चनिमित्तैः शतयोजन तदर्द्धार्द्धमेकतो हन्यात् ।
वर्षति पञ्च समन्ताद् रूपेणैकेन यो गर्भः ॥९१॥

हुए गर्भ छ दिन, माघके सोलह दिन, फाल्गुन के चौवीस, चैत्रके वीस दिन और वैशाखके तीन दिन बराबर वर्षा होती है ॥८६॥ यदि गर्भ का नक्षत्र क्रूर ग्रह युक्त हो तो समस्त गर्भ से ओले और बिजली गिरे तथा वर्षाके साथ मच्छली बरसे । यदि चन्द्रमा या सूर्य शुभग्रह से युक्त हो या शुभग्रह से देखे जाते हो तो बहुतही वर्षा करते हैं ॥८७॥ यदि गर्भ के समय विना कारण बहुतसी वर्षा हो तो गर्भका अभाव होता है । द्रोणका अष्टमांशसे अधिक वर्षा हो तो गर्भपात होता है ॥८८॥ जो पुष्टगर्भ प्रसव के समय ग्रहों के उपघात आदिसे न बरसे तो दूसरे गर्भ ग्रहण के समय ओलेका मिला हुआ जल बरसाता है ॥८९॥ जिस प्रकार गायों का दूध बहुत काल तक रहनेसे कठिन हो जाता है, इसी तरह जल भी वर्षने के समय न बरसे तो कठिन ओले बन जाते हैं ॥९०॥ जो गर्भ 'पवन जल बिजली गर्जना और बादल' इन पांच प्रकारके निमित्तसे पुष्ट होता है वह सौ योजन तक बरसता है । चार निमित्तसे पचास, तीन निमित्तसे पचीस, दो निमित्तसे साढे बारह और एक निमितसे पांच योजन तक बरसता है ।

द्रोणः पञ्चनिमित्ते गर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन।
षड्विद्युता नवाभ्रैः स्तनितेन द्वादश प्रसवे ॥९२॥
सत्सन्ध्यासंलग्नो वर्षति गर्भस्तु योजनं त्वेकम्।
सद्गर्जितं त्रिगुणितं सार्द्धाष्टयोजनी भवेद् विद्युत ॥९३॥
प्रतिसूर्यकेण वर्षत्येकादश योजनानि गर्भस्तु।
सत्परिवेशो द्वादश समीरणेनापि पञ्चदश ॥९४॥
पवनाभ्रवृष्टिविद्युद्गर्जितशीतोष्णरश्मिपरिवेषाः।
जलमत्स्येन सहोक्ता दशधा गर्भप्रसवहेतुः ॥९५॥
पवनसलिलविद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः,
स भवति बहुतोयः पचरूपाभ्युपेतः।
विसृजति यदि तोयं गर्भकाले च भूरि,
प्रसवसमयमित्वा शीकराम्भः करोति ॥९६॥

अर्थात् एक २ निमित्तसे अभावसे भी योजनके अर्द्धार्द्धकी हानि होकर वर्षा होती है ॥ ९१ ॥ पाच निमित्वाले गर्भ एक द्रोण (२०० पल) जल बरसाता है। प्रसवके समय पवन हो तो तीन आढक (१५० पल) जल बरसाता है। विजलीके निमितवाले गर्भ छ आढक जल बरसता है। मेघ सयुक्त गर्भ हो तो नव आढक, और गर्जना युक्त गर्भ हो तो बारह आढक जल बरसाता है ॥ ९२ ॥ सन्ध्या युक्त गर्भ एक योजन तक बरसता है। गर्जना युक्त गर्भ तीन योजन तक, विजली युक्त गर्भ साढे आठ योजन तक बरसता है ॥९३॥ उल्कापात युक्त गर्भ ग्यारह योजन तक, परिमंडल युक्त बारह योजन और वायु युक्त पदरह योजन तक बरसता है ॥९४॥ पवन, बादल, वर्षा, विजली, गर्जना, शीत, उष्ण, किरण, परिवेष और जल-मत्स्य, ये दश प्रकार गर्भ प्रसवके कारण हैं ॥९५॥ जो गर्भ पवन, जल, बिजली, गर्जना और बादल इन पाच निमित्तरूपसे युक्त हो तो वह गर्भ बहुत जलदायक होता है। यदि गर्भकालमें बहुत जल बरसे तो प्रसव समय

अथ सद्यो वृष्टिलक्षणम्—

वार्दले रात्रिवासश्चेत् खद्योतेषु निशि द्युतिः ।
जलेषु चोष्णता सद्यो मेघवर्षाभिलक्षणम् ॥९७॥
रात्रौ तारा झलत्कारः प्रातश्चात्यरुणो रविः ।
अवृष्टौ शक्रचापश्च सद्यो वृष्टिस्तदा भवेत् ॥९८॥
चढन्ति भुजगा वृक्षे सूर्येन्दोः परिधिस्तथा ।
उर्ध्वा चेद् गङ्गुरी शेते लोहे कीटः पुनः पुनः ॥९९॥
आम्लं च तक्रं तत्कालं मत्स्येन्द्रधनुरुद्गमः ।
धूम्रिता निबिडा शैला-श्चर्मादिषु तथार्द्रता ॥१००॥
प्रभाते पश्चिमायां चे-दिन्द्रचापः प्रदृश्यते ।
वारुणेश्चैव नक्षत्रैः शीघ्रं वर्षति माधवः ॥१०१॥
गोमये उत्कराः कीटाः परितापोऽतिदारुणाः ।
चातकानां रवो वृष्टिं सद्यः स सूचयेज्जने ॥१०२॥

को लांघकर जल कणा वर्षा करता है ॥९६॥

बादलोंमें अंधकार हो, रात्रिमें खद्योत (उडनवाले चमकदार जंतु) की प्रकाश अधिक हो और पानिमें उष्णता हो तो शीघ्रही मेघवर्षाका लक्षण जानना ॥ ९७ ॥ रात्रिमें तारा गिरे, प्रातःकाल सूर्य लालवर्ण वाला हो, और आकाशमें विना वर्षा इन्द्र धनुष दीखे तो शीघ्र ही वर्षा होती है ॥ ९८ ॥ वृक्षके पर सर्प चढे, सूर्य और चद्रमा को परिधि (परिमंडल) हो, उच्चस्थान पर गङ्गुरी सोवे, लोहे पर वारवार कीट लगजाय ॥ ९९ ॥ छाशमें खट्टापन शीघ्रही आजाय, जलमत्स्य तथा इन्द्र धनुष का उदय हो, पर्वत धूआँ वाले होकर घन (इकट्ठे) दीखे, चमडा आदिमें गीलापन हो जाय ॥ १०० ॥ प्रातःकाल पश्चिमदिशामें इन्द्र धनुष दीखे और शतभिषा नक्षत्र हो तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥ १०१ ॥ गोबरमें अतिदारुण बहुत प्रकारके कीडे हों तथा चातक पक्षी शब्द करे तो शीघ्रही वर्षा होती है ॥

सूर्योदये श्रावणमासि गर्जेद्भ्रमन्ति नीरोपरि वापि मत्स्या.।
घनस्तदाष्टादश याममध्ये, करोति भूमिं सलिलेन पूर्णाम्।३।

वराहः–शुककपोतविलोचनसन्निभो,
मधुनिभश्च यदा हिमदीधितिः।
प्रतिशशी च यदा दिवि राजते,
पतति वारि तदा न चिराद्दिवः ॥१०४॥
स्तनितं निशि विद्युतो दिवा,
रुधिरनिभा यदि दण्डवत् स्थिता।
पवनः पुरतश्च शीतलो यदि,
सलिलस्य तदागमो भवेत ॥१०५॥
वल्लीप्रवाला गगनोन्मुखाः स्नानं च पक्षिणाम्।
जलान्तः पांशुराशौ वा गवामूर्ध्वं खवीक्षणम् ॥१०६॥
मार्जारभूमिखननं गोनेत्रात् पयसः श्रवः।
नीलिका कज्जलाभं ख शिशुसेतुक्रियाध्वनि ॥१०७॥
पिपीलिकाण्डकोत्सर्पं उन्मुखाः कुक्कुरा गृहे।

१०२॥ श्रावणमासमें सूर्योदय के समय मेघ गर्जना हो, और पानीके पर मछली घूमे तो अठारह पहरके भीतर वर्षा होकर जलसे पृथ्वीको पूर्ण करे ॥१०३॥ जिस समय चन्द्रमाका रग तोते, तथा कबूतरकी आख समान लालवर्णवाले या मद्य की समान रगवाले हो अथवा आकाशमें चन्द्रमाका दूसरा प्रतिविम्ब दिखलाई दे तब आकाशसे शीघ्रही वर्षा होती है ॥१०४॥ रात्रिमें मेघ गर्जना हो, दिनमें लालवर्णवाली बिजली दडके समान सीधी दीखे और पवन आगेसे शीतल हो तो उस समय जलका आगमन होता हैं ॥ १०५॥ लताओं के नवीन पत्ते आकाश की ओर उंचे उठ जाय, पक्षिगण जल या धुलिसे स्नान कर, गौ ऊँचे मुख करके आकाश को देखे ॥१०६॥ बिल्ली भूमिको खने, गौके आखसे जल गिरे, नीलिका कज्जल के सदृश आ-

रटन्ति वह्नि दिशि वा शिवा शब्दोऽपि वृष्टिकृत् ॥१०८॥
यदा भाद्रपदे मासे प्रतिपद्दशमी तथा ।
सप्तमी पूर्णिमा चैव नवमी च यथाक्रमम् ॥१०९॥
मेघा यदा न दृश्यन्ते पश्चिमां दिशिमाश्रिता ।
तावद्वर्षन्ति सततं बहुनीराः पयोधराः ॥११०॥
सन्ध्याकाले च ये मेघाः पर्वताकारसन्निभाः ।
आदित्यास्तंगते तर्हि चाहोरात्रं प्रवर्षति ॥१११॥
सूर्यास्तगमने व्योम श्रावणे रक्तिमान्विताम् ।

काश दीखे, रास्तामें बालक धूल आदिके पुल याने बाध बाधे ॥१०७॥ पिपीलिका(चींटी)अण्डाको छोड़े, घरमें कुत्ते* ऊचे मुख कर देखे, शृगाल दिन या रात्रिमें शब्द करे, इत्यादि इन निमित्तों से शीघ्रही वर्षा होना समझना चाहिये ॥ १०८॥ यदि भाद्रपदमास में प्रतिपदा दशमी सप्तमी पूर्णिमा और नवमी इन तिथियों में अनुक्रमसे पश्चिम दिशामें रहे हुए बादल न दीखे तो नीरतर मेघ बहुत जल बरसावे ॥१०९-११०॥ सूर्यास्तमें सन्ध्याकाल के समय पर्वत के आकार सदृश बादल दीखे तो दिनरात वर्षा हो ॥१११॥ श्रावणमासमें सूर्यास्तके समय आकाश लालवर्ण वाला दीखे तबतक वर्षा ब-

---

* माणिक्यसूरिकृत शाकुनसारोद्धारमें भी कहा है कि—

नीरतीर्थे तटस्थश्चे-दङ्ग कम्पयते शुनि ।
तत्र देशे घना मेघ-वृष्टिं वदति भाविनीम् ॥ १ ॥
चन्द्रार्कौ प्रेक्ष्य वर्षासु रोत्यूर्ध्ववदनो यदि ।
सप्तरात्राद् वारिपुर पतिष्यति वदन्त्यद ॥ २ ॥
प्रसार्य वपत्रमाकाशे जृम्भा कुर्वन् निरीक्षते ।
जलपातो भवत्याशु प्रचुरश्चेष्टयानया ॥ ३ ॥

जलाश्रय तीर्थ के तट पर रहा हुआ कुत्ता अंगको कंपावे तो उस देशमें आगामी मेघवर्षा का सूचन करता है ॥१॥ वर्षा कालमें कुत्ता चन्द्र सूर्य को देखकर ऊँचा मुखकर रोने लगे तो सात रात्रि के बाद बहुत वर्षा होगी ऐसी सूचना करता है ॥२॥ तथा मुखको आकाशमें पसार कर उबासी करता हुआ देखे तो इस चेष्टासे शीघ्रही बहुत जलवर्षा हो ॥३॥

तावद्वर्षति नाम्भोद-स्तमःपायी न वा जनः॥११२॥
वराहः—सन्ध्याकाले स्निग्धा दण्डतडिन्मत्स्यपरिधिपरिवेषाः।
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्चाशुवृष्टिकराः॥११३॥
विच्छिन्नविषमविध्वस्तविकृताः कुटिलापसव्यपरिवृत्ताः।
तनुह्रस्वविकलकलुषाः सविग्रहा वृष्टिदाः किरणाः॥११४॥
उद्योतिनः प्रसन्ना ऋजवो दीर्घाः प्रदक्षिणावर्त्ताः।
किरणाः शिवाय जगतो वितमस्के नभसि भानुमतः॥११५॥
शुक्लाः करादिनकृतो,दिवादिमध्यान्तगामिनः।
स्निग्धा अव्युच्छिन्ना ऋजवो वृष्टिकरास्ते त्वमोघाख्या।११६।
गर्भज्ञानमिदं गुह्यं न वाच्यं यस्य कस्यचित्।
सम्यक्परीक्ष्य दातव्यं नोपहासो यथा भवेत्॥११७॥
यदुक्तं रुद्रदेवब्राह्मणेन—

रसे नहीं, जिससे मनुष्योंको छाश पीने को न मिले ॥ ११२ ॥ सन्ध्याकालमें सूर्यके किरण स्निग्ध हों, परिघ, बिजली, मत्स्य परिधि तथा परिवेष वाले हो और इन्द्रधनुषसे घिरे हुए हो तो शीघ्रही वर्षा करनेवाले होते हैं ॥ ११३ ॥ खंड विषम, विध्वस्त, विकारयुक्त, कुटिल, अपसव्यमार्गसे घिरी हुई, तनु, ह्रस्व, विकल और शरीरधारियों की जैसी आकृति वाली सूर्यकी किरणें हो तो वृष्टिकारक होती हैं ॥ ११४ ॥ प्रकाशवाली, प्रसन्न, ऋजु, दीर्घाकार और प्रदक्षिणा के सदृश किरणें स्वच्छ आकाशमें दृष्टिमें आवे तो जगत्‌का कल्याण के लिये हो ॥ ११५ ॥ उदय, मध्याह्न और सायंकालके समय सफेद, स्निग्ध, अखंड और सरलाकार किरणें देखने में आवे वे अमोघ नामसे कही जाती है और वे वर्षा करनेवाली होती हैं ॥ ११६ ॥

यह गुप्त रखने लायक मेघके गर्भका ज्ञान जिस किसीके आगे नहीं कहना चाहिये, शिष्यकी अच्छी तरह परीक्षा करके देवे जिससे उपहास न हो ॥११७॥ रुद्रदेव ब्राह्मणने अपनी मेघमालामें कहा है कि यदि स्वयं

"क्षुद्रपाखण्डधूर्त्तेषु तथारिक्तोपहासिके ।
ज्ञानं न कथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत्" ॥११८॥
कथमपि सविशेषं गर्भसन्दर्भ एषः,
प्रथितु इह जिनेन्द्रोऽन्नद्रबोधानुरोधात् ।
अधिजलधिजलात्स्यान्मेघमाला विशाला,
सकलमपि किमस्या सारमात्तु हि शक्यम् ॥११९॥
इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्री-
मेघविजयगणिविरचिते गर्भकथनोऽष्टमोऽधिकारः ॥

शम्भु भी आज्ञा दे तो भी क्षुद्र पाखंड धूर्त तथा व्यर्थ उपहास करनेवाले ऐसे मनुष्योंको यह ज्ञान नहीं कहे ॥ ११८॥ श्रीजिनेन्द्रभगवानका परमज्ञानकी सहायतासे किसी भी प्रकार मेघगर्भका विस्तारपूर्वक संग्रह किया । महासमुद्र के जलसे भी अधिक विशाल एसी 'मेघमाला' है यह समग्र तो क्या इसके सारको भी कहने को समर्थ है ? ॥ ११९ ॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत-पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो गर्भकथननामाष्टमोऽधिकारः ।



×टी—समुद्रे सारस्याद्वार्दलोत्पत्तिर्बहुला तेनैव समुद्राज्जलभरणमिति कविरूढेरपि । मरुदेशादौ चरस्यात्र ज्ञागत्पत्तिरिति तेन लुकावानाऽपि ।

अथ तिथिफलकथननामा नवमोऽधिकारः।

अथ तिथिकथयै व्याख्यायते वत्सराणां,
शुभमशुभमशेष भावि भाव विभाव्यः।
कथितमपि कथञ्चिन्मासपक्षप्रसङ्गा-
द्विकलफललाभायावशिष्ट विशिष्टम् ॥१॥

वर्षस्तम्भचतुष्टयम्—

चैत्रे सितप्रतिपदि रेवत्यां बहुल जलम्।
वैशाखशुद्धप्रतिपद्भरण्यां तृणसम्भवः ॥२॥
ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि मृगे वातः शुभो भवेत्।
आषाढशुद्धप्रतिपदादित्ये धान्यसम्भवः ॥३॥
चैत्रशुक्लप्रतिपदि रवौ वायुर्विशेषतः।
अल्पा वर्षा फलं तुच्छ मल्प धान्यं प्रजायते ॥४॥
चन्द्रे बहुजलं धान्यं नृणानां च बहूदय।

आगामी भावोंका विचार कर सम्वत्सरोंका समस्त शुभाशुभको तिथि कथनरूपसे व्याख्यान करते हैं। मास और पक्षके प्रसग द्वारा कुछ कहा है किंतु बाकिके समस्त फलका लाभके लिये विशेष कहा जाता है ॥१॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन रेवतीनक्षत्र हो तो बहुत जलवर्षा हो। वैशाख शुक्ल प्रतिपदाको भरणीनक्षत्र हो तो तृण की उत्पत्ति हो ॥२॥ ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरनक्षत्र हो तो अच्छा वायु चले। आषाढ शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो धान्यकी उत्पत्ति हो ॥३॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो वायु विशेष चले, वर्षा थोड़ी, फल थोड़े और धान्य थोड़े हों ॥४॥ सोमवार हो तो वर्षा तथा धान्य अधिक हो और मनुष्योंका बहुत उदय हो। मगलवार हो तो सात प्रकार

ईतयः सप्तधा भौमे तीडोन्दुरपराभवः ॥५॥
बुधे च मध्यमं वर्षं सुभिक्षं तु गुरौ भृगौ ।
शनौ धान्यरसतृण जलशोषः प्रजार्त्तय. ॥६॥
चैत्रे शुक्लद्वितीयायां बाजरः प्रतिपद्दिने ।
युगन्धरी तृतीयायां तिला यान्ति महर्घता ॥७॥
चतुर्थ्यां चवला एव पञ्चम्यामतिरौरवम् ।
सम्पाप्तायां च रोहिण्यां फलमेतद् बुधोदितम् ॥८॥
दैवाद् रविः कुजो मन्दो वारस्तत्राधिकं फलम् ।
शुभवारे च गुर्वादौ शुभे योगे फलाल्पता ॥९॥

श्रीहीरसूरयस्तु—

चित्तसियपडिवयाए सुक्कससोसुरगुरु अ जइ वारो ।
तो धणधन्नसमग्घं होइ सवच्छर जाव ॥१०॥
बीयदिणे रविवारे रेवई णक्खत्त होइ संजुत्तो ।
तो धणधन्नसमग्घं होइ चउमासियं जाव ॥११॥

की ईति टीड्डी चूहें आदिका उपद्रव हो ॥५॥ बुधवार हो तो मध्यम वर्षा हो । गुरुवार या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो । शनिवार हो तो धान्य रस तृण और जलका अभाव हो तथा प्रजा दु खी हो ॥ ६ ॥ यदि चैत्र शुक्ल द्वितीया को रोहिणीनक्षत्र हो तो बाजरी, प्रतिपदाको हो तो जूआर, तृतीया को हो तो तिल और चतुर्थीको हो ता चवला ये महँगे हों तथा पचमीके दिन हो तो बड़ा रौरव हो ऐसा फल विद्वानोंने कहा है । परन्तु दैवयागसे उस दिन रवि या मगल या शनिवार आ जाय तो अधिक अशुभ फल कहा है । और गुरुवार आदि शुभवार या शुभ योग आजाय ता उक्तफल की अल्पता होती है ॥७से९॥ श्रीहीरसूरिजी ने कहा है कि— चैत्र शुक्ल पड़वाके दिन शुक्र सोम या बृहस्पति वार हो तो सम्पूर्ण सवत्सर मे धन धान्य सस्ते हों ॥१०॥ चैत्र शुक्ल द्वितीयाके दिन रविवार रेवतीनक्षत्रके

अह तइया सणिवारो नक्खत्तं रोहणी य मिलि य जोगे।
दुहदडुसयलवरिसं अप्पावुट्ठी तया हवइ ॥१२॥
-अथ चैत्रशुक्लप्रतिपदि वर्षराजफलकथनादेव फलं सुलभम्।
चैत्रे च शुक्लसप्तम्या-मार्द्राभोगे यथोचितः।
त्रिमास्यां धान्यसंक्षेपः श्रावणाज्जलदोदयः ॥१३॥
चैत्रे दशम्यां शनिना युक्ता वारेण चेन्मघा ।
तदा धान्यं समर्घं स्याज्जाते मेघमहोदये ॥१४॥
चैत्रे शुभे यथायोग्यं रूतकर्पासबाजराः।
युगन्धरी च संग्राही ज्येष्ठाषाढादिलाभदः ॥१५॥

विंशोपकानयनविचार —

चैत्रादिप्रथमा यावत् तन्नक्षत्रैरलंकृता ।
तत्पिण्डे रविभिर्भक्ते ये लब्धास्ते विंशोपकाः ॥१६॥
अत्र विशेषोऽपि- आषाढसितपक्षस्य द्वितीयापुष्यसंयुता।
यावन्मात्रं भवेत् पुष्यं तावन्मात्रा विंशोपकाः ॥१७॥

सहित हो तो चार मास तक धन धान्य सस्ते हों ॥११॥ चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन शनिवार रोहिणीनक्षत्र के सहित हो तो समस्त वर्ष दुःखदायी हो और थोड़ी वर्षा हो ॥१२॥

चैत्र शुक्ल सप्तमी आर्द्रानक्षत्र से युक्त हो तो तीन मास धान्य थोड़े और श्रावण में मेघ वर्षा हो ॥ १३ ॥ चैत्र शुक्ल दशमी शनिवार के दिन मघानक्षत्र हो तो मेघका उदय होने पर धान्य सस्ते हों ॥१४॥ चैत्र शुक्ल पक्षमें यथायोग्य रूई, कपास, बाजरी और जूआर इनका सग्रह करने से ज्येष्ठ और आषाढ आदि मासमे लाभदायक है ॥१५॥

-चैत्रशुक्ल प्रतिपदा जितनी घड़ी हो उसमे उस दिनके नक्षत्र जोड़कर बारहसे भाग दो जो लब्धि मिले वह विंशोपका समझना ॥१६॥ आषाढ शुक्ल द्वितीया के दिन पुष्य नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतना विंशोपका जानना

पुनरपि श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—

कृष्णपक्षे श्रावणस्यै-कादश्यां रोहिणी च भम् ।
यावद्धटीप्रमाण स्या-द्धान्ये तावद्विशोपका: ।।१८।।इत्युक्तंप्राक् ।
तत्र लोकेऽप्याह—श्रावणकिसन एकादशी, जेती रोहिणी होय ।
तेती अधगिणो पायली, होसी निश्चय सोय ॥१९॥
ग्रन्थान्तरे तु—फग्गुण पहिली पडिवया, जेती सयभिस होय ।
तित्तिय पायलां परठविए, होसी पयड्डिय लोय ॥२०॥
क्वचित्तु—शीवा वीती पंचमी, जेती घडियां होय ।
तीने भागे दीजइ, सेस भाव सो होय ॥२१॥

अस्यार्थ:—कार्तिकशुक्लपञ्चमी घटिकाप्रमाणाः शेरपादाः पल्लिकायाः पादा वा फदीयानाणकस्य पूर्वस्यां प्रतिशकस्य भवन्ति । केचित् पुनर्वदन्ति— घटिकाप्रमाणात् तुर्यांशे रूप्यकस्य मणा देशान्तरे फदीयानाणकस्य घटिकाप्रमाणतु-

॥१७॥ श्रावण कृष्ण एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतना धान्यका विशोपका जानना ॥ १८ ॥ श्रावण कृष्ण एकादशी को रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो उससे आधा धान्यका विशोपका जानना ॥१९॥ फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदाके दिन जितनी घड़ी शतभिषा नक्षत्र हो उतनी पायली (ढाई शेर धान्यका माप विशेष) धान्य बिके ॥ २० ॥ कार्त्तिक शुक्ल पञ्चमी जितनी घड़ी हो उसको तीनसे भाग देना, जो शेष बचे वह भाव समझना ॥ २१ ॥ कार्त्तिक शुक्ल पञ्चमी जितनी घड़ी हो उतना शेरपाद (पाव) अन्न प्रति फदिया का बिके । अथवा पल्लिका (आठ शेर धान्य मापनेका पात्र) का चतुर्थांश प्रमाण अन्न बिके । दूसरोंका मत है कि-पञ्चमीकी घटिकाओं को ४ से भाग देनेसे जो लब्धि मिले उतने मण अन्न प्रति रुपया का बिके । देशान्तरोंमें उसी लब्धि तुल्य अन्न प्रति फदियाका शेर या पल्लिका बिके ऐसे कहते हैं । कितनेही आचार्योंका ऐसा भी मत है कि—[illegible]

यांशप्रमिताः शेराः पल्लिका वा भवन्ति । यद्वा पञ्चम्या घटिकास्त्रिभिर्भाज्या यल्लब्धं तदेकोनं तावत्यः पल्लिकाः स्फन्दकस्य लभ्या इति ।

क्वचित्तु—कार्तिके शुक्लपञ्चम्यां दश विंशार्कमास्करा ।
नृपा कलाश्च रव्यादेर्वाराद् ज्ञेया हि पल्लिकाः ॥२२॥
दैवयोगाच्छनिवार स्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ।
महामुद्रिकया लभ्या एकया + धान्यपल्लिका ॥२३॥
मतान्तरे—लभ्यानि धान्यमानानि महामुद्रिकयैकया ।
* रवौ सार्द्धद्वयं सोमे पञ्चमानं द्वयं कुजे ॥२४॥
बुधे त्रीणि च चत्वारि गुरौ सार्द्धानि तान्यथ ।
शुक्रे शनौ च दुर्भिक्षं पञ्चम्यां कार्तिकोज्ज्वले ॥२५॥
विक्रमाद् वत्सरस्याङ्क त्रिगुणो पञ्च मीलिते ।

के तृतीयांशमें एकसे घटा देनेसे जो शेष बचे उसके तुल्य पल्लिका अन्न प्रतिपदियाका बिके । कार्तिक शुक्ल पंचमी के दिन रविवार आदि जो वार हो उस वार के अनुसार दश, बीस, आठ, बारह, सोलह और सोलह पल्लिका धान्य जानना ॥ २२ ॥ यदि दैवयोगसे शनिवार हो तो दुर्भिक्ष जानना, एक महामुद्रिकासे एक पल्लिका तुल्य धान्य मिले ॥ २३ ॥ प्रकारान्तर से कार्तिकशुक्ल पंचमी के दिन रविवार हो तो एक महामुद्रिकासे ढाई पल्लिका तुल्य धान्य मिले । सोमवार हो तो पांच, मंगलवार हो तो दो ॥ २४ ॥ बुध हो तो तीन, गुरुवार हो तो साढे चार पल्लिका महामुद्रिकासे मिले । यदि शुक्र या शनिवार हो तो दुर्भिक्ष जानना ॥ २५ ॥

विक्रम संवत्सरके अंकको तीन गुणा करके पांच मिलाना, पीछे सात

+ टी—क्वचित्तिस्रोऽपि च चतस्रो वा इति बहुवचनात् प्राप्य ।

* लोकेऽपि—रवि मंगल चारि मण, सोम पंच बुध तीन । जीव कवि दोइ मण, शनि दुर्भिक्ष समीन ॥ जपुरकीप्रतिमें विशेष है

सप्तभागे शेषधान्य-मणाः स्युरेकरूप्यके ॥२६॥
दशम्या रवियुक्ताया घटिका गणयेत् सुधीः।
षष्टिभक्ते भवेच्छेषं धान्यार्घमणधारणा: ॥२७॥
पुनः— ज्येष्ठाषाढमासयुग्मे यावत्योऽष्टमिका रवौ।
तावन्मणा रूप्यकस्य केचिदेव वदन्त्यपि ॥२८॥
यद्वा— यावत्यः शनिना युक्ता दशम्यो रविणाथवा।
भवन्ति तावन्मानानि रूप्यकेन क्वचिज्जने ॥२९॥
अथवा— अमावस्यः सोमवत्यो यावत्यस्तिथिपत्रके।
पञ्चम्यः सोमवत्यो वा रूप्यात्तावन्मणाशनम् ॥३०॥
ग्रन्थान्तरे— चैत्र अमावसि जे घडी, वरते टीप्पण माय।
तेता सेर पीरोजीया, काती धान्य विकाय ॥३१॥
मतान्तरेण नव्याः प्राहुः —
धान्यविशोपकामध्ये क्षुधाविंशोपका मीलने विहिते।
वर्षाविंशोपकविना कृते धान्यमणजा रूप्यात् ॥३२॥

से भागदेना जो शेष बचे उतने मण धान्य एक रूपियाका समझना ॥२६॥ रविवार युक्त दशमी की जितनी घड़ी हो उसमे साठसे भाग देना जो शेष बचे वह मण धान्यका मूल्य समझना ॥ २७॥ ज्येष्ठ और आषाढ ये दोनों मासकी अष्टमी रविवार के दिन जितनी घड़ी हो उतना मण धान्य रूपिये का बिके ऐसे केई बोलते है ॥ २८ ॥ यदि शनि या रविवार के दिन दशमी जितनी घड़ी हो उतने माण धान्य एक रूपइसे मिले ॥ २९ ॥ पंचागमें जितनी सोमवती अमावस हो या जितनी सोमवती पंचमी हो उतना मण धान्य बिके ॥ ३० ॥ चैत्रमासकी अमावस जितनी घड़ी पंचागमें हो उतना पीरोजिया सेरों से कार्तिकमे धान्य बिकें ॥ ३१ ॥ धान्य के विशोपका में क्षुधाके विशोपका मिलाकर इसमेंसे वर्षा के विशोपका घटा देना जो शेष बचे उतना मण धान्य बिके ॥ ३२ ॥

क्षुधाविंशोपकानयन त्वेव रामविनोदे—

शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च,
शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतं च ।
लब्धेन शाकं च पुनः प्रकल्प्य,
पूर्वोक्तवत् स्युः खलु विश्वकाख्यः ॥३३॥
वर्षाथ धान्य तृणशीततेजो-
वायुश्च वृद्धिः क्षयविग्रहौ च ।
क्षुधादिकानां करणान्तरेण,
विश्वांशबोधेन फलप्रदास्ते ॥३४॥

तत्करणं त्वेवम्—

शाकं च वेदगुणित सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्न त्रिभिर्युक्तं प्रोक्तं विश्वांशसंज्ञकम्॥३५॥
क्षुधा तृषा तथा निद्रा आलस्यमुद्यमस्तथा ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभो मैथुनमेव च ॥३६॥

इष्ट शाक (शक सवत्सर) को ३ से गुणा करके ७ से भाग दो, जो शेष रहे उसको द्विगुणित करके ५ जोड़ दो तो वर्षा के विश्वा हो जाते हैं । पीछे सातका भाग देनेसे जो लब्धि आई है उसिको शाक कल्पना कर के पूर्ववत् विधि से धान्यके विश्वा साधन करें । इसी प्रकार पुन २ लब्धियोंको शाक कल्पना करके तृण, शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह के विश्वा साधन करें । तथा क्षुधा आदि के विश्वा प्रकारांतर से साधन करें । यह विश्वाओंका बोध फलदायक है ॥३३-३४॥

शकसंवत्सरको चारसे गुणा कर सात से भाग देना, जो शेष बचे उसको दोसे गुणा कर इसमें तीन जोड़ देना तो तेरह भावोंके विश्वा हो जावे हैं ॥३५॥ क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दम्भ, लोभ, मैथुन ॥३६॥ रसनिष्पत्ति, फलनिष्पत्ति, और उत्साह ये लोगों

ततस्तु रसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च ।
उत्साहः सर्वलोकाना-मेवं भावास्त्रयोदश ॥३७॥

अन्यदपि प्रासंगिक यथा—

शाकाब्दं वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं तु द्विगुणीकृत्य रूपमत्राभियोजयेत् ॥३८॥
उग्रता पापपुण्ये च व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारो मरणं जन्मदेहिनाम् ॥३९॥
देशोपद्रवसुस्थत्वे चौराकुलभयं तथा ।
चौरोपशमन चाग्नि-भय चाग्निशमः पुनः ॥४०॥
शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशै-
श्चतुर्धाहतः सप्तभक्तावशिष्टम् ।
द्विनिघ्न त्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जराय्व-
ण्डजस्वेदजानां भवेयुर्विशोपाः ॥४१॥
शाकोऽङ्कघ्नोऽङ्कहृच्छेषं द्विघ्न व्याद्यमवाप्ततः ।

के तेरह भाव हैं ॥३७॥

शक संवत्सर को आठ गुना कर नव से भाग देना, जो शेष बचे उसको दोसे गुणाकर इसमे एक मिला देना तो ॥ ३८ ॥ उग्रता, पुण्य, पाप, व्याधि, व्याधिनाशक, आचार, अनाचार, प्राणियोंका मरण ॥३९॥ तथा जन्म, देशमें उपद्रव तथा शान्ति, चोरभय, चोरोंकी शान्ति, अग्नि भय और अग्नि की शान्ति, इनके विशोपका हो जाते है ॥ ४० ॥ शक संवत्सरको पांच, सात, नव और ग्यारह इनसे गुणाकर सातमे भाग देना, जो शेष बचे उस को दोसे गुणाकर इस मे तीन जोड़ देना तो उद्भिज, जरायु, अण्डज और स्वेदज इनके विशोपका हो जाते है ॥ ४१ ॥ शकसंवत्सरको नवसे गुणाकर नवमे भाग देना, जो शेष बचे उसको दोसे गुणाकर इसमें तीन जोड़ देना इस अंकको सात जगह रखना तो धान्यभा,

सप्तस्थाप्यस्तदङ्काश्च शलभा मूषकाः शुकाः ॥४२॥
हेमताम्र स्वचक्रं च परचक्रमितीतयः ।
अतिवृष्टिरनावृष्टिः क्वचिदाद्यमिदं द्वयम् ॥४३॥

मेघजीकृतग्रन्थे—

तिथि नक्षत्र अरु जोगथी, घटिका करि एकत्र ।
वीसे भागे जे रहे, विश्वा ते गणि मित्र! ॥४४॥

अथ चैत्रमास —

प्रकृतम्— चैत्रे चेदष्टमीमध्ये बुधोऽथवा भवेत् कुजः ।
विरूपं वर्षं जानीहि नदीतीरे गृहं कुरु ॥४५॥
चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां रोहिण्यां यदि दृश्यते ।
साभ्र नभस्तदादेश्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥४६॥
द्वितीये दिवसे प्राप्ते चैत्रे वायुश्च सर्वतः ।
न च मेघाः प्रदृश्यन्ते अनावृष्टिर्न संशयः ॥४७॥
पौर्णमास्यां यदा स्वाति-र्विद्युन्मेघसमन्वितः ।
निर्दोषमपि पूर्वर्क्षे गर्भो गलितमादिशेत् ॥४८॥

मूषक, शुक ॥ ४२ ॥ सोना, ताम्बा, स्वचक्र, परचक्र, ईति, अतिवृष्टि और अनावृष्टि इन के विशेषफल हो जाते हैं ॥४३॥ मेघजीकृत ग्रन्थ मे कहा है कि– तिथि नक्षत्र और योग इनकी घड़ी इकट्ठी कर वीससे भाग देना जो शेष बचे वे हे मित्र! विश्वा गिनना ॥४४॥

चैत्र शुक्ल अष्टमी के दिन बुधवार या मंगलवार हो तो वर्षा न हो इसलिये नदीके किनारे ही घर करना पड़े ॥४५॥ चैत्र शुक्ल पंचमी को रोहिणीनक्षत्र हो और उसी दिन आकाश बादलों से आच्छादित हो तो गर्भकी पूर्णता जाननी ॥४६॥ चैत्र शुक्ल द्वितीयाको चारों दिशा के वायु चले और बादल न हो तो अनावृष्टि जानना ॥ ४७ ॥ चैत्र पूर्णमासीके दिन यदि स्वातिनक्षत्र हो और बादलों के साथ बिजली भी चमके तो

अथ वैशाखमास:—

वैशाखकृष्णप्रतिप-त्तिथेर्हीने समेऽधिके ।
नक्षत्रेऽल्पजल भूम्या सुख बहुजलं क्रमात् ॥४९॥

यदाहलोके-

चैत्र गयो वैसाख ज आसइ, प्रथमतिथि गणीनइ विमासइ ।
तिथि वधे तो धान्य विणासइ, नक्षत्र वधे तो मेह अगासइ ।५०।

वैशाखकृष्णपक्षस्य पञ्चम्यां जायते रविः ।
आगामि वर्षसंक्रान्तौ तद्दिने वृष्टिबाधकः ॥५१॥

वैशाखशुक्लपञ्चम्या शनिनार्द्राप्रसङ्गतः ।
सर्वं वस्तु समर्घं स्याद् भाद्रे मेघमहोदयः ॥५२॥

वैशाखमासे सितपञ्चमी सा, सूर्यादिवारैश्चिनुते फलानि ।
मन्दा च वृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धं, वात सुभिक्षं कलहान्ननाशनम् ॥

वैशाखे यदि सप्तम्यां धनिष्ठा वा श्रुतिर्भवेत् ।
श्यामवस्तुमहर्घं स्यात, समर्घं धवल तदा ॥५४॥

प्रथमके नक्षत्रमें निर्दोष हो तो भी गर्भपात हो जाता है ॥४८॥

वैशाख कृष्ण प्रतिपदा के दिन जो नक्षत्र हो वह प्रतिपदासे हीन हो तो भूमि पर थोड़ा जल बरसे, समान हो तो सुख और अधिक हो तो बहुत जल बरसे ॥ ४९ ॥ लोक में भी कहते है कि—चैत्र बीतने बाद वैशाख मासकी प्रथमतिथि प्रतिपदा बढ़े तो धान्य का विनाश और नक्षत्र बढ़े तो मेघ आकाशमें रहे ॥ ५० ॥ वैशाख कृष्ण पचमी के दिन रविवार हो तो आगामी वर्ष सक्रान्तिके दिन वर्षा न हो ॥ ५१ ॥ वैशाख शुक्ल पचमी शनिवार के दिन आर्द्रा नक्षत्र हो तो सब वस्तु सस्ती हों और भाद्रपद में मेघका उदय हो ॥ ५२ ॥ वैशाख शुक्ल पचमी रविवार आदि के दिन हो तो उसका क्रमसे मंदवृष्टि, अतिवृष्टि, युद्ध, वायु, सुभिक्ष, कलह और अन्ननाश ये फल जानना ॥ ५३ ॥ यदि वैशाख सप्तमी को धनिष्ठा या श्रवण नक्षत्र हो

+ अक्षयाख्यतृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी ।
कृत्तिका मध्यमं वर्षं दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥५५॥
वैशाखे पञ्चभौमाश्चेद् भयं सर्वत्र जायते ।
क्वचिन्न मेघवर्षा स्याद धान्यं महर्घमादिशेत् ॥५६॥
वैशाखे धवलाष्टम्यां शनिवारो भवेद् यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गस्तदादिशेत ॥५७॥
रोहिणी चोत्तरास्तिस्रो मघा वा रेवती भवेत् ।
नवम्यां मंगले राधे तदा कष्टं महद् भुवि ॥५८॥
वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारो चेद्गुरुभार्गवौ ।
तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले ॥५९॥
अमावास्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता ।
रोहिणी लोकदुःखाय मध्यमा चाश्विनी स्मृता ॥६०॥
भरण्यां व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जलेऽल्पता ।

तो काली वस्तु महँगी और सफेद वस्तु सस्ती हो ॥ ५४ ॥ अक्षयतृतीया के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, कृत्तिकानक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष, और मृगशीर्ष नक्षत्र हो तो दुष्काल जानना ॥५५॥ वैशाखमें यदि पांच मंगल हो तो सर्वत्र भय हो, मेघ वर्षा न हो और धान्य महँगे हो ॥ ५६ ॥ वैशाख शुक्ल अष्टमी को शनिवार हो तो जलका सूखना, प्रजाका नाश और छत्रभंग कहना ॥ ५७ ॥ वैशाख मासकी नवमी मंगलवार को रोहिणी, तीनों उत्तरा, मघा या रेवती नक्षत्र हो तो भूमिपर बड़ा कष्ट हो ॥ ५८ ॥ वैशाख चतुर्दशीके दिन गुरुवार या शुक्रवार हो तो पृथ्वी पर बहुत धान्य उत्पन्न हों ॥ ५९ ॥ वैशाख की अमावस को रेवती नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, रोहिणी हो तो लोगों को दुःख, अश्विनी हो तो मध्यम हो ॥ ६० ॥ भरणी हो तो

+ टी—जो आखा रोहिणी नहि, पोस अमावस नहि मूल।
जो आषाढ़ राखी नहि, तो मावास मजसी धूल ॥

चौरा लुण्ठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥६१॥
तृतीयायामक्षयायां रोहिणी गुरुणा सह ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्ति-र्भुवि मङ्गलकर्म च ॥६२॥

अथ ज्येष्ठमास —

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे या तिथिः प्रथमा भवेत् ।
आगता केन वारेण तामन्वेषय यत्नतः ॥६३॥
* भानुना पवनो वाति कुजो व्याधिकरो मतः ।
सोमपुत्रेण दुर्भिक्षं खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥६४॥
गुरुभार्गवसोमाना-मेकोऽपि यदि जायते ।
वर्षावधि तदा पृथ्वी धनधान्यसमाकुला ॥६५॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद् यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥६६॥
ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां द्वितीयायां प्रजायते ।
नक्षत्रमार्द्रा तद्धणी महा दुर्भिक्षकारणम् ॥६७॥

* ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदि शनिवारः प्रवर्त्तते ।
जलशोषः प्रजादुःखं छत्रभङ्गोऽपि सम्भवेत् ॥६८॥
ज्येष्ठकृष्णे दशम्यां च रेवती सुखकारिणी।
एकादश्यां खण्डवृष्टि-र्द्वादश्यां सानुकष्टदा ॥६९॥
शुक्ले ज्येष्ठदशम्यां चे-च्छनिवारः प्रजायते ।
वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुला प्रजा ॥७०॥
लोकेऽप्याह–जेठी पूनिम मूल रिख, जो थोडो ही दीसंति ।
साख दहो दिसि नीपजे, तदा नीर पलयंति ॥७१॥

अथाषाढमास —

यावती भुक्तिराषाढे शुक्लायां प्रतिपद्दिने ।
पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यां वृष्टिः स्यात् तावतीस्फुटम् ॥७२॥

कालीरोहिणीविचार —

आषाढे दशमी कृष्णा सुभिक्षाय च रोहिणी ।

युक्त हो तो बडा दुर्भिक्ष होता है ॥ ६७ ॥ ज्येष्ठकृष्णा प्रतिपदा को शनिवार हो तो जलका शोष, प्रजाको दुःख, और छत्रभंग का भी संभव हो ॥ ६८ ॥ ज्येष्ठकृष्णा दशमी को रेवती नक्षत्र हो तो सुख कारक, एकादशी को हो तो खंडवृष्टि और द्वादशी को हो तो कष्टदायक है ॥ ६९ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल दशमीको शनिवार हो तो वर्षाका निरोध, गौओं का नाश और प्रजा बडा शोकसे व्याकुल हो ॥७०॥ लोकमें भी कहा है कि ज्येष्ठपूर्णिमाके दिन थोडासा भी मूल नक्षत्र हो तो दशों ही दिशामें धान्यप्राप्ति हो और जल वर्षा अच्छी हो ॥ ७१ ॥

आषाढ शुक्ल प्रतिपदाके दिन पुनर्वसु नक्षत्र जितना हो उतनी चातुर्मास में वर्षा हो ॥ ७२ ॥ आषाढ कृष्णादशमी के दिन रोहिणीनक्षत्र हो तो

---

*टी — ज्येष्ठस्य प्रथमपक्षकथनात् शुक्लपक्षभ्रमनिवारणाय ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदीत्युक्तम्। ज्येठ मास अमावसे, जो शनिवारी होय। देव न वरसे धण मरे, विरलो जीवे कोय ॥

एकादशी मध्यकालं दुर्भिक्षं द्वादशी भवेत् ॥७३॥
त्रयोदश्यां रोहिणी चे-दुत्तमः पवनस्तदा ।
चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजा शोकाकुला तदा ॥७४॥

अत्र लौकिकमपि दुर्बोधं यथा—

+रोहिणी चंद दिवायरह, एका घडी लहेइ ।
समउ समारे भड्डली, जोइस काइं करेइ ॥७५॥ इति ।

आषाढमासे सित पञ्चमी दिने, रव्यादिवारः क्रमशः फलानि ।
वृष्टिः सुवृष्टिर्ह्यतिवृष्टिरूर्ध्वं, वातः प्रघातः प्रलयः प्रणाशः ।७६।

आषाढशुक्ल नवमी सानुराधा शनौ यदा ।
क्वचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिः क्वचिद्दुर्भिक्षकारिका ॥७७॥
आषाढे प्रथमे पक्षे प्रथमादितिथित्रये ।
श्रवणं वा धनिष्ठा स्यात् तदान्नसङ्ग्रहः शुभः ॥७८॥

सुभिक्ष, एकादशीको हो तो मध्यम समय, द्वादशीको हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ७३॥ त्रयोदशीके दिन रोहिणी हो तो उत्तम पवन चले, चतुर्दशीके दिन हो तो राजयुद्ध और प्रजा शोक से आकुल हो ॥ ७४ ॥ रोहिणी और चन्द्रमाका योगकी एक भी घड़ी रविवार को हो या रोहिणी और सूर्य का योगकी एक भी घडी सोमवारको हो तो हे भड्डली ! समयको अच्छा करे ॥ ७५ ॥ आषाढ शुक्लपञ्चमी के दिन रविवार आदि वार हो तो उस का अनुक्रमसे वर्षा, अच्छी वर्षा, अतिवर्षा, उर्ध्ववायु, प्रघात, प्रलय और विनाश ये फल होते हैं ॥७६॥ आषाढ शुक्लनवमी शनिवारको अनुराधानक्षत्र होतो कहीं धान्यकी थोड़ी प्राप्ति और कहीं दुर्भिक्ष हो ॥७७॥ आषाढके प्रथमपक्षमें प्रतिपदा आदि तीन तिथियोंमें श्रवण या धनीष्ठानक्षत्र आ जाय तो धान्य संग्रह करना शुभ है ॥७८॥ आषाढ कृष्ण षष्ठीको शनिवार हो तो गहूँ ग्रहण

+टी—रोहिण्या चन्द्रे प्राप्ते दिवाकरे रविवारे घटिका एकाप्याषाढे श्रेष्ठा इत्यर्थो यद्वा रोहिण्या सूर्ये प्राप्ते चन्द्रवारे एका घटिका इति दुर्गममिदम् ।

आषाढषष्ठीदिवसे कृष्णपक्षे शनिर्यदा ।
तदा गोधूमका ग्राह्या द्विगुणा यस्तु कार्त्तिके ॥७९॥
आषाढे शनिरेवत्यामष्टम्यां सङ्गमो यदा ।
तदा वृष्टिनिरोधेन कष्टमुत्कृष्टमादिशेत् ॥८०॥
देवसूणी इगारसइ, जे वारि हुइ भीड ।
सनि मूसो रवि कातरो, मंगल भणीइ तीड ॥८१॥
क्वचित्–"धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं च"
सोमे शुक्रे सुरगुरुइ, जो पोढे सुरराय ।
अन्न बहुल तो नीपजे, पृथिवी नीर न माय ॥८२॥
सनि आइचइ मंगले, जो सुवइ सुरराय ।
तीडे मुसे कत्तरे, संतापिजे भाय ॥८३॥
आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो यदा भवेत् ।
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता ॥८४॥
चतुर्दश्यां तथाषाढे सोमवारप्रवर्त्तनात् ।
न धान्यं न तृणं लोके किं गवादेः प्रयोजनम् ॥८५॥

करनेसे कार्त्तिकमें दूने मूल्यसे बिकें ॥७९॥ आषाढमें अष्टमी शनिवारको रेवतीनक्षत्र हो तो वर्षा न हो और बडा कष्ट हो ॥ ८० ॥ आषाढ शुक्ल एकादशीको शनिवार हो तो मूसेका, रविवार हो तो कातराका और मंगलवार हो तो टीड्डी का उपद्रव हो। कोई कहते है कि धान्य महँगे हों और दुर्भिक्ष हो ॥८१॥ सोम शुक्र या बृहस्पति वारके दिन देव पोढे याने इन वारों को शुक्ल एकादशी हो तो अन्न बहुत उत्पन्न हो और पृथ्वी जल से तृप्त हो ॥८२॥ यदि शनि रवि या मंगलवारको देव पोढे तो टीड्डी, मूसे और कातरा इनका उपद्रव हो ॥८३॥ आषाढ मासमें कर्कसंक्रान्तिके दिन शनिवार हो तो दुर्भिक्ष हो और धान्य महँगे हो ॥ ८४ ॥ आषाढ में चतुर्दशी के दिन सोमवार हो तो लोकमें धान्य और तृण उत्पन्न न हो,

आषाढे प्रथमे पक्षे द्वितीयानवमीतिथौ ।
गुर्विन्दुशुक्रवाराः स्युः श्रेष्ठा नेष्टो बुधः शनिः ॥८६॥
यतः—आषाढा धुरि बीजडी, नवमी निरखो जोय ।
सोमे शुक्रे सुरगुरु अ, जल बुंबारव होय ॥८७॥
रवि तत्तो बुध सीअलो, मंगल वृष्टि न होय ।
दैवयोगे शनि हुइ तो, निश्चय रौरव होय ॥८८॥
आषाढशुक्लैकादश्यां शन्यादित्यकुजैः समम् ।
सम्पूर्णस्तिथिभोगश्चेत् तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥८९॥

आषाढपूर्णिमाविचार —

'नमिऊण तिलोयरविं जगवल्लह-जलहर महावीरं' इत्यादि चतुर्मासकुलके—

आषाढपुन्निमाए पुव्वासाढा हविज्ज दिनराई ।
ता चत्तारि वि मासा खेमसुभिक्खं सुवासं च ॥९०॥
अह हेट्ठिमाय पुण्णिममूलेणं जाइ पढम बे पुहरा ।

जिससे गौ आदिका क्या प्रयोजन है ॥ ८५ ॥ आषाढके प्रथम पक्षमें दूज और नवमी तिथिको गुरु, सोम या शुक्रवार हो तो श्रेष्ठ, बुध या शनिवार हो तो अशुभ है ॥ ८६ ॥ आषाढके प्रथमपक्षकी दूज और नवमी सोम, शुक्र या गुरुवारको हो तो जलवर्षा अच्छी हो ॥८७॥ रविवारको हो तो ताप अधिक पड़े, बुधवार हो तो ठंडी अधिक, मंगलवार हो तो वर्षा न हो और दैवयोगसे शनिवार हो तो निश्चयसे दुष्काल हो ॥८८॥ आषाढ शुक्ल एकादशीको शनि रवि या मंगल हो तो वर्ष समान हो, यदि इन वारों को पूर्ण तिथि भोग हो तो दुर्भिक्ष हो ॥८९॥

चतुर्मासकुलकमें कहा है कि– आषाढ पूर्णिमाको दिनरात पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो चारोंही मास क्षेम, सुभिक्ष और मांगलिक हो ॥९०॥ पूनम को पहले दो प्रहर मूल नक्षत्र हो और बाद पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो पहले

ता दुन्न वि मासाओ दुभिक्खं उवरि सुभिक्खं ॥९१॥
अह उवरि बे पुहरा पुव्वासाढा हविज्ज नक्खत्तं ।
ता होइ दुण्णि मासा खेमसुभिक्खं वियाणाहि ॥९२॥
अहव पविसिऊण मूलं भुजइ चत्तारि पुहर जइ कहवि।
ता चत्तारि वि मासा दुभिक्खं होइ रसहाणि ॥९३॥
अहवा उत्तरसाढा भुंजइ चत्तारि पुहरमवियारं ।
ता जाणह दुक्कालं मासा उत्तरह चत्तारि ॥९४॥
अह भुंजइ बे पुहरा पुव्वाउड्डुम्मि उत्तरासाढा ।
ता उवरिं बे मासा होइ सुभिक्खाओ रसहाणि ॥९५॥
अह भुंजइ बे पुहरा मुलं पुव्वं हविज्ज नक्खत्तं ।
उवरि पुव्वासाढा दुक्खं पच्छा सुहं होइ ॥९६॥
एवमर्घकाण्डेऽप्युक्तम्—
आषाढ्यां पूर्वाषाढाभं वर्षं यावच्छुभ करम् ।
आवर्षं धान्यनिष्पत्तिः प्रजासौख्यमविग्रहात् ॥९७॥
मूलोत्तरे चार्द्धधिष्ण्ये फलमध्यविधायिके ।

दो मास दुर्भिक्ष रहे बाद सुभिक्ष हो ॥९१॥ अथवा पूर्वाषाढा नक्षत्र उपर के दो प्रहर हो तो दो मास सुभिक्ष और मगलिक हो ॥९२॥ यदि चारो ही प्रहर मूलनक्षत्र हो तो चारों ही मास दुर्भिक्ष हो और रसकी हानि हो ॥९३॥ अथवा पीछेके चारों ही प्रहर उत्तराषाढानक्षत्र हो तो पीछले चार मास दुष्काल जानना ॥ ९४ ॥ यदि दो प्रहर पूर्वाषाढा हो और बाद मे उत्तराषाढा नक्षत्र हो तो पहले दो मास सुभिक्ष हो और रसकी हानि हो ॥९५॥ यदि पहले दो प्रहर मूलनक्षत्र हो और बादमें पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो पहले दुःख और पीछे सुख हो ॥ ९६ ॥ आषाढ पूर्णिमा के दिन पूर्वाषाढा नक्षत्र पूर्ण हो तो एक वर्ष तक शुभ हो, धन्य की निष्पति और प्रजा शान्ति पूर्वक सुखी हो ॥ ९७ ॥ आधा मूलनक्षत्र और आधा पूर्वा-

आवर्षमध्यम धान्यं देशे सर्वत्र कथ्यते ॥९८॥
अभ्रं विना यदा रम्यौ वातौ पूर्वोत्तरौ यदा ।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टिर्हठाद् भवेत् ॥९९॥
आषाढपूर्णिमा षष्टि-घटीमाना यदा भवेत् ।
मासा द्वादश धान्यानां सुभिक्षं च सुख जने ॥१००॥
त्रिंशद्धटीभिः षण्मासात् सुख दुःख ततः परम् ।
चातुर्मास्यां पञ्चदश-घटीमाने सुभिक्षता ॥१०१॥
न्यूनत्वे तु पञ्चदश-घटीभ्यो दुःखसम्भवः ।
वातवार्दल संयोगात् फले न्यूनाधिकाश्रयः ॥१०२॥
कुहूतः षोडशाहे वा आषाढ्या यदि वार्दलम् ।
पूर्वाषाढा च नक्षत्र तदा कालः कणाकुलः ॥१०३॥
यन्नाम्नाख्यायते मास-स्तन्नक्षत्रस्य पूर्णया ।
योगे पूर्णो समर्घत्व धान्ये न्यूने तथोनता ॥१०४॥

यदा त्रैलोक्यदीपके श्रीहेमप्रभसूरयः—

मासाभिधाननक्षत्रं राकायां क्षीयते यदि ।
महर्घत्वं तदा नूनं वृद्धौ ज्ञेया समर्घता ॥१०५॥
मासनामकनक्षत्रं राकायां न भवेद् यदा ।
महर्घं च तदावश्यं तत्त्द्योगे विशेषतः ॥१०६॥
धिष्ण्यवृद्धिदिने चन्द्रः क्रूरैर्यदि न दृश्यते ।
समर्घं जायते धान्य क्रूरदृष्टे महर्घता ॥१०७॥
धिष्ण्यवृद्धिदिने यत्र तिथिपार्श्वाद्गरीयसी ।
दिने तत्र समर्घं स्यात् तिथिवृद्धौ महर्घता ॥१०८॥
ऋक्षवृद्धौ रसाधिक्यं कणाधिक्यं च निश्चितम् ।
योगाधिक्ये रसोच्छेदो दिनार्घंप्रत्यहं स्फुटम् ॥१०९॥
षड्भिश्च नाडिकाभिश्च धिष्ण्यवृद्धिः क्रमाद्यदि ।
प्रत्येक च तिथेर्यत्र समर्घं तत्र जायते ॥११०॥
षड्भिश्च नाडिकाभिश्च तिथिवृद्धिः क्रमाद्यदा ।

यदि महीनेका नक्षत्र पूर्णिमाके दिन क्षय हो जाय तो निश्चयसे अन्न महँगे हो और बढे तो सस्ते हों ॥१०५॥ महीनेका नक्षत्र यदि पूर्णिमाके दिन न हो तो उन २ योगों में विशेष कर अन्न महँगे हो ॥ १०६ ॥ नक्षत्रकी वृद्धिके दिन चन्द्रमा यदि क्रूर ग्रहसे दृष्ट न हो तो धान्य सस्ते हों और क्रूर ग्रहसे दृष्ट हो तो महँगे हो ॥ १०७ ॥ नक्षत्रकी वृद्धि के दिनकी तिथि यदि समीपकी तिथिसे बड़ी हो तो उस दिन अन्न सस्ते हों । और समीपकी तिथि वृद्धि हो तो महँगे हो ॥१०८॥ नक्षत्रकी वृद्धि हो तो निश्चयसे रस और धान्यकी अधिकता हो । योगकी वृद्धि हो तो रस का नाश हो यह प्रतिदिन स्फुट है ॥ १०९ ॥ जहा प्रत्येक तिथि से नक्षत्रकी वृद्धि छह घड़ी अधिक हो तो वहा अन्न सस्ते हों ॥ ११० ॥ यदि प्रत्येक नक्षत्र से तिथि की वृद्धि छह घड़ी अधिक हो तो निश्चय से

प्रत्येकं तत्र धिष्ण्याच्च महर्घं विद्धि निश्चितम् ॥१११॥
तिथिनक्षत्रयोर्वृद्धिं विज्ञाय प्रत्यहं द्वयोः ।
सर्वं टिप्पनकं ज्ञात्वा लाभालाभौ विनिर्दिशेत् ॥११२॥
यावच्चाऽस्य उडोर्वृद्धिः समर्घं तद्विशोपकाः ।
यावच्चाऽस्यस्तिथेर्वृद्धि-र्महर्घं तत्प्रमाणकम् ॥११३॥
मासमध्ये यदा द्वौ तु योगौ च त्रुटत क्रमात् ।
महर्घे घृततैले द्वे योगवृद्धौ समर्घके ॥११४॥
वर्षाकालत्रिमासेषु नक्षत्रं वर्द्धतेस्फुटम् ।
तिथिहानिस्तु सलग्ना शुभकालस्तदा बहुः ॥११५॥
वर्षाकालत्रिमासेषु नक्षत्र त्रुटति ध्रुवम् ।
तिथिश्च वर्द्धते तत्र ध्रुव कालो विनश्यति ॥११६॥
तेन मूलोत्तरापाढे सर्वराकासु वर्जिते ।
आषाढ्यां तु विशेषेण धान्यार्थस्य विनाशके ॥११७॥

यदुक्तं सारसङ्ग्रहे—

महँगे हों ॥१११॥ सब देशके पचांगोमे तिथि और नक्षत्रका विचार कर लाभालाभ कहना चाहिये ॥११२॥ जितनी वड़ी नक्षत्रकी वृद्धि हो उतने विशोपके (विश्वे) धान्य सस्ते हो और जितनी वड़ी तिथिकी वृद्धि हो उतने विश्वे अन्न महँगे हों ॥११३॥ यदि एकही मास में योग दो वार क्षय हों तो क्रमसे घी और तैल महँगे हों। और वृद्धि हो तो सस्ते हों ॥११४॥ वर्षाकालके तीन महीनोंमे नक्षत्र बढ़े और तिथिका क्षय हो तो बहुत सुभिक्ष काल जानना ॥ ११५ ॥ यदि वर्षाकाल के तीन महीनोमें नक्षत्र का क्षय हो और तिथि की वृद्धि हो तो निश्चय से दुष्काल जानना ॥११६॥ इसलिये हरएक मासकी पूर्णिमाको मूल और उत्तराषाढा नक्षत्र नहीं होना चाहिये, इसमें भी आषाढ पूर्णिमाको तो विशेष कर नहीं होना चाहिये, यदि हो तो धान्य का विनाश हो ॥ ११७ ॥ पूर्णिमा के दिन

मृगादिपञ्चके राका धान्ये महर्घतां वदेत् ।
मघाचतुष्टये पूर्णा कुर्याद्धान्यसमर्घताम् ॥११८॥
राका चित्राष्टके युक्ता दुर्भिक्षात् कष्टकारिणी ।
श्रवणाद्रोहिणी यावन्नक्षत्रैः पूर्णिमा शुभा ॥११९॥
क्वचित्तु-तुल्यार्थं पूर्णिमायां स्यान्मृगादिधिष्ण्यपञ्चके ।
मघाचतुष्के दुर्भिक्षं कष्टं चित्रादिकेऽष्टके ॥१२०॥
कर्णादिदशके पूर्णा सुभिक्षसुखकारिणी ।
सोमवारेण सयोगे कुर्याद्विग्रहवर्द्धनम् ॥१२१॥
तिथिकुलके विशेषः—
तिय उत्तरा य अद्दा पुणव्वसु रोहिणी य जइ कहवि ।
हुंति किर पुण्णिमाए तम्मासे जाण दुब्भिक्खं ॥१२२॥
ग्रन्थान्तरे-आर्द्राचतुष्टये सूर्य-वारे पूर्णार्थनाशिनी ।

मृगशिर आदि पाच नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो धान्य महँगे हों । और मघा आदि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई एक नक्षत्र हो तो सस्ते हों ॥ ११८ ॥ पूर्णिमाके दिन चित्रा आदि आठ नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष तथा कष्टदायक हो । यदि श्रवणसे रोहिणी तकके नक्षत्र हो तो पूर्णिमा शुभ-दायक हो ॥११९॥ कोई कहते है कि– पूर्णिमा को मृगशिर आदि पाच नक्षत्रोंमें से कोई नक्षत्र हो तो समान भाव रहे । मघादि चार नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष, चित्रादि आठ नक्षत्र हो तो कष्ट हो ॥ १२० ॥ श्रवणादि दश नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो सुभिक्ष तथा सुखकारक हो, परतु सोमवार का योग हो तो विग्रहकारक हो ॥१२१॥ तिथिकुलक में इतना विशेष है कि– पूर्णिमाके दिन तीनों उत्तरा, आर्द्रा, पुनर्वसु या रोहिणीनक्षत्र हो तो उस मासमें धान्य महँगे हों ॥१२२॥ अन्य ग्रथमें– पूर्णिमाके दिन रविवार हो और आर्द्रा आदि चार नक्षत्रोंमेसे कोई नक्षत्र हो तो अर्थका (लक्ष्मीका) नाश हो । यदि सोमवार हो और मघादि चार नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो

मघाचतुष्टये सोमेऽप्येषा धान्यमहर्घकृत् ॥१२३॥
चित्राष्टके भौमवारे पूर्णिमा व्याधिवर्द्धिनी ।
दुर्भिक्षाय शनौ शेष-वारर्क्षेषु शुभावहा ॥१२४॥
तिथिनक्षत्रयोः साम्ये मृगादिधिष्ण्यपञ्चके ।
पूर्णिमायां विधोर्योगे तुल्यार्घमशन भवेत् ॥१२५॥
मेषादित्रितये सूर्ये शुभयुक्ते तिथिक्षये ।
कर्णादौ पूर्णिमायोगे समर्घं नु हठाद्भवेत ॥१२६॥
आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत् ।
सुभिक्ष कुरुतेऽवश्यं नक्षत्रे मृगसप्तके ॥१२७॥

अथ श्रावणमास –

श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद् गुरुयोगतः ॐ ।
मुद्गा माषास्तिलास्तैल महर्घं शीघ्रमादिशेत् ॥१२८॥
श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः सन्तापकारकः ।

छत्रभङ्गं विजानीया-दाश्विनान्ते न संशयः ॥१२९॥
दशम्यां श्रावणे सिंहे रविः संक्रमते शनौ ।
मही न दीना जलदै-रनन्ता धान्यसम्पदः ॥१३०॥
कृत्तिका श्रावणे कृष्णै-कादश्यां + मध्यमा समा ।
सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद् दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥१३१॥
यदुक्तं लोके—सावण बहुल इगारसी, जो रोहिणीया होय ।
घणुं वरससे बद्दली, आसासइ जिय लोय ॥१३२॥
जइ पुण आवे बारसे, तो मज्झट्टो काल ।
अहवा आवे तेरसी, तो रौरवदुकाल ॥१३३॥
इति कृष्णादिमासमते कालीरोहिणी ।
श्रावणे शुक्लपक्षे चेद् यदा कश्चित् तिथिक्षयः × ।
तदा कार्त्तिकमासे स्याच्छत्रभङ्गोऽपि निश्चयात् ॥१३४॥

करे, आश्विनमासके अंतमें छत्रभंग हो ॥ १२९ ॥ श्रावणमास मे दशमी शनिवारके दिन सिंहसंक्रांति हो तो पृथ्वी मेघों से दुःखी न हो याने पूर्ण वर्षा हो और धान्य संपत्ति बहुत अच्छी हो ॥ १३० ॥ श्रावण कृष्ण एकादशी के दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष हो, रोहिणी हो तो सुभिक्ष करे और मृगशिर हो तो दुर्भिक्ष करे ॥१३१॥ लोक में भी कहा है कि– श्रावण कृष्ण एकादशी को रोहिणी हो तो वर्षा अच्छी हो और लोक सुखी हों ॥१३२॥ यदि बारसके दिन रोहिणी आ जाय तो मध्यम काल और तेरसके दिन आ जाय तो दुष्काल हो ॥१३३॥ यदि श्रावण शुक्ल पक्षमें कोई तिथिका क्षय हो तो कार्त्तिकमासमें निश्चयसे छत्रभंग हो ॥१३४॥

+ टी—श्रावण किसन एकादशी तोन नक्षत्र जन कृतिका तो कर-वरो, रोहिणी घणु सुखदत ॥१॥ इगियारसि मिगसिर हुइ तो अणचिं-त्यो काल । काली रोहिणी टीप्पणो, ओसो फल भाल ॥२॥

× संवत् १७४३ वर्षे रावडीपूर्णात्तयदेन कार्तिके विद्यापुरदुर्गभ-ङ्गः । इद कदाचिदेव संभवति शुक्लपक्षे कदाचिन्न संभवत्यपि ।

श्रावणे कृष्णपक्षस्य प्रतिपद्दिवसे धृतौ ।
योगे धृतिः स्याद्धान्यस्य शेषयोगेषु विक्रयः ॥१३५॥
श्रावणे वा भाद्रपदे प्रथमायां श्रुतिद्वयम् ।
कृष्णपक्षे तदा ज्ञेयं सुभिक्ष निश्चयाज्जने ॥१३६॥
द्वादश्यां श्रावणे कृष्णे मघा यद्वोत्तरात्रयम् ।
तत्राभ्रे जलवृष्टौ वा जलयोगस्तदा महान् ॥१३७॥
श्रावणस्य त्रयोदश्यां रेवत्यां रवियोगतः ।
बहुधान्यानि वस्तूनि जायन्ते बहुधान्यकम् ॥१३८॥
शनौ श्रावणसप्तम्यां जलपूर्णा वसुन्धरा ।
श्रावणस्य चतुर्दश्या-मार्द्रायामन्नसङ्ग्रहः ॥१३९॥

अमावस्या विचार —

श्रावणस्य त्वमावस्यां पुष्याश्लेषा मघा यदि ।
मध्यमं वर्षमादेश्यं वृष्टिर्न महती यदा ॥१४०॥
यतः सारसङ्ग्रहे-विशाखाद्यष्टके दर्शे दुर्भिक्ष बहुधा स्मृतम्।

श्रावणकृष्ण प्रतिपदा के दिन धृतियोग हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है और बाकाके योगमें विक्रय करना उचित है ॥१३५॥ श्रावण या भाद्रपद के कृष्णपक्षकी प्रतिपदा के दिन श्रवण या धनिष्ठानक्षत्र हो तो लोकमें निश्चयसे सुभिक्ष हो ॥१३६॥ श्रावणकृष्ण द्वादशीके दिन मघा या तीनों उत्तरा इनमें से कोई नक्षत्र हो और बादल हो या वर्षा हो तो बड़ा जल-योग जानना ॥१३७॥ श्रावणकी त्रयोदशीके दिन रविवार और रेवती नक्षत्र हो तो बहुत धान्य और धनिया आदि वस्तु उत्पन्न हो ॥१३८॥ श्रावण सप्तमी के दिन शनिवार हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण हो। यदि श्रावण चतुर्दशी आर्द्रा युक्त हो तो धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ १३९ ॥

श्रावण अमावस को पुष्य आश्लेषा या मघा नक्षत्र हो तो वर्ष मध्यम हो और वर्षा अधिक न हो ॥ १४० ॥ सारसंग्रह में—अमावास्याके दिन

सुभिक्षमेकादशके वारुणाद्ये पुरोहितम् ॥१४१॥
अमावस्यां मध्यवर्षं भवेत् पुष्यचतुष्टये।
शनिः सूर्यः कुजो दर्शे-ष्वनन्तरमरिष्टकृत् ॥१४२॥
तिन्नि य पूरब कत्तिका, चित्ता अरु असलेस।
मिलि अमावसि धानरो, अरघ करे सविसेस ॥१४३॥
अमावस्यातिथिर्धिष्ण्य यदा भवति कृत्तिका।
ईतिर्घना क्षितौ नून वर्षे तत्र भविष्यति ॥१४४॥
पार्वणी यदि रौद्रे स्या-दादित्य प्रतिपत्तिथौ।
द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलं धान्य तृण न च ॥१४५॥
अमावस्यादिने योगे पुनर्वस्वादिपञ्चके।
समर्घमथ दुर्भिक्ष-मुत्तरादिचतुष्टये ॥१४६॥
विशाखाद्यष्टके कष्टं वारुणादौ जने सुखम्।
ऊचिरे केचनाचार्या दर्शनक्षत्रजं फलम् ॥१४७॥

विशाखा आदि आठ नक्षत्रोंमे से कोई नक्षत्र हो तो बहुत करके दुर्भिक्ष हो और शतभिषा आदि ग्यारह नक्षत्रोंमे से कोई नक्षत्र हो तो शुभ हो ॥१४१॥ यदि अमावसके दिन पुष्य आदि चार नक्षत्र हो तो मध्यम वर्ष हो। और शनि रवि या मंगलवार के दिन अमावस हो तो निरंतर दुःखदायक हो ॥१४२॥ यदि अमावसको तीनों पूर्वा, कृत्तिका, चित्रा या आश्लेषा नक्षत्र होतो धान्य महँगे हो ॥१४३॥ यदि आमावसके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो पृथ्वी पर निश्चयसे उस वर्षमें ईति का उपद्रव हो ॥ १४४ ॥ यदि अमावसको आर्द्रा, प्रतिपदा का पुनर्वसु और द्वितीया को पुष्य नक्षत्र हो तो वर्षा, तृण और धान्य न हों ॥ १४५ ॥ अमावस को पुनर्वसु आदि पांच नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते हों, उत्तराफाल्गुनी आदि चार नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ १४६ ॥ विशाखा आदि आठ नक्षत्र हो तो कष्टदायक हो और शतभिषा आदि नक्षत्र हो तो मनुष्यों मे सुख हो ऐसा अमावस

यतः-अमावसीइ ति दिया होइ जयारिक्खट्ट उत्तरातिन्नि।
रेवइधणिट्ठ पुणव्वसु दुभिक्ख करइ मासम्मि ॥१४८॥

ग्रन्थान्तरे—

अद्दह वारुणा चित्तह साई, कत्तिय भरणि अमावसि आई।
इण नक्खत्र ने जो तिथि ऊगी, निश्चय अर्घ वधावे दूणी ॥
विरुद्धवारनक्षत्रेऽमावस्यां बहवोऽशुभाः।
वार्षिकं फलमाद्यः शेषाः मासफलप्रदाः ॥१५०॥ इति।
श्रावणे शुक्लसप्तम्या स्वातियोगसुभिक्षकृत्।
श्रवण पुर्णिमायां स्या द्धान्यैरानन्दिताः प्रजा. ॥१५१॥
यतः-आखा रोहिण नवि मिले, पोमी मूल न होय।
श्रावणि श्रवण न पामीइ, मही डोलती जोय ॥१५२॥
ज्येष्ठस्य प्रतिपद्वार-फलं प्राक्कथित यथा।

श्रावणेऽपि तथा वाच्यं प्राच्याः केचिदिहोचिरे ॥१५३॥

अथ भाद्रपदमास —

प्रथमायां तिथौ भाद्रे गुरौ श्रवणसंयुते ।
सुभिक्षं जायते वर्षं धनधान्यादि सम्पदा ॥१५४॥
भाद्रपदाऽसिताष्टम्यां रोहिणी शुभदायिनी ।
नवमी भाद्रशुक्लस्य रवौ मूले भयङ्करी ॥१५५॥
दुर्भिक्षाय रवौ मूले भाद्रे शुक्ले दशम्यपि ।
योग्योऽयं स्यात् सुभिक्षाय प्रोचुरेवं च केचन ॥१५६॥
एकादशी भाद्रशुक्ले मूले दिनकृता युता ।
मेघेन वत्सरे सौख्यं लोकं व्याधिर्विबाधते ॥१५७॥
भाद्रे कृष्णद्वितीयायां द्वितीयवारयोगतः ।
धान्यनिष्पत्तिरतुला सम्पद स्युश्चतुष्पदैः ॥१५८॥
शनौ भाद्रपदे कृष्णा चतुर्थी यदि जायते ।
देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं मुस्तयोदरपूरणम् ॥१५९॥

चाहिए ॥ १५३ ॥ इति श्रावणमास।

भाद्रपद की प्रथम तिथि के दिन गुरुवार और श्रवण नक्षत्र हो तो वर्ष अच्छा हो और धन धान्य की प्राप्ति विशेष हो॥ १५४ ॥ भाद्रकृष्ण अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो शुभदायक है। भाद्रशुक्ल नवमी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो भयदायक है ॥ १५५ ॥ भाद्रशुक्ल दशमी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होता है। परन्तु यही योग को कोई सुभिक्ष कारक कहते हैं ॥ १५६ ॥ भाद्रशुक्ल एकादशी को रविवार और मूलनक्षत्र हो तो वर्षमें वर्षा से तो सुख हो परतु रोग का उपद्रव हो॥ १५७ ॥ भाद्रकृष्ण दूजको सोमवार हो तो धान्यकी प्राप्ति बहुत हो तथा पशुओंकी वृद्धि हो ॥ १५८॥ भाद्रकृष्ण चतुर्थी को यदि शनिवार हो तो देशभग और दुर्भिक्ष होने से लोक मुस्ता (मोथा) से उदरपूर्त्ति करें ॥ १५९ ॥

अत्र लोके प्राह–

+आठमी काली पक्खनी, सनि असलेमा जुत्त ।
मेह म जोइस महीयले, वरसे एहज वत्त ॥१६०॥

ग्रन्थान्तरेऽपि– +नवम्यां स्वाति संयोगे भाद्रमासे सिते यदा ।
तदा सुखमयी भूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥१६१॥
भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां चे द्वारा जीवेन्दुभार्गवाः ।
उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात् तदा ॥१६२॥
भाद्रे धवलपञ्चम्यां स्वातियोगो यदा भवेत् ।
मासैश्चतुर्भिः कर्पास-रुताद्वेर्लाभसम्भवः ॥१६३॥
भाद्रमासे तृतीयायां भौमे चोत्तरफाल्गुनी ।
तदा वृष्टिकरो नैव प्रोन्नतोऽपि घनाघनः ॥१६४॥

भाद्रमासे ह्यमावस्यां रवौ* घृतमहर्घता ।
धान्यं महर्घं भौमे ज्ञे शनौ तैल विनिर्दिशेत् ॥१६५॥
यतः—मुद्गर जोग ए भादवे, अमावसि रविवार ।
उजेणी हुंती पश्चिमे होसी हाहाकार ॥१६६॥
अन्यस्मिन्नपि मासे चे-देकैवामावसी रवौ ।
तदा वर्षस्य विश्वांशा मान पञ्चदश स्मृताः ॥१६७॥
अमावसीद्वयं सूर्य-वारे टिप्पनके यदा ।
दश विशोपका वर्षे खण्डवृष्ट्यादिनोदिताः ॥१६८॥
रविवारादमावस्या त्रये पञ्च विंशोपकाः ।
छत्रभङ्गोऽथ दुष्कालो रवौ दर्शचतुष्टये ॥१६९॥
इत्यमावास्यारविवारफलम् ।

रुद्रदेव सप्तवारफलान्याह —

"अमावास्याः फलं वक्ष्ये वारभुक्त्या शृणु प्रिये! ।
येन विज्ञायते कालो वत्सरे मासनिर्णयः ॥१७०॥

भाद्रपदकी अमावसको रविवार हो तो घी महँगे हों, मगल या बुध-वार हो तो धान्य महँगे हो और शनिवार हों तो तेल महँगे हों ॥१६५॥ अमावसको रविवार हो तथा मुद्गरयोग भी हो तो उज्जयणी से पश्चिमदिशा में हाहाकार अनिष्ट हो ॥१६६॥ इससे दूसर कोई मासकी अमावस को रविवार हो तो वर्षके विश्वा पन्द्रह माना गया है ॥१६७॥ पचांगमें यदि दो अमावस रविवार को हो तो वर्षके दश विश्वा माने हैं और खण्डवृष्टि होती है ॥१६८॥ तीन अमावस रविवार को हो तो पाच विश्वा माने है। यदि चार अमावस रविवार को हो तो छत्रभंग तथा दुष्काल हो ॥१६९॥ रुद्रदेवके मतसे—हे प्रिये! वारानुक्रमसे अमावसका फल कहता हूँ, जिससे

---

* टी—मगल करे पलेवड़ु, बाला बुधे मरति।
रवि शनि होय अमावसे, अन्न रस मुहघा हुंति ॥

जनानां वहुला: क्लेशा राजा दुःखैः प्रपीड्यते।
अमावस्यादिने सूर्यः सन्तापायार्थनाशनात् ॥१७१॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वर्षाया: प्रबलोदय: ।
सस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यं सोमवारे प्रवर्त्तते ॥१७२॥
राज्यभ्रंशो राज्ययुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम् ।
उपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे ॥१७३॥
दुर्भिक्षं राज्यनाशश्च प्रजानां दुःखभाजनम् ।
स्थानत्यागो धान्यमल्प बुधवारे प्रवर्त्तते ॥१७४॥
सदा वृष्टिः सुभिक्ष च कल्याणं दुःखनाशनम् ।
आरोग्यं च प्रजा स्वस्था गुरुवारे समादिशेत् ॥१७५॥
भृश जलोन्नता मेघाः कृषीणां वहुरूद्भवः ॥
तस्करोपद्रवा नित्य शुक्रेणामावसीदिने ॥१७६॥
दुर्भिक्ष रौरव घोरं महादुःख महद्भयम् ।
पराङ्मुखाः पितुः पुत्रा आसनं शनिवासरे" ॥१७७॥

अमावस्याधिके ऋक्षे यदा चरति चन्द्रमा ।
अर्घे चा' ाधिको ज्ञेया हीने हीनत्वमाप्नुयात् ॥१७८॥
प्रकृतम्–भाद्रपदे शुक्लषष्ठ्या-मनुराधा * यदा भवेत्।
नक्षत्रान्तरदोषेऽपि सुभिक्ष निर्णयाद् वदेत् ॥१७९॥

अथाश्विनमास —

आश्विने प्रथमायां चे-च्छुक्लायां शनिरागते ।
तदा धान्य न विक्रेय पुरस्तस्य महर्घता ॥१८०॥
+ शुक्लायां च द्वितीयाया-माश्विने चन्द्रवारतः ।
मूलस्पर्शे पुनो मू नात् तदा धान्यस्य संग्रह' ॥१८१॥
आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमः शनैश्चरः ।
तदाग्निः प्रबलो भूम्या-मन्यवारे समर्घता ॥१८२॥
चतुर्थ्यामाश्विने सूर्ये विक्रेतव्यं घृतं जनैः।

का अधिक नक्षत्र पर चन्द्रमा गमन करे तो धानका भाव सस्ता हो और हीन नक्षत्र पर गमन करे तो धानका भाव तेज हो ॥१७८॥ भाद्रशुक्ल षष्ठी को यदि अनुराधानक्षत्र हो तो दूसरे नक्षत्रोंका दोष रहने पर भी निश्चयसे सुभिक्ष कहना ॥ १७९ ॥ इति भाद्रपदमास ॥

आश्विन शुक्लप्रतिपदाको शनिवार हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये, आगे वह महँगे भाव होंगे ॥१८०॥ आश्विन शुक्लमें धनुराशिका चद्रमा के समय द्वितीया और मूल नक्षत्र में सोमवार को धान्य का संग्रह करना चाहिये ॥ १८१ ॥ यदि तृतीयाके दिन मगल या शनिवार हो तो पृथ्वी पर गरमी प्रबल हो और दूसरे वार हो तो सस्ते हो ॥ १८२ ॥ शुक्ल

---

* टी— आरखडा सब बो ीया काई सचितो नाह भा खडो जग रेलसी, जो कुठे अनुराह ॥ इति लोक भाषा या ॥

+टी—इदमाश्विन सभवति-आश्विने शुक्लद्वितीयाय धनुषि चन्द्रमा प्राप्ते तेन द्वितीयादिने मूलदिने च चन्द्रवारे धान्यसग्रह ।

संगृह्यन्ते च धान्यानि पुरो लाभाय तान्यपि ॥१८३॥
* आश्विने शुक्लपञ्चम्यां सोमे हस्तसमागमे ।
गन्तव्य मालवस्थाने निर्जला जलदायिनी ॥१८४॥
सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने ।
श्रवणं वा धनिष्ठा चेज्जगतो नाशकारणम् ॥१८५॥
आश्विने च बुधेऽष्टम्या विधेयो घृतसग्रहः ।
कार्तिके विक्रयात् तस्य सम्पदः स्युः पदे पदे ॥१८६॥
नवम्यामाश्विने शुक्ले कुजवारेण सगतौ ।
मुद्गकार्पास चपला-मापादेः संग्रहो मतः ॥१८७॥
द्विगुणस्तु भवेल्लाभो चैत्रमासेऽथ विक्रये ।
आश्विने दशमी भौमे भूम्यां व्याधिरबाधितः ॥१८८॥
×एकादश्यां शनौ तस्मिंश्छत्रभङ्गोऽथवा भुवि ।

नगरग्रामभङ्गः स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवः ॥१८९॥
+तृतीयारोहिणीयोगे वारयोः शनिभौमयोः ।
तदा कार्पासिकं ग्राह्य फाल्गुने लाभमादिशेत् ॥१९०॥
आश्विने कार्त्तिके वापि द्वितीया मङ्गलेऽसिता ।
लोके दहनजो दाहः प्रतिग्रामं प्रवर्त्तते ॥१९१॥
आश्विने कृष्णपञ्चम्यां रविवारः प्रवर्त्तते ।
माघे मासे ह्यमावस्यां महर्घं निश्चयाद् घृतम् ॥१९२॥
*षष्ठ्यामथाश्विने ज्येष्ठादित्यमूलादिसङ्गमे ।
सङ्ग्रहः सर्वधान्यानां पञ्चमास्यां फलं भवेत् ॥१९३॥
आश्विनैकादशी कृष्णा वारयोर्बुधसोमयोः ।
महिषीणां गवां मूल्यं महत् सञ्जायते जने ॥१९४॥
द्वादशी शनिना युक्ता हस्तचित्रा समन्विता ।
तदा युगन्धरी ग्राह्या चैत्रे च त्रिगुणं फलम् ॥१९५॥

तो पृथ्वी पर छत्रभग हो, नगर-गावका भग हो और चोरोंका उपद्रव हो ॥ १८९ ॥ आश्विन कृष्ण तृतीया और रोहिणी नक्षत्र के दिन शनि या मगलवार हो तो कपास का सग्रह करना, उस से फाल्गुन में लाभ होगा ॥ १९० ॥ आश्विन या कार्त्तिक कृष्णपक्ष में दूज मगलवार की हो तो लोक में प्रत्येक गाव मे अग्नि का उपद्रव हो ॥१९१ ॥ आश्विन कृष्ण पञ्चमी को रविवार हो तो माघ मासकी अमावसको निश्चयसे घी महँगा हो ॥ १९२ ॥ आश्विन षष्ठीके दिन ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र और रविवार हो तो सब धान्य का सग्रह करे तो पाचवें मास लाभदायक हो ॥ १९३ ॥ आश्विन कृष्ण एकादशीको बुध या सोमवार हो तो भैंस और गौका मूल्य अधिक हो ॥१९४॥ द्वादशीको शनिवार हो और हस्त या चित्रा नक्षत्र हो तो युगधरी (जूआर)का सग्रह करे तो चैत्रमे त्रिगुना लाभ हो ॥१९५॥

+टी-तृतीयायां वा रोहिणीदिने इत्यर्थः ।
*टी-आदित्यवारे ज्येष्ठायां मूले च नक्षत्रे इत्यर्थः ।

—आश्विनस्याप्यमावस्यां शनिवारो यदा भवेत् ।
मध्यम वर्षमथवा दुष्काल: खण्डमण्डले ॥१०३॥
क्वचित्तु—सनि आइचे मंगले आसु अमावसि होय ।
विमणा तिगुणा चउगुणा, कणे करहु होय ॥१०७॥
ग्रन्थान्तरे—
उत्तरतिन्नि धणिट्ठ चउत्थी, अने पुनर्वसु रोहिणी छट्ठी ।
हुइ अमावसि एह संजुत्ता, मास दुभिक्ख करे निरुत्ती ।१६८।
इति सामान्यवचोऽपि आश्विनविषयमुक्तम ।
अथ कार्तिकमास —
कार्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुधसंयुता ।
तद्वर्षे मध्यम वृष्ट्या-नावृष्ट्या च क्वचिद्भवेत ॥१६६॥
यतः—कार्तो सुदि पडिवा दिने, जो बुधवारि होय ।

घिमणा तिगुणा चउगुणा, कणे कवड्डा होय ॥२००॥
कार्त्तिके सप्तमी शुक्ला शनौ धान्यार्घनाशिनी ।
श्वेतवस्तुमहर्घं स्यात् त्रिमासि द्विगुणं फलम् ॥२०१॥
कार्त्तिके रविणा रौद्र-योगे राज्ञां महारणः ।
रोहिण्यां कार्त्तिके सूर्यः पुरो वारिदवारणः ॥२०२॥
कार्त्तिके पञ्चमी रौद्र-योगे स्यात् तृणसङ्ग्रहः ।
चतुष्पदेऽन्यथा दुःख जायतेऽग्रेऽल्पवृष्टिजम् ॥२०३॥
कार्त्तिके मङ्गले मूलं मङ्गलेऽननुकूलकम् ।
सप्तमी शनिना कृष्णा करोत्यन्नमहर्घताम् ॥२०४॥
कार्त्तिके दशमी कृष्णा शनौ रोगकरी जने ।
रविः कृष्णत्रयोदश्यां यवगोधुममल्यकृत् ॥२०५॥
कार्त्तिके कृष्णदशमी शनौ मघासमन्विता ।
महर्घं घृतपूगादि चातुर्मासान्तविक्रयः ॥२०६॥
कार्त्तिके चेदमावस्यां शनिश्चाशननाशनः ।

॥२००॥ कार्तिक शुक्ल सप्तमीको शनिवार हो तो धान्य का विनाश और श्वेत वस्तु महँगी हो इससे तीन मासमें द्विगुना लाभ हो ॥२०१॥ कार्तिक में रविवार और आर्द्रा का योग हो तो राजाओंका युद्ध हो। तथा रविवार और रोहिणी का योग तो हो आगे वर्षाका रोध हो ॥२०२॥ कार्तिक पचमी को आर्द्रा हो तो तृणका सग्रह करना उचित है, नहीं तो पशुओं को दुःख होगा क्योंकि आगे वहुत थोडी वर्षा होगी ॥२०३॥ कार्तिकमें मगलवार को मूलनक्षत्र हो तो मांगलिक कार्यमे अनुकूल नहीं होता। कृष्ण सप्तमी शनिवारको हो तो अन्न महँगे हो ॥२०४॥ कार्तिक कृष्णा दशमी शनिवार को हो तो रोग करें। और कृष्ण त्रयोदशी रविवार को हो तो यव और गेहूँ तेज हो ॥ २०५ ॥ कार्तिक कृष्णा दशमी शनिवार और मघा नक्षत्र युक्त हो तो घी और सोपारी महँगे हो चौथे महीने वेचें ॥२०६॥ कार्तिक

मार्गे नवम्यां रेवत्यां बुधो दुर्भिक्षकारकः ।
पञ्चमी गुरुणा योगात् पञ्चमासान् सुभिक्षदा ॥२१९॥
मार्गशीर्षप्रतिपदि पुष्ये पुष्येच्चतुष्पदः ।
जलवृष्ट्या परं वर्षं गर्भस्रावाद् विनश्यति ॥२२०॥
पुनर्वस्वास्तथार्द्राया-स्तृतीयाया च सङ्गमे ।
धान्यं समर्घमादेश्यं राजा सुस्थः प्रजासुखम् ॥२२१॥
मार्गशीर्षस्य पञ्चम्यां मघाद्यं पञ्चकं यदा ।
पुरो वर्षविनाशाय जायते जलरोधनः ॥२२२॥
मार्गे नवम्यां चित्रायां धान्यं महर्घमादिशेत् ।
*कृष्णा चतुर्दशी स्वातौ श्रावणे जलरोधिनी ॥२२३॥
मार्गशीर्षस्य दशमी मूले वा रविणा युता ।
सङ्ग्राह्याश्च तिलास्तैलं ज्येष्ठान्ते लाभदायकम् ॥२२४॥
मार्गे यदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा ।

नवमी को रेवती नक्षत्र और बुधवार हो तो दुर्भिक्षकारक है । पंचमी को गुरुवार हो तो पांच मास सुभिक्ष हो ॥ २१९ ॥ मार्गशीर प्रतिपदा को पुष्य नक्षत्र हो तो पशुओं का कष्ट हो और अगला वर्ष का गर्भ जल वृष्टि से विनाश हो ॥ २२० ॥ तृतीया को पुनर्वसु तथा आर्द्रा नक्षत्र हो तो धान्य सस्ते, राजा प्रसन्न रहे, और प्रजा सुखी हो ॥ २२१ ॥ मार्गशीर्ष पंचमी को मघा आदि पांच नक्षत्र हो तो वर्षा न होनेसे अगला वर्ष विनाश हो ॥ २२२ ॥ मार्गशीर नवमीको चित्रा नक्षत्र हो तो धान्य महँगे हो और कृष्ण चतुर्दशी स्वाति युक्त हो तो श्रावण में वर्षा न हो ॥ २२३ ॥ मार्गशीर्ष दशमीको मूलनक्षत्र और रविवार हो तो तिल तैल का संग्रह करना ज्येष्ठके अंतमें लाभदायक है ॥२२४॥ मार्गशीर एकादशी

* टी- मागसिरि चउदसिं जइ गारी स्वाति भोग हुई जोउ विचारी।
श्रावण तो जो आतिजण करइ, जाओ विदेस के सहुये मरइ ॥१॥
संवत् १७४३ वर्षे चतुर्दश्यां स्वातिभोग्य ।

कार्पासस्तसूत्रादि ग्राह्यं वैशाखलाभकृत् ॥२२५॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य सङ्गमः ।
जलशोषः प्रजानाशश्छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥२२६॥

अथ पौषमास —

पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थीदिनवासरे ।
यदा शनिस्तदादौःस्थ्यं त्रिमास्यं नैव संशयः ॥२२७॥
सप्तमी सोमवारेण पौषमासे यदा भवेत् ।
तदा च महिषीवृन्दं म्रियते रोगपीडितम् ॥२२८॥
यावन्नार्द्रां व्रजेत सूर्य- स्तावद् धान्यस्य संग्रहः ।
शनिः पौषे नवम्यां चेत् पुरस्ताल्लाभकारणम् ॥२२९॥
एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिका भोगतः स्मृतः ।
रक्तवस्तुमहाँल्लाभः सधान्यात प्रथमा वृषे (ऽम्बुदे)॥२३०॥
पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा-ऽमावस्यां + पौषमासके ।

॥ २२५ ॥ यदि दैवयोग से शनिवार हो तो जल का सूखना, प्रजा का नाश और छत्रभंग हो ॥ २२६ ॥ इति मार्गशीर्ष मास ॥

पौष शुक्ल चतुर्थी को शनिवार हो तो तीन मास दुःख रहे इस में सन्देह नहीं ॥२२७॥ पौष सप्तमी सोमवार को हो तो भैंस रोग से पीड़ित होकर मरे ॥२२८॥ पौष नवमी को शनिवार हो तो जब तक सूर्य आर्द्रा में न आवे तब तक धान्य संग्रह करना उचित है आगे लाभदायक है ॥ २२९ ॥ पौष शुक्ल एकादशी को कृत्तिका हो तो लाल वस्तु से बड़ा लाभ हो और प्रथम वर्षा तक धान्य से लाभ हो ॥ २३० ॥ पौष अमावस को

+ टी— अत्र-पाग्नट मास अमावसि, पुष्य कृत्तिका पूर्वा होय । वार मंगल रवि थावरह, तो रग्ग माठा होय ॥१॥ इति पुरातनवचनात् पुष्य उक्त न चास्य सम्भवः । वृश्चिकादित्रयसूर्ययोगाल्लव्य कृत्तिकायामपि साध्यम । 'पुष्या जेष्ठ्या होइ' इति पाठः शुद्धः । अमावास्या शनिः पौषे लाभः शोककरः परः । तापानशपान् मशाध्य सुभिक्ष कुरुते गुरुः ॥

वाराः शनिकुजादित्या भाविवर्षविनाशकाः ॥२३१॥
पौषे मूलममावस्यां वृष्ट्यै लोकतुष्टये।
शन्यादित्यकुजास्तस्यां बहुलाभाय धान्यतः ॥२३२॥
पौषकृष्णदशम्यां स्याद् विशाखा निशि वा दिवा।
भावि वर्षेऽम्बुदः प्रोक्तोऽपर पार्श्वजिनेश्वरः ॥२३३॥
कुलके-पोसस्स पुन्निमाए णक्खत्त पूसयं सयल दिवसे।
तो रस अन्न समग्घं होइ संवच्छरं जाव ॥२३४॥
पौषकृष्णप्रतिपदि रोहिण्या भोगसम्भवे।
ससमासाद् धान्यलाभश्छत्रभगोऽथवाम्बुदः ॥२३५॥

अथ माघमास —

माघाद्यदिवसे वारो बुधो भवति चेत्तदा।
मासत्रयं महर्घं स्याद्भावि वर्षं विनश्यति ॥२३६॥
माघाऽसितस्य प्रतिप-द्वितीया वा तृतीयका।
त्रुटिता धान्यसङ्ग्रहे लाभाय वणिजां मता ॥२३७॥

पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र हो और शनि रवि या मंगलवार हो तो अगले वर्षका विनाश हो ॥२३१॥ पौष अमावस को मूल नक्षत्र हो और शनि रवि या मंगलवार हो तो वर्षा हो, लोक सन्तुष्ट हों और धान्य से बहुत लाभ हो ॥२३२॥ पौष कृष्ण दशमीको विशाखा नक्षत्र रात दिन हो तो अगला वर्षका मेघ पुष्ट होता है, जैसे दूसरा श्री पार्श्वजिनेश्वर हो॥२३३॥ कुलक में कहा है कि - पोष पूर्णिमा को पुष्य नक्षत्र समस्त दिन हो तो वर्षभर रस और धान्य सस्ते हो ॥ २३४ ॥ पौष कृष्ण प्रतिपदा को रोहिणी नक्षत्र हो तो सात महीने धान्य से लाभ हो या छत्रभग हो ॥ २३५॥ इति पौषमास ॥

यदि माघ मासकी प्रतिपदा को बुधवार हो तो तीन महीने तेजी रहे और अगला वर्ष विनाश हो ॥ २३६ ॥ माघ कृष्ण प्रतिपद् द्वितीया या

सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि ।
दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम् ॥२३८॥
माघस्यशुक्लसप्तम्यां+रविवारो भवेद्यदि ।
दुर्भिक्ष हि महाघोरं विड्वरं च महाभयम् ॥२३९॥
माघमासप्रतिपदि शनियोगः प्रशस्यते ।
सर्वत्र धान्यनिष्पत्ति-रारोग्यं देशस्वस्थता ॥२४०॥
चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता ।
दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्नि-भय धान्यविनाशनम् ॥२४१॥
माघे शुक्ले प्रतिपदि वारा जीवेन्दुभार्गवाः ।
सुभिक्षाय रणायार्कः कुजे स्युर्बहुधेतयः ॥२४२॥
माघे शुक्ले यदाष्टम्यां कृत्तिका यदि नो भवेत् ।
फाल्गुने रोलिकापातः श्रावणे वा न वर्षणम् ॥२४३॥
माघे च शुक्लसप्तम्यां सोमवारे च रोहिणी ।

तृतीयाका क्षय हो तो धान्यका सग्रह करनेसे वैश्योंको लाभ हो ॥२३७॥ माघ शुक्ल सप्तमी सोमवार को हो तो बड़ा दुर्भिक्ष और राजाओंमें विग्रह हो ॥२३८॥ माघ शुक्ल सप्तमीको रविवार हो तो बड़ा घोर दुर्भिक्ष, विग्रह और बड़ा भय हो ॥२३९॥ माघ मासकी प्रतिपदाको शनिवार हो तो अच्छा हो सब प्रकारकी धान्य प्राप्ति, आरोग्यता और देश सुखी हो ॥२४०॥ माघ की चतुर्थी को शनिवार हो तो दुर्भिक्ष, मृत्यु, चोर और अग्नि का भय, और धान्य का विनाश हो ॥ २४१ ॥ माघ शुक्ल प्रतिपदा को बृहस्पति सोम या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष होता है । रविवार हो तो युद्ध और मगलवार हो तो बहुत ईति (चूहा टिड्डि आदि) का उपद्रव हो ॥ २४२ ॥ माघ शुक्ल अष्टमीको कृत्तिका नक्षत्र न हो तो फाल्गुनमें रोलिका पात या श्रावण में वर्षा न हो ॥२४३॥ माघ शुक्ल सप्तमीको रोहिणी नक्षत्र हो तो

+टी–सवत् १७४२ वर्षे माघसितसप्तम्या शनि ।

राज्ञां युद्ध प्रजारोगोऽथवा वर्षं तु मध्यमम् ॥२४४॥
एवं निमित्तादेकस्मान्नानाफलविमर्शनम् ।
सिद्धान्ताज्ज्योतिषान् न्यायात् सिद्धं वा वैद्यकादपि ।२४५।
माघमासे च सप्तम्यां भरणी यदि जायते ।
रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभृत् ॥२४६॥
माघेन नवम्यां कृष्णायां मूलर्क्षे सगर्भता ।
भाद्रपदेऽपि नवमी-दिने जलदहेतवे ॥२४७॥
अथ फाल्गुनमास –
फाल्गुने कृष्णषष्ठी चेच्चित्रानक्षत्रसंयुता ।
त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय स्यादन्या दुर्भिक्षसाधनम् ॥२४८॥
फाल्गुने च त्रयोदश्यां शुक्लायां यदि भार्गवः ।
ज्येष्ठे रोगाय नून स्याद्रोगो मासत्रयेऽथवा ॥२४९॥
एकादश्यां फाल्गुनेऽर्का-दार्द्रावर्षविडम्बिनी ।

त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय सोमवारादसौ जने ॥२५०॥
फाल्गुने प्रथमे पक्षे वारुण प्रतिपद्दिने ।
भोगानुसाराद्वर्षस्य स्वरूपं च प्ररूपयेत् ॥२५१॥
फाल्गुने कृत्तिकायुक्तं सप्तम्यादिकपञ्चकम् ।
श्वेतपक्षे सुभिक्षाय भाद्रे जलदवृष्टये ॥२५२॥

तिथिकुलके—

फग्गुण पुण्णिमदिवसे पुव्वाफग्गुणि हविज्ज णक्खत्तं ।
चत्तारि वि पुहराओ ता चउरो माससुभिक्खं ॥२५३॥
वे पुहरा अहव महाणक्खत्त होइ कहवि देवगला ।
ता जाणह दुवे मासा होइ महग्घं ण संदेहो ॥२५४॥
अह पुण्णा तद्दिवसे होइ महारिक्खयं जया कहवि ।
चत्तारि वि मासा खलु ता जाणह विड्डरं कालं ॥२५५॥
अह पुण्णिम दो पुहरा पुव्वाफग्गुणी हविज्ज णक्खत्तं ।
उवरि उत्तरफग्गुणी दो पुहरा होइ जइ कहवि ॥२५६॥

दायक हो और सोमवार युक्त हो तो सुभिक्ष हो ॥ २५० ॥ फाल्गुन के प्रथम पक्षमें प्रतिपदाको शतभिषा नक्षत्र हो तो उसके भोगानुसार वर्ष का स्वरूप जानना ॥ २५१ ॥ फाल्गुन शुक्लमें सप्तमी आदि पांच तिथिको कृत्तिका नक्षत्र हो तो सुभिक्ष होता है और भाद्रपद में वर्षा होती है ॥ २५२ ॥ तिथिकुलक में फाल्गुन पूर्णिमा का विचार इस तरह कहा है— फाल्गुन पुर्णिमाके दिन चारोंही प्रहर पुर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो चार महीने सुभिक्ष रहे ॥२५३॥ यदि दैवयोगसे दो प्रहर मघा नक्षत्र हो तो दो महीने महँगे हो इसमे सन्देह नहीं ॥२५४॥ यदि उस दिन मघा-नक्षत्र पूर्ण हो तो चारोंही महीने बडा काल हो ॥२५५॥ दो प्रहर प्रथम पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो और आगे दो प्रहर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो पहले दो महीने सुभिक्ष और सुख हो इसमे सदेह नहीं और पीछे के दो

ता पढमा दो मासा होइ सुभिक्खं सुह न संदेहो ।
दो उवरि पुणो मासा सस्सविणासेण दुक्कालो ॥२५७॥
अट्ठ प्पहरा चउरो अहवा जइ होइ उत्तरा जोगो ।
सस्साण ता हाणी रसाण तह निद्धदव्वाण ॥२५८॥

अथ द्वादशपूर्णिमाविचार --

चैत्रस्य पूर्णिमास्यां हि निर्मलं गगनं शुभम् ।
तद्दिने ग्रहणं तारा-पातभूकम्पवृष्टयः ॥२५९॥
रजोवृष्टिः परिवेषो विद्युत्केतूदयादिना ।
उत्पातेन च सङ्ग्राह्यं धान्यं धातुव्ययादितः ॥२६०॥
विक्रये सप्तमे मासे भाद्रे द्विगुणलाभदम् ।
वैशाखपामीदृशे चिह्ने कार्पासस्य महर्घता ॥२६१॥
गोधुममुद्गमाषादेः सङ्ग्रहो लाभकारणम् ।
विक्रयाद्द्विगुणत्वेन मासे भाद्रपदे भवेत् ॥२६२॥
ज्येष्ठस्य पूर्णिमाऽनभ्रा शुभाय कथिता बुधैः ।

महीनेमें धान्यका विनाश होनेसे दुष्काल हो ॥२५६ ५७॥ आठ या चार प्रहर तक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो धान्य रस तिल आदि द्रव्य इन का विनाश हो ॥२५८॥ इति फाल्गुनमास ॥

चैत्र मास की पूर्णिमा को आकाश निर्मल हो तो शुभ है, यदि उस दिन ग्रहण हो, तारा का पात, भूकंप, वृष्टि ॥२५९॥ रज (धूली) की वर्षा, चद्रमाका परिवेष (घेरा) बिजली चमके, और केतु का उदय, ऐसे उत्पात हो तो धातु आदि बेचकर धान्य का संग्रह करना उचित है ॥ २६० ॥ इस को भाद्रपद में या सातवे महीने बेचने से दूना लाभ हो। वैशाख पूर्णिमा को भी ऐसे चिह्न हो तो कपास महँगे हों ॥२६१॥ गेहूँ मूग उड़द आदि का संग्रह करनेसे लाभदायक है, भाद्रपद मे दूने लाभसे बेचें ॥२६२॥ ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमा स्वच्छ हो तो अच्छी है और वर्षा

वृष्ट्या वा परिवेषेण तस्यां धान्यस्य संग्रहः ॥२६३॥
तुर्ये मासेऽथवा पौषे लाभस्तस्यान्नविक्रयात् ।
आषाढी निर्मला नेष्टा बार्दलाच्छादिता शुभा ॥२६४॥
नैर्मल्याद्धान्यसङ्ग्राह्यं पञ्चमे मासि लाभदम् ।
श्रावणी निर्मला श्रेष्ठा साभ्रत्वे घृतसङ्ग्रहः ॥२६५॥
विक्रयाद् घृततैलादे-र्लाभो मासे तृतीयके ।
पूर्णा भाद्रपदे साभ्रा शुभा धान्यस्य विक्रयात् ॥२६६॥
आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाय बार्दलोदये ।
संगृह्यधान्यं विक्रेयं द्वितीये मासि लाभदम् ॥२६७॥
कार्त्तिक्यां बार्दलबलाद् घृतधान्यादिसंग्रहः ।
विक्रयः पञ्चमे मासे चैत्रे वा लाभदायकः ॥२६८॥
पूर्णिमा मार्गशीर्षस्य कार्त्तिकीव विभाव्यताम् ।
पौषी सबार्दला श्रेष्ठा धातुसंग्रहलाभदा ॥२६९॥

या परिवेष (घेरा) हो तो धान्यका संग्रह करना ॥२६३॥ चौथे या पौष मासमें उसको वेचनेसे लाभ होगा। आषाढ पूर्णिमा निर्मल हो तो अशुभ और बादलसे आच्छादित हो तो शुभ है ॥२६४॥ यदि निर्मल हो तो धान्य का संग्रह करने से पाचवें महीने लाभदायक हो। श्रावण पूर्णिमा निर्मल हो तो श्रेष्ठ है, और बादल सहित हो तो घी का संग्रह करना ॥२६५॥ घी और तेल तीसरे महीने वेचने से लाभ हो। भाद्रपद पूर्णिमा को बादल हो तो शुभ है, धान्यको वेच देना चाहिये ॥२६६॥ आश्विन पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छा है, यदि बादल सहित हो तो धान्य का संग्रह कर दूसरे महीने वेचे तो लाभ हो ॥२६७॥ कार्त्तिक पूर्णिमा बादल सहित हो तो घी और धान्य का संग्रह करना, पाचवें महीने या चैत्रमासमे वेचे तो लाभदायक हो ॥ २६८ ॥ मार्गशीर पूर्णिमा कार्त्तिक पूर्णिमाकी तरह विचार लेना। पौष पूर्णिमाको बादल हो तो श्रेष्ठ है धातुका संग्रहसे लाभ

साभ्रायां माघपूर्णायां*धान्यसङ्ग्रह इष्यते ।
विक्रेयः सप्तमे मासे तस्य लाभाय सम्भवेत् ॥२७०॥
फाल्गुनी पूर्णिमा साभ्रा सवृष्टिर्वा सगर्जिता ।
धान्यसङ्ग्रहणान्मासे सप्तमे लाभदायिनी ॥२७१॥

वर्षादिनमाह

चित्त अमावसि दियहि सुरगुरुवारेण चित्तमाईहिं ।
तह होइ चित्तवरिसा विसाहि अणुराह वइसाहा ॥२७२॥
जिट्ठा मूले जेट्ठे पूसा उसा य गुरु य आसाढे ।
सवण धणिट्ठा सयभिसि होइ तहा सावणे वरिसा ।२७३।
पूभा उभा य रेवइ भद्दवमासे सुहाइ तह वरिसा ।
आस्सणि अस्सणि भरणीइ कत्तिय रोहिणी य कत्तिए।२७४।

हो ॥२६९॥ माघ मासकी पूर्णिमाको बादल हो तो धान्यका संग्रह करना, सातवें महीने वेचनसे लाभ हो ॥ २७० ॥ फाल्गुन पूर्णिमा बादल वर्षा और गर्जना सहित हो तो धान्य का संग्रह करनेसे सातवें महीने लाभ हो ॥२७१॥ इति द्वादशपूर्णिमा विचार ॥

चैत्र मास में अमावस के दिन या चित्रा या स्वाति नक्षत्र के दिन गुरुवार हो तो चित्र (अच्छी) वर्षा हो । इस तरह वैशाख में विशाखा या अनुराधा । ज्येष्ठ मे ज्येष्ठा या मूल । आषाढ में पूर्वाषाढा या उत्तराषाढा । श्रावण में श्रवण, धनिष्ठा या शतभिषा । भाद्रपद में पूर्वाभाद्र उत्तराभाद्रपद या रेवती । आश्विनमें अश्विनी या भरणी । कार्त्तिकमें कृत्तिका या रोहिणी । मार्गशीर्ष में मृगशीर्ष, आर्द्रा या पुनर्वसु । पौष में पुष्य या

*यदुक्तं श्रीहीरसूरय प्राहु —माही पूनिम निरमली, तो सुहगो आषाढ ।
कण वेची पोतो करे, व्याजे दाम म काढ ॥१॥
अन्यत्रापि—पूनिम माही निरमली, अन्न सुहगो आठमास ।
जिण पुहरे बादल हुवे, अन्न ॥२॥ ॥३॥

मिग अद्दा य पुणव्वसु वट्टइ वरिसाओ मिगसिरमासे ।
पुस्स असलेस सुरगुरु बरिसा संभवइ तह पोसे ॥२७५॥
माहे महासु वरिसा पुष्फा उप्फाय हत्थिफग्गुणए ।
वरिसाए इय नाणं भणिय गणहारिहीरेण ॥२७६॥

गिरधरानन्दे ऽकालवर्षाफलम्--

पौषादिचतुरो मासान् वृष्टिः प्रोक्ता त्वकालजा ।
गर्भयोगं विना नेष्टा नूनं पशुपदाङ्किता ॥२७७॥
यावन्नाकालसम्भूतै-र्विद्युद्गर्जितवर्षणैः ।
त्रिविधैरपि चोत्पातै-र्वृष्टेरासप्तरात्रतः ॥२७८॥
पौषे दिनत्रयं वर्ज्यं माघे त्वात्ययिके द्वयम् ।
फाल्गुने दिनमेकं तु चैत्रे तु घटिकाद्वयम् ॥२७९॥

श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्--

माहाइ तिन्नि वासर फग्गुण दिणजुयलं चित्तदिणमेगं ।

पुष्य या आश्लेषा । माघ में मघा । फाल्गुनमें पुर्वाफाल्गुनी, उत्त फाल्गुनी या हस्त इन प्रत्येक मासके नक्षत्रके दिन अथवा अमावसके दिन गुरुवार हो तो वर्षा अच्छी हो । ऐसा यह ज्ञान जगद्गुरु गच्छाधिपति श्रीहीर-विजय सूरिने कहा है ॥ २७२ से २७६ ॥

पौष आदि चार महीनोंमे गर्भकारक योगोंके दिन को छोड़कर दूसरे समय पशुओं के चरण अंकित हो जाय ऐसी वर्षा हो तो अकाल वर्षा कही जाती है यह अनिष्टकारक है ॥२७७॥ बिजली गर्जना और वर्षा ये तीन प्रकार के वृष्टि के उत्पातोंसे सात रात्रि तक कुछ भी (शुभकार्य) न करे ॥ २७८ ॥ पौषमें तीन दिन, माघमें दो दिन, फाल्गुनमें एक दिन और चैत्रमें दो घडी वर्षा आदि उत्पात होनेके पीछे त्याग दें ॥ २७९ ॥

माघमें तीन दिन, फाल्गुनमे दो दिन, चैत्रमे एक दिन, वैशाखमें दो

पहरदुगं वइसाहे जिट्ठे अद्ध आसाढे ॥२८०॥

इत्थ तिथीनां कथिता यथार्हा,
कथा यथार्था वितथा न किञ्चित् ।
सम्यग्वरं वर्त्तनकं विमृश्य,
वर्षस्य वाच्यं सुधिया स्वरूपम् ॥२८१॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधे महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते तिथिफलकथनो नाम नवमोऽधिकारः ॥

अथ सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकारः ।

संक्रान्तिविचारफलम्—

अथादित्यगत्याधिगत्याब्दरूपं,
यथाप्राप्तरूपैर्यदूपि स्वमत्या ।
तथा ब्रूमहे भूमहेशानतुष्ट्यै,
क्रमात् संक्रमाज्जन्यधान्यादिवार्त्ताम् ॥१॥

प्रहर, ज्येष्ठमें एक प्रहर और आषाढमें अर्द्ध प्रहर, इतने मासों में इतने समय ही वर्षा होकर रह जावे तो वह अकाल वर्षा कहीजाती है ॥२८०॥

इसी प्रकार यथायोग कुछ भी असत्य नहीं ऐसी सत्य तिथियों की कथा कही। इसका अच्छी तरह विचार करके विद्वानों को वर्षका स्वरूप कहना चाहिये ॥ २८१ ॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो तिथिफलकथननामा नवमोऽधिकार ।

अब सूर्यकी गतिका ज्ञानसे वर्षका स्वरूप जैसा प्राचीन आचार्यों ने अपनी बुद्धिके अनुसार बनाया है, वैसा सूर्य मेषादि राशि पर संक्रमसे उत्पन्न होनेवाले धान्य आदि का फलकथन राजाओं की प्रसन्नता के लिये

सङ्क्रान्तिसञ्ज्ञावारफलम्—

घोरार्कवारे क्रूरर्क्षे ध्वांक्षीन्दौ क्षिप्रसंज्ञकैः ।
महोदरी चरैर्भौमे मैत्रे मन्दाकिनी बुधे ॥२॥
धिष्ण्यैर्ध्रुवैर्गुरौ मन्दा भृगौ मिश्रा तु मिश्रभैः ।
राक्षसी दारुणैर्मन्दे सङ्क्रान्तिः क्रमतो रवेः ॥३॥
शूद्रान् वैश्यांस्तथा चौरान् भूपान् द्विजान् पशूनपि ।
म्लेच्छानानन्दयन्त्येते घोराद्या रविसंक्रमाः ॥४॥
रवौ रसस्य धान्यस्य पीडा सोमे सुभिक्षता ।
कुजे गोधनकष्टं स्याद् बुधे रसमहर्घता ॥५॥
गुरौ सर्वशुभं शुक्रे गजादिवाहनक्षयः ।
शनौ सर्वरसाल्पत्वं संक्रान्तौ वारजं फलम् ॥६॥

चन्द्रमण्डले सङ्क्रान्तिफलम्—

कहता हूँ ॥ १ ॥

क्रूरसञ्ज्ञक नक्षत्र और रविवार को सूर्य सक्रांति हो तो घोरा नामकी सक्रांति कही जाती है। वैसे क्षिप्रसञ्ज्ञक नक्षत्र और सोमवारको सक्रांति हो तो ध्वांक्षी। चरसञ्ज्ञक नक्षत्र और मंगलवार को महोदरी नामकी सक्रांति। मैत्रसञ्ज्ञक नक्षत्र और बुधवारको मन्दाकिनी नामकी सक्रांति होती है ॥२॥ ध्रुवसञ्ज्ञकनक्षत्र और गुरुवारको मन्दा नामकी, मिश्रसञ्ज्ञकनक्षत्र और शुक्रवार को मिश्रा, दारुणसञ्ज्ञक नक्षत्र और शनिवार को राक्षसी नामक सक्रांति होती है ॥३॥ उपरोक्त घोरा आदि सूर्य सक्रांति अनुक्रमसे— शूद्र, वैश्य, चोर, राजा, ब्राह्मण, पशु और म्लेच्छ इनको सुखदायक होती हैं ॥४॥ सूर्यसक्रांति रविवारको हो तो रस और धान्य का कष्ट, सोमवारको हो तो सुभिक्ष, मंगलवारको हो तो गौ आदिको कष्ट, बुधवारको हो तो रस महँगे हो ॥ ५ ॥ गुरुवार को हो तो समस्त शुभ, शुक्रवार को हो तो हाथी आदि वाहनों का नाश और शनिवार को हो तो समस्त रसकी अल्पता हो ॥६॥

संक्रान्तिदिवसे चन्द्रो दुर्भिक्षायाग्निमण्डले ।
वायौ चन्द्रे चौरभय-मथवा धान्यसंक्षयः ॥७॥
माहेन्द्रमण्डले चन्द्रे महावर्षा प्रजारुजः ।
वारुणे मण्डले चन्द्रे वृष्टिः क्षेमं प्रजासुखम् ॥८॥

दिनरात्रिविभागेन संक्रान्तिफलम्—

पूर्वाह्णे भूपपीडायै मध्याह्ने द्विजजातिषु ।
वणिजामपराह्णे च संक्रान्तिर्दुःखदायिनी ॥९॥
अस्तप्राप्तौ च शूद्राणां गोपानामुदये रवेः ।
लिङ्गिवर्गस्य सन्ध्यायां पिशाचानां प्रदोषके ॥१०॥
नक्तचरेष्वर्द्धरात्रेऽपररात्रे नटादिषु ।
रोगमृत्युविनाशाय जायते रविसंक्रमः ॥११॥

कीदृशस्व संक्रमस्तत्फलम्—

सुप्तसंक्रमते नागे तैतिले वा चतुष्पदे ।

सूर्य संक्रान्तिके दिन चन्द्रमा अग्निमण्डलमें हो तो दुर्भिक्ष, वायुमण्डल में हो तो चोरका भय या धान्यका विनाश हो ॥७॥ माहेन्द्र मंडल में चंद्र हो तो बड़ी वर्षा हो और प्रजामें रोग हो। वारुणमंडलमें चंद्रमा हो तो अच्छी वर्षा मंगल और प्रजा सुखी हो ॥८॥

दिनके पहले भागमें संक्रांति हो तो राजाओंको पीडा, मध्याह्नमें हो तो ब्राह्मणोंको और दिनके पीछला भाग में हो तो वैश्यों को दुःखदायक होती है ॥९॥ सूर्यास्त समय हो तो शूद्रोंको, सूर्योदयमें हो तो पशुपालक (गोवाल) को, सन्ध्या समय हो तो लिंगीजन (पाखंडी) को और प्रदोष समय हो तो पिशाचोंका कष्ट करे ॥१०॥ अर्द्धरात्रिमें हो तो राक्षसों को और पीछली रात्रिमें हो तो नट आदिको रोग-मरण विनाश करती है ॥११॥

नाग, तैतिल और चतुष्पद करण में सुप्त संक्रांति है। वाणिज, वृष्टि, बालव, गर और बव करणमें बैठी संक्रांति होती है। शकुनि किंस्तुघ्न

निविष्टो वाणिजे विष्टयां बालवे वा गरे घने ॥१२॥
ऊर्ध्वस्थितः स्याच्छकुनौ किंस्तुघ्ने कौलवे रविः ।
जघन्यमध्योत्कृष्टत्वं धान्यार्घवृष्टिषु क्रमात् ॥१३॥

सक्रान्तिमुहूर्तविचार —

भेषु क्षणान् पञ्चदशेन्द्ररौद्र-
वायव्यसार्पान्तकवारुणेषु ।
त्रिघ्नान् विशाखादितिभध्रुवेषु,
शेषेषु तु त्रिंशतमामनन्ति ॥१४॥
हीने मुहूर्त्तभे हीनं समं साम्येऽधिकेऽधिकम् ।
संक्रान्तिदिनभं ज्ञात्वा बुधो वक्ति शुभाशुभम् ॥१५॥
मृगकर्काजगोमीन-संक्रान्तिर्निशि सौख्यदा ।
शेषाः सप्तदिने श्रेष्ठा अशुभाय विपर्ययः ॥१६॥

करण में रवि हो तो ऊर्ध्व (खड़ी) सक्राति होती हैं ये तीन प्रकार की सक्राति अनुक्रम से जघन्य मध्यम और उत्तम है, ये धान्य मूल वर्षा के लिये फलदायक है ॥१२-१३॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, आश्लेषा, भरणी और शतभिषा ये छह नक्षत्र पद्रह मुहूर्तवाले हैं । विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा और रोहिणी ये छह नक्षत्र ४५ पैतालीस मुहूर्त्तवाले हैं, और बाकी के— अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा और रेवती ये पद्रह नक्षत्र तीस ३० मुहूर्त्तवाले हैं ॥ १४ ॥ हीन याने पद्रह मुहूर्त्तवाले नक्षत्रों में हीन, समान मुहूर्तवाले नक्षत्रोंमें समान और अधिक मुहूर्तवाले नक्षत्रोंमें अधिक ऐसा सक्राति दिनके नक्षत्रको जानकर पडित शुभाशुभको कहें ॥ १५ ॥ मकर, कर्क, मेष, वृष और मीन ये पाच सक्राति रात्रि में हो तो सुखदायक है और बाकी सात सक्राति दिनमे हो तो श्रेष्ठ

संक्रान्तिर्जायते यत्र भास्करारशनैश्चरे ।
तस्मिन्मासे भयं घोरं दुर्भिक्षं वृष्टिचौरजम् ॥१७॥
ऊर्ध्वस्थितः सुभिक्षं करोति मध्यं फलं निविष्टस्तु ।
शयितो भानुरवृष्टिं दुर्भिक्षं तस्करभयं च ॥१८॥

संक्रान्तीनां वाहनादीनि –

सिंहव्याघ्रौ शूकरखरगजमहिषा हयाश्वमेषवृषाः ।
कुक्कुट एव वाहनमर्कस्य ववादिकरणबलात् ॥१९॥
मतान्तरे–गजो वाजी वृषो मेषो खरोष्ट्रसिंहवाहनाः ।
भानोर्ववादिकरणे शेषे शकटवाहनः ॥२०॥
सितपीतनीलपाण्डुर-रक्तासितधवलचित्रवस्त्रधरः ।
कम्बलवान् नग्नोऽर्कः कृष्णांशुकभृद्ववादौ स्यात् ॥२१॥

है, परन्तु इससे विपरीत हो तो अशुभ जानना ॥१६॥ रवि, मंगल और शनिवार को संक्रांति हो तो उस महीनेमें चोरोंसे भय और वर्षासे दुर्भिक्ष हो ॥१७॥ ऊर्ध्व स्थित (खड़ी) संक्रांति सुभिक्ष करती है । बैठी संक्रांति मध्यम फलदायक है और सुप्त संक्रांति अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और चोरों का भयदायक है ॥१८॥

ववादि सात चरकरण और शकुनि आदि चार स्थिरकरण ये ग्यारह करणके योगसे संक्रांतिके वाहन, वस्त्र, भोजन, विलेपन, आयुध, जाति, पुष्प आदि अनुक्रमसे जानना चाहिये ।

संक्रांति वाहन - सिंह, व्याघ्र, वराह, गर्दभ, हाथी, भैसा, घोडा, कुत्ता, बकरा, वृष (गौ), कूकडा ये ग्यारह वाहन हैं ॥ १९ ॥ मतान्तर से– हाथी, घोडा, बैल, बकरा, गर्दभ, ऊट, सिंह और बाकी के सबको शकट (गाडी) का वाहन हैं ॥२०॥

संक्राति वस्त्र– श्वेत, पीला, हरा, पाडुर, लाल, कृष्ण, कमलवर्ण, अनेकवर्ण, कम्बल, नग्न और घनवर्ण ये ग्यारह वस्त्र हैं ॥२१॥

ओदनपायसभैक्षक-पक्वान्नं दुग्धदधिविचित्रान्नम् ।
गुडमधुरसखण्डानां भक्ष्याणि रवेर्घृतादौ स्युः ॥२२॥
कस्तूरीकाश्मीरजचन्दनमृद्रोचनाख्यालक्तरसः ।
जवादि (रस) निशाकज्जलकृष्णागुरुचन्द्रलेपोऽर्के ॥२३॥
भृकुण्डीगदाखड्गदण्ड धनुश्च, रवेस्तोमर. कुन्तपाशांकुशास्त्रम्।
असिर्बाण एव ब्रवाद्यायुधानि, क्रमात्संक्रमस्याहि योध्यानि धीरैः
देवनागभूतपक्षिपशवो मृगसूकराः (भूसुराः) ।
राजन्यवैश्यशूद्राख्या जातयो वर्णसङ्करः ॥२५॥
पुन्नागजातीफलकेसराख्यः,
श्रीकेतकं दौर्विकमर्कबिल्वे ।
स्यान्मालतीपाटलिका जपा च,
जातिः क्रमात् संक्रमणेऽर्कः पुष्पम् ॥२६॥
ग्रन्थान्तरे तु—विष्ट्यां चतुष्पदे व्याघ्रे महिषे नागतैतिले ।

सक्रांति भोजन— भात, पायस (दूध की मीठाई), भिक्षा (घर २ भिक्षा मागना), पक्वान्न (मालपूआ आदि), दूध, दही, विचित्र अन्न, गुड, मधु, घी और सक्कर ये ग्यारह भोजन है ॥२२॥

सक्रांति विलेपन— कस्तूरी, कुंकुम, चन्दन, मट्टी, गोरोचन, अलक्त रस, मार्जारमद, हलदर, कज्जल, कालागुरु और कर्पूर ये ग्यारह विलेपन हैं॥ २३ ॥

सक्रांतिके आयुध— भूशुंडी, गदा, खड्ग, दड, धनुष, तोमर, कुंत, पाश, अंकुश, तलवार, और बाण ये ग्यारह शस्त्र है ॥२४॥

सक्रांति जाति— देव, नाग, भूत, पक्षी, मृग, शूकर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और वर्णसकर ये ग्यारह जाति हैं ॥२५॥

सक्रांति पुष्प- नागकेसर, जायफल, केसर, कमल, केतकी, दूर्वा, अर्क, बिला, मालती पाटलि, और जपा ये ग्यारह पुष्प हैं ॥ २६ ॥

बवे गरे गजारूढो बालवे वणिजे वृषे ॥२७॥
किंस्तुघ्ने शकुनौ जातौ कौलवे करणे तथा।
भास्वानश्वाधिरूढः स्यात् तमसामुपशामने ॥२८॥

संक्रान्तिफलम्—

गजे स्वस्था मही मेघै-र्महिषे मृत्युमादिशेत्।
अश्वारोहे महायुद्धं वृषभे बहुधान्यता ॥२९॥
सिंहे महर्घमन्नं स्याद्देशे चौरभयं महत्।
एवं वस्त्रादयो भावा भावनीया दिशाऽनया ॥३०॥

त्रैलोक्यदीपके—चारे चतुर्थे यदि पञ्चमे वा,
धिष्ण्ये तृतीये यदि पञ्चमे वा।
पूर्वक्रमात् संक्रमते यदार्क-
स्तदा च दौस्थ्यं नृपविड्वरं च ॥३१॥
संक्रान्तिधिष्ण्याद्यदि षष्ठसंख्ये, जायेत धिष्ण्ये रविसंक्रमश्चेत्।
तदापि दौस्थ्यं नृपविड्वरश्च, त्रिभागतुच्छा भवतीह भूमिः ॥

प्रथान्तरमें— विष्टि और चतुष्पद करणमें व्याघ्र, नाग और तैतिल करणमें महिष, बव और गर करण में हाथी, बालव और वणिज करण में वृष, ये वाहन हैं ॥ २७ ॥ किंस्तुघ्न, शकुनि तथा कौलव करणमें अन्धकार को नाश करने वाले सूर्यका अश्व वाहन है ॥२८॥

संक्रांति का हाथी वाहन हो तो पृथ्वी वर्षा से सुखमय हो। महिष वाहन हो तो मरण, घोडे का वाहन हो तो बडा युद्ध, वृषभ वाहन हो तो धान्य बहुत ॥२९॥ सिंह वाहनसे अनाज महँगे हो और देशमें चोर का बडा भय हो। इसी तरह वस्त्र आदिका भी विचार कर लेना ॥३०॥

प्रथम सूर्यसंक्रान्तिमें दूसरी सूर्यसंक्रान्ति यदि चौथा या पांचवा वार में तथा तीसरा या पांचवा नक्षत्र में प्रवेश हो तो दुःख और राजाओं का विद्रव हो ॥३१॥ छट्ठे नक्षत्रमें संक्रमण हो तो भी दुःख और राजाओं का

तुर्ये धिष्ण्ये च पूर्वस्माद् यदि वारे तृतीयके।
संक्रमो निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात् तदोत्तमम् ॥३३॥
लोके तु-जिणवारे रविसंक्रमे, तिणथी चउथे वार।
अशुभ फेडी शुभ करे, जोसी खरुं विचार ॥३४॥
पांचा होइ करवरो, तिहु रस मुहंघो होय।
जो आवे दो छठ्ठे, पृथिवी परलय जोय ॥३५॥
बीजे त्रीजे पांचमे, रवि संचारो होय।
खप्पर हत्थी जग भमे, जीवे विरलो कोय ॥३६॥
सूर्यस्यान्यग्रहाणां वा गुरुभेऽभ्युदयास्तकौ।
शशिदृष्टौ सुभिक्षं स्याद् दुर्भिक्षं लघुभे पुनः ॥३७॥
तिथिदिनोडुलग्नाना-माद्यकराटे रविस्थितौ।
सुभिक्षं जायतेऽवश्यं दुर्भिक्षं तु त्रिकण्टके ॥३८॥

विप्लव हो और पृथ्वीपर मनुष्य तृतीयांश रह जाय ॥३२॥ यदि चौथा नक्षत्र और तीसरा वारमें रात्रिके समय सूर्यसंक्रान्ति हो तो अच्छा सुभिक्ष हो ॥३३॥ लोक भाषामें बोलते है कि—जिस वारमें पूर्वकी संक्रांति हो उससे चौथे वारमें यदि दूसरी संक्रांति हो तो अशुभ को दूर करके शुभ फल करें ॥ ३४ ॥ यदि पांचवा वारमें प्रवेश हो तो करवरा हो। तीसरे वारमें प्रवेश हो तो रस महँगा हो। छट्ठे वारमें प्रवेश हो तो पृथ्वी प्रलय हो याने बहुत से प्राणी मृत्यु प्राप्त हो ॥ ३५ ॥ दूसरे तीसरे या पांचवें वार में सूर्यसंक्रांति हो तो मनुष्य भीक्षा के लिये खप्पर लेकर घूमे याने बड़ा दुष्काल हो जिससे बहुतसे प्राणियोंका विनाश हो ॥३६॥ सूर्य या दूसरे ग्रह गुरु (बृहत्) नक्षत्र पर उदय हो या अस्त हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है और लघुसंज्ञक नक्षत्र पर हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥ ३७ ॥ तिथि वार नक्षत्र और लग्न इन के आद्य भागमें सूर्य स्थित हो तो सुभिक्ष होता है और अन्त्यभागमें हो तो दुर्भिक्ष हो ॥

मित्रस्वगृहतुङ्गस्थः शुभदृष्टयुतो रविः ।
पूर्वचन्द्रे महाधिष्ण्ये पूर्वसङ्क्रान्तितुर्यके ॥३९॥
तृतीयवारसम्बद्धः सुभिक्षः क्षेमदः स्मृतः ।
सुप्तोऽरिभे युतो दृष्टो विद्धः क्रूरैस्तु नीचगा; ॥४०॥

अर्घकाण्डे—

संक्रान्तिऋक्ष नयनैश्च वेदैः, सौख्यं सुभिक्षं भवतीह भानोः ।
मध्यं हि सौख्यंसह जेषु कुर्याद्, दुर्भिक्षपीडा ऋतुबाणभे च ।४१।
तुच्छे मुहूर्तसंक्रान्तः पूर्वस्मात् त्रिकपञ्चके* ।

३८ ॥ मित्रराशि का, अपनी राशि का, या उच्च राशि का सूर्य शुभग्रह से दृष्ट हो या युक्त हो और पूर्व संक्रांति के चन्द्र नक्षत्र से चौथे नक्षत्रमें और तीसरे वारमें संक्रमण हो तो सुभिक्ष और कल्याण करनेवाला होता है । यदि सूर्य उस समय सुप्त हो, शत्रुकी राशिका हो, क्रूर ग्रहों से दृष्ट युक्त या वेधित हो, या नीचका हो तो अशुभ होता है ॥३९-४०॥

पूर्व संक्रातिके नक्षत्रसे दूसरी संक्राति दूसरे या चौथे नक्षत्रमें हो तो सुख और सुभिक्ष होता है । तीसरे नक्षत्रमें मध्यम सुख, पांचवें या छट्ठे नक्षत्रमें हो तो दुर्भिक्ष और दुःख हो ॥४१॥ पन्द्रह मुहूर्तकी संक्राति हो परंतु पूर्वकी संक्रातिसे त्रिक या पंचकनक्षत्र *हो तो धान्यादि सस्ते हों ।

*टी- स्वात्याद्यष्टकमश्विन्यादित्रय त्रिकसंज्ञम्, मृगादिदशक धनिष्ठापञ्चकमिद पञ्चकसंज्ञम् । सर्वनक्षत्रमध्यस्था रोहिणी तत्त्रिकपञ्चके किन्तु सौम्ययोगे शुभा । क्रूरयोगेऽशुभा इत्यर्थः ।

† देखो मेरा अनुवादित श्री हेमप्रभसूरिकृत त्रैलोक्यप्रकाश.—

स्वात्याद्यष्टकसंयुक्तमश्विन्यादित्रयं पुनः ।
त्रिकसंज्ञं बुधैर्वाच्यमर्घकाण्डविशारदैः ॥१॥
मृगादिदशकं चापि धनिष्ठा पञ्चसंयुतम् ।
पञ्चकं नामकं ज्ञेयमर्घनिर्णयहेतुकम् ॥२॥

अर्घकाण्ड में विशारद पण्डितों ने स्वाति आदि आठ नक्षत्र और अश्विनी आदि तीन नक्षत्र ये ग्यारह नक्षत्रकी त्रिकसंज्ञा कही है । तथा मृगशीर्ष आदि दश नक्षत्र और

समर्घमथ दुर्भिक्षं चित्राद्यष्टसु दुःखदम् ॥४२॥
कर्णादौ धिष्ण्यदशके सुभिक्षं सततं भवेत् ।
अमावास्या हि नक्षत्रं विमृश्य फलमादिशेत् ॥४३॥
संक्रान्तेः सप्तमे चन्द्रे कर्त्तव्यो धान्यसङ्ग्रहः ।
द्विमास्यां द्विगुणो लाभ-स्तदूर्ध्वं च विनश्यति ॥४४॥
बृहद्दक्षेषु जायन्ते द्वादशाप्यत्र संक्रमाः ।
तत्र वर्षे समग्रेऽपि शुभकालो भवेद् ध्रुवम् ॥४५॥
ऊर्ध्वे संक्रमणे मित्रे शुभयुक्ते च पूर्वकात् ।
त्रिचारे तूर्यके धिष्ण्ये बृहद्दक्षेऽर्कसंक्रमः ॥४६॥
यदा भवेत् तदा वाच्यं सुभिक्षं सततं क्षितौ ।
रात्रौ सुप्ते च सक्रूरे पापविद्धेक्षितेऽपि वा ॥४७॥
पूर्वात् तृतीयपञ्चर्क्षे लघुभे यदि संक्रमः ।
तदा भवेन्महल्लोके दुर्भिक्षं कष्टकारकम् ॥४८॥

चित्रादि आठ नक्षत्रोंमे सक्रमण हो तो दुर्भिक्ष हो ॥४२॥ और श्रवणादि दश नक्षत्रों में सक्रमण हो तो हमेशा सुभिक्ष होता है ॥४३॥ सक्राति से चद्रमा सातवा हो तो धान्यका सग्रह करना चाहिये, दो महीने दूगुना लाभ हो और सातवेंसे अधिक हो तो धान्यका विनाश हो ॥४४॥ यदि बारोंही सूर्यसक्रान्तियें जिस वर्ष मे बृहत्सज्ञक नक्षत्रों में सक्रमण हो तो उस वर्ष में निश्चयसे सुभिक्ष होता है ॥४५॥ ऊर्ध्वसज्ञक सक्रातिमे सूर्य शुभ ग्रहसे युक्त हो तथा पूर्वकी सक्रातिसे तीसरा या पाचवा बृहत्सज्ञक नक्षत्रमे सक्रमण हो ॥४६॥ तो पृथ्वी पर निरतर सुभिक्ष होता है। रात्रि में सुप्त सक्राति क्रूर ग्रहसे युक्त हो, वेधित हो या दृष्ट हो ॥४७॥ तथा प्रथम सक्रातिसे तीसरा पाचवा लघुसज्ञक नक्षत्र में सक्रमण हो तो जगत् में दुःख देनेवाला ऐसा दुर्भिक्ष

धनिष्ठा आदि पाच नक्षत्र व पद्रह नक्षत्रोंकी पचकसज्ञा कही है। यह वस्तुओंका अर्घ (मूल्य) का निर्णय के लिये बहुत उपयोगी है।

महर्क्षे मिश्रसंयुक्तेऽप्युपविष्टेऽपि संक्रमः ।
अर्घसाम्यं तदा वाच्यं सूर्यसंक्रान्तिलक्षणैः ॥४९॥
यदा धनुषि मार्त्तण्डः सङ्क्रामति तदा विधु ।
विलोक्यते बृहद्धिष्ण्ये किं मध्ये किं जघन्यके ॥५०॥
उत्तमर्क्षे सुभिक्षं स्यान्मध्यमे समता मता ।
जघन्येषु महर्घं स्यादेव संक्रमणात् फलम् ॥५१॥
चेदर्को याति मेषादौ विधौ सप्तमराशिगे ।
त्रिद्व्येकषट्शराम्भोधिमासेष्वर्घः क्रमाद्भवेत् ॥५२॥
मेषे रवौ तुलाचन्द्रः षण्मासे धान्यलाभदः ।
वृषेऽर्के वृश्चिके चन्द्रस्तुर्यमासेऽन्नलाभदः ॥५३॥
मिथुनेऽर्के धनुश्चन्द्रस्तिलतैलान्नसङ्ग्रहात् ।
मासैश्चतुर्भिर्लाभाय सक्रूरैश्चेन्न विद्ध्यते ॥५४॥

हो ॥ ४८ ॥ यदि उपविष्ट (बैठी हुई) संक्रांति बृहत्संज्ञक या मिश्रसंज्ञक नक्षत्रमें हो तो सूर्यसंक्रांतिके लक्षणोंसे मूल्यका समान भाव कहना ॥४९॥ जब धनसंक्रांति हो उस दिन चन्द्रमा का विचार करना चाहिये कि बृहत्संज्ञक मध्यमसंज्ञक या जघन्यसंज्ञक नक्षत्रोंमें है ॥ ५० ॥ यदि बृहत्संज्ञक नक्षत्रोंमें हो तो सुभिक्ष, मध्यम संज्ञक नक्षत्रोंमें हो तो मध्यम (समान) और जघन्य-संज्ञक नक्षत्रोंमें हो तो महँगे फल कहना ॥५१॥ जब सूर्य मेषादि राशियोंमें प्रवेश हों तब चन्द्रमा सप्तम राशि पर हो तो क्रम से तीन, दो, एक, छह, पांच और चार महीनोंमें धान्यादिकी महर्घता हो ॥५२॥

मेषकी संक्रांतिके दिन तुलाका चन्द्रमा हो तो छट्ठे महीने धान्यका लाभ हो । वृषकी संक्रांतिके दिन वृश्चिकका चन्द्रमा हो तो चौथे महीने अन्नका लाभ हो ॥५३॥ मिथुन संक्रांतिके दिन धनका चन्द्रमा हो तो तिल तेल तथा अन्नका संग्रह करने से चौथे महीने लाभ हो, परंतु क्रूरग्रहसे वेधित हो तो लाभ न हो ॥५४॥ कर्कसंक्रांतिको मकर का चन्द्रमा हो तो

कर्केऽर्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने।
घोरं यावच्चतुर्मासी दासीकृतधनेश्वरः ॥५५॥
षण्मासाद्द्विगुणो लाभः सिंहेऽर्के कुम्भचन्द्रतः।
मीनेन्दुर्वक्ति कन्यार्के छत्रभङ्गेन विग्रहम् ॥५६॥
तुलार्के चन्द्रमा मेषे पञ्चमे मासि लाभदः।
वृश्चिकेऽर्के वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसङ्ग्रहः ॥५७॥
प्रदत्ते द्विगुण लाभं धान्यं मासद्वयान्तरे।
मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पञ्चमासान्नलाभदः ॥५८॥
कर्पासघृतसूत्रादेः पञ्चमे मासि लाभदः।
मृगेऽर्के कर्कशीतांशुः पांसुलानां विनाशकः ॥५९॥
सिंहेन्दुः कुम्भभानौ चेत् तुर्ये मासेऽन्नलाभदः।
*कन्याचन्द्रोऽपि मीनेऽर्के तादृशो धान्यसङ्ग्रहात् ॥६०॥
यद्दिने यार्कसङ्क्रान्तिस्तद्राशौ तद्दिने शशी।

चार महीने तक लोकमें दुर्भिक्ष करे, धनवान् भी दासीभाव धारण करें॥ ५५॥ सिंहसंक्रांतिको कुंभका चन्द्रमा हो तो छह महीने दूना लाभ हो। कन्यासंक्रांतिको मीनका चन्द्रमा हो तो छत्रभंग और विग्रह हो॥ ५६॥ तुलासंक्रांतिको मेषका चन्द्रमा हो तो पांचवें महीने लाभ हो। वृश्चिकसंक्रांतिको वृषका चन्द्रमा हो तो तिल तेल तथा अन्नका संग्रह करना उचित है॥ ५७॥ इससे दो महीने बाद दूना लाभ हो। धनसंक्रांतिको मिथुनका चन्द्रमा हो तो पांचवें महीनेमें अन्नसे लाभ हो॥ ५८॥ और कपास, घी, सूत आदि से पांचवें महीने लाभ हो। मकरकी संक्रांतिको कर्कका चन्द्रमा हो तो कुलटाओंका विनाश हो॥ ५९॥ कुंभसंक्रांतिको सिंहका चन्द्रमा हो तो चौथे महीने अन्नसे लाभ हो। मीनकी संक्रांतिको कन्याका चंद्रमा हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये॥ ६०॥

---

* कन्या मीनेस्यार्याश्चिचन्द्रमा। सर्वधान्यसंग्रहेण लाभः पञ्चगुणः क्रमात् ॥१॥

जन्मवेधादयं नेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदो गृहे ॥६१॥
यस्मिन् वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः ।
लोके खर्प्परयोगोऽयं जीवाद्धान्यादिनाशकः ॥६२॥
शनिः स्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः ।
तृतीयायां कुजे योगः खर्प्पराख्योऽतिकष्टकृत् ॥६३॥
स्यात् कार्तिके वृश्चिकसङ्क्रमाहे,
सूर्ये महर्घं भुवि शुक्लवस्तु ।
म्लेच्छेषु रोगान् मरणाय मन्दः,
कुजः परं धान्यरसग्रहाय ॥६४॥
लाभस्तु तस्य त्रिगुणस्त्रिमास्यां,
बुधे च पूगादिफलं महर्घम् ।
गुरौ च शुक्रे तिलतैलसूत्र-
कर्पासरूतादिमहर्घता स्यात् ॥६५॥

जिस दिन सूर्यसंक्राति हो उस दिन उसी राशि पर चंद्रमा हो याने कोई भी संक्रातिके दिन सूर्य और चंद्रमा एक ही राशि पर हो तो जन्म वेध होता है वह अनिष्ट है और मित्रगृहमें हो तो श्रेष्ठ होता है ॥ ६१ ॥ जिस वार की संक्राति हो उसी वार की अमावस भी हो तो लोक मे ग्वर्पर योग होता है यह प्राणी और धान्य आदिका नाश करता है ॥६२॥ यदि प्रथम संक्राति को शनिवार, दूसरी को रविवार और तीसरी को मंगलवार हो तो खर्पर योग होता है यह बहुत कष्टदायक होता है ॥६३॥ यदि कार्त्तिक मासमे वृश्चिकसंक्राति रविवार की हो तो श्वेत वस्तु महँगी हो, शनिवार की हो तो म्लेच्छोंमे रोगसे मरण हो, मंगलवार की हो तो धान्य और रसका संग्रह करना ॥६४॥ इससे तीन महीने त्रिगुना लाभ हो। बुधवार की हो तो पूगीफल (सोपारी) आदि महँगे हों। गुरुवार और शुक्रवार की हो तो तिल तेल सूत कपास रूई आदि महँगे

सोमे सर्वजने सौख्यं सन्धिः सर्वत्र भूभुजाम् ।
तद्वारग्रहवेधेऽल्प-मध्योत्कृष्टफलोदयः ॥६६॥
धनुषि तरणिभोगे मार्गशीर्षेऽर्कभौमौ,
शनिरपि यदि वारश्चौडकर्णाटगौडाः ।
सुरगिरिमलयान्ता मालवास्तेषु राज्ञां,
रणमरणविशेषाद् विग्रहाय त्रयोऽमी ॥६७॥
कर्पाससूत्रादितिलाज्यतैल-
महर्घता लाभदशासुवर्णात् ।
शैत्यप्रवृद्धिर्भुवि सोमवारे,
किञ्चिद्विनाशोऽप्यत एव धान्ये ॥६८॥
बुधे गुरौ वान्नसमघता स्या-
च्छुक्रे पुनर्म्लेच्छजनप्रमोदः ।
पौषे मृगेऽर्कः शनिना भयाय,
प्रभाकृता क्षत्रकुलक्षयाय ॥६९॥
बुधान् मुधा युद्धमुशन्ति बुधा-

हो ॥६५॥ सोमवारकी हो तो समस्त मनुष्योंमें सुख हो और राजाओं में सब जगह सधि हो । इस सक्रातिके वारको गृहवेध होनेसे जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट फल होता है ॥६६॥ यदि मार्गशीर्ष मास मे धनसक्राति को रवि मगल या शनिवार हो तो चौड, कर्णाट, गौड, देवगिरि, मलय, मालवा आदि देशोंके राजाओंमें युद्ध मरण और विग्रह ये तीनों हो ॥६७॥ कपास, सूत, तिल, तेल, घी आदि तेज हो तथा सोना से लाभ हो । सोमवार हो तो पृथ्वीपर शीतकी वृद्धि हो इससे धान्यमें कुछ विनाश हो ॥६८॥ बुध या गुरुवार हो तो अनाज सस्ते हों शुक्रवार हो तो म्लेच्छलोगोंको आनन्द हो यदि पौष मासमें मकरसक्राति को शनिवार हो तो भय हो । रविवार हो तो क्षत्रिय कुलका नाश हो ॥६९॥ बुधवार हो तो विना कारण युद्ध हो ऐसे पण्डित

गुरौ विरोध स्वकुले छिमास्थाम् ।
युगन्धरीवल्लमसूरधान्ये,
हिमाद्विनाशश्चणकेऽपि सोमे ॥७०॥
देवे गुरौ बादर एव शुक्रे,
माघेऽथ कुम्भे दिनकृत्प्रसङ्गे ।
पृथ्वीभयं विग्रह एव घोर-
श्चतुष्पदानामतिशायि कष्टम् ॥७१॥
तथा वृषभसङ्ग्रहो महिषविक्रयो वा शनौ,
रणः स्वपरमारणः क्षितिपतिग्रहान्मङ्गले ।
रवावपि तथा कथा गुरुबुधेन्दुशुक्रागमात्,
समानविषमा क्वचित् सकललोकनिश्शोकता ॥७२॥
कुलत्थमाषमुद्गानां विक्रयस्तुवरीकणाः ।
युगन्धरीमसुराद्याः समर्घा देशसुस्थता ॥७३॥
घृतकर्पासतैलादि गुडखण्डेक्षुशर्कराः ।
सङ्ग्रहाद्विगुणो लाभस्तेषां मासद्वये गते ॥७४॥

लोग कहते हैं। गुरुवार हो तो अपने कुल में विरोध हो। सोमवार हो तो दो महीनेमें युगधरी (जुआर) वाल मसूर धान्य और चणे इनका हिम से विनाश हो ॥ ७० ॥ माघ मासमें कुंभ संक्रांति को गुरु या शुक्रवार हो तो पृथ्वीमें भय, घोर विग्रह और पशुओंको कष्ट हो ॥ ७१ ॥ शनिवार हो तो वृषभ का संग्रह करना और महिषको बेचना, मंगलवार तथा रवि-वार हो तो राजाओंमें अन्योऽन्य घोर युद्ध हो। गुरु बुध चंद्रमा या शुक्र-वार हो तो क्वचित् समान या विषम रहें, समस्त लोक शोक (चिन्ता) रहित हो ॥ ७२ ॥ कुलथी, उडद, मूगको बेच देना चाहिये, तूअरी, युगधरी (जुआर) मसूर आदि सस्ते हो, देश सुखी हो ॥ ७३ ॥ घी कपास तेल गुड खांड ईख सक्कर आदिका संग्रह करनेसे दो महीने बाद

मीनेऽर्के सति फाल्गुने शनिवशात् सामुद्रिकार्थक्षयो,
भौमे हेम्नि सलाभता रणनटाः सूर्ये भटा निष्ठिताः।
तैलाज्यादिरसा महर्घविवसाश्चन्द्रे जनानां सुखं,
शुक्रे चन्द्रसुते सुभिक्षमतुल रोगप्रयोगो गुरौ ॥७५॥
चैत्रे मेषरवौ तथा क्षितिसुते मन्दे महर्घस्थिति-
र्गोधूमे चणके तथैव शशिना कार्पासतैलादिषु ।
जीवः क्षत्रियजीवनाशनकरः शुक्रोऽथवा चन्द्रजः,
सर्वं वस्तुमहर्घमेव कुरुते वैवाहसोत्साहताम् ॥७६॥
लोके तु–चैत किसन जोइन भञ्जुली, चार दिसा वारु निरमली।
मीन अर्क सनिवारे होइ, तेरसि दिन तो जीवे कोई ॥७७॥
वैशाखे वृषसंक्रमे शनिकुजादित्याद्दिर्भिक्षदा,
देशे क्लेशरुचिर्महर्घविधया प्राप्या न गोधूमकाः ।

दूना लाभ हो ॥ ७४ ॥

फाल्गुन मासमें मीनकी संक्रांति शनिवारको हो तो समुद्र से उत्पन्न होनेवाली या समुद्र में आने जानेवाली वस्तुओं में लाभ न हो । मंगलवार को हो तो सुवर्ण से लाभ हो । रविवार को हो तो योद्धाओं में वीरता हो और तेल घी आदि रस महँगे हो। सोमवारको हो तो मनुष्योंको सुख हो। शुक्र या बुधवार को हो तो बहुत सुभिक्ष हो और गुरुवारको हो तो रोग हो ॥७५॥ चैत्र मासमें मेषसंक्रांतिको मंगल या शनिवार हो तो गेहूँ चने का भाव तेज हो । सोमवारको हो तो कपास तेल आदि तेज हो । बृहस्पति हो तो क्षत्रिय और प्राणियों का नाशकारक है । शुक्र या बुधवार हो तो समस्त वस्तु महँगी हो और विवाह महोत्सव अधिक हो ॥ ७६ ॥ चैत्र कृष्णपक्षमें चारोंही दिशा निर्मल न हो और मीनसंक्रांति शनिवारको तेरस के दिन हो तो महामारी या दुष्काल हो ॥ ७७ ॥ वैशाखमे वृषसंक्रांतिको शनि मंगल या रविवार हो तो दुर्भिक्ष हो, देश मे क्लेश हो, महँगाई के

कर्पासे फलवस्तुनीक्षुरसजे माञ्जिष्ठकेऽत्यादरः,
सोमे धान्यसमर्घता कविगुरुज्ञेषु प्रियाः स्यू रसाः ॥७८॥
ज्येष्ठे श्रीमिथुनार्कतः शनिकुजादित्येषु पापाशयो,
रोगोऽग्निज्वलनादिज भयमपि प्रायो महर्घाः कणाः ।
सन्तुष्टा वसुधा सुधाकरसुते वस्तु प्रिय सिन्धुजं,
दुर्भिक्ष शशिजीवभार्गवबलात् सार्वत्रिकं सूच्यताम् ।७६।
आषाढे कर्कसंक्रान्तौ क्रूरवारेऽतिवर्षणम् ।
क्षत्रियाणां क्षयोऽन्योऽन्यं गुरौ तु प्रबलोऽनिलः ॥८०॥
सोमे सौम्ये तथा शुक्रे जलस्नातं भुवस्तलम् ।
धान्य समर्घमायाति परदेशाज्जने सुखम् ॥८१॥
सिंहेऽर्के श्रावणे भौमे शनौ वा बहुवृष्टये ।
तुच्छधान्यविनाशाय वायुपीडाकरो रवौ ॥८२॥
समर्घमाज्य देवेज्ये गुडतैलमहर्घता ।

कारण गेहूँ दुर्लभ हो , कपास, फल वस्तु, ईक्षुरस के पदार्थ , मजीठ ये तेज हो। सोमवार हो तो धान्य सस्ते हो। शुक्र गुरु या बुधवार हो तो अच्छे मधुर रस उत्पन्न हो ॥७८॥ ज्येष्ठमासमे मिथुनसंक्रांति शनि मगल या रविवारको हो तो पापकारक रोग हो, अग्निका भय और प्राय धान्य भाव तेज हो। बुधवारको हो तो पृथ्वी सतुष्ट हो तथा सिंधुसे उत्पन्न होनेवाली वस्तुका आदर हो । चद्रमा बृहस्पति या शुक्रवार को हो तो सर्वत्र दुर्भिक्षका सूचन है ॥७६॥ आषाढ मास में कर्कसंक्रांति क्रूर वारकी हो तो अधिक वर्षा हो, क्षत्रियों का परस्पर क्षय हो । गुरुवारकी हो तो प्रबल पवन चल ॥ ८० ॥ सोम बुध या शुक्रवार हो तो वर्षा अच्छी हो, धान्य सस्ते हो और परदेश से लोगों को सुख हो ॥ ८१ ॥ श्रावणमास मे सिंहसक्रांति मगल या शनिवार की हो तो बहुत वर्षा हो और तुच्छ धान्यका नाश हो। रविवार की हो तो वायुका उपद्रव हो ॥ ८२ ॥ गुरुवार की हो तो घी सस्ते हो और गुड तेल

सोमे शुक्रे बुधे छत्र-भङ्गकृल्लोकतोषदः ॥८३॥
कन्यार्कनो भाद्रपदेऽल्पवृष्टिः,
शनेर्जने स्याद् बहुधान्यनाशः ।
कुजाद्रुजाद्या बहुधेतयो वा,
वृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घताम्ने ॥८४॥
जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण,
क्रमेण सौख्यं न बहुश्रमेण ।
असुद्रसामुद्रकभूपयुद्ध,
किञ्चिद्विनाशोऽपि च पश्चिमायाम् ॥८५॥
आश्विने रवितुलाधिरोहिणे भास्करो द्विजगवादिदुःखदः ।
राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सर्पिषः खलु महर्घतां वदेत् ॥८६॥
बहुधा बहुधान्यसम्भवाद् , वसुधा पूर्णसुधा बुधाश्रयात् ।
गुरुणातिसमर्घमन्नकं, शशिना वा भृगुसूनुना तथैव ॥८७॥
कङ्गुरपङ्गुः शालिजूर्णाप्रमुखैर्वसुन्धरा पूर्णा ।

महँगे हो । सोम शुक्र या बुधवार की हो तो लोक को आनन्ददायक छत्रभग हो ॥८३॥ भाद्रपदमासमें कर्कसंक्राति रविवार को हो तो वर्षा थोड़ी हो, शनिवार को हो तो बहुत धान्यका नाश हो, मगलवार को हो तो रोग आदि बहुत प्रकार की ईतिका उपद्रव, वर्षा थोडी और अनाज महँगे हो ॥८४॥ गुरु चद्रमा शुक्र और बुध इनके पराक्रमसे थोडी महेनतसे क्रमसे सुख हो, समुद्रपर्यन्त राजाओंका युद्ध और पश्चिममें कुछ विनाश हो ॥८५॥ आश्विनमासमें सूर्यकी तुलासंक्राति रविवारको हो तो ब्राह्मण गौ आदिको दुःखदायक है, शनिवारको हो तो राज्यविग्रह हो और घी महँगे हो ॥ ८६ ॥ बुधवारको हो तो बहुत प्रकार के धान्यकी प्राप्ति, तथा पृथ्वी पूर्ण अमृतरसवाली हो । गुरुवारको हो तो अन्नाज सस्ते हो, इसी तरह चद्रमा और शुक्रवार होनेसे भी अनाज सस्ता हो ॥ ८७ ॥मगलवार हो तो कगु अपगु

विपुलाश्चपला नाम्ना कुलत्थहानिः पुनर्भौमे ॥८८॥
संक्रान्तयो द्वादश मासघट्टाः,
स्वमासमोक्षेण शुभाशुभानि ।
वारैः परं सप्तभिरादिशन्ति,
विशन्ति मासं यदि चान्यमेवम् ॥८९॥
बालबोधे पुनः-संक्रान्तिः स्याद्यदा पौषे रविवारेण संयुता ।
द्विगुणं प्राक्तनाद्धान्ये मूल्यमाहुर्महाधियः ॥९०॥
शनौ त्रिगुणता मूल्ये मङ्गले च चतुर्गुणम् ।
समानं बुधशुक्राभ्यां मूल्यार्धं गुरुसोमयोः ॥९१॥
पाठान्तरे-त्रिगुणं भूसुते सौम्ये शनिवारे चतुर्गुणम् ।
सोमे शुक्रे तुल्यमल्पमर्द्धमल्पं बृहस्पतौ ॥९२॥
ग्रन्थान्तरे—
"मीने रविसंकमणे ससिगुरुसुक्केहि होइ सुभिक्ख ।
बहु पवनो रविवारे चउपयपरिपीडणं भोमे ॥९३॥

शालि जूणा आदि धान्यसे पृथ्वी पूर्ण हो, चौला बहुत और कुलथी की हानि हो ॥ ८८ ॥ जो मासबद्ध बारह संक्रांतियें हैं वे अपने २ मासको छोड़ने बाद सात वार द्वारा शुभाशुभ फलको कहती हैं, इसी तरह दूसरे मासमें प्रवेश करती है ॥ ८९ ॥

यदि पौषमासकी संक्रांति रविवारको हो तो पहलेका धान्य दूने मूल्य से बिके ॥ ९० ॥ शनिवार हो तो तीन गुने, मंगल हो तो चौगुने, बुध या शुक्र हो तो समान और गुरु या सोमवार हो तो अर्द्धमूल से बिके ॥ ९१ ॥ प्रकारान्तर से—मंगल या बुध हो तो त्रिगुणे, शनिवार हो तो चौगुने, सोम या शुक्र हो तो समान और गुरुवार हो तो अर्द्धमूल्य से बिके ॥ ९२ ॥ ग्रंथान्तरमें—मीन संक्रांतिको सोम गुरु या शुक्रवार हो तो सुभिक्ष हो, रविवार हो तो पवन अधिक चले, मंगलवार हो तो पशुओंको पीड़ा हो ॥

दुब्भिक्खं सनिवारे हवइ बुधवार दैवजोएण।
दुब्भिक्खं छत्तभंगा आगमसंवच्छरपरिखा" ॥९४॥
शनिभानुकुजैर्वारैर्बहवः संक्रमा यदा।
महर्घमनिलं रोगं कुर्वते राजविड्वरम् ॥६५॥
सूर्योदये विषुवती जगतो विपत्त्यै,
मध्यंदिने सकलधान्यविनाशहेतुः।
संक्रान्तिरस्तसमये धनधान्यवृद्ध्यै,
क्षेमं सुभिक्षमवनौ कुरुते निशीथे ॥६६॥
अत्र लोकः—सीयाले सूती भली, बैठी वर्षाकाल।
उन्हाले ऊभी भली, जोसी जोस संभाल ॥९७॥
सूती सूत्र कपासह पूणे, वायु करे रस सयल विघूणे।
आधकरे जग लोक सतावे, सूती संक्रांति इणि परिभावे॥
बैठीसंक्रांति ते धग वेसारे, वायुकरे चउपायु मारे।
मदवाड करि लोग खपावे, बैठी संक्रांति इसडी आवे।६६।

---

६३ ॥ शनिवार हो तो दुर्भिक्ष हो, यदि दैवयोगसे बुधवार हो तो दुर्भिक्ष तथा छत्रभंग आगामि संवत्सर तक रहें ॥ ६४ ॥ यदि शनि रवि और मगलवारको बहुतसी संक्रांति हो तो अनाज महँगे हो, पवन की अधिकता, रोग और राजविग्रह हो ॥ ६५ ॥ यदि सूर्योदयके समय संक्रांति हो तो जगत्को विपत्तिके निमित्त हो, मध्य दिनमें हो तो सब धान्यका विनाश हो, अस्त समय हो तो धन धान्यकी वृद्धिके लिये हो, और अर्द्धरात्रिमें हो तो पृथ्वी पर क्षेम (कल्याण) और सुभिक्ष हो ॥ ६६ ॥ लोकिकमें भी कहते हैं कि—शीतऋतुमें सूतीसंक्रांति, वर्षाऋतुमें बैठीसंक्रांति और ग्रीष्मऋतुमें खड़ीसंक्रांति ये शुभदायक होती हैं ॥ ६७ ॥ सूतीसंक्रांति सूत कपासका नाश करे, अधिक वायु करे, समस्त रसका विनाश करे, और समस्त लोकको संताप करे ॥ ६८ ॥ बैठीसंक्रांति अधिक वायु करे, पशुओंका विनाश करे, रोगसे म-

उभीसंक्रांति ते उभी भावइ, वाधइ प्रजाने राजसुख पावइ।
घरि घरि मंगलतूर बजावइ, गौब्राह्मण सहु लोकसुखपावइ॥
पन्नरमुहूर्त्ती जो जगि खेलइ, तीडा मूसा चोरह ठेलइ।
तीस मुहूर्त्ती रण उपजावे, माणस घोडा हाथी खपावइ।१०१।
कण सुहंगो व्यापार वधारे, करे सुभिक्षने वरस सुधारे।
पचतालीस मुहूर्त्ती आई, घणो सुगाल नइ घणी वधाई।१०२।
मृगकर्क्यजगोमीनेष्वर्को वामाङ्घ्रिगा निशि।
अह्नि सुप्तस्तु शेषेषु प्रचलेद दक्षिणाङ्घ्रिगा॥१०३॥
स्वे स्वे राशौ स्थिते सौम्ये भवेद्दौस्थ्य व्यतिक्रमे।
चिन्तनीयस्ततो यत्नाद्राञ्यहः प्रोक्तसक्रमः॥१०४॥
तुलाषट्कस्य सक्रान्तिः स्यादेकतिथिजा शुभा।
द्वाभ्यां विमध्यमा ज्ञेया बहुभिर्दौस्थ्यकारिणी॥१०५॥

नुष्योंका विनाश करे॥९९॥ खडासक्रांति प्रजाकी वृद्धि, राजाको सुख, घर घर मंगलिक और गो ब्राह्मण आदि समस्त लोक सुख पावे॥१००॥ सक्रांति पद्रह मुहूर्त्तकी हो तो जगत्में टिड्डी, मूसे और चोर के उपद्रव हो तीस मुहूर्त्तकी हो तो युद्धका समय, मनुष्य घोड़ा हाथी इनका विनाश हो ॥१०१॥ पचतालीस मुहूर्त्तकी हो तो धान्य सस्ते, व्यापारकी वृद्धि, बहुत सुभिक्ष, बहुत मंगलिक और वर्ष अच्छा करे॥१०२॥ मकर कर्क मेष वृष और मीनराशिका सूर्य रात्रिमें सक्रमण हो तो बांयी चरणसे चलता है। दिनमें सक्रमण हो तो सूर्य सुप्त माना गया है और बाकी के समय सक्रमण हो तो दक्षिण चरणसे चलता है॥१०३॥ अपनी २ राशि पर ग्रह नियमानुसार रहे तो शुभ और विपरीत हो तो दुःख होता है। इसलिये दिनरात्रिमें कहे हुए सक्रांतिका यत्न से विचार करना चाहिये॥१०४॥ तुला आदि ६ सक्रांति यदि एकही तिथिको हो तो शुभ, दो तिथिमें हो तो मध्यम और बहुत तिथिमें हो तो दुर्भिक्षकारक होती है॥१०५॥

रिक्तायां रविसङ्क्रान्त्यां दैन्यसैन्याज्जनक्षयः ।
देशक्लेशो नरेशानां मृत्युर्दुःखाकुलाऽचला ॥१०६॥
यतः—तुलासङ्क्रान्तिषट्कं चेत् स्वस्था स्वस्या तिथेश्चलेत् ।
तदा दुःस्थं जगत्सर्वं दुर्भिक्ष डमरादिभिः ॥१०७॥
यद्वारे रविसंक्रान्तिः पौषे तस्मिन्नमावसी ।
द्वित्रिश्चतुर्गुणो लाभस्तदा धान्ये क्रमान्मतः ॥१०८॥
शनिभौमहते मार्गे यावच्चरति भास्करः ।
अवर्षणं तदा ज्ञेयं गर्भयोगशतैरपि ॥१०९॥
यदाह लोकः—पाछइ मंगल रविघरह, जइ आसाढइ जोय ।
वरसे तिहां घण मोकलो, उपराठइ दुःख होय ॥११०॥
अगगइ मंगल रविरहह, जइ रिक्खह भुंजेइ ।
ता नवि वरसइ अवुहर, जा नवि पछइ एइ ॥१११॥
माघे कृष्णदशम्यां चेन्मकरेऽर्कः प्रवर्त्तते ।
धान्यसङ्ग्रहणाल्लाभं तदाषाढे करोत्ययम् ॥११२॥

सूर्यसंक्रांति रिक्तातिथिमें हो तो सैन्यसे मनुष्योंका क्षय हो। देशमें कलह हो, राजाका मरण और पृथ्वी दुःखसे आकुल हो ॥१०६॥ तुला आदि छ संक्रांति अपनी२ तिथिसे चलित हो तो सब जगत् दुःखी और दुर्भिक्ष हो ॥१०७॥ पौषमासमें सूर्यसंक्रांति जिस वारको हो और उसी वार को अमावस भी हो तो क्रमसे धान्यमें दूना त्रिगुना तथा चौगुना लाभ हो ॥ १०८ ॥ शनि और मंगल का मार्गमें जितने समय सूर्य चले उतने समय सैंकडों गर्भके योग रहने पर भी वर्षा नहीं होती हैं ॥ १०९॥ लोकिकमें भी कहा है कि–यदि आषाढमासमें सूर्यके स्थानसे मंगल पीछे हो तो वर्षा बहुत हो और आगे हो तो दुःख हो ॥ ११० ॥ एकही नक्षत्र पर रविसे मंगल आगे हो तो वर्षा न बरसे जब तक वह पीछे न हो ॥१११॥ यदि मकरसंक्रांति माघकृष्ण दशमी के दिन हो तो धान्यका संग्रह करने से आषा-

वैशाखस्य तृतीयायां संक्रान्तिर्यदि जायते ।
रोगपीडैकमासे स्याद् यद्वा मेघमहोदयः ॥११३॥
श्रावणे कर्कसंक्रान्त्यां जाते मेघमहोदये ।
सप्तमासान् सुभिक्षं स्याद् नान्यथा जिनभाषितम् ॥११४॥

बालबोधे तु—

नन्दायां मेषसंक्रान्तिरल्पवृष्टिकरी मता ।
भद्रायां राजयुद्धाय जयायां व्याधये नृणाम् ॥११५॥
रिक्तायां पशुघाताय पूर्णायां धान्यवर्द्धिनी ।
इत्येतद्बालबोधोक्तं बहुशास्त्रेषु सम्मतम् ॥११६॥
चोथी नवमीने चउदसी, जो रवि संक्रम होय ।
देशभंगदलदुःख घणा, जण जण दह दिस जोय ॥११७॥

मण्डलानुसारिनक्षत्रवारयोगार्थ —

"अग्निमण्डलनक्षत्रे यदा संक्रमते रविः ।
सहितो भौमवारेण सस्पृहा धातुजातयः ॥११८॥

द्धमें लाभ हो ॥ ११२ ॥ वैशाख तृतीया को यदि सक्रांति हो तो एकमास रोगसे पीडा हो या मेघका उदय हो ॥ ११३ ॥ श्रावणमें कर्कसंक्रांति के दिन मेघका उदय हो तो सात मास सुभिक्ष हो यह जिन वचन अन्यथा न हो ॥ ११४ ॥ यदि मेषसक्रांति नन्दा-१-६-११ तिथि को हो तो वर्षा थोडी हो । भद्रा-२ ७-१२ तिथि को हो तो राजयुद्ध हो । जया-३ ८-१३ तिथि को हो तो मनुष्यों को रोग हो ॥ ११५ ॥ रिक्ता-४ ९-१४ तिथिको हो तो पशुओंका घात हो, पूर्णा ५-१० १५ तिथिको हो तो धान्यकी वृद्धि हो । ये बालबोधमें कहा हुआ बहुतसे शास्त्रोंसे सम्मत है ॥ ११६ ॥ चोथ नवमी और चौदशके दिन सूर्यसक्रांति हो तो देशका भग और हरएक जगह मनुष्योंको बहुत दु ख हो ॥ ११७ ॥

यदि सूर्यसक्रांति अग्निमण्डलमें हो और साथ मगलवार भी हो तो समस्त

रूप्यं सुवर्णं ताम्रादि त्रपुकांश्यानि पित्तलम् ।
धातुधिष्ण्ये तु संक्रान्तौ महर्घमादिशेच्छनौ ॥११६॥
लोहभेदा रसाः सर्वे शीघ्रं भवन्ति सस्पृहाः ।
नक्षत्रैर्वारुणैर्वापि बुधवारेण संक्रमे ॥१२०॥
पीड्यन्ते धान्यभेदाश्च रत्नान्यम्भोधिजानि च ।
नक्षत्रैः पार्थिवैर्वापि सूर्यवारसमन्वितैः ॥१२१॥
सस्पृहाश्च सुगन्धाढ्या वारणाद्याश्चतुष्पदाः ।
अथवा सर्वमासेषु पूर्णिमायां दिवानिशम् ॥१२२॥
अन्वेषयेत् तदुत्पातान् परिवेषादिकान् तथा ।
यस्मिन् मण्डलनक्षत्रे दुर्निमित्तं विलोक्यते ॥१२३॥
तत्तन्मण्डलवाच्यार्थाः क्षणाद्भवन्ति सस्पृहाः ।
एवं वारेण सङ्क्रान्तेरर्घकाण्ड प्रदर्शितम् ॥१२४॥

योगचक्रम्—

"दिनयोग च नक्षत्र संक्रान्तेर्गृह्यते घटी ।

धातु महँगी हो ॥ ११८ ॥ धातुसंज्ञक नक्षत्रों में सूर्यसंक्राति हो और शनिवार हो तो चांदी सोना तांबा रांगा कांसी पित्तल आदि धातु महँगी हों ॥ ११६ ॥ तथा सब प्रकारके लोहके भेद और रस महँगे हों । वारुणमण्डलनक्षत्र और बुधवारको सूर्यसंक्राति हो ॥ १२० ॥ तो धान्यके भेद याने सब प्रकारके धान्य और समुद्रमें उत्पन्न होनेवाले रत्न आदि महँगे हों । पार्थिवमण्डलनक्षत्र और रविवार को हो ॥ १२१ ॥ तो सुगंधित वस्तु और घोड़ा आदि पशु ये महँगे हों । अथवा समस्त मासकी पूर्णिमाको दिनरातमें कोई उत्पात तथा सूर्य चंद्रमा को परिमंडल हो तो उसका विचार करें, जिस मण्डलके नक्षत्रोंमें दुर्निमित्त हो ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ तो उन २ मंडलोंमें कही हुई वस्तु शीघ्रही महँगी हो । इसी तरह संक्रातिके वारसे अर्घकाण्ड कहा । १२४ ।

दिनके योग और संक्रातिका नक्षत्र इनको घड़ियों को इकट्ठा कर चार से

चतुर्गुणं सप्तभागं पण्डितस्तद्विचारयेत् ॥१२५॥
शून्ये भयं क्षयं रोगमेकेऽन्नं द्वितये रसः ।
त्रये रोगश्चतुर्षु स्याद् वस्त्रं महर्घमुज्वलम् ॥१२६॥
षट्पञ्चसु द्विजमुनीन् रोगेण परिपीडयेत् ।
संक्रान्तिसमये चेत्तद् विचार्यं योगचक्रकम् " ॥१२७॥

द्वादशमाससंक्रान्तिवृष्टिविचार —

चैत्रे शनौ त्रयोदश्यां यदि मीनेऽर्कसंक्रमः ।
वत्सरः स्यात्तदा निन्द्यः सद्यो धान्यार्थनाशनः ॥१२८॥
चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्लोके बहुतरं सुखम् ॥१२९॥
वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तिवृष्टिर्मिश्रफला भवेत् ।
मध्यमं कुरुते वर्षं खण्डमण्डलवर्षणात् ॥१३०॥
यदाह रुद्रदेवः–"चैत्रे च मेषसंक्रान्तौ यदा वर्षति माधवः ।

गुणा देना और इस गुणनफल को सात से भाग देकर शेष द्वारा विद्वान् उसका विचार करे ॥ १२५ ॥ शून्य शेष हो तो भय तथा क्षयरोग हो, एक बचे तो अन्न प्राप्ति, दो बचे तो रस प्राप्ति, तीन बचे तो रोग, चार बचे तो सफेद वस्त्र महँगे हो ॥१२६॥ छ पांच और सात बचे तो रोग से पीडा हो, संक्राति के समय यह योगचक्रका विचार करना चाहिये ॥ १२७॥ इति योगचक्रका विचार ।

चैत्रमासमें त्रयोदशी और मीन संक्राति शनिवारको हो तो वर्ष निन्द्य (अशुभ) जानना यह शीघ्रही धान्य का नाशकारक होता है ॥ १२८ ॥ चैत्रमासकी संक्रांतिको यदि मेघ वर्षा हो तो धान्यकी प्राप्ति तथा लोकमें बहुत सुख हो॥१२९॥ वैशाख तथा ज्येष्ठ मासकी संक्रातिको वर्षा हो तो मिश्र (मिला हुआ) फलदायक होती है तथा खण्डवर्षा होने से मध्यम वर्ष करती है ॥ १३० ॥ रुद्रदेव कहते है कि– चैत्रमें मेषसंक्रातिको तथा

विचित्रं जायते वर्षं वैशाखज्येष्ठयोस्तथा" ॥१३१॥
वैशाखकृष्णपक्षान्त-वृषसंक्रमणे रविः ।
वृषे चन्द्रस्तदा ज्ञेयं सर्वक्लेशक्षयात् सुखम् ॥१३२॥
यदि स्याज्ज्येष्ठपञ्चम्यां वृषसंक्रमणादनु ।
दिनद्वयान्तर्जलदस्तदा सुभिक्षनिर्णयः ॥१३३॥
आषाढे चैव संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ॥१३४॥
आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो भवेद्यति ।
तदा दुर्भिक्षमादेश्य धान्यस्यापि महर्घता ॥१३५॥
*श्रावणे कर्कसंक्रान्तिर्दिने जलधरागमात् ।
न तीडा मूषका नैव जायन्ते तत्र वत्सरे ॥१३६॥
दशम्यां शनिना युक्तः श्रावणे सिंहसंक्रमः ।
अनन्तधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥१३७॥

वैशाख और ज्येष्ठ की संक्रान्ति को वर्षा हो तो विचित्र वर्षा होता है ॥१३१॥ वैशाख कृष्णपक्ष में वृषसंक्रान्ति हो उस दिन वृष का चंद्रमा भी हो तो समस्त क्लेशों का क्षय होकर सुख होता है ॥ १३२ ॥ यदि ज्येष्ठ मासकी पंचमी को वृषसंक्राति हो उससे दो दिन के भीतर वर्षा हो तो सुभिक्ष होता है ॥१३३॥ आषाढ मास की संक्रान्ति को यदि वर्षा हो तो भयंकर व्याधि हो और श्रावणमें शुभ हो ॥ १३४ ॥ आषाढ में कर्कसंक्रांति को शनिवार हो तो दुर्भिक्ष तथा धान्य महँगे हो ॥१३५॥ श्रावण की कर्क संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो टिड्डी आदिका उपद्रव न हो ॥१३६॥ श्रावण में दशमी और सिंहसंक्रांति शनिवारको हो तो धान्य बहुत उत्पन्न हो और मेघवर्षा हो ॥१३७॥ भाद्रपदमासमें सिंहसंक्रांतिको वर्षा हो तो आगे वर्षा

*टी-श्रावणे कर्कसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
व्याधिं स कुरुते घोरां बहुधान्यां वसुन्धराम् ॥

भाद्रपदसिंहसंक्रमदिने वर्षा जलदघन्धनी पुरतः ।
संक्रान्तेर्दिनयुग्मान्तरे न वृष्टिर्यदा दृष्टा ॥१३८॥
आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये ।
राजयुद्धं प्रजाः स्वस्था धान्यैरापूर्यते जगत् ॥१३९॥
मासे भाद्रपदे प्रासे संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
बहुरोगाकुला लोका आश्विने शोभनं पुनः ॥१४०॥
+कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति ।
मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ॥१४१॥
यदाह लोकः—कातीमासि महावठो, जइ सकतिय अंति ।
बरसे मेह समोकलो, अवर म आणे चिंत ॥१४२॥
×कातीमासि अमावसि, संकंति सनिवार ।
गोरी खगडे गोखरू, किहा न लब्भइ वार ॥१४३॥
* अद्दह भद्दह सयभिसि, जोइ संकमनो भाण ।

को गर्जे और संक्रांतिके दो दिनके भीतर वर्षा न हो तो आगे वर्षा हो ॥१३८॥ आश्विन मासकी संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो राजाओंमें युद्ध, प्रजा सुखी और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥१३९॥ भाद्रपदमासमें संक्रांतिके दिन वर्षा हो तो लोक बहुतसे रोगोंसे व्याकुल हो, आश्विनमें अच्छा हो ॥१४०॥ कार्तिक या मार्गशीर्ष की संक्रांतिको यदि वर्षा हो तो मध्यम वर्ष हो और पौष में सुभिक्षकारक हो ॥१४१॥ लौकिक में भी कहा है कि- कार्तिक में संक्रांति के अंत में महावठा (वर्षा) हो तो आगे वर्षा बहुत होगी चिन्ता नहीं करो ॥१४२॥ कार्तिक अमावस या संक्रांतिके दिन शनिवारको वर्षा हो तो कहीं भी वर्षा न हो ॥१४३॥ आर्द्रा, पूर्वा तथा उत्तराभाद्रपद और शतभिषा इन नक्षत्रों के दिन सूर्यसंक्रमण हो तो युगप्रलय जानना एवं

+टी-कार्त्तिकद्वये संक्रान्तिदिनवृष्टौ वर्षं मध्यमम् ।
×टी-संक्रान्तौ शनिवारे ।
*टी-आर्द्रा १ पूर्वोत्तरभाद्रपदे २ शतभिषक् ३ अत्र संक्रमो निषिद्धः ।

तो जाणे जे जुगप्रलय, जोइस एह प्रमाण ॥१४४॥
*मार्गशीर्षे धनूराशौ यदा याति दिवाकरः।
तदा वर्षे च निर्दिग्धं वृश्चिकेऽर्के सुखावहः ॥१४५॥
द्वादश्यां पश्चिमे पक्षे मार्गशीर्षे च संक्रमे।
यदि मङ्गलवारः स्याद् दुःखाय जगतो मतः ॥१४६॥
पौषमासस्य सक्रान्तौ यदा मेघमहोदयः।
बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ॥१४७॥
पौषमासे यदा भानो रविवारेण संक्रमः।
हाहाभूत जगत्सर्वं दुर्भिक्ष नात्र संशयः ॥१४८॥
माघमासे त्रयोदश्यां कुम्भे संक्रमणे रवेः।
रोहिणी सूर्यवारेण कार्त्तिकान्ते महर्घताम् ॥१४९॥
फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः।
विचित्रं जायते सस्य माधवज्येष्ठयोरपि ॥१५०॥

ज्योतिषका प्रमाण है ॥ १४४ ॥ मार्गशीर्ष में धनसक्रातिको वर्षा हो तो वर्ष पुष्ट हो और वृश्चिकसक्रांति में हो तो सुख हो ॥ १४५ ॥ मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी और सक्रांति मगलवार को हो तो जगत् का दु खके लिये जानना चाहिये ॥१४६॥ पौष मासकी सक्राति को वर्षा हो तो गौ बहुत दूध दें और पृथ्वी बहुत धान्यशाली हो ॥ १४७ ॥ पौषकी सूर्यसक्राति रविवार को हो तो समस्त जगत्में हाहाकार और दुर्भिक्ष हो इसमें सदेह नहीं ॥ १४८ ॥ माघ मासमें त्रयोदशी को कुम्भसक्राति और रविवार युक्त रोहिणी नक्षत्र भी हो तो कार्तिक के अत में अन्न महँगे हों ॥ १४९ ॥ फाल्गुन और चैत्रमें सक्राति के दिन वर्षा हो तो अनेक प्रकार के अनाज पैदा हों, इसी तरह वैशाख और ज्येष्ठका फल जानना ॥ १५० ॥ यदि मेषके सूर्य होने पर अश्विनी आदि दश नक्षत्र याने दश दिनों मे वर्षा हो

* टी-मार्गशीर्षे धन्वराशौ यदा याति दिवाकर। तदा दाहो लोके ।

+जइ असिणाइ दहदिण भाणो संकमणि वरिसए मेहो ।
तह जाइ विलयगब्भं अद्दादहरिक्खं नो वरिसं ॥१५१॥
एवं च–संक्रान्तौ घनवर्षणाद्बहुसुख पौषे समाधाश्विने,
चैत्रादित्रितये च खण्डजलदाद्दुःख सुख मिश्रितम् ।
भाद्राषाढकयोर्जने बहुरुजः स्युः श्रावणे सम्पदो,
धान्ये फाल्गुनिकेषु मध्यमसमा मार्गे तथा कार्त्तिके ॥१५२॥
* संक्रान्तिनाड्यो नवभिर्विमिश्राः,
सप्ताहताः पावकभाजिताश्च ।
समर्घमेकेन समं द्विकेन,
शून्ये महर्घं मुनयो वदन्ति ॥१५३॥
मीनमेषान्तरेऽष्टम्यां मङ्गले धान्यसङ्ग्रहात् ।

तो गर्भ का विनाश हो और आर्द्रादि दश नक्षत्र में वर्षा न हो ॥ १५१ ॥ पौष मास और आश्विन में संक्रांति के दिन मेघ वर्षा हो तो बहुत सुख हो, चैत्र वैशाख और ज्येष्ठ संक्रांति के दिन वर्षा हो तो आगे खंडवर्षा होने से दुःख और सुख मिश्रित फल हो, भाद्रपद और आषाढकी संक्रांति को वर्षा हो तो रोग बहुत हो, श्रावणमें सुख सम्पदा हो, फाल्गुन में धान्य प्राप्ति, और कार्तिक तथा मार्गशीर्ष का संक्रांति में वर्षा हो तो मध्यम वर्ष जानना ॥१५२॥ संक्रांतिकी घटीमें नव मिलाना, उसको सात से गुणाकर तीनसे भाग देना, यदि एक शेष बचे तो सस्ते, दो बचे तो समान और शून्य शेष हो तो महँगा हो ऐसा मुनिगण कहा है ॥१५३॥ मीन और मेषकी संक्रांति के अंतर मंगल वाचम अष्टमीको मंगलवार हो तो

+टी–मेषे सूर्य सति अश्विन्यादिदशनक्षत्रेषु चन्द्र दशदिनानि यावत् अवर्षणे शुभ, वर्षणे तु क्रमादार्द्रादिदशनक्षत्राणां गर्भनाश इत्यर्थ श्रीहीरमेघमालोक्तम् ।

*टी—संक्रान्तिनाड्य खलु सप्तमिश्रा 'संक्रान्तिनाडीभिर्विचार-प्रसूतधान्य क्षार बहिहारम्तु मानम' इत्यपि पाठ ।

द्विस्त्रिश्चतुर्गुणो लाभ इत्युक्त पूर्वसूरिभिः ॥१५४॥
+ कुम्भमीनान्तरेऽष्टम्यां नवम्यां दशमीदिने ।
रोहिणी चेत्तदा वृष्टिरल्पा मध्याधिका क्रमात् ॥१५५॥
गार्गीयसंहितायां पुनः—
कार्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ।
संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ॥१५६॥
पौषे माघे सवैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषु च ।
सक्रान्तो वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः ॥१५७॥
× इत्येवमादित्यसुराशिगत्या,
विभाव्य भाव्य फलमत्र मत्या ।
कार्यस्तदार्यैरिह वर्षबोधः,
परोपकाराय स निर्विरोधः ॥१५८॥

धान्यका सग्रह करनेसे द्विगुना, त्रिगुना या चौगुना लाभ हो ऐसा प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ १५४ ॥ कुंभ और मीनकी सक्राति के अतर याने बीच में अष्टमी, नवमी या दशमी के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो क्रमसे स्वल्प मध्यम और अधिक वर्षा हो ॥१५५॥ गार्गीयसहितामें कहा है कि— कार्तिक फाल्गुन मार्गशीर्ष चैत्र श्रावण और भाद्रपद इन छ महीने की सक्राति में यदि वर्षा हो तो अशुभ है ॥ १५६ ॥ पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ और आश्विन इन छ महीने की सक्राति के दिन वर्षा हो तो सर्वदा शुभ हो ॥१५७॥ इसी तरह सूर्य की राशि पर अच्छी गतिसे यहा बुद्धिसे विचार करके फल कहना । यह वर्षाका ज्ञान सज्जनोंने परोपकार के लिये किया है यह बात निर्विरोध है ॥ १५८ ॥ सूर्य द्वारा वर्षा

+ टी— अत्र कुम्भमीनसक्रान्त्योर्मध्ये इत्यर्थः ।
× टी— अत एव प्रमाणसवत्सरे तुर्यो भेद, आदित्यसंवत्सर प्रागुक्त सिद्धान्ते ।

आदित्याज्जायते वृष्टिः स्मार्त्तवृष्टिरसौ स्मृता ।
तेन केवलबोधाय ध्येयोऽर्को भगवान् इह ॥१५६॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने वर्षप्रबोधे श्रीमत्तपागच्छीय-
महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते
सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकारः ॥

अथ ग्रहगणविमर्शनो नाम एकादशोऽधिकारः ।

चन्द्रचार —

अथ शशी स्ववशीकृततारक-श्चरति यत्र यथा फलकारकः ।
समय विक्रमतः क्रमतस्तथा, तिथिकथां कथितुं समुपक्रमे ॥१॥
तिथिवलाद्भवल तु चतुर्गुणं, भवति वारबलेऽष्टगुणा क्रिया ।
द्विगुणिना करणस्य ततो+युजि, तदनुषष्टिगुणाः खलु तारकाः ।
शीतगुः शतगुणस्ततो मतस्तत्सहस्रगुणलग्नवीर्यता ।

होती है इसलिये यह स्मार्त्तवृष्टि कही जाती है, इसलिये केवल बोधके लिये सूर्य भगवान् यहा ध्यान करने योग्य है ॥१५६॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो
सूर्यचारकथनो नाम दशमोऽधिकार ।

अपने वशीभूत करलिये है तारा जिस ने ऐसा चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर चलें वैसा फल कारक है, वैसे क्रमसे विक्रमका समयसे तिथिकथा कहने को आरभ करता हू ॥ १ ॥ तिथिबलसे नक्षत्रबल चौगुना है, इससे वारबल आठगुना, इससे करणबल द्विगुना, इससे योगबल द्विगुना इससे ताराबल साठ गुना ॥ २ ॥ ताराबलसे चन्द्रबल शतगुना और चद्रमासे

+टी-अस्य वारबलस्य द्विगुणिता षोडशगुणत्व ततोऽपि करणान द्विगुणिता युजि योगे द्वात्रिंशद्गुणत्वम् ।

लग्नशीतकरयोर्बलाबलादौ हितं विदधतां सदा हितम् ॥३॥
बालबोधे तु–तिथिरेकगुणा प्रोक्ता वारस्तस्माच्चतुर्गुणः ।
तस्मात्षोडशगुणं धिष्ण्यं योगः शतगुणास्तथा ॥४॥
सहस्राधिगुणः सूर्यो लक्षाधिकगुणः शशी ।
दक्षजातिप्रियासाध्यो दक्षजातिप्रियस्ततः ॥५॥
बृहत्सु धान्यं कुरुते समर्घं, जघन्यधिष्ण्येऽभ्युदितो महर्घम् ।
समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशु-र्वदन्त्यसन्दिग्धमिदं महान्तः ।६।
फाल्गुनेऽर्के यदोदेति द्वितीया चन्द्रमास्तदा ।
राजा सुखी बहुर्वायुर्वह्न्युपद्रवो महान् ॥७॥
तीड्डागमो बालरोगः करकापतनं भुवि ।
धान्यपीडा वनचरदुःखं धातुमहर्घता ॥८॥
सोमवारे घना मेघाश्छत्रभङ्गान् महारणः ।

लग्नबल हजारगुना है। इसलिये लग्न और चद्रमा का बलाबल का विचार कर सर्वदा हितको धारण करना चाहिये ॥ ३ ॥ बालबोध में भी कहा है कि तिथि एकगुना, इससे वार चारगुना, इससे नक्षत्र सोलहगुना, इससे योग शतगुना ॥ ४ ॥ इससे सूर्य दूगुना और सूर्यसे चन्द्रमा लाखगुना अधिक फल देनेवाला है, यह चद्रमा दक्ष जातिकी प्रियाओंसे साध्य है इस-लिए दक्षजाति का प्रिय है ॥ ५ ॥ बृहत्संज्ञक नक्षत्र पर चद्रमा उदय हो तो धान्य सस्ता, जघन्यसंज्ञक नक्षत्र पर उदय हो तो महँगा और समसं-ज्ञक नक्षत्रपर उदय हो तो समान हो, यह विद्वानों ने संदेह रहित कहा है ॥ ६ ॥ फाल्गुन में रविवारको द्वितीया के दिन चद्रमा उदय हो तो राजा सुखी, वायु अधिक, अग्नि का उपद्रव अधिक रहे ॥ ७ ॥ टीड्डी का आग-मन, बालकोंको रोग, पृथ्वीपर ओला गिरे, धान्य का विनाश, वनचर जीवोंको दुःख और धातु महँगी हो ॥ ८ ॥ सोमवारको उदय हो तो वर्षा अधिक, छत्रभग, महायुद्ध लोक सुखी, गौओं का दूध अधिक और धान्य

लोकाः सुखा गवां दुग्धं महद्धान्यसमुद्भवः ॥९॥
मङ्गले सर्वलोकस्य कष्टं धान्यमहर्घता ।
सूर्यस्य ग्रहणं पुत्रविक्रयोऽग्नेरुपद्रवः ॥१०॥
बुधे सर्वजनोद्वेगः पशुपीडाल्पनीरदः ।
राज्ञां विरोधोऽल्पफलं सर्वधान्यमहर्घता ॥११॥
गुरौ कर्षणनिष्पत्तिश्चतुष्पदमहासुखम् ।
व्यापारो निर्भया मार्गाः पातिसाहिपरिभ्रमः ॥१२॥
शुक्रे चन्द्रोदये खण्डवर्षा धान्यमहर्घता ।
रोगो भयं जने दुःखं स्वल्पं वन्यपशुक्षयः ॥१३॥
शनौ धान्यमहर्घत्वं दक्षिणस्यां महारणः ।
स्वल्पमेघेन दुर्भिक्षं फाल्गुनस्य विधूदयात् ॥१४॥
शुक्लपक्षे द्वितीयायां भानोर्वामोदयः शशी ।
तस्मिन् मासे शुभं सर्वं दुर्भिक्षं दक्षिणोदये ॥१५॥

अधिक उत्पन्न हो ॥ ९ ॥ मङ्गलवारको उदय हो तो सब लोकोंको कष्ट, धान्य महँगे, सूर्यका ग्रहण, पुत्रका विक्रय और अग्निका उपद्रव हो ॥१०॥ बुधवार हो तो सब लोगों में व्याकुलता, पशुओं को पीडा, वर्षा थोड़ी, राजाओंमें विरोध, फल थोड़े और सब प्रकार के धान्य महँगे हों ॥११॥ गुरुवार को उदय हो तो खेती अच्छी, पशुओं को बड़ा सुख, व्यापार अधिक, मार्ग निर्भय, पातशाह का पर्यटन हो ॥१२॥ शुक्रवार को उदय हो तो खण्डवर्षा, धान्य महँगे, रोग भय, मनुष्योंमें थोडा दुःख और वनवासी पशुओंका नाश हो ॥१३॥ शनिवारको उदय हो तो धान्य महँगे, दक्षिण में बड़ा युद्ध, वर्षा थोडी और दुर्भिक्ष हो ऐसा फाल्गुन मासमें चन्द्रोदय का फल कहा ॥१४॥ शुक्लपक्ष में द्वितीयाके दिन चन्द्रमा सूर्यसे वामोदय (बायें तरफ उदय) हो तो उस महीने में सब शुभ हो और दक्षिणोदय हो तो दुर्भिक्ष हो ॥१५॥ आषाढ कृष्णपक्षमें चन्द्रमाके साथ रोहिणी को देखकर

वराहः—"प्राजेशमाषाढतमिस्रपक्षे, क्षपाकरेणोपगतं समीक्ष्य।
वक्तव्यमिष्टं जगतोऽशुभं वा, शास्त्रोपदेशाद् ग्रहचिन्तकेन"॥१६॥

रोहिणीशकटयोग.—

यथा रथात् पुरोऽश्वाः स्युः शीतगो रोहिणी तथा।
उदेति चेत्सुभिक्षाय भवेन्मेघमहोदयः॥१७॥
पल्लिपतिविनाशाय भूपाला रणकारिणः।
विरोधान्मार्गसरोधश्चौर्यचर्या महाभयम्॥१८॥
रोहिणी रोहिणीनाथो रथे साम्यपथे व्रजेत्।
निष्पत्तावपि धान्यस्य नाशस्तीडादिदंष्ट्रया॥१९॥
हिमांशो रोहिणीपश्चादुदेत्यशुभवर्षकृत्।
शुक्लतृतीयादिवसे वैशाखे तद्विचार्यते॥२०॥
आर्द्रान्त्यार्द्धं तमोभुङ्क्ते स्वातिमारभ्य यावता।
विलोमगत्या कालेन तावता दैवयोगतः॥२१॥
भिनत्ति रोहिणीं चन्द्रस्तदा दुर्भिक्षमादिशेत्।

शास्त्रों में कथनानुसार ग्रहों के विचार द्वारा जगत् का शुभाशुभ कहना चाहिये ॥१६॥

जैसे रथके आगे घोड़े होते हैं, वैसे चद्रमाके आगे यदि रोहिणी उदय हो तो मेघका उदय और सुभिक्ष हो ॥१७॥ पल्लीपतीका विनाश, राजा युद्ध करनेवाले, विरोधसे मार्गमें अटकाव, चोरी और बड़ा भय हो ॥१८॥ रोहिणी तथा चद्रमा रथमें साम्यपथमें हो तो उत्पन्न हुए धान्य का टीड्डी आदिसे विनाश हो ॥१९॥ चद्रमासे रोहिणी पीछे उदय हो तो अशुभ वर्षकारक है, इसका वैशाखशुक्ल तृतीया के दिन विचार करें ॥२०॥ राहु विलोम (उलटी) गतिसे स्वातिसे आर्द्रा का अन्त्य अर्द्ध तक जितने समयमें भोगे उतने समयमें यदि दैवयोगसे चद्रमा रोहिणी को वेधे तो दुर्भिक्ष, राजाओंका विग्रहसे मरण और प्रजाको अधिक दुःख हो ॥२१॥२२॥

विग्रहान्मरणे राज्ञां प्रजानां दुःखमुल्बणम् ॥२२॥
उदेतीन्दुः स्तोकमपि रोहिणीशकटं स्पृशन् ।
सैन्यात्सैन्यबला धान्यनाशाद्विकटसङ्कटम् ॥२३॥
ब्राह्मया दक्षिणदिग्भागे चरन् चन्द्रोऽतिदुःखदः ।
पाटयेद्रोहिणीमध्यं निशेशः क्लेशकृज्जने ॥२४॥
सूर्यचन्द्रमसौ ब्राह्म्यां द्वितीयायां यदा स्थितौ ।
दुष्कालेन प्रजाहानिर्यदि वा विग्रहा महान् ॥२५॥
क्रूरवेधे विधुः सौम्ये-दृष्ट्या ब्राह्मया उदग्दिशि ।
चरंश्चराचरं विश्वं सुखभाक् कुरु तेजसा ॥२६॥
चन्द्रात् पृष्ठगता ब्राह्मी शुभा पुरोगतापि च ।
रोहिण्यामिन्दुराग्नेय्या-मुपसर्गाय जायते ॥२७॥
नैर्ऋत्यामीतिकृद्वायौ मध्या वृष्टिस्तु वायुतः ।
उत्तरैशानगश्चन्द्रः सर्वलोकशुभावहः ॥२८॥
इत्यर्घमः संहितायां रोहिणीशकटयोगः ।

यदि थोड़ा भी रोहिणी शकट को स्पर्श करता हुआ चन्द्र उदय हो तो सैन्यसे सैन्यबलका और धान्यका विनाशसे बड़ा सङ्कट हो ॥ २३ ॥ यदि चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिण दिशामें रहकर उदय हो तो बहुत दुःखदायक हो और रोहिणी के मध्यमें उदय हो तो जगत्में क्लेशकारक हो ॥ २४ ॥ द्वितीया के दिन सूर्य और चन्द्रमा दोनों रोहिणीनक्षत्र पर स्थित हो तो दुष्कालसे प्रजाका विनाश अथवा विग्रह हो ॥ २५ ॥ रोहिणी की उत्तर दिशामें रहा हुआ चन्द्रमा क्रूरग्रह से वेधित हो और शुभग्रह से देखे जाते हो तो चराचर जगत् सुखी हो ॥ २६ ॥ चन्द्रमा से रोहिणी पीछे या आगे हो तो शुभकारक है । रोहिणी की अग्नि कोण में चन्द्रमा हो तो उपद्रव हो ॥२७॥ नैर्ऋत्य कोण में हो तो ईति कारक, वायव्य कोण में हो तो वायुसे मध्यम वर्षा, उत्तर और ईशान की तरफ चन्द्रमा हो तो सब लोग सुखी हो ॥ २८ ॥

चन्द्राकृतिः—

वक्रोऽलिधिसये सिंहे शूलाभः कन्यकाद्वये ।
मीने त्रये दक्षिणोच्च चन्द्रः शेषे समाकृतिः ॥२९॥
विग्रहं हि समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।
व्याधिचौरभय शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥३०॥

चन्द्रवस्त्रम्—

+सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुम्भयोः ।
तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगोः ॥३१॥
अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिमुग्ररणमरणम् ।

वृश्चिक धन और सिंहका चन्द्रमा वक्र यान टेढा, कन्या और तुला का चद्रमा शूल की समान, मीन मेष और वृषका चन्द्रमा दक्षिणमें ऊचा और शेषराशिका चद्रमा समान आकृतिवाला होता है ॥२९॥ सम चद्रमा हो तो विग्रह, दक्षिण में ऊचा हो तो दुर्भिक्ष, शूल समान हो तो रोग और चोरका भय, और उत्तर तरफ ऊचा हो तो सुभिक्ष हो ॥ ३० ॥

सिंह मेष और वृषमें चद्रमाका रक्त वस्त्र, मकर और कुम्भ में श्याम (काला), तुला कर्क और वृश्चिक में श्वेत (सफेद) और शेषराशि में पीत वस्त्र होता है ॥ ३१ ॥ रक्त चद्रमा रस की हानि, बड़ा युद्ध और मरण करता है । पीला चन्द्रमा रोग, मगरादि का भय और दुष्काल करता है

+टी—चन्द्रवस्त्रवाहनम्—अजवृषविधुसिंहो रक्तवस्त्रैश्च नागै-
रलिझषमिथुने स्यात् पीतवस्त्राश्वधारी ।
तुलधनजलराशि श्वेतवस्त्रैर्नृपाणो-
मकरघटककन्या श्यामवस्त्रैर्यमस्य ॥१॥
पुन—मेषे च सिंहे वृषरक्तवस्त्रं, कन्या च मीने धनुपीतवस्त्रम् ।
तुलालिकर्केषु च श्वेतवस्त्रं, युग्मे च कुम्भे मकरेषु हि श्यामम् ॥१॥
रक्तवस्त्रे पीतवस्त्रे शुभाशुभम् ।
श्वेतवस्त्रे भवेल्लाभो कृष्णे च मरणं ध्रुवम् ॥२॥

पीतरोगनियोगं मकरादिभयं पुनः कालः ॥३२॥
धवलान्मङ्गलधवलैर्गान सानन्दन भुवनम् ।
अवसायेऽव्यवसायक्रिशायमपि धर्मकर्मजने ॥३३॥
सूरीन्दुजाङ्गारकसौरिभास्कराः,
प्रदक्षिणं यान्ति यदा हिमद्युतेः ।
तदा सुभिक्षं धनवृद्धिरुत्तमा,
विपर्यये धान्यधनक्षयादि ॥३४॥
दृश्यते यदि न रोहिणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते ।
रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरि जलसस्य युता ॥३५॥
नन्दायां ज्वलितो वह्निः पूर्णायां पांशुपातनम् ।
भद्रायां गोकुली क्रीडा देशनाशाय जायते ॥३६॥
यद्दिने गोकुली क्रीडा तद्दिनेऽभ्युदिते विधौ ।
तदा क्षीणि विनश्यन्ति प्रजा गावो महीपतिः ॥३७॥
अथ चन्द्रादर्शः —

॥ ३२ ॥ सफेद चन्द्रमा अनेक प्रकार के धवल मंगलादि गीतों से पृथ्वी आनंदित करता है, व्यापार में उत्साह और मनुष्यों में धर्मकर्म अधिक कराता है ॥३३॥

बृहस्पति बुध मंगल शनि और सूर्य ये चन्द्रमा के दक्षिण चलें तो सुभिक्ष तथा धन वृद्धि उत्तम हो और विपरीत हो तो धन धान्य आदि का विनाश हो ॥३४॥ यदि मेघ युक्त आकाश में चन्द्रमा रोहिणी सहित न दीखे तो महा रोगभय हो और पृथ्वी जल और धान्य से पूर्ण हो ॥ ३५ ॥ नन्दातिथि में प्रकाशमान अग्नि, पूर्णा तिथि में धूलि की वर्षा और भद्रातिथिमें गोकुल क्रीडा हो तो देश का विनाश हो ॥३६॥ जिस दिन गोकुलक्रीडा हो उस दिन चन्द्रमा का उदय हो तो प्रजा गौ और राजाका विनाश हो ॥३७॥

"याश्चन्द्रनाड्यो मनुसंयुतास्ता, गुण्या नगैः पावकभागभक्ताः।
एकावशेषे कथितं सुभिक्षं, शून्येन शून्यं द्वितयेऽर्घहानिः ॥
केवलकीर्त्तिराह:—
ज्येष्ठोत्तरे ह्यमावस्यां भानोरस्तं विलोकयेत्।
तथा चन्द्रमसश्चापि द्वितीयायां महोदयम् ॥३९॥
यद्युत्तरां शशी याति मध्यं वा दक्षिणां रवेः।
उत्तमो मध्यमो नीचकालः कथ्यते तदा ॥४०॥
रुद्रदेवस्तु—ज्येष्ठस्यान्ते प्रतिपदि सूर्यस्यास्तं विलोकयेत्।
द्वितीयायां चोदयतेऽब्जं गतमुत्तरदक्षिणम् ॥४१॥
सुभिक्षमुत्तरदिशि विपरीतं तु दक्षिणे।
तत्साम्ये मध्यमं वर्षं ज्येष्ठान्ते तद्वदेवहि ॥४२॥
अथ सप्तनाडीचक्रविमर्श —
सप्तनाडीमये चक्रे शनिसूर्योरसूरयः।
शुक्रज्ञचन्द्रा नाथाः स्युरष्टाविंशतिर्भानि च ॥४३॥

चंद्रनाकी घड़ीमें चौदह जोड़कर सातसे गुणा करें पीछे इसमें तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो सुभिक्ष, शून्य बचे तो शून्यता और दो बचे तो अर्थका विनाश हो ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठ अमावसके दिन सूर्यास्त के समय देखे, वैसे द्वितीया के दिन चद्रमाका उदयको देखे ॥३९॥ यदि सूर्यसे चद्रमा उत्तर मध्य या दक्षिण तरफ उदय हो तो क्रमसे उत्तम मध्यम और नीच काल होता है ॥४०॥ ज्येष्ठ मास के अन्त में प्रतिपदा को सूर्यास्त समय या द्वितिया को उत्तर या दक्षिण तरफ चंद्रमाको देखना चाहिये ॥४१॥ यदि उत्तर दिशामें उदय हो तो सुभिक्ष, दक्षिणमें उदय हो तो दुष्काल और मध्यमें उदय हो तो मध्यम वर्ष हो ॥४२॥

सप्तनाडीचक्रमें शनि सूर्य मंगल बृहस्पति शुक्र बुध और चंद्रमा ये

प्रचण्डा प्रथमा नाडी पवना दहनी मता।
सौम्यनीरजलाख्याता अमृताख्यात्र सप्तमी ॥४४॥
नक्षत्रे ये ग्रहा यत्र रव्याद्यास्तत्र तान् न्यसेत्।
तिस्रः पातालसंज्ञाः स्युर्नाड्यस्तिस्रस्तथोर्ध्वगाः ॥४५॥
एका मध्यगता नाडी फलमासां परिस्फुटम्।
नामानुसाराद्विज्ञेयं कृत्तिकादिभसप्तके ॥४६॥

रुद्रदेवस्तु—

"मध्यमार्गस्थिता सौम्या नाडी तदग्रपृष्ठतः।
सौम्ययाम्याभिध ज्ञेयं नाडिकानां त्रिकं त्रिकम्" ॥४७॥
याम्यनाडीगताः क्रूराः सौम्याः सौम्यदिशि स्थिताः।
सौम्यनाडी तु मध्यस्था ग्रहानुगफला इमा ॥४८॥
प्रावृट्काले समायाते रवेरार्द्रासमागते।
नाडीवेधसमायोगाज्जलवृष्टिर्निवेद्यते ॥४९॥
यत्र नाडीस्थितश्चन्द्रस्तत्रस्थैः क्रूरसौम्यकैः।
तदा भवेद् महावृष्टिर्योगतस्यांशके शशी ॥५०॥

अट्ठाईस नक्षत्रोंका स्वामी हैं ॥४३॥ प्रथमा प्रचंडा नाडी, पवना, दहनी, सौम्य, नीर, जल और अमृता ये क्रमसे नाडी के सात नाम हैं ॥ ४४ ॥ रवि आदि ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्रमें रखें। तीन नाडी पाताल संज्ञक, तीन नाडी उर्ध्व गामिनी और एक मध्य नाडी हैं इनका नामानुसार कृत्तिकादि सात २ नक्षत्र पर से स्फुट फल है ॥४५॥४६ ॥ मध्यमें रही हुई सौम्य नाडी है उसके आगे पीछे की सौम्य और याम्यनाडी ये तीन २ जानना ॥ ४७ ॥ याम्यनाडीमें क्रूरग्रह और सौम्यनाडीमें शुभग्रह, मध्यकी सौम्यनाडी ये सब ग्रहोंका गमनसे फलदायक हैं ॥४८॥ वर्षाकाल के समय रविका आर्द्रा में प्रवेश हो उस समय नाडीवेध द्वारा मेघवृष्टि जानी जाती है ॥ ४९ ॥ जिस नाडी पर चन्द्रमा स्थित हो उस नाडी पर क्रूर

केवलैः सौम्यैः पापैर्वा ग्रहैर्युक्तो यदा शशी ।
दत्ते सुस्थितपानीयं दुर्दिनं भवति ध्रुवम् ॥५१॥
नाडीस्वामियुतश्चन्द्रस्तद् दृष्टो वा जलप्रदः ।
शुक्रदृष्टो विशेषेण यदि क्षीणो न जायते ॥५२॥
पीयूषनाडीगश्चन्द्रो युक्तः खेटैः शुभाशुभैः ।
मुञ्चते तत्र पानीयं दिनान्येकत्र सप्तकम् ॥५३॥
दिनत्रयं पूर्णयोगे सार्द्धं दिनं तदर्द्धके ।
पादोनयोगे दिवसो दिनार्द्धं पादतोऽम्बुदः ॥५४॥
निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगे शुभाधिके ।
क्रूराधिकसमायोगे जलदाऽप्यम्बुबाधिका ॥५५॥
सौम्यनाडीगताः सर्वे वृष्टिदाः स्युर्दिनत्रये ।
शेषनाडीगताः सर्वे दुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥५६॥

और सौम्य ग्रह स्थित हो तो जितना अंश चन्द्रमा रहे उतना समय महान् वर्षा हो ॥५०॥ यदि चन्द्रमा केवल सौम्य या पाप ग्रहों से युक्त हो तो वर्षा अच्छी हो तथा दुर्दिन निश्चय करके हो ॥ ५१ ॥ चन्द्रमा नाडीके स्वामीके साथ हो या दृष्ट हो तो जलदायक होता है, यदि शुक्रसे दृष्ट हो तो विशेष करके जलदायक होता है किन्तु चन्द्रमा क्षीण न हो तो ॥५२॥ अमृतनाडी पर चन्द्रमा शुभाशुभ ग्रहों से युक्त हो तो एक साथ सात दिन तक वर्षा हो ॥५३॥ पूर्णयोग हो तो तीन दिन, आधा योग हो तो डेढ दिन, पावयोग हो तो एक दिन और पावसे कमयोग हो तो आधा दिन वर्षा होती है ॥५४॥ शुभग्रहों का योग अधिक हो तो निर्जला नाडी भी जलदायक हो जाती है और क्रूरग्रहोंका योग अधिक हो तो जलदायकनाडी भी वर्षाकी बाधक होती है ॥५५॥ सौम्यनाडी पर सब ग्रह हो तो तीन दिन में वृष्टिदायक होते हैं और बाकी की नाडी पर सब ग्रह हों तो दुष्ट वर्षादायक होते हैं ॥५६॥ याम्यनाडी पर क्रूरग्रह स्थित हो तो विलंब से

याम्यनाडीस्थिताः क्रूरा दूरा वृष्टिप्रदा ग्रहाः ।
शुभयुक्ता जलनाड्या सर्वे वृष्टिविधायिनः ॥५७॥
ग्रमभ सौम्यनाडीस्थं तत्र चन्द्रसितस्थितौ ।
क्रूरयोगे महावृष्टिरल्पा क्रूरस्य दर्शने ॥५८॥
उदयास्तगते मार्गे वक्रतायां च खेचराः ।
सचन्द्रजलनाडीस्था मेघोदयकरा मताः ॥५९॥

यदाहुः श्रीभद्रबाहुगुरुपादाः—

"रेहाहिं कित्तियाइ अट्ठावीसं पि ठवह पतीए ।
निप्पाइऊण ताहिं सत्तहिं नाडीहिं मह्भोई ॥६०॥
नाडीइ जत्थ चंदो पावो सोमो य तत्थ जइ दोवि ।
हुंतो तहिं जाण वुट्ठी इय भासइ भद्दबाहुगुरू ॥६१॥
एसोवि य पुणचंदो सजुत्तो केवलोव जइ होइ ।
केवलचन्दो नाडीइ ना नियमा दुद्दिणं कुणाइ ॥६२॥

वृष्टिदायक होते हैं । और शुभ ग्रहों के साथ जलनाडीमें हों तो सब वृष्टि कारक होते हैं ॥ ५७ ॥ गामका नक्षत्र सौम्यनाडीमें हो उस पर चन्द्र और शुक्र भी स्थित हो और क्रूरग्रह का योग हो तो महान् वर्षा हो तथा क्रूरग्रह की दृष्टि हो तो थोड़ी वर्षा हो ॥ ५८ ॥ ग्रह उदयास्त और वक्री तथा मार्गी होनेके समय में चन्द्रमा के साथ जलनाडीमें स्थित हो तो मेघके उदयकारक माना गया है ॥ ५९ ॥

महाभुज सदृश सतत ठी वाला चक्र बनाकर इसमें सीधी रेखामें कृत्तिकादि अट्ठाईस नक्षत्र क्रमसे रखें ॥ ६० ॥ जिस नाडी पर चन्द्रमा हो उस नाडी पर यदि केवल पाप और शुभ ग्रह हो या दोनों साथ हो तो वर्षा होती है ऐसा भद्रबाहु गुरु कहते हैं ॥६१ । एवं पूर्ण चन्द्र अन्यग्रहोंसे युक्त हो या केवल हो तो भी वर्षा होती है । अकेला चन्द्रमा ही नाडीमें स्थित हो तो दुर्दिन निश्चय से होता है ॥ ६२ ॥ इन नाडियों में अमृता दि

एयाणं पि य मज्झे अमियाइ तिए जलासओ अहिओ ।
तुरियाए वायमिस्सो सेसासु समीरणो अहिओ ॥६३॥
जइ सव्वाणवि जोगो गहाण अमियाइ तिगे अनावुट्ठी ।
अट्ठार १८ बार १२ छद्दिण सेसासु फल जहापत्तं ॥६४॥
विजला वि वाउनाडी देइ जल सोमखडरबहुजोगा ।
जलनाडी तुच्छजल पावाहियजोगओ देइ ॥६५॥
जइ वाउनाडीपत्ता सणिभोमा किमवि नहु जल दिंति ।
सोमजुआ तेउ जल अइमयजोएण वरिसति ॥६६॥
+ विसमयरकुंभमीणा सीहो कक्कडयविच्छियतुलाओ ।
सजलाओ रासीओ सेसा सुक्का वियाणाहि ॥६७॥
रविसणिभोमसुक्का चदविढप्पो य बुहगुरू सुक्को ।
एए सजला णिच्चं णायव्वा आणुपुव्वीए ॥६८॥"

इति भद्रबाहुसंहितायाम् ।

तीन नाडी अधिक जलदायक होती हैं, चौथी नाडी वायु मिश्र जलदायक है और बाकी की नाडी अधिक वायुकारक हैं ॥ ६३ ॥ यदि समस्त ग्रहों का योग अमृतादि तीन नाडी पर हो तो क्रमसे अठारह बारह और छः दिन अनावृष्टि रहे और बाकी के नाडी का फल यथायोग्य जानना ॥ ६४ ॥ यदि शुभग्रहों का अधिक योग हो तो निर्जला वायुनाडी भी जलदायक हो जाती है और पापग्रहों का अधिक योग हो तो जलनाडी भी तुच्छ जल देती है ॥ ६५ ॥ यदि शनि तथा मगल वायुनाडी में हो तो कुछ भी जल नहीं देती किंतु शुभग्रहों के साथ अतिशय जोग हो तो जल बरसते हैं ॥ ६६ ॥ वृष मकर कुंभ मीन सिंह कर्कट वृश्चिक और तुला ये राशि जलदायक हैं और बाकी की शुष्क (निर्जल) हैं ॥ ६७ ॥ रवि शनि मगल ये शुष्क (निर्जल)

+ टी— कुंभमीनमृगकर्कटवृषवृश्चिकतौलसञ्ज्ञकाः ।
सप्त सुजलराशयः पते शेषा जलवर्जिता पञ्च ॥१॥

विशेषश्चात्र ग्रन्थान्तरात्—

कृत्तिकादिभरण्यन्तं सप्तनाडीसमन्वितम् ।
भुजङ्गभीमसंस्थानं चक्रमेवं क्रमाल्लिखेत् ॥६९॥
शुभनक्षत्रमारूढैः शुभवारगतैर्ग्रहैः ।
चन्द्रं संश्रयते वृष्टिर्नाडीचक्रे व्यवस्थितम् ॥७०॥
क्रूराः क्रूरेण सम्भिन्नाः सौम्याः सौम्येन संयुताः ।
दुर्दिनं तत्र विज्ञेयं मिश्रैर्वृष्टिमिहादिशेत् ॥७१॥
शनैश्चरार्कचन्द्राणां यद्वा योगे × ज्ञशुक्रयोः ।
एकनाड्यां तदा दीप्तस्तडित्पातश्च दुर्दिनम् ॥७२॥
यदा शुक्रेन्दुजीवानामेकनाड्यां समागमः ।
तदा भवेन्महावृष्ट्या सर्वत्रैकार्णवा मही ॥७३॥
एकनाडी समारूढौ चन्द्रमाधरणीसुतौ ।
यदि तत्र भवेज्जीवो योग एकार्णवस्तदा ॥७४॥

हैं, पूर्णचन्द्रमा बुध गुरु और शुक्र ये क्रम से निश्चय से जलदायक जानना ॥६८॥

कृत्तिकादि से भरणी तक के नक्षत्र और सात नाडी वाला ऐसा बड़ा भयंकर सर्प के आकार का चक्र बनाना ॥६९॥ अगर शुभनक्षत्र और शुभग्रहों से चन्द्रमा युक्त हो तो वृष्टिकारक होता है ॥७०॥ क्रूरग्रह क्रूर के और सौम्यग्रह सौम्यग्रहों के साथ हों तो दुर्दिन जानना, यदि मिश्र हों तो वृष्टिकारक होते हैं ॥७१॥ शनि और सूर्य के साथ या बुध और शुक्र के साथ चन्द्रमा एक नाडी पर हो तो विद्युत्पात और दुर्दिन होता है ॥७२॥ यदि शुक्र चन्द्रमा और बृहस्पति एक नाडी पर हो तो महान् वृष्टि से पृथ्वी एकार्णव (जलमय) हो जाय ॥७३॥ चन्द्रमा और मंगल एक नाडी पर हों और साथ बृहस्पति भी हो तो पृथ्वी जलमय हो जाय ॥७४॥ शुभ और क्रू-

---

× टी— जोकेऽपि-अमुग्गुरु जो बुध मिले, तो जो जगिहर जाय ॥ ते वेला म तुझ कहूं जलहर भरे जोय ॥

ऊर्ध्वनाडीस्थितैर्वायुः खण्डवृष्टिस्तु मध्यगैः ।
ग्रहैः पातालनाडीस्थैः सौम्यैः क्रूरैर्जलं बहु ॥७५॥
ऊर्ध्वनाडीगते शुक्रे चन्द्रेऽधो नाडिकास्थिते ।
महावायुरधो नाड्यां द्वयोर्योगे महाजलम् ॥७६॥
सौम्यग्रहयुते चन्द्रे सौम्यनाडी प्रचारिणी ।
जलराशिप्रसङ्गेन वृष्टियोगः प्रकीर्त्तितः ॥७७॥
एकत्र बुधशुक्राभ्यां जलनाड्यां शशी भवेत् ।
महावृष्टिस्तदा वाच्याऽहिचक्रे सप्तनाडिके॥७८॥
अमृतांशुरय साक्षात् करोत्यमृतवर्षणम् ।
स्थितोऽप्यमृतनाड्यां चेत् सौम्यासौम्यसमन्वितः ॥७९॥
इति सप्तनाडीचक्रे चन्द्राद् वृष्टिज्ञानम् ।
उत्तरेण ग्रहाणां तु चन्द्रचारो भवेद्यदि ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं विग्रहो नात्र वत्सरे ॥८०॥
पञ्चतारा ग्रहा यत्र सोमं कुर्वन्ति दक्षिणे ।

ग्रह ऊर्ध्वनाडी पर हो तो वायु चले, मध्यनाडी पर हो तो खण्डवर्षा हो और पातालनाडी पर हो तो वर्षा अधिक हो ॥ ७५ ॥ ऊर्ध्वनाडी पर शुक्र और अधःनाडी पर चन्द्रमा हो तो अधःनाडी से महावायु और दोनों के योगमें महावृष्टि हो ॥ ७६ ॥ चन्द्रमा सौम्यग्रहों के साथ सौम्यनाडी पर हो तो जलराशि के द्वारा वर्षाका योग कहा है ॥ ७७ ॥ सप्तनाडी चक्रमें एकही साथ बुध शुक्र और चन्द्रमा जलनाडी पर हो तो महान् वर्षा हो ॥ ७८ ॥ यदि चन्द्रमा शुभग्रहों के साथ अमृतनाडी पर हो तो अमृत-जल की वर्षा करता है ॥ ७९ ॥ इति सप्तनाडीचक्र ॥

ग्रहोंके उत्तर भागमें चन्द्रमा हो तो उस वर्षमें सुभिक्ष, क्षेम, और आरोग्यता हो, विग्रह न हो ॥८०॥ यदि पांचग्रह इनसे चन्द्रमा के दक्षिण दिशामें हों तो उसका फल—मंगल हो तो राजाको कष्टकारक, शुक्र हो तो

भौमे च राजमारी स्याज्जनमारी च भार्गवे ॥८१॥
बुधे रसक्षयं विद्याद् गुरौ कुर्यान्निरोदकम् ।
शनावर्थक्षयं कुर्याद् मासे मासे विलोकयेत् ॥८२॥
चित्रानुराधा ज्येष्ठा च कृत्तिका रोहिणी तथा ।
मघा मृगशिरो मूलं तथाषाढा विशाखयोः ॥८३॥
एतेषामुत्तरामार्गे यदा चरति चन्द्रमाः ।
सुभिक्षं क्षेमवृद्धिश्च सुवृष्टिर्जायते तदा ॥८४॥
एतेषां दक्षिणे मार्गे यदा चरति चन्द्रमाः ।
क्षयं गच्छन्ति भूनाथा दुर्भिक्षं च भयं पथि ॥८५॥इति

*अथ चन्द्रोदयफलम्—

चन्द्रोदये मेषराशौ ग्रीष्मे धान्यमहर्घता ।
वृषे माषतिलमुद्गतुच्छधान्यमहर्घता ॥८६॥
कर्पासमूत्रवस्त्रादिमहर्घं मिथुने स्मृतम् ।

मनुष्यों को कष्ट, बुध हो तो रसक्षय, गुरु हो तो निर्जल और शनि हो तो धनक्षय जानना । यह प्रतिमास देखकर फल कहें ॥८१॥८२॥ चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहिणी, मघा, मृगशिर, मूल, पूर्वाषाढा और विशाखा, इन नक्षत्रों के उत्तर मार्ग में चन्द्रमा चले तो सुभिक्ष, कल्याण की वृद्धि और वर्षा अच्छी हो ॥८३॥८४॥ और इनके दक्षिण मार्ग में चन्द्रमा चले तो राजाओं का विनाश, दुर्भिक्ष और मार्ग में भय हो ॥८५॥

चन्द्रमा का उदय मेषराशि में हो तो ग्रीष्मऋतु में धान्य महंगे हों। वृषराशि में हो तो उड़द, तिल, मूंग और तुच्छ धान्य महंगे हों ॥८६॥ मिथुनराशि

---

*टी–जो शशि उगे सोम शनि, ए अठमो दिन जोय ।
कृष पडे दिन तीसमें, अन्न महंगा होय ॥१॥
अद्द भरणि असलेस नि जिट्ठा, अनं पुनर्वसु मयभिस दिट्ठा ।
एह रिक्खे जउ उगमे मयसा, तो महीमंडल कीजे नासा ॥२॥

अनावृष्टिः कर्कराशौ सिंहे धान्यमहर्घता ॥८७॥
चतुष्पदविनाशोऽपि राज्ञामन्योऽन्यविग्रहः ।
द्विजादिपीडा कन्यायां तुलाक्रयाणक प्रियम् ॥८८॥
वृश्चिके धान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम् ।
कुम्भे चणकमाषादि-तिलानां नाश इष्यते ॥८९॥
मीने सुभिक्षमारोग्यं फल द्वादशराशिजम् ।
एव ज्ञेय द्वितीयायां नियमेऽप्यत्र भावनात् ॥९०॥ इति ।

चन्द्रास्तफलम —

चन्द्रास्ते मेषराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता ।
वृषे च गणिकापीडा मृत्युश्चौरभयं जने ॥९१॥
मिथुनेऽप्यतिवृष्टिः स्याद् बीजवापेन पुष्टये ।
कर्कटेऽप्यतिवृष्टिः स्यात् सिंहे धान्यमहर्घता ॥९२॥

में हो तो कपास, सूत, रूई आदि महँगे हो । कर्कराशि में हो तो अना वृष्टि । सिंहराशि में हो तो धान्य महँगे हों ॥८७॥ तथा पशुओंका विनाश और राजाओं में परस्पर विग्रह हो । कन्याराशि में हो तो ब्राह्मण आदिको पीडा । तुलाराशि में हो तो क्रयाणक (व्यापार) प्रिय हो ॥८८॥ वृश्चिकराशि में हो तो धान्यकी उत्पत्ति हो । धनु और मकरराशि में हो तो शुभ होता है । कुंभराशि मे हो तो चणा, उड़द, तिल इनका विनाश हो ॥८९॥ मीनराशि में हो तो सुभिक्ष और आरोग्यता हो । यह बारह राशियोंके फल शुक्ल द्वितीया के दिन याने शुक्ल पक्षमें नवीन चन्द्रोदयके दिन विचार करें ऐसा नियम है ॥९०॥ इति चन्द्रोदय ॥

चद्रमाका अस्त मेषराशि पर हो तो सब प्रकारके धान्य महँगे हों । वृषराशिमें हो तो वेश्याको पीडा, मनुष्यों का अधिक मरण और चोर का भय हो ॥९१॥ मिथुनराशिमें हो तो वर्षा बहुत हो, बीज बोनसे अधिक पुष्ट हो । कर्कराशि में हो तो वर्षा बहुत हो । सिंहराशि में हो तो धान्य

कन्यायां खण्डवृष्टिश्च सर्वधान्यमहर्घता ।
तुलायामल्पवृष्ट्या स्याद् देशभङ्गो भयं पथि ॥६३॥
वृश्चिके मध्यमं वर्षं ग्रामनाशोऽप्युपद्रवात् ।
सुभिक्षं धनुषि धान्यैर्मकरे धान्यपीडनम् ॥६४॥
कुम्भेऽल्पवृष्टिर्धान्यानि महर्घाणि प्रजाभयम् ।
सुखसम्पत्तयो मीने मास यावदिद फलम् ॥६५॥
अमावसी यदा लग्ना तद्राशिरिह चिन्तये ।
शुक्लस्यादावुदयवच्च चन्द्रास्तकथान्यथा ॥६६॥
वारनक्षत्रफलवत्तद्दिने राशिज फलम् ।
अमावस्या विचारेण शेषं फलमिहोच्यताम् ॥६७॥ इति ॥
वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उत्तरस्यां विधूदये ।
बहुधा धान्यनिष्पत्त्यं भवेन्मेघमहोदयः ॥६८॥

मँहगे हो ॥ ६२ ॥ कन्याराशि में हो तो खण्डवर्षा और सब प्रकार के धान्य महँगे हो । तुलाराशिमें हो तो वर्षा थोड़ी, देशका भंग और रास्ता में भय हो ॥ ६३ ॥ वृश्चिकमें हो तो वर्षा मध्यम और उपद्रवोंसे गामका विनाश हो । धनुराशिमें हो तो धान्यसे सुभिक्ष हो । मकरराशि में हो तो धान्यका विनाश हो ॥६४॥ कुम्भराशि में हो तो वर्षा थोड़ी, धान्य महँगे और प्रजाको भय हो । मीनराशिमें हो तो सुख संपत्ति हो । यह एकमास तक का फल जानना ॥ ६५ ॥ किन्तु चन्द्रास्त का विचार अमावस जिस समय लगे उस समय राशिका विचार करना, जैसे शुक्लपक्षके प्रारंभमें उदय का विचार करते हैं वैसे चन्द्रास्त का विचार है यह अन्यथा नहीं है ॥ ६६ ॥ राशियों के फल वार नक्षत्र की तरह उस दिन विचार करें और शेष फल अमावसके विचारसे कहा वह ॥६७॥

वैशाख और ज्येष्ठ मास में चन्द्रमा का उदय उत्तर दिशा में हो तो धान्यकी प्राप्ति अधिक हो तथा मेघका उदय हो ॥६८॥ तिथिका प्रमाण

तिथिः षष्टिघटीमाना त्र्यंशोऽस्या विंशनाडिकाः ।
बृहद्धिष्ण्यस्य चाद्यांशो नाड्यः पञ्चदश स्मृताः ॥९९॥
त्रिंशन्नाड्यो द्वितीयांशो तृतीयेंऽशो युगेषवः ।
राशिभोगात् तथैवेन्दोस्त्र्यंशाः कल्प्याः स्वय धिया ॥१००॥
बृहद्धिष्ण्यस्य चाद्योऽशश्चन्द्रतिथ्योरथांशकः ।
आद्ये भवेत् त्रिधा तौल्ये सूर्यो धनुषि याति चेत् ॥१०१॥
उत्तमार्घस्तदा वर्षे रवौ शुभेऽक्षितेऽधिकः ।
यदा तु गुरुधिष्ण्यस्य कण्टकः स्याद् द्वितीयकः ॥१०२॥
चन्द्रराशेस्तिथेश्चापि कण्टकोऽथ द्वितीयकः ।
तदाप्युत्तम एवार्घो विज्ञातव्यो महर्द्धिकैः ॥१०३॥
यदा तु गुरुधिष्ण्यस्य तृतीयकण्टको भवेत् ।
चन्द्रधिष्ण्यतिथेश्चापि तृतीयश्चोत्तमोत्तमः ॥१०४॥
बृहदृक्षाद्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योर्द्वितीयकः ।
तदापि चोत्तमार्घः स्यान्नक्षत्रस्य स्वभावतः ॥१०५॥

साठ घडी और उसका तृतीयांश बीस घडी है । बृहत्संज्ञक नक्षत्रका आद्य अंश पंद्रह घडी का होता है ॥ ९९ ॥ द्वितीयांश तीस घडी का और तृतीयांश पैंतालीस घडीका होता है । इसी तरह राशिके भोगसे चन्द्रमाका तीन अंश स्वय बुद्धिसे विचार लेना ॥१००॥ यदि सूर्य धनुराशि पर हो और बृहत्संज्ञकनक्षत्र चन्द्रमा और तिथि ये तीनों आद्य अंश में हो तो ॥ १०१ ॥ उस वर्ष में उत्तम धान्य प्राप्ति हो, यदि सूर्य शुभग्रहों से देखा जाता हो तो विशेष अधिक धान्य प्राप्ति हो । यदि बृहद्नक्षत्र का दूसरा अंश और चन्द्रराशि तथा तिथि का भी दूसरा अंश हो तो उत्तम प्राप्ति धनवानोंको जाननी ॥१०२॥१०३॥ यदि बृहद्नक्षत्रका तीसरा अंश हो और चन्द्रमा तथा तिथि का भी तीसरा अंश हो तो उत्तमोत्तम प्राप्ति हो ॥१०४॥ बृहद्नक्षत्रका प्रथम अंश और चन्द्रमा तथा तिथिका दूसरा अंश

बृहद्दक्षाद्यभागश्च प्रान्तश्चन्द्रतिथेरपि ।
तदोत्तमस्वदेश्यार्घपादः स्याच्छास्त्रसम्मतः ॥१०६॥
गुर्वृक्षमध्यमो भागश्चन्द्रतिथ्योरथान्तिमः ।
तदा मध्यो भवेदर्घो गुरुनक्षत्रवैभवात् ॥१०७॥
एवं चन्द्रतिथिभ्यां च महदृक्षं विचारितम् ।
त्रिंशन्मुहूर्त्तकेऽप्येवमादिमध्यान्तकल्पना ॥१०८॥
मध्यर्क्षस्याद्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
तदा मध्योत्तमार्घः स्याद्धान्यस्य विदुषो मतः ॥१०९॥
मध्यर्क्षमध्यभागश्चेच्चन्द्रतिथ्योश्च मध्यमः ।
तदा मध्योत्तमार्घः स्यादन्तिमेऽपि च मध्यमः ॥११०॥
मध्यर्क्षस्यापि मध्यश्चेच्चन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
तदापि मध्य एवार्घो द्वयोर्मध्येऽपि मध्यमः ॥१११॥
पञ्चदशमुहूर्त्तं भं चन्द्रेण तिथिना स्मृतम् ।

हो तो भी नक्षत्रका प्रभावसे उत्तम धान्यप्राप्ति हो ॥१०५॥ बृहद्नक्षत्र का प्रथम भाग और चद्रमा तथा तिथिका अन्त्यभाग हो तो उत्तम प्राप्ति हो यह शास्त्र में माननीय है ॥ १०६ ॥ बृहद्नक्षत्रका मध्य भाग और चद्रमा तथा तिथिका अन्त्य भाग हो तो नक्षत्रका प्रभावसे मध्यम प्राप्ति हो ॥१०७॥ इसी तरह चद्रमा तिथि और बृहद्नक्षत्रका विचार किया । इसी तरह तीस मुहूर्त्तवाला मध्यनक्षत्रका भी आदि मध्य और अन्त्य ऐसे तीन भाग कल्पना करना ॥१०८॥ मध्यनक्षत्रका आदि अंश और चद्रमा तथा तिथिका भी आदि अंश हो तो मध्यम उत्तम धान्य प्राप्ति हो ऐसा विद्वानों का मत है ॥१०९॥ मध्यनक्षत्रका मध्य भाग और चद्रमा तथा तिथिका भी मध्य भाग हो तो मध्यम उत्तम हो और अन्तिम भाग में हो तो मध्यम प्राप्ति हो ॥११०॥ मध्यनक्षत्रका मध्य भाग और चद्रमा तथा तिथिका आदि भाग हो तो मध्यम और दोनों मध्य भागमें हो तो भी मध्यम प्रा०

आद्यमध्यान्तभागेन जघन्यार्घप्रसाधनम् ॥११२॥
लघ्वृक्षस्याद्यभागश्चेचन्द्रतिथ्योरथादिमः ।
स्याज्जघन्योत्तमार्घोऽपि लघ्वृक्षमध्यमो यदि ॥११३॥
चन्द्रतिथ्योश्च मध्योऽस्ति तदा जघन्यमध्यमः ।
लघ्वृक्षस्यान्त्यभागश्चेचन्द्रतिथ्योस्तथान्त्यगः ॥११४॥
तदा दुर्भिक्षमादेश्यं नक्षत्रदुष्टभावतः ।
विकल्पैः सकलैरेवं सुभिक्षं पृच्छतां वदेत् ॥११५॥
शुक्रः कुजो बुधः शौरिर्गुरुधिष्ण्येऽस्ति राशिगः ।
तदा जने समर्घं स्यान्मध्यं मध्येऽधमेऽधमम् ॥११६॥

इति धनुःसक्रमे चन्द्रतिथिनक्षत्रविभागैर्वार्षिकमर्घज्ञानं तदनुसारेण सर्वसक्रान्तिदिनापेक्षया मासिकमर्घज्ञानं च बोध्यम् । रामविनोदग्रन्थकर्त्ता तु वर्षराजापेक्षया तत्तद्राशिवन्मनुष्याणामायव्ययवद्धान्येऽपि विशेषार्घज्ञानाय यन्त्रकं प्राह—

हो ॥१११॥ इसी तरह पन्द्रह मुहूर्त्तवाला जघन्य नक्षत्र चद्रमा और तिथि इनका आदि मध्य और अन्त्य ऐसे तीन २ भाग जघन्य अर्घ साधन के लिये कल्पना करें ॥११२॥ लघुनक्षत्र का आद्य भाग और चद्रमा तथा तिथि का भी आदि भाग हो तो जघन्य उत्तमार्घ प्राप्ति । लघुनक्षत्रका मध्य भाग और चद्रमा तथा तिथिका भी मध्यभाग हो तो जघन्य मध्यम । लघुनक्षत्र का अन्त्यभाग और चद्रमा तथा तिथिका भी अन्त्यभाग हो तो नक्षत्र का दुष्टभाव से दुर्भिक्ष कहना । इसी तरह समस्त विकल्पों का विचार कर पूछनेवालेको सुभिक्ष आदि कहे ॥११३से११५॥ शुक्र, मगल, बुध और शनि ये बृहद्नक्षत्र पर हो तो लोक मे धान्यादि सस्ते, मध्यनक्षत्र पर हो तो मध्यम और अधमनक्षत्र पर हो तो अधम कहना ॥११६॥ यह धनुसक्राति में चद्रमा तिथि और नक्षत्र के विभाग द्वारा वार्षिक अर्घज्ञान कहा । इसी तरह सब सक्रातिके दिनकी अपेक्षासे मासिक अर्घज्ञान जानना चाहिये ।

धातुमूलजीववस्तुष्वेवमर्घं समादिशेत् ।
ग्रहवेधो न चेत्तत्र सर्वतोभद्रसम्भवः ॥११८॥
सकलापि कलाभृतः कला यदियं नास्त्यचला चलाचला ।
जलदैर्जलदैन्यवारकै र्बहुधान्योदयलब्धवारकैः ॥११९॥



अथ मङ्गलचारः ।

नक्षत्रोपरिचारफलम्—

शीतपीडाश्विनीभौमे तुषधान्यमहर्घता ।
द्विजपीडा भरण्यारे नाशः स्यादतसीद्रुमे ॥१२०॥
सर्वदेशे ग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता ।
कृत्तिकायां मङ्गलः स्याद् भङ्गोऽपि तापसाश्रमे ॥१२१॥
वृक्षपीडा श्वापदानां रोगः स्याद् रोहिणीकुजे ।
महर्घतापि कर्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ॥१२२॥

बराबर हो तो समान भाव रहे, यह तीन प्रकार से धान्यकी अर्घता कही ॥११७॥ इसी तरह धातु मूल और जीव वस्तुओंका भाव कहें, यदि वहा सर्वतोभद्रसे उत्पन्न ग्रहवेध न हो तो ॥ ११८ ॥ कलाको धारण करनेवाले चन्द्र की कला जल की दीनता को निवारण करनेवाले तथा बहुत धान्य के उदयकी प्राप्ति को निवारण करनेवाले ऐसे मेघोंसे अचल नहीं हैं किंतु चलाचल है ॥११९॥

मंगल अश्विनीनक्षत्र पर हो तो शीतकी पीडा, तुष और धान्य महंगे हों । भरणीनक्षत्र पर मंगल हो तो ब्राह्मणोंको पीडा, और वृक्षमें अलसी का नाश हो ॥१२०॥ तथा सब देशोंमें गाँवको पीडा और धान्य महँगे हों । कृत्तिकामे मंगल हो तो तापसोंके आश्रम का विनाश हो ॥१२१॥ रोहिणी मे मंगल हो तो वृक्षों का नाश तथा पशुओं को रोग हो । और

कर्पासनाशः प्रबलं सुभिक्षं,
मृगे कुजे भूर्जलपूरितैव ।
वृष्टिर्न रौद्रेऽदितिजे तिलानां,
नाशो विनाशो महिषीकुलस्य ॥१२३॥
पुष्ये कुजे चौरभय विरोधाच्छुभं न किञ्चिन्नृपनिर्बलत्वम् ।
सार्प्येऽल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशाद्, दुर्भिक्षमेवोरगदंशभीतिः॥
पैत्र्ये न वृष्टिस्तिलमाषमुद्ग-विनाशनं दुर्लभताऽन्यधान्ये ।
स्याद्योनिदेवे त्वितिजेऽल्पवृष्टिः प्रजासु पीडा गुडतैलमूल्यम्॥
तथोत्तरायां जलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीडनमश्वमूल्यम् ।
हस्ते कुजेऽल्पाम्बु च तुच्छधान्य,
घृतं गुडो वा लवण महर्घम ॥१२४॥
चित्राकुजे तीव्ररुजोऽनिपीडा,
शालीष्टगोधूममहर्घतापि ।

स्वातावनावृष्टिरथ द्विदेवे,
कर्पासगोधूमहर्घभाव ॥१२७॥
मैत्रे सुभिक्ष पशुपक्षिपीडा,
ज्येष्ठाकुजे स्वल्पजल च रोगा ।
मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा,
महर्घता वा तुषधान्यराशेः ॥१२८॥
पूषा कुजे भूरि जलाः पयोदा,
गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्णा ।
महर्घता शालितिलाज्यमाषे
ष्वग्रेऽपि तत्पूर्ववदेव भाव्यम् ॥१२९॥
श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगो, भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च ।
स्याद्वासवे वासववत्समृद्धि-र्धान्यैः समर्घं गुडशर्करादि ।१३०।
स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्याम्।

हो तो तीव्ररोग की बहुत पीडा, चावल और गेहूँ महँगे हो। स्वाति में मगल हो तो अनावृष्टि हो। विशाखा में मगल हो तो कपास और गेहूँ महँगे हो ॥१२७॥ अनुराधा में मगल हो तो सुभिक्ष और पशु पक्षियों को पीड़ा हो। ज्येष्ठामे मगल हो तो जल थोडा तथा रोग हो। मूल में मगल हो तो ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग को पीडा, या तुप और धान्य महँगे हों ॥१२८॥ पूर्वाषाढामे मगल हो तो बहुत जल देनेवाले मेघ हों, गौ दूध थोड़ा दें तथा पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो। चावल, तिल, घी, उडद ये महँगे हो। उत्तरापाढामें भी पूर्वापाढाकी तरह जानना ॥१२९॥ श्रवण में मगल हो तो रोग हो, धान्य की अधिक प्राप्ति और पीछे भूमि पर वर्षा न हो। धनिष्ठामें मगल हो तो इन्द्रकी तरह समृद्धि हो, धान्य और गुड चीनी सस्ते हों ॥ १३० ॥ शतभिषा मे मगल हो तो कीट चूहा आदिका उपद्रव हो तो भी पृथ्वीमें बहुत धान्य हो। पूर्वाभाद्रपदामें मगल

पूर्भामहीजे तिलवस्त्ररुतकर्पासपूगादिमहर्घता वा ॥१३१॥
दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां,
वर्षा न मेघो नयनेऽपि किञ्चित्।
सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे मघोष्णये
नरेषु रोगा बहुधान्यलक्ष्या ॥१३२॥ इति ॥

मङ्गलवक्रित्वम् —

यत्र राशौ कुजो याति वक्रं तत्र सुनिश्चितम्।
तद्राचपानि क्रयाणानि महर्घाणि भवन्ति हि ॥१३३॥
मकरे मङ्गले सौख्यं ततः कुम्भादिपञ्चके।
यदा गच्छेत्तदा दौःस्थ्यं तुलायामपि मङ्गले ॥१३४॥
कर्पासरसमञ्जिष्ठा बहुमूल्यास्तदादिनाः।
सक्रूरे मङ्गले विद्धे क्रूरान्तरगतेऽपि च ॥१३५॥
मीने मेषे च सिंहे धनुषि वृषमृगे वक्रिणो मन्दभौमा,

पृथ्वी संक्षिप्तदेहा ह्यभटमरणं विग्रहः पार्थिवानाम् ।
दुर्भिक्षं धान्यनाशो भयरुधिररुजः पित्तरोगः प्रजानां,
पीड्यन्ते गौगजाश्वा वृषमहिषनरा मार्गगौ तौ न यावत् ॥१३६॥

ग्रन्थान्तरे—

सिंहे मीनेऽथ कन्यामिथुनधनुषि वा वक्रितौ मन्दभौमौ,
पृथ्वीमुक्तासरूपां रिपुदलदलितां विग्रहान्तां च घोराम् ।
दुर्भिक्षं सस्यनाशं भयमपि कुरुतः पापरोगं प्रजानां,
पीड्यन्ते गोमहिष्यो भुवि नरपतयः पापचिन्ता भवन्ति ॥१३७॥

कन्यामीनधनुःसिंहेष्वार्किभौमौ च वक्रितौ ।
कुर्वन्ति विभ्रमं लोके नृपाणां क्षयकारकौ ॥१३८॥

कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः ।
ज्येष्ठानुराधामूलानि पूर्वाषाढा तथा पुनः ॥१३९॥

एतेषां चैव ऋक्षाणां भौमः शुक्रस्तथा शनिः ।
उत्तरस्यां यदा यान्ति मास्याषाढे विशेषतः ॥१४०॥

रुधिरव्याधि, प्रजाओं को पित्तका रोग, गौ, हाथी, घोडा, बैल, भैंस और मनुष्य ये सब जब तक शनि और मंगल मार्गगामी न हो तब तक दुःखी हो ॥१३६॥ ग्रन्थान्तर में— सिंह मीन कन्या मिथुन और धनु इन राशि पर शनि तथा मंगल वक्री हो तो पृथ्वी द्वेष रूपवाली, शत्रु दलसे दलित और घोर विग्रहवाली हो, दुर्भिक्ष, धान्यका विनाश और भय, प्रजा पाप रोगसे दुःखी, गौ भैंस आदि पशुओंको दुःख और राजाओं पाप चिन्ता वाले हो ॥ १३७ ॥ कन्या मीन धनु और सिंह इन राशिमें शनि तथा मंगल वक्री हो तो लोकमें विभ्रम और राजाओंका क्षयकारक होते हैं ॥१३८॥ कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, अनुराधा, मूल और पूर्वाषाढा इन नक्षत्रों के उत्तर भागमें मंगल, शुक्र और शनि ये आषाढमासमें विशेष कर आवे तो सुभिक्ष, कल्याण और आरोग्य हो, मध्य में

सुभिक्षं क्षेममारोग्य मध्ये च मध्यमं फलम् ।
दक्षिणेन यदा याति ईतिरोगभय भवेत् ॥१४१॥
कुलके–"सुरगुरु रविसुय धरणिसुय, जइ एकत्थ मिलंति।
भूमिकवाले मडिया, माणी भीख भमन्ति ॥१४२॥
जइ वक्कइ धरणिसुओ विसाहमहमूलकत्तियाखुद्धो ।
अन्नं कुणइ महग्घ इक्क निवड विणासेइ" ॥१४३ ।
चलत्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतेः ।
शुक्रस्यास्तगमे वृष्टिस्त्रिधा वृष्टि शनैश्चरे ॥१४४॥
लोकेऽपि–"सुक्कह केरे अत्थमण, मगल केरे चाल ।
राउ तीया भूखा मरे, कइ वरसे मेह अकाल ॥१४५॥
भौमशुक्र किजीवाना मेकोऽप्यन्तु भिनत्ति चेत् ।
पतत्सु मेघकोटाभि. प्रोतरेना तदा जिभूः ॥१४६॥
मेषवृश्चिकयोर्मध्ये यदा तिष्ठति भूसुतः ।
तदा धान्य महर्घं स्यान्मासद्वयमुदाहृतम ॥१४७॥

लोकेऽपि-"रविराहुशनिश्चरभूमिसुता,
उदयन्ति च मध्यमराशिगताः।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा,
विलयन्ति महीपतिछत्रधराः" ॥१४८॥
*शनिर्मीने गुरुः कर्के तुलायामपि मङ्गलः।
यावत्तिष्ठति लोकस्य तावत्कष्टं परम्परा ॥१४९॥
भौमस्याधो गुरुस्तिष्ठेद् गुर्वधोऽपि शनैश्चरे।
ग्रहाणां मुशलं ज्ञेयमिदं जगदरिष्टकृत् ॥१५०॥
रविराशेः पुरो भौमो वृष्टिसृष्टिनिरोधकः।
भौमाद्या याम्यगाश्चन्द्राच्चत्वारो वृष्टिनाशकाः ॥१५१॥

ग्रहवक्रिफलम्—

भौमवक्रे अनावृष्टिर्बुधवक्रे धनक्षयः।
गुरुवक्रे स्थिरो रोगो शुक्रवक्रे सुखी प्रजा ॥१५२॥

तब दो मास धान्य तेज रहें ॥ १४७ ॥ रवि राहु शनि और मंगल ये मध्यम राशिमें उदय हो तो धन धान्य सुवर्ण का विनाश करें तथा छत्रधारी राजाका नाश हो ॥१४८॥ मीनराशि पर शनि, कर्क पर गुरु, और तुला पर मंगल जब तक रहे तब तक कष्ट रहें ॥१४९॥ मंगल के नीचे बृहस्पति, और बृहस्पति के नीचे शनि हो तो यह ग्रहों का मुशल योग जानना यह जगत्को अरिष्ट करनेवाले हैं ॥ १५० ॥ सूर्य राशिसे आगे मंगल हो तो वर्षाकी उत्पत्ति को रोके और चन्द्रमा से मंगल आदि चार ग्रह दक्षिण ओर हो तो वृष्टि का नाशकारक होते हैं ॥ १५१ ॥ मंगल के वक्री होनेमें अनावृष्टि, बुधके वक्री होनमें धन का क्षय, गुरुके वक्रीमें रोगकी स्थिति, शुक्रके वक्री में प्रजा सुखी ॥ १५२ ॥ शनि के वक्री में

*दो०-मीनशनैश्चर कर्कगुरु, जो तुलमंगल होइ।
गेहूं गोरस सालि धीय, बिरलो चाखे कोइ ॥१॥

शनिवक्रे जने पीडा राहुः स्यादग्निकारकः ।
चतुर्ग्रहा न वक्राः स्युर्युगपच्चेति मन्यते ॥१५३॥
पाठान्तरे–भौमवक्रे भूपयुद्धं बुधवक्रे धनक्षयः ।
गुरुवक्रे सुभिक्ष च वक्रे शुक्रे प्रजासुखम् ॥१५४॥
शनिवक्रे महामारी रौरव च भय पथि ।
धनधान्यं च वस्त्र च रुण्डमुण्डा च मेदिनी ॥१५५॥
यत्र मासे ग्रहाः सर्वे वक्रत्व यान्ति दैवतः ।
तन्मासेऽतिमहर्घं स्याद् धान्यं वा राजविग्रहः ॥१५६॥
श्रावणे शनिवक्रत्वे भौमस्यास्तोदयो यदा ।
तदा युध्यन्ति भूमीशा द्विमासान्तर्न संशय ॥१५७॥

अतिचारफलम्—

सौम्यैकवक्रोऽप्यशुभातिचारः,
करोति सर्वं विपुल समर्घम् ।
क्रूरैकवक्रश्च शुभातिचारी,
धान्य विधत्ते भुवने महर्घम् ॥१५८॥

मनुष्योंमें पीडा और राहु के वक्रीमें अग्निका उपद्रव हो । एक साथ चार ग्रह वक्री नहीं होते हैं ऐसी मान्यता है ॥१५३॥ पाठान्तर– मंगल वक्री हो तो राजाओंका युद्ध, बुध वक्री हो तो धन का क्षय, गुरु वक्री हो तो सुभिक्ष, शुक्र वक्री हो तो प्रजा को सुख ॥ १५४ ॥ शनि वक्री हो तो महामारी, मार्गमें महाभय, धन धान्य और वस्त्र महँगे तथा पृथ्वी रुण्डमुण्ड हो ॥ १५५॥ जिस महीनेमें दैवयोगसे सब ग्रह वक्री हों तो उस महीनेमें धान्य महँगे हों या राजाओंमें विग्रह हो ॥ १५६ ॥ श्रावणमें शनि वक्री हो और मंगलका अस्त या उदय हो तो राजाओं को भयानक भारी युद्ध करें इसमें संशय नहीं ॥१५७॥

सौम्य एक ग्रह वक्री हो और एक अशुभ ग्रह शीघ्रगामी हो तो, सब

सुभिक्षं च तदैव स्याद् वक्रत्वे सितसौम्ययोः ।
वक्रत्वे तु गुरोर्नूनं राशिप्रान्ते महर्घकम् ॥१५९॥
कन्यायां बुधवक्रत्वे सुभिक्ष निश्चितं मतम् ।
वर्षाकालेऽप्यतिचारे महर्घं भुवि जायते ॥१६०॥
भौमार्क्योरप्यतिचारे सुभिक्ष भवति स्फुटम् ।
सौम्यानामप्यतिचारे धिष्ण्यहानौ तु निष्कणम् ॥१६१॥

राशिपरत्वे मगलोदयफलम्—

मेषे भूमिसुतोदये च चपला माषास्तिलाः स्युः प्रिया,
नाशः स्याच्च वृषे चतुष्पदकुले युग्मेऽन्नदुष्प्रापता ।
वैश्यानां बहुपीडनं शशिगृहे वृष्ट्यातिधान्योदयः,
सिंहे शालिमहर्घता द्विजरुजः कन्योदये भूभुवः ॥१६२॥
धान्यानि भूयांसि तुलोदये स्युः,
कन्याह्वये तेन सुभिक्षमेव ।

स्त धान्य बहुत सस्ते करें । एक क्रूर ग्रह वक्री हो और एक शुभ ग्रह शीघ्रगामी हो तो पृथ्वीमें धान्य महँगे करें ॥१५८। शुक्र और बुध के वक्री होनेमें सुभिक्ष होता है और बृहस्पतिके वक्रीमें राशिके अन्त्यभागमें निश्चय करके महँगे हो ॥१५९॥ कन्याराशिमे बुध वक्री हो तो निश्चयसे सुभिक्ष हो किंतु वर्षा ऋतु में अतिचारी हो तो पृथ्वी पर महँगे हो ॥ १६० ॥ मगल और शनि अतिचारी हो तो उत्तम सुभिक्ष होता है । बुधका शीघ्र गमनमे नक्षत्रकी हानि हो तो धान्य प्राप्ति न हो ॥१६१॥

मगलका उदय मेषराशिमें हो तो चवला, उटद, तिल इनका आदर हो । वृषराशिमें हो तो पशुओं का नाश हो, मिथुनराशि में हो तो अन्न कठिनतासे मिले, कर्कराशिमें हो तो वैश्योंको पीडा तथा वर्षाद से धान्य बहुत प्राप्त हो । सिंहराशिमें चावल महँगे हो । कन्याराशिमें हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियोंको रोग प्राप्ति ॥१६२॥ तुलाराशिमें हो तो धान्य बहुत हो,

चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीति-
 र्निष्पत्तिरन्नस्य तु वृश्चिकस्थे ॥१६३॥
धनुषि रसातलवृष्टिः शालिगुडादेर्महर्घता मकरे।
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशान्तिदेशे ॥१६४॥
कुम्भे तीडागमात् पीडा यदि वा मूषिकादिना।
मीने कुजोदयान्नैव वर्षा दुर्भिक्षसाधनम् ॥१६५॥ इति ॥

मंगलास्तगमफलम्—

मङ्गलास्तगमान्मेषे पाषाणानां महर्घता।
तृणादेः खलु वस्त्रानां सुभिक्षं सुस्थता वृषे ॥१६६॥
युग्मेऽतिवृष्टिः कर्कस्थे तस्मिन् भूधान्यशून्यता।
सिंहेऽश्वखरयोः पीडा चतुष्पदमहर्घता ॥१६७॥
कन्याङ्कये महर्घाः स्युर्गोधूमाश्चणका यवाः।
घटे सुभिक्षं वृषभा धेनुर्महर्घशालिकृत् ॥१६८॥

तुच्छधान्यं गुडस्तद्वन्मकरे विपुलं जलम् ।
चौरवह्निभयं देशे कुम्भे राजसु विग्रहः ॥१६९॥
मीने कुजास्तंगमनादन्नमनागाकुला प्रजा ।
बहुप्रजा सुभिक्षेण सोत्सवः शुभलक्षणः ॥१७०॥
इति मङ्गलचारविचारः ।

अथ बुधचारः ।

नक्षत्रोपरिगमनफलम्—

बुधेऽश्विन्यां तु पीड्यन्ते गोधूमाश्च यवादयः ।
इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घं च घृतादिषु ॥१७१॥
बुधे भरण्यां मातङ्गपीडा चाण्डालनाशनम् ।
तीव्ररोगा धान्यवस्तुमहर्घं लोकवैरतः ॥१७२॥
कृत्तिकायां बुधे विप्रपीडा मेघाल्पता जने ।
अन्नमल्पं ज्वरबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ॥१७३॥

बल आदि ॥ १६८॥ तुच्छ धान्य और गुड महँगे हो । मकरराशिमें हो तो इसी तरह तुच्छ धान्य और गुड महँगे हो और वर्षा अधिक हो । कुम्भराशिमें हो तो देशमें चोर अग्निका भय हो तथा राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६९ ॥ मीनराशिमें मंगलका अस्त हो तो अन्न थोडे हो और प्रजा व्याकुल हो । पीछे सुभिक्ष हो तथा प्रजामें अच्छे महोत्सव हो ॥१७०॥ इति मंगलचार ॥

अश्विनी में बुध हो तो गेहूँ और यव आदिका नाश हो, ईख दूध घी आदि रस सस्ते हों ॥ १७१ ॥ भरणीमें बुध हो तो हाथियों को पीडा, चाण्डालका नाश, तीव्र रोग, धान्य वस्तु तेज और लोकमें वैर हो ॥ १७२॥ कृत्तिकामें बुध हो तो ब्राह्मणको पीडा, वर्षा थोडी, अन्न थोडे, मनुष्योंमें ज्वर पीडा तथा कहीं विग्रह हो ॥ १७३ ॥ रोहिणीमें बुध हो तो कपास,

ब्राह्म्यां बुधे च कर्पासतिलरूतमहर्घता।
मृगशीर्षे सुभिक्षं स्याद् वातवृष्टिर्महोग्रमी ॥१७४॥
गोधूमतिलमाषादिसमर्घं सुखिनो जनाः।
आर्द्रायां वृष्टिरतुला गृहपातः प्रवाहतः ॥१७५॥
पुनर्वसौ बालपीडा कर्पासरूतमन्दता।
जनेषु सर्वसयोगः पुष्ये राज्ञां भयं जयः ॥१७६॥
आश्लेषायां महावृष्टिरनुपधान्यसमुद्भवः।
मघाबुधेऽल्पवृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजाभयम् ॥१७७॥
पूफायां नृपसङ्ग्रामः क्षेत्रबाधान्नमन्दता।
उफायां तु माषमुद्गाल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ॥१७८॥
हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमरमुदाः।
चित्रायां गणिकाशिल्पि-च्छिजपीडाल्पवर्षणम् ॥१७९॥
स्वातौ बुधे मन्दवृष्टि-र्विशाखायां सुभिक्षता।
व्याधिर्भयं च दुर्भिक्षं किञ्चित्कुत्रापि जायते ॥१८०॥

सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम् ।
ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्य महर्घताऽश्वरोगिता ॥१८१॥
मूले पक्षिद्विजपशु-बालपीडा विजायते ।
धान्यं मन्दं च पूषायां व्याधिर्ग्रीष्मेऽपि वर्षणम् ॥१८२॥
उषायां सस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयम् ।
श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु हिमाद् भयम् ॥१८३॥
वासवे तु गवां पीडा वारुणे शूद्ररोगता ।
दुर्भिक्षमथ पूभायां क्षेममारोग्ययोग्यता ॥१८४॥
उभायां नृपतिक्लेश आरोग्यं पशुपक्षिणाम् ।
रेवत्यां नन्दनं चन्द्रो महर्घं कुंकुमाद्यपि ॥१८५॥

बुधोदयराशिफलम्—

मेषे बुधस्योदयतो गवादिश्चतुष्पदानां महतीह पीडा ।

विशाखामें हो तो सुभिक्ष हो कहीं किंचित् व्याधि भय और दुर्भिक्ष हो ॥ १८० ॥ अनुराधामें हो तो सुभिक्ष, पक्षियों को पीडा और प्रजा सुखी हो । ज्येष्ठामें हो तो ईख चावल घी महँगे हो और घोडे को रोग हो १८१॥ मूलमें हो तो पशु पक्षी ब्राह्मण तथा बालक इनको पीडा हो । पूर्वाषाढा में हो तो धान्य मंदा, व्याधि और ग्रीष्मकाल मे भी वर्षा हो ॥ ॥१८२॥ उत्तराषाढामें हो तो धान्यकी प्राप्ति तथा आठ वर्षके बालकोंका नाश हो । श्रवणमें हो तो गुड, अलसी धान्य और चणा इनको हिमसे भय हो ॥ १८३ ॥ धनिष्ठामें हो तो गौओंको पीडा । शतभिषामें हो तो शूद्रोंको पीडा । पूर्वभाद्रपदा में हो तो दुर्भिक्ष, क्षेम तथा आरोग्यता हो ॥ १८४ ॥ उत्तराभाद्रपदा में हो तो राजाको क्लेश तथा पशु पक्षीयों को आरोग्यता हो । रेवतीमें बुध हो तो कुंकुम आदि महँगे हो ॥ १८५ ॥

बुधका उदय मेषराशि में हो तो गौ आदि पशुओं को बहुत पीडा और टिड्डी आदिसे धान्य महँगे हो। वृषराशिमें हो तो अतिवृष्टि । मिथुनमें हो

तीडादिना धान्यमहर्घता च, वृषेऽतिवृष्टिर्मिथुने न वर्षा ।१८६।
कर्के सुखं सिंहपदे चतुष्पान् म्रियेत कन्या बहुधान्यसौख्यम् ।
भूकम्पयुद्धादितुलोदिते ज्ञे, तथाष्टमे राजभयं सुभिक्षम् ।१८७।
धनुर्बुधस्याभ्युदयात् सुखानि, मृगे मही धान्यरसादिपूर्णा ।
कुम्भेऽतिवायुः पथिभीश्च मीने, दुर्भिक्षपक्षो यदि वातिवृष्टिः ॥
पौषाषाढश्रावणवैशाखेष्विन्दुजः समाघेषु ।
दृष्टो भयाय जगतः शुभफलकृन्नोषितस्तेषु ॥१८९॥
अन्यत्रापि—
आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे, चन्द्रस्य पुत्रोभ्युदयं करोति ।
शुक्रस्य चेच्छ्रावणमासि चास्तं, धान्य सुवर्णेन समं तदाप्यम् ॥
भाद्रे शुक्लचतुर्थ्यां पञ्चम्यां वोदितौ यदा ज्ञसितौ ।
धान्य पुष्टिकावद्ध तदा जने लभ्यमतिकष्टकृत् ॥१९१॥
लोके पुनः—"सुरगुरुबुध मेलावडो, जइ इक्कइए होय ।

तो वर्षा न हो ॥१८६॥ कर्कमें सुख, सिंहमें पशुओंका विनाश, कन्यामें धान्य अधिक और सुख, तुलामें भूमिकम्प युद्ध आदि, वृश्चिक में राजभय और सुभिक्ष हो ॥ १८७ ॥ धनुराशिमें बुध का उदय होनेसे सुख हो । मकरराशि में धान्य, रस आदि से पृथ्वी पूर्ण हो । कुंभ में वायु अधिक चले और मार्ग मे भय हो । मीनराशि में बुध का उदय हो तो दुर्भिक्ष हो अथवा अतिवृष्टि हो ॥१८८॥ पौष, आषाढ, श्रावण, वैशाख और माघ इन महीनोंमें बुधका उदय हो तो जगत् को भय हो, तथा इन महीनों में अस्त हो तो-शुभ फलदायक होता है ॥१८९॥ आषाढ महीने का शुक्ल पक्षमें बुधका उदय हो और श्रावण मासमें शुक्र का अस्त हो तो सुवर्णके बराबर धान्य हो ॥ १९० ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी या पंचमीको बुध और शुक्र का उदय हो तो धान्य पुष्ट हो वह मनुष्यों में बहुत कष्टकारक प्राप्त हो ॥ १९१ ॥ बृहस्पति और बुध यदि एक साथ हो तो लोक में

मइ तुज कहिउं भड्डुली, मेह न वरसे लोय ॥१९२॥
जइ बुध उग्गइ भद्दवे, तो बहु भद्दवा करेइ ।
अहवा आसू उगमइ, तो काकर कमल करेइ'' ॥१९३॥
शुक्रस्यास्तंगते सौम्यः प्रोदेति श्रावणे यदा ।
तदा भाद्रपदे चापि मेघो नैव प्रवर्षति ॥
पाठान्तरमर्द्धे–'चतुष्पदविनाशेन तक्र न क्वापि लभ्यते'।१९४।
श्रीहीरसूरिकृतमेघमालायाम्—
"सिंह तणा दस दिवस वलि, घोल्या उगे बुध ।
इंद महोच्छव मांडस्यइ, महीयल वरसे युध ॥१९५॥
चैत्रमासि भड्डुली सुणे, बारसि बुद्धि निहाण ।
जइ शुभग्रह उगमणा हुइ, घृत मत वेचि सुजाण ॥१९६॥
आसोइ बुधउगमे, तो कप्पास विणास ।
अहवा तेहु आथमे, राती वस्तु विणास ॥१९७॥
कांइ तुं पूछइ भड्डुली, काती तणो विचार ।
बुध ऊगे अधारीइ, अन्न हुइ निचार ॥१९८॥

वर्षा न बरसे ॥१९२॥ यदि भाद्रपदमें बुध उदय हो तो वर्षा अधिक हो, यदि आसोज में उदय हो तो कमलकर (सूर्य) वर्षा न करे ॥ १९३ ॥ शुक्रका अस्त होने पर श्रावण में बुधका उदय हो तो भाद्रपदमें वर्षा न बरसे या पशुओंका विनाश हो जानेसे छास कहीं भी न मिले ॥१९४॥ सिंह-संक्रान्ति से दशवें दिन बुध का उदय हो तो इन्द्रमहोत्सव याने पृथ्वी पर वर्षा अच्छी हो ॥१९५॥ चैत्र मासमें द्वादशी को बुध को देखें यदि इस की पूर्व तरफ शुभग्रह हो तो घी नहीं बेचना चाहिये ॥१९६॥ आसोज में बुध का उदय हो तो कपासका विनाश हो, अथवा अस्त हो तो लाल वस्तुका विनाश हो ॥१९७॥ कार्तिक कृष्णपक्ष मे बुधका उदय हो तो निचार अन्न हो ॥ १९८ ॥ कार्तिक शुक्लपक्षमें बुधका उदय हो तो तिल

तिलव्रीहिविनाशाय कार्तिकेन्दुबुधोदयः ।
मार्गशीर्षोदितः सौम्यः कर्पासस्य कियत्फलम् ॥१९९॥
मागसिरे बुह उगमे, अह अत्थमे जू सुक्क ।
तौ तूं मत पूछसि घणु, चउपग चहुटइ विक्क॥२००॥
मीगसिर मास एकादशी, बुध अत्थमण हवंति ।
कपडा कारा वेचि करि, कण ते अग्घ लहंति ॥२०१॥
डमरं कुरुते पौषे माघमासोदये बुधः ।
फाल्गुने शशिपुत्रस्योदयो दुर्भिक्षकारणम् ॥२०२॥
पोसमासे बुध उगमइ, जइ अत्थमइ तिण मास ।
महाराउ तजोया चवइ, भड्डुली घणु विमास"॥२०३॥ इति
बुधास्तफलम्—

मेषे बुधास्ते भुवने सुभिक्षं, चतुष्पदां नाशकरं वृषेऽस्तम् ।
राज्ञां तु पीडा मिथुनेऽथ कर्केऽनावृष्टये मृत्युभयं च चौराः ॥२०४
तथैव सिंहेऽल्पजलं युवत्यां, बुधास्तनश्चौरभयोऽतिवृष्टिः ।

व्रीहिका नाश हो । मार्गशिरमें बुधका उदय हो तो कपासकी थोड़ी प्राप्ति हो ॥१९९॥ मार्गशिर मे बुधका उदय हो अथवा शुक्र का अस्त हो तो पशुओंको वेचना चाहिये ॥२००॥ मृगशिर महीनेकी एकादशी को बुध का अस्त हो तो कपड़ा आदि वेचकर धान्य खरीदना चाहिये ॥२०१॥ पौष तथा माघ महीने में बुधका उदय हो तो कलह करे । फाल्गुनमें बुध का उदय हो तो दुर्भिक्षकारक होता है ॥ २०२ ॥ पौष महीनमें बुधका उदय तथा अस्त हो तो महान् राजाओं का विनाश हो ऐसा है भड्डली वहुत विचार कर ॥२०३॥

बुधका अस्त मेषराशि में हो तो पृथ्वी में सुभिक्ष हो । वृषराशि में हो तो पशुओंका विनाश । मिथुनमें हो तो राजाओंको पीडा । कर्कमें हो तो अनावृष्टि मृत्युभय तथा चोरका भय हो ॥ २०४ ॥ इसी तरह सिंह-

क्रयाणकानां च महर्घतायै तुलाप्यलिर्धातुमहर्घतायै ॥२०५॥
राज्ञां भयं धन्विनि रोगचारो, मृगेऽल्पलाभो व्यवसायिलोके।
कुम्भेऽतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा, मीनेऽनधीना नृपवर्गपीडा ॥२०६॥

अथ शुक्रचारः।

गुरुमन्दतमःकेतुफलं प्रागेव निश्चितम्।
क्रमाक्रान्तस्य शुक्रस्य फलं चारगतं ब्रुवे ॥२०७॥

शुक्रचतुष्कचक्रम्—

चतुष्कं चतुष्कं ततः पञ्चकं च,
त्रिकं पञ्चकं षट्कमायाति भानाम्।
यदा भार्गवो मार्गवोऽथ वक्रो,
निविद्धः प्रसिद्धैः परैः क्रूरखेटैः ॥२०८॥
प्रथमचतुष्के गोधनपीडा, मेघमहोदयदोऽग्रचतुष्के।

राशि में भी फल जानना, तथा जल थोडा। कन्याराशि में बुध अस्त हो तो चोरों का भय, अतिवर्षा और क्रयाणक महँगे हों। तुला और वृश्चिक में भी धातु महँगी हो ॥२०५॥ धनुराशि में बुधका अस्त हो तो राजाओं का भय हो। मकर में व्यापारी लोगों में लाभ थोड़ा हो। कुंभ में वायु अधिक चले तथा हिम से वृक्ष नष्ट हो। मीनराशिमें बुधका अस्त हो तो पराधीन ऐसी राजवर्गको पीडा हो ॥ २०६ ॥ इति बुधचारः।

गुरु, शनि, राहु और केतु इन का फल पहले कहा गया है, अब क्रमसे शुक्रचार का फल कहता हूँ ॥२०७॥ शुक्र क्रमसे चार, चार, पांच तीन, पांच और छ इन नक्षत्रों पर आता है। यदि इन नक्षत्रों पर शुक्र मार्गी हो या वक्री हो या अन्य प्रसिद्ध क्रूरग्रहों से वेधा जाता हो उस का फल कहता हूँ ॥ २०८ ॥ प्रथम चतुष्क (चार नक्षत्रों) में शुक्र हो तो गौओं को पीडा, दूसरा चार नक्षत्रों में हो तो मेघ का उदय हो, दोनों

पञ्चकयुग्मे धान्यविनाशी, षट्त्रिकचारी सुखदः शुक्रः ॥२०९॥
षट्त्रिकमध्ये धान्य ग्राह्यं, पञ्चकमध्ये धान्यं देयम् ।
एवं लक्ष्मी धान्यवतां स्याद् भार्गवचारस्यैष विचारः ॥२१०॥
भरणीतः समारभ्य लभ्यमेतत्फल जने ।
शुक्रचारे युद्धमन्ये नृपाणां प्राहुरादिमा ॥२११॥
यदाह लोकः–"बुधग्रह केरे अत्थमण, शुक्रह केरे चाल ।
खांडो जागै क्षत्रियां, कै हुइ मेह अकाल" ॥२१२॥
नंदायामसुरानन्दी समुदीतो महामुदे ।
घनाघना घना धान्यं समर्घं सुखिता जनाः ॥२१३॥
सिंहशुक्रस्तुलाभौम कर्कजीवो यदा भवेत् ।
धूलिवर्षा महान् वायुर्भवेद्धान्यमहर्घता ॥२१४॥
पाठान्तरे—
'कर्कशुक सर भरिया सूकै, सिंह शुक्र जल किमे न हुकै ।

पञ्चक नक्षत्रोंमें शुक्र हो तो धान्य का विनाश, छ और त्रिक नक्षत्रों में शुक्र हो तो सुखदायक होता है ॥२०९॥ छ और त्रिक नक्षत्रों में शुक्र हो तो धान्यका संग्रह करना और पंचकनक्षत्रोंमें धान्य वेचना उचित है। इसी तरह धनवानोंको लक्ष्मी होती है, यह शुक्रचारका विचार है ॥२१०॥ भरणीनक्षत्रसे आरंभ कर मनुष्यों में इस का फल प्राप्त है । प्राचीन लोग शुक्रका चारमें राजाओंका युद्ध मानते हैं ॥२११॥ बुधग्रहका अस्तमें शुक्र का उदय हो तो युद्ध हो या अकाल वर्षा हो ॥२१२॥ नंदातिथिमें शुक्र का उदय हो तो बड़ा हर्ष, बहुत वर्षा, बहुत धान्य, सुभिक्ष और मनुष्य सुखी हो ॥ २१३ ॥ सिंहराशिके शुक्र, तुलाके मंगल और कर्कराशि के बृहस्पति यदि हो तो धूलि की वर्षा, महावायु और धान्य महँगे हो ॥ २१४॥ पाठान्तरसे– 'कर्कराशि के शुक्र हो तो भरा हुआ सरोवर सूक जाय, सिंहराशिके शुक्र हो तो जलवर्षा न हो, कन्याराशिमें मंगल हो तो धूलि

कन्या मगल ए अहिनाणी, वरसै धूलि न वरसइ पाणी ॥२१५॥

मेघमालायां तु—

'सिंहशुक्र श्रावणि ते आई, तो जलहरमूलहथग्रो जाई ।
वरसै मेह तो अतिवरसेइ, आसू काती रोग करेइ' ॥२१६॥

अथ शुक्रद्वाराणि—

भरण्याद्यष्टके भानां मेघद्वार कवेः स्मृतम् ।
मेघवृष्टिः प्रजानन्दः समर्घं धान्यमेव च ॥२१७॥
मघादिपञ्चके शुक्रो धूलिद्वारेऽभ्युदीयते ।
प्रजादुःखाञ्जलनाशात् तदोपद्रवमादिशेत् ॥२१८॥
स्वात्यादिसप्तके राजद्वारं शुक्रोदयो भवेत् ।
लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र निवेदयेत् ॥२१९॥
श्रुत्यादिसप्तके शुक्रोदये लोकसुखं बहु ।
कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥२२०॥

मतान्तरे–स्वात्यादित्रितये धर्मद्वार शुक्रोदये शुभम् ।

की वर्षा हो किंतु जलवषा न हो' ॥२१५॥ सिंहराशि पर शुक्र श्रावण मासमें आवे तो बरसातका मूलसे नाश हो, यदि बरसात बरसे तो बहुत अधिक बरसे और आसोज या कार्त्तिक महीने में रोग करें ॥२१६॥

भरणी आदि आठ नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो मेघद्वार होता है, इस में मेघवृष्टि, प्रजा को आनद और धान्य सस्ते हों ॥ २१७ ॥ मघादि पाच नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो धूलिद्वार होता है, इस में प्रजा को दु ख, जल का नाश और उपद्रव होते हैं ॥ २१८ ॥ स्वाति आदि सात नक्षत्र पर शुक्रका उदय हो तो राजद्वार होता है, इसमें लोकमें भय और छत्रपति का नाश होता है ॥२१९॥ श्रवण आदि सात नक्षत्रों पर शुक्रका उदय हो तो कनकद्वार होता है, इसमें लोक बहुत सुखी हो तथा निश्चयसे सुभिक्ष हो ॥ २२० ॥ पाठान्तर से– स्वाति आदि तीन

ज्येष्ठाचतुष्टये हेमद्वारं मिश्रफलं स्मृतम् ॥२२१॥
श्रुत्यादिसप्तके वाच्यं ऋजुद्वार भृगूदये ।
दुर्भिक्षं लोकमारककारण सुखवारणम् ॥२२२॥
इति सुभिक्षदुर्भिक्षविग्रहदेशभंगज्ञानाय शुक्रद्वारविचारः ।

शुक्रोदयमासफलम्—

शुक्रोदयात् फाल्गुनमासि वृद्धि-रर्थस्य धान्यादिषु भैक्षवृत्तिः ।
चैत्रे विभूतिर्भुविमाधवे च, रणो महान् वृष्टिरतीव शुक्रे ।२२३।
आषाढमासे जलदुर्लभत्व, चतुष्पदार्तिर्नभसि प्रदिष्टा ।
समृद्धिरन्नस्य तु भाद्रमासे, तथाश्विने सम्पद एव सर्वाः ॥
शुभ परं कार्तिकमार्गमासोः, पौषे महच्छत्रविभङ्ग एव ।
माघेऽपि तद्वत्सकलं फलं स्यान्न चेत्पराब्दे जलदस्य रोधः॥
भादवडे जो ऊगमणा, सुक्कह सुक्कह वार ।
तो तूं हरखज आगजे अन्न घणा संसार ॥२२६॥

नक्षत्रों पर शुक्र का उदय हो तो धर्मद्वार, यह शुभ है। ज्येष्ठा आदि चार नक्षत्रों पर शुक्रका उदय हो तो हेमद्वार, यह मिश्रफलदायक है॥ २२१॥ श्रवण आदि सात नक्षत्र पर शुक्र का उदय हो तो ऋजुद्वार कहना, यह दुर्भिक्ष, लोकमें रोग और दुःखका कारक है ॥२२२॥

शुक्रका उदय फाल्गुन मासमें हो तो धनकी वृद्धि और धान्यमें भिक्षा-वृत्ति रहे अर्थात् धान्य महँगे हो। चैत्र और वैशाख महीनेमें हो तो पृथ्वी में सपत्ति हो बडा युद्ध और बहुत वर्षा हो ॥२२३॥ आषाढ मासमें हो तो जलकी दुर्लभता, श्रावणमें हो तो पशुओं को पीडा, भाद्रपदमें हो तो अन्न की समृद्धि (वृद्धि), आश्विन में सब-प्रकार की संपत्ति हो ॥२२४॥ कार्तिक और मार्गशीर्ष में हो तो शुभ, पौषमें महान् छत्रभग, माघमें शुक्र का उदय हो तो पौषके सदृश फल जानना, यदि पीछला वर्षमें वर्षाका रोध न हो तो ॥२२५॥ भाद्रपद महीनेमें शुक्रवारके दिन शुक्रका उदय हो तो

शुक्रोदयराशिफलम्—

मेषे शुक्रोदये धान्यं महर्घं रोगसम्भवः ।
वृषे धान्यं समर्घं स्यान्नृपास्तुष्टाः प्रजासुखम् ॥२२७॥
मिथुने लोकमरणं गोधूमा बहवो भुवि ।
कर्केऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरज भयम् ॥२२८॥
सिंहेऽपि कर्कवद्वाच्यं कन्यायां नृपपीडनम् ।
स्वल्पा वृष्टिस्तुलायोगे समर्घं धान्यमाहितम् ॥२२९॥
वृश्चिके बहुला वृष्टिर्दुर्भिक्षं धान्यमल्पकम् ।
धनुष्यवर्षणं धान्य महर्घं मकरे तथा ॥२३०॥
कुम्भेऽतिविरलो मेघश्चतुष्पद्विनाशनम् ।
मीने सुभिक्षं लोकानां सुख मेघमहोदयः ॥२३१॥

शुक्रनक्षत्रभोगफलम्—

शुक्रेऽश्विन्यां ब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिला माषाः ।

संसारमे अनाज बहुत हो और आनंद हो ॥२२६॥

शुक्र का उदय मेषराशिमे हो तो धान्य महँगे और रोगकी प्राप्ति हो। वृषराशिमे हो तो धान्य सस्ते, राजा सतुष्ट और प्रजा सुखी हो ॥२२७॥ मिथुनमें हो तो लोकमें मरण हो तथा गेहूँकी प्राप्ति पृथ्वी पर बहुत हो। कर्कमे हो तो अतिवृष्टि, धान्यका विनाश और चोरोंका भय हो ॥२२८॥ सिंहराशिमे कर्कराशिकी जैसा फल समझना। कन्यामें राजाओंको पीडा हो। तुलाराशिमें हो तो वर्षा थोड़ी और धान्य सस्ते हो ॥२२९॥ वृश्चिकमें हो तो वर्षा बहुत, दुर्भिक्ष और धान्यकी अल्पता हो। धनु तथा मकरराशिमें हो तो वर्षा न हो और धान्य महँगे हो ॥२३०॥ कुंभमें हो तो बहुत थोड़ी वर्षा हो और पशुओं का विनाश हो। मीनराशिमें शुक्र का उदय हो तो सुभिक्ष, लोकोंको सुख और मेघका उदय हो ॥२३१॥

शुक्रोदय अश्विनी नक्षत्रमे हो तो ब्राह्मण जातिमें विरोध, यव तिल

स्वल्पा भरण्यां संस्थे तुषधान्यमहर्घता च तिलनाशः ।२३२।
सर्षपमाषाल्पत्वमाग्नेये सर्वधान्यनिष्पत्तिः ।
रोहिण्यामारोग्यं मृगे महर्घाणि धान्यानि ॥२३३॥
रौद्रेऽल्पवृष्टिरन्नमधोमुख तदपि नश्यति विशेषात् ।
पुष्ये दुर्भिक्षभय चौराः सार्पे न वर्षा स्यात् ॥२३४॥
मघादित्रितये कष्ट हस्ते मेघमहोदयः ।
रोगा अवृष्टिश्चित्रायां स्वातौ क्षेमं सुभिक्षता ॥२३५॥
तद्वदेव विशाखायां तुषधान्यमहर्घता ।
अल्पवृष्टिश्च मैत्रर्क्षे चतुष्पदप्रपीडनम् ॥२३६॥
द्वारानुसाराच्छेषेषु फलमाद्यैर्निगद्यते ।
धारानुसाराद् दुर्भिक्ष सुभिक्ष स्वल्पमादिशेत् ॥२३७॥

शुक्रोदयतिथिफलम्—

पृथ्वीसुखं स्यात्प्रतिपच्चतुष्के, चौरोदयः पञ्चमिकाचतुष्के ।

उड़द ये थोड़े हों । भरणी पर हो तो तुष धान्य महँगे हों और तिल का विनाश हो ॥ २३२ ॥ कृत्तिका में हो तो सरसव, उड़द थोडे हो और सर्व प्रकारके धान्य की प्राप्ति हो । रोहिणीमें हो तो आरोग्य रहें । मृगशिरमें हो तो धान्य महँगे हो ॥२३३॥ आर्द्रा में हो तो वर्षा थोड़ी, अन्न अधोमुख हो यह भी विशेष करके नाश हो । पुष्य में दुर्भिक्ष और चोरोंका भय हो । आश्लेषामें, वर्षा न हो ॥ २३४ ॥ मघा, पुर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी ये तीन नक्षत्रोंमें हो तो दुःख हो । हस्तमें, वर्षा का उदय हो । चित्रामें हो तो रोग हो तथा वर्षा न हो । स्वातिमें क्षेम और सुभिक्ष हो ॥२३५॥ विशाखामें हो तो तुष धान्य महँगे हो । अनुराधामें हो तो वर्षा थोड़ी तथा पशुओंको दुःख हो ॥२३६॥ बाकी के नक्षत्रोंका फल पहले जो द्वारोंके अनुसार कहा है इसके अनुसार सुभिक्ष या दुर्भिक्ष इनका विचार कहना ॥२३७॥

भूपालयुद्धं नवमीचतुष्के, दुर्भिक्षवातास्त्वसुखं तु शेषे ।२३८।
लोके तु-पडिवा छट्ठि एकादशी, जो असुरां गुरु उगंति ।
जल बहुला अन्न मोकला, प्रजा लील करंति ॥२३९॥

शुक्रास्तमासफलम्—

शुक्रस्यास्तंगमाज्येष्ठे महावृष्टेः प्रजाक्षयः ।
आषाढे जलशोषः स्याच्छ्रावणे रौरव महत् ॥२४०॥
धनधान्यादिसम्पत्तिर्भवेद्भाद्रपदास्ततः ।
आश्विनेऽपि सुभिक्षाय कार्त्तिके वृष्टिहेतवे ॥२४१॥
मार्गशीर्षे भूपयुद्धं प्रजानां सुखसम्भवः ।
पौषे माघे छत्रभङ्गः फाल्गुनेऽग्निभय महत् ॥२४२॥
षण्मासानपि दुर्भिक्ष चैत्रे वनविनाशनम् ।
फलं तथैव वैशाखे पीडा काचिच्चतुष्पदे ॥२४३॥

प्रतिपदा आदि चार तिथियों मे शुक्रका उदय हो तो पृथ्वीमें सुख, पचमी आदि चार तिथियोंम हो तो चोरों का उपद्रव, नवमी आदि चार तिथियोंमे हो तो राजाओंमे युद्ध, और बाकीके तिथियोंमें दुर्भिक्ष, वायु और कष्ट आदि हों ॥ २३८ ॥ लोक भाषामें भी कहा है कि— पडिवा छठ और एकादशी इन तिथियोंमें शुक्रका उदय हो तो जल अधिक वर्षे और अनाज भी बहुत हो, प्रजामें आनद रहें ॥२३९॥

ज्येष्ठमासमें शुक्रका अस्त हो तो महावर्षा हो और प्रजाका नाश हो । आषाढमें हो तो जल सूक जाय, श्रावणमें हो तो बड़ा रौरव (कष्ट) हो ॥ २४० ॥ भाद्रपदमें हो तो धन धान्यकी प्राप्ति हो । आश्विनमें हो तो सुभिक्ष, कार्त्तिकमें हो तो वृष्टि के लिये हो ॥२४१॥ मार्गशिर में हो तो राजाओं में युद्ध तथा प्रजा को सुख हो । पौष और माघ मास में हो तो छत्रभग हो, फाल्गुनमें बड़ा अग्निका भय हो ॥ २४२ ॥ चैत्रमें हो तो छ महीने दुर्भिक्ष रहें तथा वनका विनाश हो । वैशाखमें हो तो दुर्भिक्ष

त्रैलोक्यदीपके—

'श्रावणे दधिदुग्धैस्तु भूमिं सिञ्चति मेघतः ।
भाद्रपदे धनैर्धान्यैर्मेघो हर्षात् प्रमोदयेत्' ॥२४४॥

लोके तु—'बुध ऊगमणो सुक्कत्थमणो, जइ हुवे श्रावणमास।
इम जाणे चो भड्डुली, मणुआ न पीइ छास' ॥२४५॥

हीरसूरयः—'आसोई बुध ऊगमण, पुहवी हुइ सुगाल।
आसोइ शुक्र आथमे, तौ रौरवौ दुकाल ॥२४६॥
मागसिरे सुक्कत्थमण, अहवा उगे मज्झ।
जो जाणे तु जुग प्रलय, गुरु आवे ए गुज्झ' ॥२४७॥

अर्घकाण्डेऽपि—'स्वात्यादिनवके ग्राह्य भरण्यादष्टके धृतिः।
विक्रयः शेषऋक्षेषु शुक्रास्ते फलमुत्तमम्' ॥२४८॥

पाठान्तरे—'श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद्दिवसे धृतिः ।
विक्रयः शेषऋक्षेषु शुक्रास्ते फलमुत्तमम् ॥२४९॥

और कुछ पशुओंमें पीडा हो ॥२४३॥ श्रावणमें हो तो दही दूध अधिक हो तथा वर्षा से भूमि तृप्त हो । भाद्रपद में हो तो धन धान्य की प्राप्ति पूर्वक वर्षाद हर्षसे आनंदित करता है ॥२४४॥ यदि श्रावणमासमें बुध का उदय हो और शुक्र का अस्त हो तो मनुष्य छाछ न पीवे अर्थात् समय अच्छा हो ॥२४५॥ आश्विन महीनमें बुध का उदय हो तो पृथ्वी में सुकाल हो, किंतु आश्विनमें शुक्रका अस्त हो तो बड़ा भयंकर दुष्काल हो ॥ २४६ ॥ मार्गशिर में शुक्र का अस्त या उदय हो तो युग प्रलय जानना ॥ २४७ ॥ शुक्र का अस्त स्वाति आदि नव नक्षत्रों में हो तो धान्य आदि खरीद करना, भरणी आदि आठ नक्षत्रों में हो तो संग्रह करना और बाकीके नक्षत्रोंमें हो तो बेचना, इत्यादि शुक्रास्त का उत्तम फल कहा ॥ २४८ ॥ पाठान्तरसे- शुक्रास्त में श्रावण कृष्ण पड़वाके दिन संग्रह करना और बाकीके नक्षत्रोंमें बेचना अच्छा फल कहा

मिगसिर जइ सुक्कह गुरु, उदयत्थमणा करंति ।
तो तुं जो ए भड्डली, पुथवी चक्क भमंति ॥२५०॥
शुक्लपक्षे यदा शुक्रस्समुदेत्यस्तमेति वा ।
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम् ॥२५१॥
अत्र हीरसूरयःपौषाधिकारे इम श्लोकमाहुस्तेन पौषस्येवेद फलम्

शुक्रास्तराशिफलम्—

शुक्रस्यास्तंगमात् मेषे सर्वधान्यमहर्घता ।
वृषे चतुष्पदे पीडा धान्यनिष्पत्तिरल्पिका ॥२५२॥
मैथुने वैश्यपीडा स्यादल्पवर्षा प्रजाभयम् ।
कर्कटे बहुला वृष्टिर्लघुबालव्यथा तथा ॥२५३॥
सिंहे पीडा भूपवर्गे तथानावृष्टिज भयम् ।
कन्यायां वैद्यलोकस्य सूत्रधारस्य पीडनम् ॥२५४॥
तुलायां सिंहवत् सर्वं दुर्भिक्षं वृश्चिके मतम् ।
स्त्रीधान्यनाशो धनुषि मकरे धान्यसम्पदः ॥२५५॥

है ॥२४९॥ मार्गशिरमें यदि गुरु तथा शुक्र का उदय और अस्त हो तो पृथ्वीमें कदएक उपद्रव हो ॥२५०॥ यदि शुक्रका शुक्लपक्षमे उदय या अस्त हो तो महा युद्ध हो, हजारों वीर पुरुषोका रुधिर पृथ्वी पीवे ॥२५१॥

शुक्रका अस्त मेषराशिमें हो तो सब प्रकारके धान्य महँगे हो । वृष में हो तो पशुओं को पीडा तथा धान्य की प्राप्ति थोडी हो ॥ २५२ ॥ मिथुनमें हो तो वैश्यको पीडा, वर्षा थोडी तथा प्रजामें भय हो । कर्क में हो तो वर्षा बहुत हो तथा बालकोंको दुःख हो ॥ २५३ ॥ सिंहराशि में हो तो राजवर्गमें पीडा तथा अनावृष्टिका भय हो । कन्या में हो तो वैद्य लोग और सूत्रधार को पीडा हो ॥ २५४ ॥ तुलामें हो तो सब फल सिंहराशिकी तरह जानना । वृश्चिकमें हो तो दुर्भिक्ष हो । धनुराशिमें हो तो स्त्री और धान्यका नाश हो । मकर में हो तो धान्य प्राप्ति हो ॥ २५५ ॥

द्विजपीडा कुम्भराशौ मीने मेघमहोदयः ।
रोगनाशः प्रजासौख्यं पृथिव्यां बहुमङ्गलम् ॥२५६॥
इतिशुक्रचारप्रकरणम् ।

अथ ग्रहयोगफलम्—

यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ।
षण्मासं तुषधान्यानां जायते च महर्घता ॥२५७॥
शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वये नूनं महर्घता ।
चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोगोऽशुभ सदा ॥२५८॥
शनौ राहौ सर्वधान्यं महर्घं राजविग्रहः ।
बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम् ॥२५९॥
उत्पत्तिस्तुषधान्यानां पञ्चमासान् प्रजायते ।
शुक्रक्षेत्रे बुधे भद्रं चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुते ॥२६०॥
पाखण्डानां भवेद्वृद्धिः धान्यानां च महर्घता ।
रविक्षेत्रे भृगोः पुत्रे पशूनां च महर्घता ॥२६१॥

कुम्भराशिमें हो तो ब्राह्मणों को पीडा हो । मीनराशिमें शुक्रका अस्त हो तो मेघ का उदय; रोग का विनाश, प्रजाको सुख और पृथ्वीमें बहुत मंगल हो ॥ २५६ ॥ इति शुक्रचार ॥

यदि मंगल के क्षेत्रमें कोई भी ग्रह हो तो छः महीने तुष और धान्य महँगे हो ॥ २५७ ॥ शुक्र के क्षेत्रमें मंगल हो तो दो महीने महँगे । चन्द्रमा या सूर्य हो तो सब प्रकार के रोग तथा अशुभ करे ॥ २५८ ॥ शनि या राहु हो तो सब धान्य महँगे तथा राजविग्रह हो । बुधके क्षेत्रमें रवि या चंद्रमा हो तो सब राजाओंमें विरोध हो ॥ २५९ ॥ तथा तुष धान्य की उत्पत्ति पांच महीने हो । शुक्र के क्षेत्रमें बुध हो तो कल्याण हो । चन्द्रमा के क्षेत्रमें शुक्र हो तो ॥ २६० ॥ पाखण्डियों की वृद्धि तथा धान्य महँगे हों । रवि क्षेत्रमें शुक्र हो तो पशुओं का भाव तेज हो ॥२६१॥ गुरु के क्षेत्रमें

बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सप्तधान्यमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कर्पासादिमहर्घता ॥२६२॥
शनिक्षेत्रे शनौ राहौ घृतधान्यमहर्घता ।
चन्द्रभास्करयोः क्षेत्रे सुभिक्ष चन्द्रसूर्ययोः ॥२६३॥
पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता ।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ पशुनाशस्तृणक्षयः ॥२६४॥
भौमे राज्ञां विरोधश्च बुधे वृष्टिस्तु भूयसी ।
भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहुभौमार्कभार्गवाः ॥२६५॥
षण्मासान् गुडकर्पासघृतक्षीरमहर्घता ।
मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मन्दराहुबुधास्तदा ॥२६६॥
चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदे मारिविग्रहौ ।
भौमक्षेत्रे यदाऽपीयुः शुक्रभौमनिशाकराः ॥२६७॥
तदा मुक्तापशूनां च शंखस्य च महर्घता ।
भौमक्षेत्रे भार्गवे च धान्यानां च महर्घता ॥२६८॥

शनि या चद्रमा हो तो सात प्रकारके धान्य महँगे हों । शुक्र के क्षेत्रमें गुरु या मगल हो तो कपास आदि महँगे हों ॥२६२॥ शनि के क्षेत्रमें शनि या राहु हो तो घी और धान्य महँगे हों । चन्द्र और सूर्य के क्षेत्रमें चंद्र और सूर्य हो तो सुभिक्ष होता है ॥ २६३ ॥ तथा पशुओंका विनाश, धान्यकी वृद्धि और गुड आदि महँगे हो । गुरु के क्षेत्रमे शनि या राहु हो तो पशुओंका विनाश तथा तृण (घास) का क्षय हो ॥२६४॥ मगल हो तो राजाओं का विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा हो । मगल के क्षेत्रमें यदि राहु मगल सूर्य और शुक्र हो तो ॥२६५॥ छ महीने गुड, कपास, घी, दूध आदि महँगे हो । शनि क्षेत्रमें यदि शनि राहु तथा बुध हो तो ॥२६६॥ पशुओंका नाश और मनुष्योंमें महामारी तथा विग्रह हो । मगलके क्षेत्रमें शुक्र, मगल और चद्रमा होतो ॥ २६७ ॥ मोति, पशु और शख की तेजी हो ।

शनिक्षेत्रे चन्द्रभान्वो-र्वस्त्राणां च महर्घता ।
शुक्रे भौमे गुरुक्षेत्रे प्रजापीडा प्रजायते ॥२६९॥
चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।
चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे शुक्लवस्तूदयो भवेत् ॥२७०॥
रविक्षेत्रेऽतुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ।
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो यदि ॥२७१॥
षण्मास्यां स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिः प्रजायते ।
उदितौ च बुध क्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ॥
पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥२७२॥
शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्यौ सूर्यपुत्रोदयो यदा ।
राजयुद्धं च धान्यानां जायतेऽतिमहर्घता ॥२७३॥
यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत् ।
घृतादीनां तदा वृद्धिर्गुडानां रक्तवाससाम् ॥२७४॥
यदा समुदयं याति शनिक्षेत्रे शनैश्चरः ।

मंगलके क्षेत्रमें शुक्र हो तो धान्य महँगे हो ॥२६८॥ शनिके क्षेत्रमे चंद्रमा और सूर्य हो तो वस्त्र महँगे हों । गुरु क्षेत्रमें शुक्र और मंगल हो तो प्रजा को पीडा हो ॥ २६९ ॥ मंगलके क्षेत्रमे चंद्रमा का उदय हो तो तुष धान्य की वृद्धि हो । शुक्रके क्षेत्रमें चन्द्रमा का उदय हो तो शुक्ल वस्तुका उदय हो ॥२७०॥ रवि क्षेत्रमें शनि सोम और शुक्र का उदय हो तो बहुत वृद्धि हो । चंद्र क्षेत्रमे शुक्र चन्द्रमा और बुधका उदय हो तो ॥२७१॥ छ महीने दुर्भिक्ष हो तथा बहुत वर्षा हो । बुधक्षेत्रमे राहु और शनिका उदय हो तो पशुओंका क्षय, प्रजाको पीडा और धान्य महँगे हों ॥२७२॥ शुक्रके क्षेत्र में चंद्रमा सूर्य तथा शनि का उदय हो तो राजाओंका युद्ध हो तथा धान्य बहुत महँगे हों ॥२७३॥ शनि क्षेत्रमे मंगल और सूर्यका उदय हो तो घी गुड तथा लाल वस्त्र की वृद्धि हो ॥२७४॥ यदि शनिक्षेत्रमें शनि का उ-

तदा स्यात्तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥२७५॥
यदा ग्रहेण सौम्येन क्रूरेणापि च संमुखः ।
विद्धः क्रूरः शुभो वापि दुर्भिक्षं तत्र निश्चितम् ॥२७६॥
ग्रहयुद्धे भूपयुद्धं ग्रहवक्रे देशविभ्रमो भवति ।
ग्रहवेधे सति पीडा निर्दिष्टा सर्वलोकानाम् ॥२७७॥
ज्येष्ठमासे रवियुता ग्रहाः पञ्चैकराशिगाः ।
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभङ्गाय कुत्रचित् ॥२७८॥
सप्तम्यां च शनिभौमौ भवेतां वक्रगामिनौ ।
हाहाकारस्तदा लोके विशेषाद्दक्षिणापथे ॥२७९॥
शनिः कुजो देवगुरुर्यदि शुक्रगृहे त्रयम् ।
एकत्र गुरुशुक्रौ वा तदा वृष्टी रणोऽथवा ॥२८०॥
कार्त्तिकस्य नवम्यां चेद् ग्रहाः पञ्चैकराशिगाः ।
अकालेऽपि महावृष्ट्या नद्यः पूर्णाः पयोभरैः ॥२८१॥
शनिः पञ्चग्रहैर्युक्तो मार्गशीर्षेऽतिरोगकृत् ।

दय हो तो तृण काष्ट और लोहा ये महँगे हो ॥ २७५ ॥

यदि शुभ और क्रूरग्रह परस्पर समुख हो याने दोनोंका परस्पर वेधहो तो निश्चयसे दुर्भिक्ष होता है ॥२७६॥ ग्रहोंका युद्ध हो तो राजाओंमें युद्ध, ग्रहोंकी वक्रतामें देशमें विभ्रम, और ग्रहोंका वेध हो तो सब लोगोंको पीडा हो ॥२७७॥ ज्येष्ठ महीनेमें सूर्यके साथ पाच ग्रह एक राशि पर हो तो श्रावणमें वर्षाका रोध हो तथा कहीं छत्रभंग हो ॥ २७८ ॥ शनि और मगल सप्तमी के दिन वक्री हो तो लोकमें हाहाकार हो तथा विशेष करके दक्षिण देशमें हो ॥ २७९ ॥ यदि शुक्रके गृह (घर) में शनि, मगल और गुरु ये तीन ग्रह हो अथवा गुरु और शुक्र इकट्ठे हो तो वर्षा अथवा युद्ध हो ॥२८०॥ कार्त्तिक महीनेकी नवमीके दिन पाच ग्रह एक राशि पर हो तो अकालमें बहुत वर्षासे नदी जलसे पूर्ण हो ॥२८१॥ मार्गशीर्षमें शनिके साथ पाचग्रह हो तो बहुत रोगकारक होते

मार्गस्य योगः पूर्णायां पञ्चानां रणकारणम् ॥२८२॥
मार्गशीर्षे ग्रहाः पञ्च यदि स्युरेकराशिगाः।
तदा जनेऽतिमारी स्यान्नृपस्य मरणं क्वचित् ॥२८३॥
अन्यत्रापि—असुह सुहा पंचग्गहा, इक्कह् राशि मिलंति।
तहवि नराहिव कोइ मरइ, अह जलहर वरसंति ॥२८४॥
भानुवक्रतमःक्रोडास्तृतीयस्था गुरोर्यदि।
सुभिक्षं जायते तस्यामीदृशे योगसम्भवे ॥२८५॥
तमोवक्रसवित्राद्याश्चत्वारः क्रूरखेचराः।
तृतीयस्था शनेरेते सौख्यः सद्भिक्षकारकाः ॥२८६॥
भानुवक्रतमःक्रोडाः पञ्चमस्था गुरोर्यदि।
दुर्भिक्ष जायते घोर घोरयोगे समागते ॥२८७॥
तमोवक्रसवित्राद्याश्चत्वारः क्रूरखेचराः।
पञ्चमस्थाः शनेरेते दौस्थ्यदुर्भिक्षकारकाः ॥२८८॥
मन्दराहोरपि क्रूरास्तृतीयाः सौख्यकारकाः।

हैं। मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन पाच ग्रहोंका योग हो तो युद्ध कारक होता है ॥२८२॥ मार्गशीर्षमे यदि पाच ग्रह एकरागि पर हो तो लोकमे महा मारी और क्वचित् राजाका मरण हो ॥२८३॥ यदि शुभ या अशुभ पाच ग्रह एकराशि पर हो तो कोई राजाका मरण हो और वर्षा बहुत बरसे ॥२८४॥ यदि बृहस्पति से तीसरे स्थान में रवि,मगल, राहु और शनि, एसा योग हो तो सुभिक्ष होता है ॥२८५॥ राहु, मगल,सूर्य आदि चारक्रूर ग्रहों हैं, ये शनिसे तीसरे स्थान म हो तो सुख और सुभिक्षकारक होते हैं ॥२८६॥ यदि बृहस्पति से पाचवें स्थान म सूर्य मगल राहु और शनि का घोर योग हो तो दुर्भिक्ष होता है ॥ २८७ ॥ राहु केतु मगल और सूर्य आदि चार क्रूर ग्रह शनिसे पाचवें स्थानमें हो तो दुःख और दुर्भिक्ष कारक होते हैं ॥२८८॥ शनि और राहुसे भी तीसरे स्थानम क्रूर ग्रह हो

एतयो पञ्चमाः क्रूरा दुःखदुर्भिक्षहेतवे ॥२८९॥
बृहस्पतितमःसौरिमङ्गलानां यदैककः ।
त्रिके च पञ्चके कार्यौ धान्यस्य क्रयविक्रयौ ॥२९०॥
गुरोः ससान्त्यपञ्चद्विः स्थानगा वीक्षिता अपि ।
शनिराहुकुजादित्याः प्रत्येकं देशभञ्जकाः ॥२९१॥
इत्येव ग्रहवक्रमार्गगमनांस्तत्प्राप्तिरूपोदया-
नाचार्याङ्घ्रिनिषेवणेन सुधिया सम्यग् विचार्यादरात् ।
वर्षे भावि शुभाशुभं फलमलं वाच्यं विविच्य स्वयं,
येन स्यात्कमला स्वपाणिकमलग्राहाय बद्धाग्रहा ॥२९२॥
इतिश्रीमेघमहोदयसाधने वर्षबोधे तपागच्छीयमहोपाध्याय-
श्रीमेघविजयगणिविरचिते ग्रहगणविमर्शनो नाम
एकादशोऽधिकारः ॥

तो सुखकारक होते हैं, और पञ्चम स्थान में क्रूर ग्रह हो तो दुःख और दुर्भिक्षकारक होते हैं ॥२८९॥ बृहस्पति, राहु, शनि और मंगल, इनमेंसे कोई ग्रह तृतीय और पंचममें हो तो उससे धान्यका क्रय विक्रय करना याने खरीदना तथा बेचना ॥२९०॥ यदि बृहस्पति से सातवा, बारहवा, पांचवा और दूसरा इन स्थानों में शनि, राहु, मंगल और सूर्य इनमेंसे कोई ग्रह हो या उनकी दृष्टि हो तो देशका नाशकारक होता है ॥२९१॥

इसी तरह ग्रहों का वक्र और मार्ग गमन को तथा उसकी प्रतिरूप उदय को आचार्योंका चरण कमलकी भक्तिपूर्वक सेवा करके और बुद्धि से विचार करके भावि वर्षका शुभाशुभ फलको स्वयं विचारके ही कहना चाहिये, जिससे लक्ष्मी उसका कर कमल ग्रहण करने के लिये आग्रहवाली होती है ॥२९२॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन
विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो
ग्रहगणविमर्शननाम एकादशोऽधिकारः ।

अथ द्वारचतुष्टयकथनो नाम द्वादशोऽधिकारः।

धारद्वारं पुराप्रोक्तं तिथिमासनिरूपणे ।
नक्षत्रमत्र वक्ष्यामि वर्षबोधविधित्सया ॥१॥
कृत्तिकादिकनक्षत्रं त्रयोदशकमब्दतः ।
सूर्यभोग्यं भवेद् योग्य-मब्दस्येह शुभप्रदम् ॥२॥
अश्विनी धान्यनाशाय जलनाशाय रेवती ।
भरणी सर्वनाशाय यदि वर्षेन्न कृत्तिका ॥३॥
कृत्तिकायां निपतिता पञ्चषा अपि बिन्दवः ।
पूर्वपश्चाद्भवान् दोषान् हत्वा कल्याणकारिणः ॥४॥
रोहिण्यां भास्वतो भोगे निषिद्धमपि वर्षणम् ।
नद्याः प्रवाहे नो दुष्टं स्याद्वादी विजयी ततः ॥५॥
रोहिण्यां भास्वतस्तापाद्वर्षायां स्याद्घनो घनः ।
गोखुरोत्खातरजसा वृष्टिर्दुष्टा प्रकीर्त्तिता ॥६॥

तिथि मासका निर्णय करने के लिये चार द्वार पहले कह दिया, अब वर्षमें शुभाशुभ फल जानने के लिये नक्षत्र द्वार को कहता हूँ ॥१॥ वर्षमें सूर्य भोग्य के कृत्तिका आदि तेरह नक्षत्र वर्ष के योग्य हो तो शुभफल दायक होते हैं ॥२॥ यदि कृत्तिका में वर्षा न हो तो अश्विनी धान्यका, रेवती जलका और भरणी सबका नाशकारक होते हैं ॥३॥ यदि कृत्तिकामें जल के पांच छः भी बूंद गिरे तो पहले और पीछे होनेवाले दोषोंका नाश करके कल्याण करने वाले होते हैं ॥४॥ सूर्य रोहिणी नक्षत्र पर हो तब वर्षा होना अच्छा नहीं और विशेष वर्षा होकर नदियोंमें पूर आवे तो दोष नहीं ऐसा स्याद्वाद मत है ॥५॥ रोहिणी में सूर्यसे बहुत ताप (गरमी) पड़े तो आगे वर्षा बहुत अच्छी हो। गौओंके खुर से रज(शुष्क धूलि निकल ऐसी अल्प वृष्टि अच्छी नहीं ॥ ६ ॥

अत्र रोहिणीचक्रम्—

मेषेऽर्कसंक्रमदिने यन्नक्षत्रं प्रजायते ।
संक्रान्तिसमये देयं पूर्वाब्धौ तच्च भद्वयम् ॥७॥
ततः सृष्ट्याः तटे चैकमेकसन्धौ च पर्वते ।
अष्टाविंशति ऋक्षाणामेवं न्यासो विधीयते ॥८॥
सन्धयोऽष्टौ तटान्यष्ट चतुर्दिक्षु पयोधरः ।
विदिक्षु शैलाश्चत्वारस्तदन्तःस्थास्तु सन्धयः ॥९॥
रोहिणी यत्र सम्प्राप्ता स्थानं तच्च विचार्यते ।
शैले सन्धौ खण्डवृष्टिरतिवृष्टिः पयोनिधौ ॥
तटे सुभिक्षमादेश्यं रोहिण्या सति सङ्गमे ॥१०॥
सन्धौ वणिग्गृहे वासः पर्वते कुम्भकृद्गृहे ।
मालाकारगृहे सन्धौ रजकस्य गृहे तटे ॥११॥

इति वर्षावासफलम् ।

दिनार्घो मासार्घश्च—

अर्घकाण्डे त्रैलोक्यदीपककारः प्राह—

मेष संक्रान्तिके दिन जो नक्षत्र हो वह संक्रांतिके समय पूर्वदक्षिणादि क्रमसे चक्रमें लिखें, समुद्रमें दो २ नक्षत्र ॥७॥ तट संधि तथा पर्वत इन प्रत्येक में एक एक ऐसे अट्ठाईस नक्षत्र लिखे ॥८॥ संधि आठ, तट आठ, चार दिशामे चार समुद्र और विदिशामें चार पर्वत इनके अन्त्यमें संधि हों ऐसा चक्र बनाना ॥ ९ ॥ इस चक्र में रोहिणी जिस स्थान पर हो उसका विचार करें । पर्वत तथा संधि पर हो तो खंडवर्षा हो, समुद्र पर हो तो अति वृष्टि हो और तट पर हो तो सुभिक्ष हो ॥ १० ॥ संधि मे रोहिणी हो तो वणिक् के घर, पर्वत में हो तो कुम्हार के घर, संधि में हो तो माली के घर और तटमे हो तो धोबीके घर वर्षाका वास समझना ॥ ११ ॥

स्वात्याद्यष्टकसंयुक्तमाश्विन्यादित्रिकं पुनः ।
त्रिकसंज्ञं बुधैर्वाच्यमर्घकाण्डविशारदैः ॥१२॥
मृगादिदशकं वापि धनिष्ठापञ्चकं तथा ।
सञ्ज्ञायां पञ्चकं ज्ञेयमर्घनिर्णयहेतुकम् ॥१३॥
त्रिकयोगे त्रिकयोगः पञ्चके पञ्चकं पुनः ।
गृह्यते त्रिकयोगेन दीयते पञ्चके धनम् ॥१४॥
त्रिके च जीवराशेश्च क्रूरा यदि त्रिके गता ।
अन्योऽन्यं च त्रिके वा स्युर्गृह्यते तत्क्रयाणकम् ॥१५॥
पञ्चके जीवराशेस्तु यदि गच्छंति पञ्चके ।
अन्योऽन्यं पञ्चके वा स्युर्दीयते तत्तदेव हि ॥१६॥
यदा धिष्ण्यत्रिके चन्द्रः क्रेतव्य तत्क्रयाणकम् ।
यदा च पञ्चके चन्द्रो विक्रेतव्य तदाखिलम् ॥१७॥
जीवऋक्षे तमःशौरिभौमयोर्वागुरुस्त्रिके ।

स्वाति आदि आठ और अश्विनी आदि तीन, इन नक्षत्रोंको अर्घकाण्ड के विशारद पंडितोंने त्रिक संज्ञा माना है ॥ १२ ॥ मृगशीर्ष आदि दश और धनिष्ठा आदि पांच, इन नक्षत्रों को अर्घ का निर्णय करने के लिये पंचक संज्ञा का है ॥ १३ ॥ ग्रह त्रिक नक्षत्रों में हो तो त्रिकयोग और पंचक नक्षत्रों में हो तो पंचकयोग माना है । त्रिकयोगमें धन ग्रहण करना और पंचकयोगमें देना चाहिये ॥ १४ ॥ त्रिक नक्षत्रोंमें यदि जीवराशि (बृहस्पतिकी राशि)से क्रूर ग्रह त्रिक में हों या क्रूरग्रहोंसे जीवराशि त्रिकमें हो तो क्रयाणक ग्रहण करना याने खरीदना चाहिये ॥१५॥ इसी तरह पंचक नक्षत्र मे जीवराशि तथा क्रूरग्रह ये परस्पर पंचक में हो तो खरीदी हुई वस्तुको बेचना चाहिये ॥१६॥ यदि त्रिकनक्षत्रमें चंद्रमा हो तो क्रयाणक को खरीदना, तथा पंचकनक्षत्रमें हो तो बेचना चाहिये ॥१७॥ बृहस्पतिके नक्षत्रोंमें राहु और शनि हो या राहु और मंगल के त्रिक में बृह

अन्योऽन्यं पञ्चकेऽप्येते देहिलाहि त्रिके कणान् ॥१८॥
त्रिके यदि ग्रहाः सर्वे जीवान्मन्दतमःकुजाः ।
तदा भुवि समर्घं स्यात् तिथिवृद्धौ विशेषतः ॥१९॥
यदि स्याद्दैवयोगेन भत्रिके धिष्ण्यपञ्चकम् ।
तदा किञ्चिन्महर्घं स्यात् सौम्यवेधेऽधिकं पुनः ॥२०॥
पञ्चके चेद् ग्रहाः सर्वे संमिलन्ति यदैव हि ।
तदा भुवि महर्घं स्याद् धिष्ण्यहीनौ विशेषतः ॥२१॥
राशिपञ्चकयोगे तु धिष्ण्यत्रिकं यदा भवेत् ।
तदा किञ्चित्समर्घं स्यात् सौम्यवक्रे शुभं बहुः ॥२२॥
मंशरास्तु यदा जीवाद् राशिनक्षत्रपञ्चके ।
घोरदौस्थ्यं तदा ज्ञेयमृक्षे न्यूनेऽतिरौरवम् ॥२३॥
राशिधिष्ण्यत्रिके पूर्वे ग्रहा सर्वे भवन्ति चेत् ।
महा सौस्थ्यं तदा भूम्यां सौम्यवक्रे महोत्सवः ॥२४॥

स्पति हो, अथवा ये ग्रह अन्योन्य पचकमें या त्रिकमें आ जावें तो अन्न बेचदेने से लाहि (लाभ) होता है ॥१८॥ यदि सब ग्रह या बृहस्पतिसे शनि, राहु और मगल ये त्रिकमें हो तो पृथ्वी पर धान्यादि सस्ते हो और तिथि की वृद्धि हो तो विशेष कर सस्ते हों। ॥१९॥ यदि दैव-योग से त्रिकनक्षत्रमें पचकनक्षत्र हो तो कुछ महँगे हो और शुभग्रह का वेध हो तो अधिक हो ॥ २० ॥ यदि सब ग्रह एक साथ पचकमें हो तो पृथ्वी पर महँगे हो और नक्षत्रकी हानि हो तो विशेष करके महँगे हो ॥ २१॥ पचक राशिके योग में त्रिकनक्षत्र हो तो कुछ सस्ते हो और बुधग्रह वक्री हो तो बहुत शुभ हो ॥२२॥ मंगल, शनि, राहु ये ग्रह बृहस्पतिसे एक राशि पर हो और पचक में हो तो बडा दुःख जानना और नक्षत्रकी हानि हो तो बड़ा रौरव हो ॥ २३ ॥ सब ग्रह त्रिक नक्षत्र पर हो तो बड़ा सुख हो और बुध ग्रह वक्री हो तो महा उत्सव हो ॥२४॥

प्रकृतम्—सर्वनक्षत्रमध्ये तु रोहिणी पतिता त्रिके।
सौम्ययोगे शुभैव स्यादशुभाः क्रूरयोगतः ॥२५॥
अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः।
स्वचक्रं परचक्रं च मृगशीर्षे द्विकैरिदम् ॥२६॥

आर्द्राप्रवेश —

सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा, घटीद्वये विग्रहरोगयोगः।
मध्याह्नकाले कृषिनाशनाय, धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः।२७
सन्ध्यास्थितार्द्रा कुरुते सुभिक्ष,रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके।
भोगं प्रदत्ते खलु मध्यरात्रे, पूर्वं सुख दुःखमतोऽपरात्रे।२८।
"मिगसिर वाय न वाइया, अद्द न वूठा मेह।
इम जाणे वो भड्डली, वरसइ दीधौ छेह" ॥२९॥

नक्षत्रद्वार —

मघार्कदिवसं त्यक्त्वा सर्वनक्षत्रवर्षणम्।

सब नक्षत्रोंके मध्यमें रोहिणी त्रिकमें हो और शुभग्रहों का योग हो तो शुभ और अशुभ ग्रहोंका योग हो तो अशुभ होता है ॥२५॥ मृगशीर्ष नक्षत्र पर शुभ और अशुभ ग्रह हो तो कभी अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहा, कीडा, स्वचक्र, और कभी परचक्र इत्यादिके उपद्रव हो ॥२६॥

सूर्यका आर्द्रा म प्रवेश सूर्योदयमें हो तो रोग करनेवाला होना है। सूर्योदय से दो घडी दिन चढने बाद हो तो विग्रह और रोगकारक होता है। मध्याह्न दिनमें हो तो खेतीका नाश, धान्य महँगे और तृणका नाश हो ॥२७॥ सन्ध्या समय आर्द्रा हो तो सुभिक्ष करें, रात्रिमें हो तो लोक में सब प्रकारके सुखकारक होता है। मध्यरातमें हो तो भोग प्रदान करे और पीछली शेष रात्रिमें हो तो पहला सुख और पीछे दुःख करें ॥२८॥ मृगशिर नक्षत्रमें वायु अधिक न चले तथा आर्द्रामें मेघवृष्टि न हो तो वर्षा न बरसे ॥२९॥

हर्षदायं सर्वलोकानां कर्षण फलदायकम् ॥३०॥
हस्तार्कसंगमे वर्षा सर्वामीतिं निवारयेत् ।
स्वातिवृष्टिमौंक्तिकानि निष्पादयति नीरधौ ॥३१॥
सौम्यवारेऽर्कनक्षत्रे चारः शुभकरः स्मृतः ।
अर्कारमन्दवारेषु नक्षत्रभ्रमणेऽशुभम् ॥३२॥ इति ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम्—

कर्पूरचक्रं प्रागुक्तं सर्वतोभद्रमुच्यते ।
तत्र नक्षत्रानुसाराद् ज्ञेयं देशशुभाशुभम् ॥३३॥
*सौम्यवेधे समर्घत्वं क्रूरवेधे महर्घता ।
देशः कालश्च वस्तूनि ग्रहवेधस्त्रिषु स्मृतः ॥३४॥

मघानक्षत्रमें सूर्य आवे उस दिनको छोड कर बाकीके सब नक्षत्रोंमें वर्षा हो तो सब लोगोंको हर्षदायक और किसानों को लाभदायक होता है ॥ ३० ॥ हस्त नक्षत्रमें सूर्य आवे तब वर्षा हो तो सब प्रकारकी ईतिका निवारण हो । स्वातिनक्षत्रमें सूर्य आनसे वर्षा हो तो समुद्रमें सीपियों में मोती उत्पन्न करें ॥३१॥ शुभवारके दिन सूर्यका एक नक्षत्रसे दूसरे नक्षत्र पर गमन हो तो शुभ फलदायक होता है । रवि, मंगल और शनि इन वारोंमें सूर्यका नक्षत्र पर गमन हो तो अशुभ होता है ॥३२॥

कर्पूरचक्र पहले कहा है, अब सर्वतोभद्रचक्र कहता हूँ, इसमें नक्षत्रके वेध के अनुसार देशमें शुभाशुभ जाना जाता है ॥३३॥ सौम्यग्रहका वेध हो तो सस्ते और क्रूरग्रहका वेध हो तो महँगे हों। ये देश, काल और वस्तु इन

*वेध जानने का प्रकार—

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामदक्षिणसम्मुखम् ॥१॥
वेधो ग्रहेण पुनरत्र गजेन्द्रदृष्ट्या, स्वस्थानदिग्द्वयगतस्य फलादिकस्य ।
एकोऽपरस्त्वभिमुखस्थितमध्यनासा, पर्यन्तभागयुतकेवलधिष्ण्यपस्य ॥२॥
वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे ।

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	ऌ	वृष	मिथुन	कर्क	ॡ	म	पू
रे	च	मेष	ओ	नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उ	द	मीन	रिक्ता	पूर्णा	भद्रा	कन्या	प	ह
पू	स	कुंभ	अः	जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

सामुखी मध्यचारे च ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥३॥
राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ ।
गतेरेकस्वभावत्वा-द्देया दृष्टित्रय सदा ॥४॥

सर्वतोभद्रचक्रमें जिस नक्षत्र पर ग्रह स्थित हो, उस नक्षत्र के स्थानसे ग्रह दृष्टि के अनुसार वाम (बायीं) दक्षिण तथा सम्मुख, एसे तीन प्रकार के वेध होते हैं अर्थात् ग्रह की दृष्टि जिस तरफ हो उस तरफ वेध होना है ॥१॥ ग्रहों का वेध गजेन्द्र के दांत का संस्थान की जैसे दो तरफ याने बायीं और दक्षिणके वेधमें राशि, अक्षर स्वर तिथि और नक्षत्र ये पांचों ही वेधे जाते हैं । किन्तु सम्मुख रही हुई नासिका का अग्रभाग की जैसे केवल सामने का एक नक्षत्र ही वेधा जाता है, एसा कईएक आचार्यों का मत

अथ नक्षत्रक्रमेण वस्तूना नामानि देशाश्च—

व्रीहिर्यवाश्च मणयो हीरका धातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतो मासा-नष्टयाम्यदिशोऽसुखम् ॥३५॥
रोहिण्यां सर्वधान्यानि सर्वे रसाश्च धातवः ।
जीर्णाः कम्बलकाः प्राच्या-मसुखं दिनसप्तकम् ॥३६॥
मृगशीर्षेऽश्वमहिषी गावो लाक्षादिकोद्रवः ।
खरा रत्नानि तूरी वोदक्पीडा षष्टिवासरान् ॥३७॥
आर्द्रायां तैललवणसर्वक्षाररसादयः ।
श्रीखण्डादिसुगन्धीनि मासं स्यात् पश्चिमाऽसुखम् ॥३८॥

तीनोंमें ग्रहवेध द्वारा जानना ॥३४॥ कृत्तिकाके वेधसे चावल, यव, मणि हीरा, धातु और तिल इन मे वेध होता है, तथा आठ महीने दक्षिण दिशा में दुःख होता है ॥ ३५ ॥ रोहिणी में वेध हो तो सब प्रकार के धान्य रस धातु और जीर्ण कम्बल इन में वेध हो, तथा पुर्व दिशा में सात दिन दुःख होता है ॥ ३६ ॥ मृगशीर्ष में वेध हो तो घोड़ा, भैंस, गौ, लाख, कोद्रव, गदहा, रत्न और तुवरी इन का वेध तथा उत्तरदिशामें साठ दिन पीडा हो ॥३७॥ आर्द्राके वेधसे तेल,लवण आदि सब प्रकार के क्षार, रस और चन्दन आदि सुगधित वस्तु का वेध तथा

है, इसके लिए नरपतिजयचर्या में सर्वतोभद्र की सस्कृत टीकामें भी कहा है कि—"ग्रह सव्यापसव्येन चक्षुषा वेधयेत् पुन । अक्षराक्षरस्वरादिस्तु सम्मुखेनान्त्यभ तथा" ॥ याने वार्गी या दक्षिण ओर दृष्टि होतो राशि, नक्षत्र स्वर, व्यञ्जन और तिथि इन पांचों का वेध होता है। किंतु सम्मुख दृष्टि हो तो अन्त्यका एक नक्षत्रका ही वेध होता है ॥२॥ भौमादि पाच (मगल बुध गुरु शुक्र और शनि) ग्रहों में से जो ग्रह वक्री हो उसकी दृष्टि दक्षिण ओर, शीघ्रगामी (अतिचारी) हो उसकी दृष्टि बायीं ओर और मध्यचारी हो उसकी दृष्टि सम्मुख होती है ॥३॥ राहु और केतु की सर्वदा वक्रगति तथा चन्द्रमा और सूर्य की सदा शीघ्रगति है, इसलिए इन चारों ग्रह की गति सर्वदा एक ही प्रकार होने से उनकी दृष्टि भी सर्वदा तीनों ओर होती है ॥४॥

पुनर्वस्वोः स्वर्णरूत कर्पासश्च युगन्धरी ।
कुसुम्भः श्यामकौशेय मासयुग्मोत्तराऽसुखम् ॥३९॥
पुष्ये स्वर्णघृतं रूप्यं शालिसौचलसर्षपाः ।
सर्जिकातैलहिंग्वादि याम्यपीडाष्टमासिकी ॥४०॥
आश्लेषायां च मञ्जिष्ठाऽऽर्द्रकगोधूमशुंठिकाः ।
मरिचकोद्रवाः शालि-र्मासिक पश्चिमासुखम् ॥४१॥
मघायां तिलतैलाज्य-प्रवालचणकातसीः ।
मुद्गाः कङ्गु दक्षिणस्यां विग्रहश्चाष्टमासिकः ॥४२॥
पूफायां कम्बलोर्णादि-युगन्धरी तिलास्तथा ।
रजकं वस्तुपल्याणं याम्यपीडाष्टमासिकी ॥४३॥
उफायां माषमुद्गाद्यं तन्दुलाः कोद्रवाः पुनः ।
सैन्धव लशुन सर्जिर्मासयुग्मोत्तरा व्यथा ॥४४॥
हस्ते श्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा ।
रक्तचन्दनकन्दाद्य मासयुग्मोत्तराऽसुखम् ॥४५॥

पश्चिमदिशामें एक महीना दुःख रहे ॥३८॥ पुनर्वसुके वे रसे सोना, रूई, कपास, जूआर, कुसुम और काला रेशमी वस्त्र का वेच तथा दो महीने उत्तर दिशा में अशुभ रहे ॥ ३९ ॥ पुष्यमें सोना, घी, चांदी, चावल, शोंचर लोन, सरसों, सज्जीखार, तेल, हिंग तथा आठ महीने दक्षिण दिशा में पीडा रहे ॥ ४० ॥ आश्लेषामें मँजीठ अदा गेहूं सोंठ मिर्च कोद्रवा और चावल तथा पश्चिममें एक मास दुःख रहे ॥४१॥ मघामें तिल, तेल, घी, प्रवाल(मूगा), चना, अलसी, मूंग, और कंगु तथा दक्षिण दिशामें आठ महीने विग्रह हो ॥४२॥ पूर्वाफाल्गुनीमें कम्बल, रेशमी वस्त्र, ज्वार, तिल, चांदी और दक्षिणदिशामें आठ महीने पीडा ॥ ४३ ॥ उत्तराफाल्गुनी में उडद मूंग चावल कोद्रव, सेंधव, लसुन, सज्जी, और उत्तर में दो महीने पीडा ॥ ४४ ॥ हस्तमें चंदन कपूर देवदार, अगर रक्तचन्दन कन्द आदि और

स्वर्णं रत्नं तु चित्रायां मुद्गमाषप्रवालकम् ।
अश्वादिवाहनं मास-द्वयं पीडोत्तरा दिशि ॥४६॥
स्वातौ पूगीमरिच सर्षपतैलादिराजिकाहिङ्गुः ।
खर्जूरादिकपीडा सप्तदिनान्युत्तरे देशे ॥४७॥
विशाखायां यवाः शालिगोधूमा मुद्गराजिका ।
मसूरान्नमकुष्ठाश्च याम्या पीडाष्टमासिकी ॥४८॥
राधायां तुवरीसर्वविदलान्नं च तन्दुलाः ।
मकुष्टकङ्गुचणकाः प्राक्पीडा दिनसप्तकम् ॥४९॥
ज्येष्ठायां गुग्गुल गुड लाक्षाकर्पूरपारदाः ।
हिङ्गुहिङ्गुलुकांस्यानि प्राकपीडा दिनसप्तकम् ॥५०॥
मूले श्वेतानि वस्तूनि रसा धान्यानि सैन्धवम् ।
कर्पासलवणाद्य च मासिकं पश्चिमासुखम् ॥५१॥
पूषायामञ्जनतुषधान्यघृतमूलजूर्णादिः ।
वेधय सशालिपश्चिमदिशि मासिकमशुभमन्यद्वा ॥५२॥

उत्तरमें दो महीने पीडा ॥४५॥ चित्रा में सोना, रत्न, मूंग, उडद, मूंगा, घोडा, आदि वाहन और दो महीने उत्तर दिशा मे पीडा ॥४६॥ स्वाति में सोपारी, मिर्च, सरसव, तैल, राई, हिंग खजूर आदि तथा उत्तर देश में सात दिन पीडा ॥ ४७ ॥ विशाखामे यव, चावल, गेहूँ, मूग, राई, मसुर, वनमूग तथा दक्षिण दिशामे आठ महीने पीडा ॥४८॥ अनुराधामें तुवरी आदि सब विदल अन्न, चावल, वनमूग, कगु, चने तथा पूर्वदिशाके देश में सात दिन पीडा रहें ॥४९॥ ज्येष्ठामे गुगल, गुड, लाख, कपूर, पारा, हिंग, हिंगलु और कासी इन में वेध तथा पूर्व दिशा में सात दिन पीडा रहें ॥५०॥ मूलमें सफेद वस्तु, रस, धान्य, सेंधव, कपास, लवणादि में वेध और पश्चिममें एक मास दुःख ॥५१॥ पूर्वाषाढा में अजन तुष धान्य घी कंदमूल, जूर्ण (चावल) आदिको वेधते है तथा पश्चिम दिशामें एक

उषायामश्ववृषभा गजलोहादिधातवः ।
सर्वं च सारवस्त्वाज्यं प्राग्व्यथादिनसप्तकम् ॥५३॥
द्राक्षाखर्जूरपूगैला मुद्गा जातिफलं हयाः ।
अभिजिद्वेधतः पूर्वा व्यथा वा दिनसप्तकम् ॥५४॥
श्रवणेऽखोडचारोलि पिप्पली पूगवायवम् ।
तुषधान्यानि वेध्यानि प्राक्शुभं सप्तवासरान् ॥५५॥
धनिष्ठायां स्वर्णरूप्य-धातवः सर्वनाणकम् ।
मणिमौक्तिकरत्नादि सप्ताह पूर्वतः शुभम् ॥५६॥
तैल कोद्रवमद्यादि धातकीपत्रमूलकम् ।
छल्लिः शतभिषग्वेध्य वारुण्यां मासिक शुभम् ॥५७॥
प्रियङ्गुमूलजात्यादि सर्वधान्यानि धातवः ।
सर्वौषधं देवदार्व्याम्यां पीडाऽष्टमासिकी ॥५८॥
पूर्वाभाद्रपदे वेध्यमथोभावेध्यमुच्यते ।

मास अशुभ रहे ॥ ५२ ॥ उत्तराषाढा में घोडा, बैल, हाथी, लोह आदि धातु सब सार वस्तु और घीको वेधते है, तथा पूर्व में सात दिन व्यथा हो ॥ ५३ ॥ अभिजित् का वेध से द्राक्ष खजूर सोपारी इलायची मूग जायफल और घोडा को वेधते हे तथा पूर्व देश के दश में सात दिन पीडा हो ॥ ५४ ॥ श्रवण में अखरोट चारोली पीपल सोपारी यव तुष धान्य इनको भी वेधन है और पूर्व में सात दिन शुभ रहे ॥५५॥ धनिष्ठामें सोना चांदी आदि धातु, सब प्रकार के द्रव्य, मणि मोती और रत्न आदिको वेधते है तथा पूर्व में सात दिन शुभ रहे ॥ ५६ ॥ शतभिषा में तेल कोद्रव मद्य आदि आवला के पत्र मूल और छिलका को वेधन है, तथा पश्चिम दिशा में एक मास शुभ रहे ॥ ५७ ॥ पूर्वाभाद्रपदा में यदि हो तो प्रियगु, मूल, जायफल सब प्रकार के धान्य तथा औषध, देवदार इनको वेधते है, तथा दक्षिण में आठ महीना पीडा रहे ॥ ५८ ॥ उत्तरा

गुडखण्डाः शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः ॥५९॥
घृतं मणिमौक्तिकानि वारुण्यां मासिकं शुभम् ।
पौष्णे श्रीफलपूगादि मौक्तिकं मणयोऽपि च ॥
बेडा क्रयाणकं सर्वं वारुण्यां मासिकं शुभम् ॥६०॥
अश्विन्यां व्रीहयो जूर्णा वेसरोष्ट्रघृतादिकम् ।
सर्वाणि धान्यवस्त्राणि मासद्वयोत्तरा व्यथा ॥६१॥
भरण्यां तुषधान्यानि युगन्धरी च वेध्यते ।
मरिचाद्यौषधं सर्वं याम्यां पीडाष्टमासिकी ॥६२॥
इति नक्षत्रवेधे शुभाशुभफलम् ।
अथार्घं सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
एकाशीतिपदे चक्रे ग्रहवेधे शुभाशुभम् ॥६३॥
देशः कालस्तथापण्यमिति त्रेधार्घनिर्णये ।
चिन्तनीयानि विद्धानि सर्वदैव विचक्षणैः ॥६४॥

भाद्रपदमें वेध हो तो गुड, खाड, सक्कर, खली, तिल, चावल, घी, मणि, मोती इनका वेध्र होता है तथा पश्चिम दिशा में एक महीने शुभ रहें ॥ ५९ ॥ रेवती नक्षत्र में वेध हो तो श्रीफल, सोपारी, मोती, मणि, वेडा, क्रयाणक, वस्तुको वेध होता है तथा पश्चिममें एक महीने शुभ रहे ॥६०॥ अश्विनी में चावल, जूर्णा, वेसर, ऊंट, घी सब प्रकार के धान्य तथा वस्त्र को वेध होता है और दो महीने उत्तर में पीडा हो ॥ ६१ ॥ भरणी में तुष धान्य, ज्वार, मिर्च आदि औषध इन सब को वेधते है तथा दक्षिण में आठ महीने पीडा रहें ॥६२॥

क्रय विक्रय पदार्थों के अर्घ (मूल्य) का निर्णय जैसा ब्रह्मयामल नामक ग्रंथ में ग्रह वेधद्वारा शुभाशुभ कहा है, वैसा इस इक्यासी पद वाला सर्वतोभद्रचक्र में कहता हूँ ॥ ६३ ॥ सर्वदा विचक्षण पुरुषों को अर्घ का निर्णय करने योग्य देश, काल और पण्य ये तीनों के वेध का

देशकालपण्यनिर्णय ---

देशोऽथ मण्डलं स्थानमिति देशस्त्रिधोच्यते ।
वर्षं मासो दिनं चेति त्रिधा कालोऽपि कथ्यते ॥६५॥
धातुर्मूलं तथा जीव इति पण्यं त्रिधामतम् ।
अस्य त्रिकं त्रयस्यापि वक्ष्यामि स्वामिखेचरान् ॥६६॥

देशादीना स्वामिज्ञानम्---

देशेशा राहुमन्देज्या मण्डलस्वामिनः पुनः ।
केतुसूर्यसिताः स्थाननाथाश्चन्द्रारचन्द्रजाः ॥६७॥
वर्षेशा राहुकेत्वार्किजीवा मासाधिपाः पुनः ।
भौमार्कज्ञसिता ज्ञेयाश्चन्द्र स्याद्दिवसाधिपः ॥६८॥
धात्वीशाः सौरिराह्वारा जीवेशा ज्ञेन्दुसूरयः ।
मूलेशाः केतुशुक्रार्का इति पण्याधिपाः ग्रहाः ॥६९॥
पुंग्रहा राहुकेत्वार्कजीवभूमिसुता मताः ।

विचार करना चाहिये ॥६४॥ देश, मंडल और स्थान, इन भेदोंसे देश तीन प्रकारका है । तथा वर्ष, मास और दिन, इन भेदोंसे काल भी तीन प्रकारका कहा है ॥ ६५ ॥ धातु, मूल और जीव इन भेदों में पण्य भी तीन प्रकार का माना है । तीन प्रकारके देश, तीन प्रकारके काल और तीन प्रकारके पण्य इन तीन त्रिकोंके स्वामी ग्रहको कहता हूँ ॥६६॥

देश का स्वामी- राहु, शनि और बृहस्पति हैं । मंडल का स्वामी—केतु सूर्य और शुक्र है । तथा स्थान का स्वामी—चंद्रमा, मंगल और बुध है ॥ ६७ ॥ वर्षके स्वामी राहु, केतु शनि और बृहस्पति हैं । महीने के स्वामी- मंगल सूर्य बुध और शुक्र है । तथा दिनका स्वामी चन्द्रमा है ॥ ६८ ॥ धातु के स्वामी- शनि, राहु और मंगल है । जीवके स्वामी बुध चन्द्रमा और बृहस्पति है । तथा मूल के स्वामी- केतु शुक्र और सूर्य है । ये पण्यके स्वामी ग्रह हैं ॥ ६९ ॥

स्त्रीग्रहौ सितशीतांशू सौरिसौम्यौ नपुंसकौ ॥७०॥
सितेन्दू सितवर्णेशौ रक्तेशौ भौमभास्करौ ।
पीतेशौ ज्ञगुरू कृष्णनाथाः केतुतमोऽर्कजाः ॥७१॥

बलवशात् स्वामिनिर्णयः —

ग्रहो वक्रोदयोच्चर्क्षे यो यदा स्याद् बलाधिकः ।
देशादीनां स एवैकः स्वामी ज्ञेयस्तदा मतः ॥७२॥

क्षेत्रबलम्—

स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोनं मित्रभे गृहे ।
अर्द्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहे स्थिते ॥७३॥

वक्रोदयबलम्—

वक्रोदयाहमानार्द्धे पूर्णवीर्यो ग्रहो भवेत् ।

राहु केतु सूर्य बृहस्पति और मंगल ये पुरुष संज्ञा वाले ग्रह हैं । शुक्र और चन्द्रमा ये दोनों स्त्री संज्ञक ग्रह हैं । तथा शनि और बुध ये दोनों नपुंसक संज्ञावाले ग्रह हैं ॥७०॥ श्वेत वर्ण के स्वामी— शुक्र और चन्द्रमा, रक्त वर्ण के स्वामी मंगल और सूर्य, पीत वर्ण के स्वामी बुध और गुरु, तथा कृष्ण वर्ण के स्वामी केतु राहु और शनि हैं ॥७१॥

ऊपर जो देश आदि के स्वामी ग्रह कहे हैं, इनमेंसे जो ग्रह, वक्र, उदय, उच्च और क्षेत्र इन चार प्रकार के बलोंमें से जो अधिक बलवाला हो, वही एक ग्रह उन देशादिक का स्वामी होता है अर्थात् जिस के दो तीन आदि ग्रह स्वामी होते हैं उनमें जो बलवान् हो वह स्वामी माना जाता है ॥७२॥

ग्रह अपनी राशि पर हो तो पूर्ण (चार पाद), मित्रकी राशि पर हो तो तीन पाद, सम ग्रहकी राशि पर हो तो आधा (दो पाद), और शत्रु ग्रहकी राशि पर हो तो एक पाद बल होता है ॥७३॥

८२ जितने दिन ग्रह वक्री या उदय रहें, इसका आधा समय बीत जाने

तदग्रपृष्ठगे खेटे बलं त्रैराशिकान् मतम् ॥७४॥

उच्चबलम्—

उच्चांशस्थे बलं पूर्णं नीचांशस्थे बलं खिलम् ।
त्रैराशिकवशाद् ज्ञेयमन्तरे तु बलं बुधैः ॥७५॥

स्वामिवशाद् वेधफलनिर्णय —

एवं देशाधिनाथा ये ते वेधकग्रह प्रति ।
सुहृदः शत्रवो मध्याश्चिन्तनीयाः प्रयत्नतः ॥७६॥
स्वमित्रसमशत्रूणां विध्यन् देशादिकं क्रमात् ।
दुष्टं दुष्टग्रहः कुर्यादेकद्वित्रिचतुष्पदे ॥७७॥
स्वमित्रसमशत्रूणां विध्यन् देशादिकं क्रमात् ।
शुभग्रहः शुभं दत्ते चतुस्त्रिद्व्येकपादजम् ॥७८॥

पर वक्री का या उदयका मध्य फल जानना, इस समय ग्रह पूर्ण बलवान् होता है । उस मध्य कालसे जितना आगे या पीछे रहे उतना न्यून बल त्रैराशिक गणितसे जानना ॥७४॥

ग्रह उच्च राशि मे परम उच्च अंश पर हो तो पूर्ण बल, तथा नीच राशि में परम नीच अंश पर हो तो बलहीन जानना, और इन दोनोंके बीच मे कहीं हो तो उसका बल विद्वानोंको त्रैराशिक गणितसे जानना चाहिये ॥७५॥

इसी तरह जो देश आदिके स्वामी ग्रह कहे हैं, व ग्रह अपने २ देश आदि को वेधने वाले ग्रह के प्रति मित्र शत्रु या सम इनमेंसे क्या है? इसका यत्न से विचार करें ॥ ७६ ॥ देश आदि का वेध करनेवाला ग्रह अशुभ हो तो क्रमसे अशुभ फल देता है । स्वामी स्वयं वेधकर्ता हो तो एक पाद, वेधकर्त्ता मित्रग्रह हो तो दो पाद, समान ग्रह हो तो तीन पाद, और शत्रु ग्रह हो तो पूर्ण फल करता है ॥ ७७ ॥ देश आदि का वेध करनेवाला ग्रह शुभ हो तो क्रमसे शुभ फल देता है । स्वामी स्वयं वेध

वेध्यं पूर्णदृशा पश्यनेतत्पादफलं ग्रहः ।
विद्धात्यन्यथा ज्ञेयं फलं दृष्ट्यनुमानतः ॥७९॥

वर्णाद्युपरि दृष्टिज्ञानम्--

वर्णादिस्वरराशीनां मेषाद्ये राशिमण्डले ।
ग्रहदृष्टिवशाद् दृष्टिवेधे वर्णादयो मताः ॥८०॥
स्वरवर्णान् स्वचक्रोक्तान् तिथिविद्धानि पीडयेत् ।
तिथिवर्णेषु यो राशिस्तद्दृष्टौ स्यान्निरीक्षणम् ॥८१॥
अशुभो वा शुभो वात्र शुक्ले विध्यन् तिथिग्रहः ।
सर्वं निजफलं दत्ते कृष्णपक्षे तदर्धता ॥८२॥
खेटस्य स्वांशके ज्ञेया पूर्णदृष्टिः सदा बुधैः ।
दृष्टिहीने पुनर्वेधे न स्यात् किञ्चिच्छुभाशुभम् ॥८३॥

कर्त्ता हो तो पूर्ण फल, वेध कर्ता मित्रग्रह हो तो तीन पाद, समान ग्रह हो तो दो पाद और शत्रुग्रह हो तो एक पाद फल करता है ॥ ७८ ॥ वेधकर्ता ग्रह यदि पूर्ण दृष्टिसे देखे तो उपरोक्त पाद क्रमसे जितना वेध फल कहा है उतना पूर्ण देता है, और पूर्ण दृष्टिमे न देखे तो दृष्टि के अनुसार फल देता है ॥७९॥

मेषादि द्वादश राशिचक्रमें वेधकर्ताकी दृष्टि जिस वर्ण स्वर आदिकी राशि पर हो तो वह दृष्टि उसके वर्ण स्वर आदिके पर भी मानी है ॥८०॥ सर्वतोभद्रचक्रमें स्वर और वर्णकी तिथिको वेध होनेसे वे स्वर और वर्ण भी वेधे जाते है, और उन तिथि वर्णों की राशि पर वेध हो तो उन तिथि स्वर और वर्णके पर भी दृष्टि होती है ॥८१॥ वेधकर्ता ग्रह चाहे अशुभ हो या शुभ हो परंतु तिथिको शुक्लपक्षमे वेधे तो पूर्वोक्त वेधफल जितना हो उतना पूर्ण फल देता है, और कृष्णपक्ष में वेधे तो आधा फल देता है ॥८२॥ अपने अंशोंमें ग्रहकी पूर्ण दृष्टि विद्वानों को जानना चाहिये । वेधकर्ता ग्रहकी दृष्टि न हो और केवल वेध ही हो तो कुछ भी शुभाशुभ

वेधद्वाराविश्वानिर्णय —

सौम्यः पूर्णदृशा पश्यन् विध्यन् वर्णादिपञ्चकम् ।
फलं विंशोपकान् पञ्च क्रूरस्तु चतुरो दिशेत् ॥८४॥
वर्णादिपञ्चके यावत् स्थानत्वे चैव यावता ।
दृष्टिस्तदनुमानेन वाच्यास्तत्र विंशोपकाः ॥८५॥
एवं विंशोपका यत्र संभवन्ति शुभाशुभाः ।
अन्योऽन्यशोधने तेषां फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥८६॥
वर्त्तमानार्घविंशांशाः कल्पा इह विंशोपकाः ।

नहीं होता ॥८३॥

यदि वेधकर्त्ता ग्रह वर्ण आदि पांचों को पूर्ण दृष्टि से देखे और वेधे तो शुभग्रह पांच विश्वा, और क्रूरग्रह चार विश्वा फल देते हैं ॥ ८४ ॥ वर्ण, स्वर, तिथि, नक्षत्र और राशि इन पांचोंमें वेधकर्त्ता ग्रह की जितने पाद दृष्टि हो उसके अनुसार ग्रहोंके विश्वा कहना चाहिये ॥ ८५ ॥ इस प्रकार जहां शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहोंके विश्वा प्राप्त हों, वहां उन दोनोंका परस्पर अन्तर करे, शेष बाकी शुभ ग्रहों के विश्वा रहे तो शुभ और क्रूर ग्रहोंके रहे तो अशुभ जानना ॥८६॥ जिस वस्तुका वेध द्वारा निर्णय करना हो उस वस्तु का वर्तमान में (अर्थात् जप मास तथा दिनमसे जिस समय निर्णय करना हो उसके * वर्ष प्रथम) जो भाव हो उसके बीस विश्वे यानि बीस भाग कल्पना करें इनमेंसे एक भाग तुल्य विश्वे मान कर पूर्वोक्त क्रमसे प्राप्त शेष विश्वा जो शुभग्रहोंके हों तो उस में मिला दें और क्रूरग्रहों के हों तो घटा दें। ऐसा करनेसे यदि भाव से जितने अधिक हों उतने विश्वा वस्तु मंहगी और जितने न्यून हों सस्ती

* वर्तमानस्य प्रथमम् भी वर्तमान मान का प्रथम ना मुख्य भाव हो उस ।। [illegible] पदना इत्यादि कहा है । यथा

“ वेधयो यत्र प्रधानोऽत्र स पराथार्थोऽत्र गृह्यते ।
प्रयत्न प्रतिम व्यापि प्रतिपत्ताय च नूतन ॥१॥

ते क्रमाद् वर्त्तमानार्घे देयाः पात्याः शुभाशुभे ॥८७॥
भूमिकम्परजोरक्तैर्वृष्टिर्निर्घातवर्जिते ।
देशे सर्वसुखोपेते वेधादर्घं वदेद् बुधैः ॥८८॥
इति सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथ सर्वविचारचक्रे बलाबलं पूर्वाचार्यैःकथित यथा—

शुक्रास्ते भाद्रमासे शुभभगणगते वाक्पतौ सौख्यहेतौ,
ज्येष्ठाद्याह्ने सुवारे शशिसितधिषणेपूदिते निश्यगस्त्ये ।
क्रूरे भूपादिवर्गे विघटिनि समये मङ्गले वक्रितेऽपि,
आषाढ्यां पूर्णधिष्ण्ये प्रहरवसुगते जायते दिव्यकालः ॥८९॥
भूपेऽमात्येऽन्ननाथे कुशलकृति रवेः संक्रमे बृहद्भे स्या-
दाषाढ्यां सौम्यपूर्वे प्रसरनि पवने दुर्दिनं सर्वयाम्याम् ।
रात्रावार्द्राप्रवेशो वृषभतनुगते सौम्ययुक्ते च सूर्ये,

विश्वा तजी जानना । याने वस्तुके विश्वे बढ़े तो वस्तुकी वृद्धि और मूल्य की हानि, तथा वस्तुके विश्वे घटे तो वस्तु की हानि और मूल्यकी वृद्धि होती है ॥ ८७ ॥ भूमि कम्प, रज तथा लोहों की वृष्टि, और उल्कापात इनसे रहित सब सुखवाले देशोंमें वेध द्वारा विद्वानोंको अर्घ (मूल्य-भाव) कहने चाहिये ॥८८॥

भाद्रमासमें शुक्र का अस्त हो, सुखके हेतुभूत बृहस्पति शुभ राशि पर हो, ज्येष्ठ शुक्लकी आदिमें अच्छे वारको चद्रमा और शुक्र के नक्षत्रों में रात्रि के समय अगस्ति का उदय हो, क्रूर ग्रह राजवर्ग में हो, सुन्दर समय हो और मगल वक्री हो, तथा आषाढ पूर्णिमा को आषाढी नक्षत्र आठ प्रहर पूर्ण हो तो दिव्य काल (शुभ वर्ष) होता है ॥ ८९ ॥ वर्षके राजा मन्त्री और धान्याधिपति ये शुभ हो, रवि की सक्राति बृहत् नक्षत्रमें हो, आषाढ पूर्णिमाको उत्तर तथा पूर्व दिशाका वायु चले, आठों ही प्रहर दुर्दिन रहें, रात्रिमें आर्द्रा प्रवेश हो, वृष लग्न मे स्थित सूर्य सौम्य ग्रह से

चिह्नैरेभिः सुकालो जगति शुभकरो वर्षणे कृत्तिकायाम् ।९०।
रात्रौ सङ्क्रान्तिरार्द्रायामप्यगस्त्योदयो यदा ।
तदा वर्षं सुभिक्षं स्याद् विपरीते विपर्ययः ॥९१॥ इति ।

अथ जलयोग —

अदृष्टौ न युतौ क्रूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगौ ।
जीवदृष्टौ विशेषेण महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥९२॥
ज्ञजीवावेकराशिस्थौ क्रूरदृष्टिविवर्जितौ ।
शुक्रदृष्टौ विशेषेण कुरुते वृष्टिमुत्तमाम् ॥९३॥
जीवशुक्रौ यदा युक्तौ क्रूरेणापि विलोकितौ ।
बुधदृष्टौ महावृष्टिं कुरुते जलयोगतः ॥९४॥
गुरुर्बुधो दानवेन्द्रा एकराशिगतं त्रयम् ।
अदृष्टं क्रूरखेचरैर्महावर्षाविधायिकम् ॥९५॥
यदा शुक्रश्च भौमश्च मन्दश्चैकत्र राशिगः ।

युक्त हो तथा कृत्तिकामे वर्षा हो, इत्यादि शुभ चिह्न हो तो जगत्मे सुकाल होता है ॥ ९० ॥ यदि रात्रि के समय सूर्यका आर्द्रा मे सङ्क्रान्ति हो और अगस्ति का उदय हो तो वर्ष में सुभिक्ष होता है और इससे विपरीत हो तो विपरीत याने दुष्काल होता है ॥९१॥

बुध और शुक्र ये दोनों एक राशि पर हो किन्तु क्रूर ग्रह साथ न हो तथा उनकी दृष्टि भी न हो और बृहस्पति की दृष्टि हो तो विशेष करके महा वर्षा होती है ॥९२॥ बुध और गुरु एक राशि पर हो और क्रूर ग्रह की दृष्टि से रहित हो किन्तु शुक्र की दृष्टि हो तो विशेष करके उत्तम वर्षा होता है ॥९३॥ बृहस्पति और शुक्र एक साथ हो और क्रूर ग्रह से देखे जाते हो तथा बुध की भी दृष्टि हो, ऐसा जलयोग महा वर्षा करता है ॥ ९४ ॥ गुरु बुध और शुक्र ये तीनों एक राशि पर हो और उन पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हो, तो महा वर्षा कारक होते हैं ॥ ९५ ॥

तदा वर्षति पर्जन्यो जीवदृष्टौ न संशयः ॥९६॥
शुक्रे चन्द्रसमायुक्ते भौमे वा चन्द्रसंयुते ।
उद्गन्धना दिशः सर्वाः जलयोगस्तदा महान् ॥९७॥
अग्रतो वा स्थिता सौम्याः क्रूराणां तु परस्परम् ।
ददते सलिलं भूरि न तोयं स्याद्विपर्यये ॥९८॥
एकराशिगतो जीवः सूर्येण सह वर्षति ।
यावन्नास्तमनं याति योगे नाम्भो ज्ञजीवयोः ॥९९॥
उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद् बुधः ।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्च सप्त वा ॥१००॥
कर्कटे तु प्रविशन्तं सूर्यं पश्येद् यदा गुरुः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तत्र काले महाजलम् ॥१०१॥
उदयेऽस्तंगमे चेत् स्याज्जीवदृष्टो यदा ग्रहः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तदा वर्षति नान्यथा ॥१०२॥

यदि शुक्र मगल और शनि ये तीनों एक राशि पर हो और उन पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मेघ बरसता है इसमें सशय नहीं ॥९६॥ शुक्र के साथ चद्रमा हो या मगलके साथ चद्रमा हो और समस्त दिशा वादल समेत हो तो महान् जलयोग होता है ॥ ९७ ॥ क्रूर ग्रहोंके आगे शुभ ग्रह स्थित हों तो जल बहुत बरसे और इससे विपरीत हो तो वर्षा न हो ॥ ९८ ॥ सूर्यके साथ एक राशि पर बृहस्पति हो तो वर्षा हो जब तक बुध और बृहस्पति अस्त न हो और यह योग रहें ॥ ९९ ॥ तथा बुध वक्री होकर शुक्रको त्यागे तब पाच या सात दिन वर्षा हो ॥ १०० ॥ यदि कर्कराशि में प्रवेश करता हुआ सूर्य को बृहस्पति पौन या पूर्ण दृष्टि से देखे तो महावर्षा हो ॥१०१॥ उदय और अस्त होते समय कोई भी ग्रह बृहस्पतिसे पौन या पूर्ण दृष्टिसे देखे जाय तो वर्षा हो अन्यथा न हो ॥१०२ ॥ सब मडलोंमें स्थित ग्रह पौन या पूर्ण दृष्टिसे बृहस्पति देखे

मण्डलेषु च सर्वेषु संक्रमान्ते यदा ग्रहः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा गुरुमन्ये जलावहम् ॥१०३॥
शनौ शुक्रेऽल्पवृष्टिः स्यान्न सस्यानि भवन्ति च ।
वक्रोत्तीर्णाः शुभाः क्रूरा जीवो वक्रगतः शुभः ॥१०४॥
अतिचारगताः क्रूराः स्वल्पवृष्टिप्रदायकाः ।
सौम्या यदा वक्रगतास्तदा वृष्टिविधायिनः ॥१०५॥
सिंहे कन्यायां तुलाया यास्यते च यदा गुरुः ।
एकाकीग्रहयुक्तो वा वर्षत्येव महाजलम् ॥१०६॥
शुक्रस्य यदि भौमेन यदि स्यात् समसप्तकम् ।
वृष्टिर्मासे तदा काले तथैव शनिजीवयोः ॥१०७॥
क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम् ।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीडा महत्यपि ॥१०८॥ इति ॥

अथ सूर्यचन्द्रकृतजलयोग —

रेवत्यादिचतुष्कं च रौद्र पञ्चकमेव च ।

पूषाचतुष्कं चन्द्रस्य भानीमानि तथोत्तरा ॥१०९॥
शेषाणि सूर्यऋक्षाणि फलमेषामिहोदितम् ।
सूर्ये सूर्ये महान् वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षणम् ॥११०॥
*सूर्यचन्द्रमसोर्योगो यदि स्याद् रात्रिसम्भवः ।
तदा महावृष्टियोगः कीर्त्तितोऽय पुरातनैः ॥१११॥

पुस्त्रीनपुंसकनक्षत्रयोग —-

भानि नार्यो दशार्द्रातः क्लीब त्रय द्विदैवतः ।
मूलाश्चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषाख्यानि कीर्त्तयेत् ॥११२॥
नरे नरे भवेत्तापो महातापो नपुंसके ।
स्त्रिया स्त्रिया महावातो वृष्टिः स्त्रीनरसङ्गमे ॥११३॥
एवं द्वारचतुष्टयी समुदिता प्रोक्ता पुनर्द्वादशे,

उत्तरा ये चन्द्रमाके नक्षत्र हैं ॥१०९॥ और बाकीके सूर्य नक्षत्र हैं। इनका फल सूर्यका नक्षत्रमें प्रवेशके समय विचारना— चद्र और सूर्यके दोनों नक्षत्र सूर्यके हो तो महावायु चले और दोनों नक्षत्र चद्रमाके हो तो वर्षा न हो॥११०॥ परन्तु सूर्य चद्रमा दोनोंके नक्षत्र हो तो प्राचीन लोगोंने बडा वृष्टियोग कहा है ॥१११॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्र स्त्रीसज्ञक है, विशाखा आदि तीन नक्षत्र नपुसक सज्ञक हैं और मूल आदि चौदह नक्षत्र पुरुष सज्ञक हैं ॥११२॥ सूर्यका नक्षत्रमें प्रवेश समय सूर्य और चद्रमा दोनों पुरुषसज्ञक नक्षत्रमें हो तो गरमी पडे, नपुसक सज्ञक नक्षत्र में हो तो महान् ताप (गरमी) पडे, स्त्रीसज्ञक नक्षत्र में हो तो महावायु चले तथा स्त्रीसज्ञक और पुरुष सज्ञक नक्षत्र में हो तो वर्षा हो ॥११३॥

---

*विशेष — बुध शुक्रसमीपस्थ करोत्येकार्णवा महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानु समुद्रमपि शोषयेत् ॥१॥

बुध और शुक्र पास २ हो तो बहुत वर्षा हो यदि इन दोनों के मध्यमें सूर्य हो तो समुद्र भी शुष्क होजाय अर्थात् वर्षा न हो।

वर्षे मेघमहोदयावगमने स्फारेऽधिकारे मया ।
सर्वस्मिन् रमति ध्रुव वरमतिर्यस्य प्रभाशालिनः,
शास्त्रेऽस्मिन्ननु तस्य वश्यमखिल जायेत भूमण्डलम् ।।११४

इति श्रीमेघमहोदयसाधने व०व०वे तपागच्छीयमहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वारचतुष्टयकथनो नाम द्वादशोऽधिकारः ॥

अथ शकुननिरूपणो नाम त्रयोदशोऽधिकारः ।

तत्र प्रथम पृच्छालग्नम्—

पृच्छालग्ने चतुर्थस्थौ शनिराहू यदा पुनः ।
दुर्भिक्षं च महाघोर तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत् ॥१॥
चतुर्णामपि केन्द्राणा मध्ये यत्र शुभा ग्रहाः ।
तस्यां दिशि च निष्पत्तिः सुभिक्ष च प्रजायते ॥२॥
यस्यां दिशि शनिर्दृष्टः क्रूरैः शत्रुग्रहस्थितः ।

इसी प्रकार मेघमहोदय का ज्ञान करानेवाला और प्रकार प्रथम द्वार चतुष्टय नाम का बारहवां अधिकार मैंने कहा, जिस प्रभावशाली की श्रेष्ठ बुद्धि इस सम्पूर्ण शास्त्र में रमती है उसको सम्पूर्ण भूमण्डल निश्चय से वशीभूत होता है ॥११४॥

सौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्यजैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टीकितो द्वारचतुष्टयनामा द्वादशोऽधिकारः ।

वर्ष के प्रश्नलग्न में चौथे स्थान में शनि और राहु हो तो उस वर्ष में महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥१॥ प्रश्न लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम इन चारों केन्द्र के मध्य में जहां शुभ ग्रह हो उस दिशा में धान्य प्राप्ति और सुभिक्ष हो ॥ २ ॥ क्रूर ग्रह के साथ या शत्रु ग्रह से दृष्ट शनि जिस दिशा।

दिशि तस्यां बुधैर्वाच्यं दुर्भिक्षत्वं न संशयः ॥३॥

*अथ वृष्टिपृच्छा —

सूर्यचन्द्रमसौ शुक्रशनी सप्तमगौ यदा ।
चतुस्थेऽथवा लग्नाद्द्वितीयौ वा तृतीयगौ ॥४॥
वृष्टियोगोऽयमेवं स्यात् सौम्या वा जलराशिगाः ।
शुक्लपक्षे द्वित्रिकेन्द्रगताश्चन्द्रोम्बुराशिगः ॥५॥
चतुर्थेश्चन्द्रशुक्रौ चेच्चन्द्रे वा लग्नवर्तिनि ।
महावृष्टिरनावृष्टिः क्रूरैस्तुर्ये विलग्नगैः ॥६॥
वृष्टिप्रश्नार्थशकुने श्यामगोघटदर्शने ।
स्त्रियां वा श्यामवस्त्रायां दृष्टायां वृष्टिमादिशेत् ॥७॥
पश्चाङ्गुलिस्पर्शनेऽपि यद्यङ्गुष्ठं जनः स्पृशेत् ।

हो उस दिशामे विद्वानोंको दुर्भिक्ष कहना चाहिये, इसमें संशय नहीं ॥३॥

सूर्य और चद्रमा अथवा शुक्र और शनि ये लग्नसे सप्तम, चतुर्थ, द्वितीय या तृतीय स्थानमें हो तो ॥ ४ ॥ यह वृष्टि योग होता है। शुभग्रह जलराशि में हो तथा शुक्लपक्ष में दूसरे तीसरे और केन्द्र स्थान में हो, चद्रमा जलराशिमें हो ॥५॥ चतुर्थमें चद्र शुक्र हो, चद्रमा लग्नमें हो, ये सब महा वर्षा करनेवाले योग हैं। यदि क्रूर ग्रह चतुर्थ और विलग्नमे हो तो अनावृष्टि हो ॥६॥

वृष्टिका प्रश्नके शकुनमे कृष्ण गौ या भरे हुए कृष्ण घडा का दर्शन, अथवा कृष्ण वस्त्रवाली स्त्रीका दर्शन हो तो वर्षाका होना कहना ॥ ७ ॥

---

*० टी— वर्षे प्रश्ने सलिलनिलय राशिमाश्रित्य चन्द्रो,लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रग शुक्लपक्षे। सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरसमुदक पापदृष्टोऽल्पमम्भ, प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि ॥ १ ॥ आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्सञ्ज्ञक वा, तोयासक्तो भवति तृषया तोयकार्योन्मुखो वा,प्रष्टा वाच्य सलिलमचिरादस्ति न सशयेन, पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्द ॥ २ ॥ इति वाराहसंहितायाम् ॥

तदा वृष्टिस्तु महती सावित्री स्पर्शनेऽल्पिका ॥८॥

अन्यच्च–दिणयाहिवस्स तडण पचमनवमे जलग्गहो जासिं।

लहुवरिसस्सइ मेहो दिननवसगपचमज्झम्मि ॥९॥

मंत्र–ॐ नट्ठट्ठमयठाणे पणट्ठकमट्ठनट्ठसंसारे। परमट्ठनिट्ठि अट्ठे अट्ठगुणाधीसर वंदे (स्वाहा)॥ अथवा–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं लक्ष्मी स्वाहा। अनेन मंत्रेणाभिमंत्र्य वस्तुधान्यादिकं तोलयित्वा ग्रन्थौ वद्ध्यते, रात्रौ शीर्षे मुच्यते, घटते चेद्वस्तु तदा महर्घं, वर्द्धते चेत्समर्घम्।

अक्षयतृतीयाविचार

अक्षयायां तृतीयाया मन्ध्याया मसधान्यम।

पुंजीकृत्य स्थापनीय पृथक् पृथक् तरोरधः ॥१०॥

यद्विस्तृत स्यात्तद्धान्य तदर्घं वहु जायते।

यत्पुंजरूप वा तिष्ठेनैव निष्पद्यते पुनः ॥११॥

अक्षयायां तृतीयायां प्रपूर्य स्थालमम्बुना ।
रविं विलोकयेन्मध्ये तत्स्वरूपं विमृश्यते ॥१२॥
रक्ते सूर्ये विग्रहः स्यान्नीले पीते महारुजः ।
श्वेते सुभिक्षं रजसा धूसरे तीडमूषकाः ॥१३॥
भिक्षुकानां च भिक्षाप्तिर्बहुला सा सुभिक्षकृत् ।
जलेऽधिके महावर्षा धान्ये वृद्धेऽतिसुस्थता ॥१४॥
पूर्णकुम्भोऽथवा स्थाप्यो मृत्पिण्डानां चतुष्टये ।
आषाढादिचतुर्मास्या पृथक् नाम्ना प्रतिष्ठिते ॥१५॥
कुम्भाद्गलजलेनार्द्रा यावन्तः पिण्डकामृदः ।
वृष्टिस्तावत्सु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम् ॥१६॥

अथ राखडी (रक्षाबंधपर्व) विचार —

श्रावण्यामथ राकायां रक्षापर्वणि वीक्षते ।
आगच्छद्गोधनं सायं तस्माद् या गौ पुरस्सरा ॥१७॥
तस्याश्चिह्नैर्वर्षबोधः शुभाशुभविनिश्चयात् ।

उत्पत्ति न्यून हो ॥ ११ ॥ अक्षय तृतीयाको एक थालीमें जल भर कर इसमें सूर्य को देखे और उसका स्वरूप विचारें ॥१२॥ सूर्य लाल दीखे तो विग्रह, नीला तथा पीला दीखे तो महा रोग, सफेद दीखे तो सुभिक्ष, मट्टी युक्त धूसर वर्ण दीखे तो टिड्डी चूहें आदि का उपद्रव हो ॥ १३ ॥ भिक्षुकों को भिक्षा की प्राप्ति अधिक हो तो वह सुभिक्षकारक जानना । जलकी अधिकता प्राप्त हो तो महावर्षा और धान्य की अधिकता हो तो बहुत सुख हो ॥१४॥ आषाढ आदि चार महीने का नामवाले माटी के चार पिंड (गोले) बनाकर उनके ऊपर जलसे पूर्ण घडेको रखे ॥१५॥ जितने पिंडकी माटी कुंभसे झरता हुआ जल से भीज जाय, उतने महीने में वर्षा हो और शुष्क पड़ी रहे उस महीने में वर्षा न हो ॥१६॥ रक्षा बन्धनका पर्व याने श्रावण शुक्ल पूर्णिमाके सध्या समय गोधन (गौ समुह) को आता

सा गौ सुरूपा सुशृङ्गा श्रेष्ठा द्रोणदुघामता ॥१८॥
तस्या पुच्छे च चमरे पट्टसूत्रस्य लाभकृत ।
वणिजां व्यवसायः स्यान्न पुच्छं कर्त्तित शुभम् ॥१९॥
गोर्दम्भने प्रजादुःख तत्पुच्छे राजविग्रहः ।
गोपेन ताड्यमानायां तस्या रोगाद् भयं भुवि ॥२०॥
निःशृङ्गायां गवि छत्रभङ्गः पुच्छे च वर्तिते ।
समादेश्य वर्षत्रक खण्डवृष्टिः पयोमुचा ॥२१॥
गोप्रवेशसमये सितो वृषो याति कृष्णपशुरेव वा पुरः ।
भूरि वारि सबलेन मध्यम नास्तितेऽम्बुपरि कल्पना परैः ॥२२॥
नामाङ्कितैर्हस्तिमृदादिकुम्भैः, प्रदक्षिणा श्रावणपर्वमासैः ।

पूर्णैः समासः सलिलेन पूर्णा, भग्नैः श्रुतैस्तैः परिकल्प्यमन्नैः ॥

अथ वार िसंहितायामाषाढ़ा ग्रिम विचार —

आषाढ्यां समतुलिताधिवासितानामन्ये द्युर्यदधिकतामुपैति बीजम् ।
तद्वृद्धिर्भवति न जायते यदूनं,
मंत्रोऽस्मिन् भवति तुलाभिमंत्रणार्थम् ॥२४॥
स्तोतव्या मंत्रयोगेन सत्या देवी सरस्वती ।
दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रता ह्यसि ॥२५॥
येन सत्येन चन्द्रार्कौ ग्रहा ज्योतिर्गणास्तथा ।
उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥२६॥
यत्सत्यं सर्वदेवेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु ।
यत्सत्यं त्रिषु लोकेषु तत्सत्यमिह दृश्यताम् ॥२७॥
ब्रह्मणो दुहितासि त्वं मदनेति प्रकीर्तिता ।

रह उस मास में वर्षा पूर्ण जानना और जो कलश टूट जाय, जल झरने लगे या जलसे न्यून हो जाय तो अल्प वर्षा जाननी ॥२३॥

उत्तराषाढा युक्त आषाढ पूर्णिमा के दिन सब प्रकार के धान्यों को बराबर तोलकर और पूर्वोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर रख दें, पीछे दूसरे दिन तोले जिस धान्य का बीज बढ जाय तो उस वर्ष में उसकी वृद्धि, और घट जाय उसकी हानि कहना। इस विधिमें नीचे तुलाभिमंत्रके लिये नीचे लिखा हुआ मंत्र पढ़ना ॥२४॥ सत्य कहनेवाली देवी सरस्वती की मंत्रपूर्वक स्तुति करनी चाहिये, हे देवी सरस्वति! आप सत्य व्रतवाली हैं, इसलिये जो सत्य है उसको दिखा दें ॥ २५ ॥ जिस सत्य के प्रभाव से चन्द्रमा, सूर्य ग्रह और ज्योतिर्गण ये सब पूर्वमें उदय होते हैं और पश्चिम में अस्त हो जाते हैं ॥ २६ ॥ सर्व देवोंमे ब्रह्मादियों में और त्रिलोकमें जो सत्य है वह यहां दीखे ॥२७॥ तू ब्रह्माकी पुत्री है और 'मदना' नाम

काश्यपीगोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला ॥२८

क्षौमं चतुःसूत्रकमन्नियद्धं,
षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्या. ।
सूत्रप्रमाणं च दशाङ्गुलानि,
षडेव कक्षोभयशिक्यमध्ये ॥२९॥
याम्ये शिक्ये काञ्चनं सन्निवेश्यं,
शेषद्रव्याण्युत्तरेऽस्त्र नि चैवम् ।
तोयैः कौप्यैः स्यन्दिभिः सारसैश्च,
वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च ॥३०॥
दन्तैर्नागा गोहयाद्याश्च लोम्ना,
भूपश्चाज्यैः सिक्थकेन द्विजाद्याः ।
तद्वद्देशा वर्षमासा दिनाश्च,
शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥३१॥

हैमी प्रधाना रजतेन मध्या,
तयोरलाभे खदिरेण कार्या ।
विद्धः पुमान् येन शरेण सा वा,
तुला प्रमाणेन भवेद्वितस्तिः ॥३२॥
हीनस्य नाशोऽभ्यधिकस्य वृद्धि-
स्तुल्येन तुल्यं तुलितं तुलायाम् ।
एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तं,
प्राजेशयोगेऽपि नरो विदध्यात् ॥३३॥
स्वातावषाढास्वपि रोहिणीषु,
पापग्रहा योगगता न शस्ताः ।
आषाढं तु योगद्वयमप्युपोष्य,
यदाधिमासो द्विगुणीकरोति ॥३४॥
त्रयोऽपि योगाः सदृशाः फलेन,
यदा तदा वाच्यमसंशयेन ।

देश, वर्ष, मास और दिन तथा शेष द्रव्य (धान्यादि) की वृद्धि हानि जाननी ॥ ३१ ॥ तराजूकी डाटी सुवर्णकी हो तो श्रेष्ठ, चांदीकी मध्यम है इन दोनोंमें से न हो तो खदिरकी लकड़ी की दण्डी बनानी चाहिये । जो शर (बाण)से पुरुष विंधे जाते हैं, उसी आकारकी और एक बित्ता याने बारह अंगुलके प्रमाण की दाडी बनानी चाहिये ॥ ३२ ॥ तराजूमें बराबर तोलने में जिसकी हानि उसका नाश और जिस की वृद्धि उसकी अधिकता जाननी । यह तुलाकोशका रहस्यको कहा । मनुष्य इसको रोहिणी के योगमें भी धारण करते हैं ॥३३॥ स्वाति आषाढी और रोहिणी, इन नक्षत्रोंमें पाप ग्रहका योग हो तो अच्छा नहीं । यदि आषाढ मास अधिक हो तो उस वर्षमें स्वाति और रोहिणीके योग में करना चाहिये ॥३४॥ ये तीनों योग समान फलदायक हो तो संदेह रहित शुभाशुभ फल कहना ।

विपर्यये यत्त्विह रोहिणीज-
फलात्तदेवाभ्यधिकं निगद्यम् ॥३५॥
इत्याषाढपूर्णायां तुलातुलितबीजशकुनम् ।

अथ कुसुमलताफलम् -

फलकुसुमसम्पवृद्धिं वनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम् ।
सुलभत्वं द्रव्याणां निष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥३६॥
शालेन कलमशाली रक्ताशोकेन रक्तशालिश्च ।
पाण्डूकः क्षीरिकया नीलाशोकेन शूकरिकः ॥३७॥
न्यग्रोधेन तु यवकस्तिन्दुकवृद्ध्या च षष्ठिको भवति ।
अश्वत्थेन ज्ञेया निष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥३८॥
जम्बूभिस्तिलमाषाः शिरीषवृद्ध्या च कङ्गुनिष्पत्तिः ।
गोधूमाश्च मधूकैर्यववृद्धिः सप्तपर्णेन ॥३९॥
अतिमुक्तककुन्दाभ्यां कर्पासः सर्षपान् वदेदशनैः ।
बदरीभिश्च कुलत्थांश्चिरबिल्वेनादिशेत् मुद्गान् ॥४०॥

अतसीवेतसपुष्पैः पलाशकुसुमैश्च कोद्रवा ज्ञेयाः ।
तिलकेन शंखमौक्तिकरजतान्यथा चेङ्गुदेन शणाः ॥४१॥
करिणश्च हस्तिकर्णैरादेश्या वाजिनोऽश्वकर्णेन ।
गावश्च पाटलाभिः कदलीभिरजाविकं भवति ॥४२॥
चम्पककुसुमैः कनकं विद्रुमसम्पच्च बन्धुजीवेन ।
कुरुबकवृद्धया वज्रं वैडूर्यं नन्दिकावर्त्तैः ॥४३॥
विन्द्याच्च सिन्दुवारेण मौक्तिकं कुंकुम कुसुम्भेन ।
रक्तोत्पलेन राजा मन्त्री नीलोत्पलेनोक्तः ॥४४॥
श्रेष्ठी सुवर्णपुष्पैः पद्मैर्विप्राः पुरोहिताः कुमुदैः ।
सौगन्धिकेन बलपतिरर्केण हिरण्यपरिवृद्धिः ॥४५॥
आम्रैः क्षेमं भल्लातकैर्भयं पीलुभिस्तथारोग्यम् ।
खदिरशमीभ्यां दुर्भिक्षमर्जुनैः शोभना वृष्टिः ॥ ४६ ॥
पिचुमन्दनागकुसुमैः सुभिक्षमथ मारुतः कपित्थेन ।

वेतस के पुष्पसे अलसी, पलास के पुष्पसे कोद्रव, तिलसे शंख मोती तथा चांदी और इगुदी की वृद्धिसे कुष्टा की वृद्धि हो ॥ ४१ ॥ हस्तिकर्ण वनस्पति की वृद्धिसे हाथियों की, अश्वकर्णसे घोडे की, पाटलसे गौ की और कदली की वृद्धिसे बकरी तथा मेढे का वृद्धि होती है ॥ ४२ ॥ चपाके फूलों से सुवर्ण, दुपहरिया की वृद्धिसे मूंगा, कुरुबक की वृद्धिसे वज्र, नदिकावर्त्त की वृद्धिसे वैडूर्य की वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥ सिंदुवारकी वृद्धिसे मोती, कुसुभ से कुकुम, लालकमलसे राजा और नीलकमलसे मंत्री का उदय होता है ॥४४॥ सुवर्णपुष्पसे सेठ (वणिक), कमलोंसे ब्राह्मण, कुमुदोंसे राजपुरोहित, सौगंधिक द्रव्यसे सेनापति, और आक की वृद्धि से सुवर्ण की वृद्धि होती है ॥ ४५ ॥ आमकी वृद्धि से कल्याण, भिलावें से भय, पीलुसे आरोग्य, खैर और शमी से दुर्भिक्ष, और अर्जुन से अच्छी वर्षा, इनकी वृद्धि हो ॥ ४६ ॥ पिचुमद और नागकेसर से सुभिक्ष, कैथ से वायु, निचुल से

निचुलेनावृष्टिस्यं व्याधिभयं भवति कुटजेन ॥ ४७ ॥
दूर्वाकुशकुसुमाभ्यामिक्षुर्वह्निश्च कोविदारेण ।
श्यामालताभिवृद्ध्या बन्धक्यो वृद्धिमायान्ति ॥ ४८ ॥
यस्मिन् देशे स्निग्धनिश्छिद्रपत्राः,
सन्दृश्यन्ते वृक्षगुल्मा लताश्च ।
तस्मिन् वृष्टिः शोभना सम्प्रदिष्टा,
रूक्षैरल्पैरल्पमम्भःप्रदिष्टम् ॥ ४९ ॥
इतिकुसुमैर्धान्यादिनिष्पत्तिलक्षणं वाराहसंहितायाम् ॥

लोके पुनरेवम्-

आके गेहूं नींब तिल, बोरि फले पलास ।
कंयेरी फली नहीं, मुगा वेगी आस ॥ ५० ॥

पाठन्तर- आके गेहू कयरतिल, कदालीये कपास ।
सर्व वसुधर नीपजे, जो निहं टिमि फले पलास॥५१॥

अथ वृक्षस्पष्म --

राष्ट्रविभेदस्त्वनृतौ बालवधूर्ताव कुसुमिते बाले ।

वृक्षात् क्षीरस्रावे सर्वद्रव्यक्षयो भवति ॥ ५२ ॥ इति ॥

अथ काकाण्डानि ।

द्वित्रिचतुःशावत्वं सुभिक्षं पञ्चभिर्नृपान्यत्वम् ।
अण्डावकिरणमेकानुजा प्रसूतिश्च न शिवाय ॥५३॥
क्षारकवर्णैश्चौराश्चित्रैर्मृत्युः सितैश्च वह्निभयम् ।
विकलैर्दुर्भिक्षभयं काकानां निर्दिशेच्छिशुभिः ॥५४॥

अथ टिट्टिभाण्डानि ।

"चत्वारि टिट्टिभाण्डानि मासाश्चत्वार आहिता ।
अधोमुखाण्डमासे स्याद् वृष्टिर्नोर्ध्वमुखाण्डके ॥५५॥
जलप्रवाहेऽप्यण्डानां मुक्तिर्वृष्टिनिरोधिनी ।
उच्चभागे टिट्टिभाण्डमुक्त्या मेघमहोदयः" ॥५६॥

रुद्रदेवस्तु– काकस्याण्डानि चत्वारि वारुणं प्रथमं स्मृतम् ।

यदि नालवृक्ष (नालियर) में वालवधूटी की जैसे विना ऋतुके फूल आजाय तो देशमें विभेद हो तथा वृक्षसे दूध स्रवे तो सब द्रव्यों का क्षय हो ॥ ५२ ॥

कौवें के दो तीन या चार बच्चे हों तो सुभिक्ष, पाच हों तो दूसरा राजा हो, एक अंडा ही प्रसवे तो अशुभ होता है ॥ ५३ ॥ क्षारवर्ण के अंडेसे चोर भय, चित्रवर्णसे मृत्यु, सफेदसे अग्नि भय, और विकलवर्णसे दुर्भिक्ष इत्यादि कौएँ के बच्चोंके वर्ण परसे शुभाशुभ जानना ॥ ५४ ॥

टिटहरी के चार अंडे परसे आषाढादि चार महीने कल्पना करें, जितने अण्डे अधोमुख हो उतने महीने वर्षा और ऊर्ध्वमुख वाले अण्डे हो तो वर्षा न हो ॥ ५५ ॥ टिटहरी जल प्रवाह (नदी तालाव आदि जलाशय) में अण्डे रक्खे तो वृष्टिका रोध हो और ऊंची भूमि पर रक्खे तो वर्षा अच्छी हो ॥ ५६ ॥

कौवे के चार प्रकार के अण्डे माने हैं–प्रथम वारुण, दूसरा आग्नेय,

तथा द्वितीयमाग्नेय वायवीयं तृतीयकम् ॥
*चतुर्थं भूमिज प्रोक्तमेषां फलमथोदितम् ॥५७॥

षट्पदी—क्षेम सुभिक्षं सुखिता च धात्री,
स्याद्भूमिजेऽण्डेऽभिमता च वृष्टि ।
पृथ्वी तथा नन्दति सस्यमान्यं,
वर्षाविशेषेण जलाण्डजे स्यात् ॥५८॥
जातानि धान्यानि समीरजाण्डे,
खादन्ति कीटाः शलभाः शुकाश्च ।
दुर्भिक्षमण्डेऽग्निभवे निवेश्य,
जानीहि मासान् चतुरोऽपि चाण्डे ॥५९॥

॥ इति काकाण्डफलम् ॥

काकालयः प्राग्दिशि भूरुहस्य,
सुभिक्षकृत् स्वल्पघनस्तथाग्नौ ।

मासद्वयं वृष्टिकरो ह्यपाच्यां
ततो न वृष्टिर्हिमपात एव ॥ ६० ॥
मासद्वयेऽतीव घनः प्रतीच्यां,
निष्पत्तिरन्नस्य तदोच्चभूम्याम् ।
ततोऽप्यवृष्टिर्यदि वाल्पवर्षा,
स वातवृष्टिः पवनस्य कोणे ॥ ६१ ॥
पूर्वं न वृष्टिर्निर्ऋतौ पयोदाः,
पश्चाद् घना लोकसरोगता च ।
स्यादुत्तरस्यां भवने सुभिक्ष-
मीशानभागेऽपि सुखं सुभिक्षम् ॥६२॥
गार्गीयसंहितायां तु—
वृक्षाग्रे तु महावर्षा वृक्षमध्ये तु मध्यमा ।
अधःस्थाने नैव वर्षा वृक्षे काकालयाद् वदेत् ॥६३॥
वृक्षकोटरके गेहे प्राकारे काकमालके ।
दुर्भिक्षं विग्रहो राज्ञां याम्यां छत्रस्य पातनम् ॥६४॥

दक्षिणमें बनावे तो दो महीना वर्षा हो और पीछे वर्षा न हो किंतु हिम पात हो ॥६०॥ पश्चिम दिशा में बनावे तो दो महीने बहुत वर्षा हो तब ऊंची भूमिमें धान्यकी उत्पत्ति अच्छी हो, और पीछे दो महीने वर्षा न हो या थोड़ी वर्षा हो । वायु कोण में बनावे तो वायु के साथ वर्षा हो ॥ ६१ ॥ नैर्ऋत्य कोणमें बनावे तो पहले वर्षा न हो पीछे बहुत वर्षा हो और लोकमें रोग हो । कौआ अपना घोंसला उत्तर दिशा में बनावे तो सुभिक्ष होता है । ईशान कोणमें बनावे तो भी सुभिक्ष और सुख हो ॥६२॥

कौवा अपना घोंसला वृक्ष उपरके अग्र भागमें बनावे तो महा वर्षा, मध्य भागमें बनावे तो मध्यम वर्षा और नीचेके भाग में बनावे तो वर्षा न हो ॥६३॥ कौओंका घोंसला वृक्षके कोटर (खोंखला) घर और किला में

नदीतीरे काकगृहे मेघप्रश्ने न वर्षणम् ।
पक्षौ विधूनयन् काको वृक्षाग्रे शीघ्रमेघकृत् ॥६५॥
विना भक्ष्य काकदृष्टो दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ।
पीत्वा जलं शिरःपक्षौ धुन्वन काको जलं वदेत् ॥६६॥
वर्षा काले महावृष्टिः शीतकाले च दुर्दिनम् ।
उष्णकाले महाविघ्न काकस्थानाद् विनिर्दिशेत् ॥६७॥
वह्निस्थाने च पाषाणे पर्वते शिखरे तरोः ।
भूमौ ग्रामे च नगरे काकस्थानात् फल स्मृतम् ॥६८॥
वृक्षस्य पूर्वशाखायां वायसः कुरुते गृहम् ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं मेघश्चैव प्रवर्षति ॥६९॥
आग्नेयां वृक्षशाखायां निलय कुरुते यदि ।
अल्पोदकास्तथा मेघा ध्रुवं तत्र न वर्षति ॥७०॥
दक्षिणस्यां दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम् ।

द्वौ मासौ वर्षते मेघस्तुषारेण ततः परम् ॥७१॥
नैर्ऋत्या च दिशो भागे निलयं कुरुते खगः।
आद्या नास्ति तदा वृष्टिः पश्चादेषा प्रवर्षति ॥७२॥
पश्चिमे च दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
वातवृष्टिः सदा तत्र अल्पवृष्टिश्च जायते ॥७३॥
उत्तरस्या दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
अल्पोदकं विजानीयाद् राजा कश्चिद्विरुध्यते ॥७४॥
ईशाने तु दिशो भागे वायसः कुरुते गृहम्।
बहुसस्यानि जायन्ते सुभिक्षं क्षेममेव च ॥ ७५ ॥
अर्द्धभागे तु वृक्षस्य वायसः कुरुते गृहम्।
अर्द्धा तु सस्यनिष्पत्तिरधमो वर्षते तदा ॥७६॥
प्राकारे कोटरे वापि वायसानां समागमः।
विग्रहं तु विजानियाद् राजस्थानं विनश्यति ॥७७॥
गृहेषु गृहशालायां करोति निलयं यदा।
दुर्भिक्षं तु विजानीयान्महा द्वादशवार्षिकम् ॥७८॥

करें तो दो महीना वर्षा हो और पीछे हिमपात हो ॥७१॥ नैर्ऋत्य दिशा में घोंसला बनावे तो प्रथम वर्षा न हो और पीछे वर्षा हो ॥ ७२ ॥ पश्चिम दिशा में कौवे घोंसले करें तो हमेशा वायु युक्त थोड़ी वर्षा हो ॥ ७३॥ उत्तर दिशामें घोंसला बनावे तो जल थोड़ा बरसे और कोई राजा विरोध करें ॥७४॥ ईशान दिशामें घोंसला करे तो धान्य बहुत हो, तथा सुभिक्ष और कल्याण हो ॥७५॥ कौवा वृक्षका आधा भागमें घोंसला करे तो धान्य प्राप्ति मध्यम हो तथा वर्षा अच्छी न हो ॥७६॥ प्राकार (कोट) या वृक्ष की कोटरमें कौवेका समागम हो तो विग्रह जानना, तथा राजस्थान का विनाश हो ॥७७॥ घरोंमें या घरशालामें कौवे का स्थान हो तो बड़ा बारह वर्षका दुर्भिक्ष जानना ॥७८॥ भूमि पर घोंसला करे तो गाँव और

ग्राममण्डलनाशं च भूम्या च कुरुते गृहम् ।
विग्रहं तु विजानीयाच्छून्य तु मण्डलं भवेत् ॥७९॥
कपिलानां शतं हत्वा ब्राह्मणानां शतद्वयम् ।
तत्पापं परिगृह्णामि यदि मिथ्या बलि हरेत ॥८०॥
शाल्योदनेन साज्येन कृत्वा पिण्डत्रयं बुधः ।
संमार्जिते शुभे स्थाने स्थापयेन्मन्त्रपूर्वकम् ॥८१॥
आह्वानकरमन्त्रेण आह्वयाद्बलिभोजनम् ।
स्थाप्यं स्थापनमन्त्रेण पिण्डत्रयमिदं क्रमात् ॥८२॥

आह्वानमन्त्रो यथा—ॐ तुण्डब्रह्मणे सुराय असुरेन्द्राय एहि एहि हिरण्यपुण्डरीकाय स्वाहाः । पिण्डाभिमन्त्रणं यथा— ॐ निरिटि मिरिटि काकपिण्डालये स्वाहाः ॥

देशकालपरीक्षार्थं वृषभ चाद्यपिण्डके ।
द्वितीये तुरगं न्यस्य तृतीये हस्तिनं क्रमात ॥८३॥
वृषभे चोत्तमकालो मध्यमश्च तुरङ्गमे ।
हस्तिपिण्डेन जानीयान्महान्नं राजचिह्नकम् ॥८४॥

वर्षाज्ञानाय संस्थाप्यं प्रथमे पिण्डके जलम् ।
द्वितीये मृत्तिका स्थाप्या तृतीयेऽङ्गारकः पुनः ॥८५॥
शीघ्रं वर्षति पानीये (पर्जन्यो) मृत्तिकायास्तु पिण्डके ।
यत्नान्तेन तु वृष्टिः स्यादङ्गारे नास्ति वर्षणम् ॥८६॥

अथ गौ[illegible] ॥

ॐ नमो भगवओ गोयमसामिस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अ-
क्खीणमहाणसस्स भगवन्! भास्करीयं श्रियं आनय २ पूरय २
स्वाहा ।

आश्विनस्य चतुर्दश्यां मन्त्रोऽयं जप्यते निशि ।
सहस्रमेकं तपसा धूपोत्क्षेपपुरस्सरम् ॥८७॥
प्रातः पूर्णादिने शुभे लेख्ये गौतमपात्रके ।
मज्जना सुरभिद्रव्यैरर्चनीये शुभाशिना ॥८८॥
तत्पात्रे पात्रके लेख्ये वस्त्रेणाच्छाद्यते च तत् ।
मार्जारदर्शनं वर्ज्यं यावता क्रियते विधिः ॥८९॥
समये पात्रकं लात्वा भिक्षार्थं गम्यते गृहे ।

दातुमिच्छेभ्यश्चान्नस्य यत्प्रास तद्विचार्यते ॥९०॥
सधवा सतनुजा स्त्री भिक्षादात्री शुभाय या ।
यद्वस्तु प्राप्यते धान्यं तन्निष्पत्तिः पुरो भवेत ॥९१॥
नास्ति वेलेत्युत्तरगा दुर्भिक्ष भाविवत्सरे ।
विलम्बदाने मेघोऽपि विलम्बेनैव वर्षति ॥९२॥
तत्र क्लेशदर्शनेन राजविग्रहमादिशेत ।
भङ्गे पात्रस्य भाण्डस्य छत्रभङ्गो विचार्यते ॥९३॥
व्यग्रा वा रुदती दत्ते तदा रोगाद्युपद्रवाः ।
गोतमीयमिदं ज्ञानं न वाच्यं यत्र कुत्रचित ॥९४॥
उपश्रुतिम्नस्तिर्वा वर्षबोधे विचार्यते ।
लोको वदति यद्वाक्यं ज्ञेयं तस्माच्छुभाशुभम ॥९५॥

इति गौतमीयज्ञानम ।

इत्येवं शकुन विचार्य सुधिया वाच्यं फलं वार्षिकं
यस्योद्दो रतनो भवेत भुवि वत्न सर्वोर्थसंसाधनम ।

राजन्यैरपि मान्यते स निपुणः प्रोल्लासि भास्वद्गुणः,
शास्त्रं यन्मनसि स्फुरत्यतिशयाच्छ्रीवर्षबोधाह्वयम् ।९६।
त्रयोदशोऽधिकारोऽभूच्छास्त्रेऽस्मिन् शकुनाश्रयः ।
तदेकविंशतिद्वारैर्ग्रन्थोऽलभत पूर्णताम् ॥९७॥
स्थानाङ्गसूत्रविषयीकृतवर्षबोध-
ज्ञानाय यत्प्रकरणं विहितं वितत्य ।
भक्त्या प्रदीपि जिनदर्शनमेव तेन,
लोकः सुखी भवतु शाश्वतबोधलक्ष्म्या ॥९८॥

ग्रन्थकार-प्रशस्ति —

श्रीमत्तपागणविभुः प्रसरत्प्रभावः,
प्रद्योतते विजयतः प्रभनामसूरिः ।
तत्पट्टपद्मतरणिर्विजयादिरत्नः,
स्वामी गणस्य महसा विजितशुरत्नः ॥९९॥

चाहिये । जिसका उद्बोधन (विकाश) से पृथ्वी पर सर्व अर्थोका साधन रूप बहुत धन प्राप्त होता है और जिसके मनमें श्रीवर्षप्रबोध (मेघमहोदय) नामका शास्त्र स्फुरायमान है ऐसा प्रकाशवाले गुणोंसे निपुण पुरुष राजाओं को भी माननीय होता है ॥९६॥ इस ग्रन्थमें यह शकुननिरूपण नाम का तेरहवा अधिकार है और इक्कीश द्वारोंमे यह ग्रन्थ पूर्णताको प्राप्त होता है ॥ ९७ ॥ स्थानांगसूत्र का विषयीभूत ऐसा वर्षबोध का ज्ञानके लिये जो प्रकरण मैंने रचा है उसको भक्तिसे फैला करके जो जैन दर्शनको दीपावे वह शाश्वतज्ञानरूप लक्ष्मीसे सुखी हो ॥९८॥

जिनका प्रभाव फैल रहा है ऐसे श्रीमान् तपागच्छ के नायक 'श्री विजयप्रभसूरि' नामके आचार्य दीप रहे थे, उनके पट्टरूप कमलको विकाश करने में सूर्य समान और अपने तेज से जीत लिया है सूर्य का जिन्होंने ऐसे 'श्री विजयरत्नसूरि' नामके आचार्य हुए ॥ ९९ ॥ विश्वको प्रकाशित

तच्छासने जयति विश्वविभासनेऽभूद्
विद्वान् कृपादिविजयो दिवि जन्मसैन्यः ।
शिष्योऽस्य मेघविजयाह्वयवाचकोऽसौ,
ग्रन्थः कृतः सुकृतलाभकृतेऽत्र तेन ॥१००॥
क्वचित्प्राच्यैर्वाक्यैरतिशयरमानश्लोककथनैः,
क्वचिल्लब्धैः ग्रन्थैः प्रकरणमनेनैतद्रचितम् ।
सतां प्रामाण्याय क्वचिदुचितलोकोक्तिरुचित,
जिनश्रद्धाभाजामपि चतुरराजां समुचितम् ॥१०१॥
अनुष्टुभां सहस्राणि त्रीणि सार्द्धानि मानतः ।
ग्रन्थोऽयं वर्द्धतां तावद्यावन्मेरुः प्रवर्त्तताम् ॥१०२॥
यत्पुनरुक्तमयुक्तं दुरुक्तमिह तद्विशोधितु युक्तम् ।
वक्तान्वलिनेति मयाऽभ्यर्थ्यन्ते सकलगीतार्थाः ॥१०३॥
मेघविजयकृद्वर्षबोधल्या मेघवल्लिया ।

भक्त्या मे रोचित. शिष्यः श्रीमेरुविजयः कविः ॥१०४॥
भाविवत्सरबोधाय तस्य बालस्य शालिनः ।
कुरुतां गुरुतां ग्रन्थो हिताद् बालस्य पालनात् ॥१०५॥
इतिश्रीतपागच्छीयमहोपाध्यायश्रीमेघविजयगणिविरचिते
वर्षप्रबोधे मेघमहोदयसाधने शकुननिरूपणो,
नाम त्रयोदशोऽधिकारः ॥

योग्य धैर्यसे भी अलघनीय है तथा जिन की बुद्धि मेरु की तरह अचल है ऐसे शिष्य 'श्रीमेरुविजय' नामके कवि भक्तिसे मेरेको रूचे हुए हैं ॥१०४॥ शोभनेवाले बालकको भावि वर्षका बोधके लिये बालक का पालन करके यह ग्रंथ गुरुता को करो ॥१०५॥

मेघमहोदयाभिधो ग्रन्थोऽयमनुवादित ।
चन्द्रेष्वब्धिद्वये वर्षे वीरजिननिर्वाणात ॥१॥

इति श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुरनिवासिना पण्डितभगवानदासाख्य जैनेन विरचितया मेघमहोदये बालावबोधिन्याऽऽर्यभाषया टिकित शकुननिरूपणो नाम त्रयोदशोऽधिकार ।

अवशिष्ट टीप्पणियें।

पृष्ठ-६३, श्लोक-१०९—

दक्षिणवायुरपि ज्ञापक स्यात् स्थापकत्वे विकल्प ।

पृष्ठ-८३, श्लोक-२३ की नीचे का गद्य—

त्रि ३ षट् ६ द्वि २ बाण ५ भू १ सिन्धु ४ शून्यानि स्यु पुन पुन
क्रमात् सप्तवर्षेषु तेनेद न्यभिचारमाक् ।

पृष्ठ-२३९ अत्रोच्यते—

'चैत्रे मेघमहारम्भ' इत्युक्तेर्महावृष्टिनिषेधपरत्वात् । एव चैत्रोऽय बहुरूप इत्यादि वाताधिकारोक्त सत्यायित्तम्,

पृष्ठ-२५० का गद्य—

सूत्रे 'उक्कोसेण जाव छ मासस्स' न रूपगर्भपर तस्यैव पञ्चोन-

युक्तस्तस्य पञ्चदशभिर्भागे शेषाङ्को व्यय स्यादित्यर्थः ।
राशिद्वादशकस्यायो व्ययाङ्कोऽपि च योज्यते ।
आयेऽधिके सुभिक्षं स्याद् दुर्भिक्षमधिके व्यये ॥७॥
चतुर्गुणीकृत्य स्वलग्नमायं मासैर्हृते स्यादिह मासिकायः ।
एवं हि मर्योऽस्य दिनं विदध्याद् आयव्ययः स्यादिति सङ्क्रमादेः ॥८॥
विक्रमाङ्कः शकस्याङ्क-युक्तो द्विघ्नो विभाज्य च ।
सप्तभिस्तत्र यच्छेषं तस्मात् फलमुदीर्यते ॥९॥
एके षट्के च दुर्भिक्षं सुभिक्षं भुजवेदयोः ।
समता रामशरयोः शून्ये रौरवमादिशेत् ॥१०॥
क्वचित्संवत्सरं शाकं मीलयेत् त्रिगुणोऽधमः ।
पञ्चनामयुतः सप्त-विभक्तोऽस्य फलं क्रमात् ॥११॥
सुभिक्षं भुजवेदाभ्यां दुर्भिक्षं तु त्रिपञ्चके ।
शून्ये षट्के रौरवं स्याद एकेन समता मता ॥१२॥

आय अधिक हो तो सुकाल और व्यय अधिक होना दुष्काल जानना ॥ ७ ॥ जो वर्ष की आय है उसको और लग्नाङ्क को मिलाकर चार गुणा करना, इसमें बारह से भाग देने से जो शेष रहे वह मासिक आय है । इस तरह मासिक आय को तीस से भाग देने से दिन की आय हो जाता है। यह सक्रान्ति के दिन से आय व्यय का विचार करना ॥ ८ ॥ विक्रमसंवत्सर और शालिवाहन का शकसंवत्सर ये दोनों मिलाकर द्विगुणा करना, इसमें सात का भाग देना, जो शेष बचै उसका फल कहना ॥ ९ ॥ एक या छ बचै तो दुष्काल, दो या चार बचै तो सुकाल, तीन या पाच बचै तो समान (मध्यम) और शून्य शेष बचै तो रौरव (भयकारक दुःख) हो ॥ १० ॥ दूसरा पाठान्तर —संवत्सर और शक को मिलाकर त्रिगुणा करना उसमें पाच नाम मिलाकर सात से भाग देना जो शेष बचै उसका फल कहना ॥ ११ ॥ शेष दो या चार हो तो सुकाल, तीन या पाच हो तो दुष्काल, शून्य या छ हो तो रौरव

पाठान्तरे–संवत्सरसमायुक्ता-स्त्रिगुणाः पञ्चभिर्युताः
सप्तभिस्तु हरेद्भाग शेष वर्षफलं मतम् ॥१३॥

अत्रापि संवत्सरशब्देन शाकसंवत्सर एव ग्राह्यः स चा-षाढादिरेव, य आषाढे संवत्सरो लगति स शाकसवत्सरो ग-ण्यते इत्यर्थः। उदाहरण यथा–संवत् १६८७ वर्षे आषाढादि शकसंवत्सरः १५५२ ततः पञ्चदश त्रिगुणीकरणे जातं पञ्चच-त्वारिंशद् ४५, द्विपञ्चाशतस्त्रिगुणीकरणे जातं षट्पञ्चाशदु-त्तरं शत १५६, तस्मिन् पञ्चचत्वारिंशद् योगे जातं २०१ तत्र पञ्चमीलने २०६ सप्तभिर्भागे शेष त्रयम्। ततो 'दुर्भिक्षं तु त्रिपञ्चके' इतिवचनात् सप्ताशीतिके दुष्काल इति।

अत्र पाठान्तराणि बहूनि यथा—

शाकं च त्रिगुणं कृत्वा सप्तभिर्भागमाहरेत्।
शेषं च द्विगुणीकृत्य पञ्च तत्र नियोजयेत् ॥१४॥

और एक शेष हो तो समान फल हो ॥ १२ ॥ पाठान्तर—शकसवत्सर के (शताब्दी) का और वर्ष को त्रिगुणा कर इकट्ठा करना, उसमें पाच मिलाकर सात से भाग देना, शेष बचै उसका फल कहना ॥ १३ ॥ यहा भी सवत्सर शब्द से शकसवत्सर ही जानना। आषाढ मास से जो वर्ष प्रारभ होता है उसको शकसवत्सर कहते है। उदाहरण– –विक्रम सवत् १६८७ वर्ष में आषाढादिक शकसवत १५५२ है, उसमे सौका (शताब्दी) १५ को तीन गुणा किया तो ४५ हुआ और वर्ष ५२ का त्रिगुणा किया तो १५६ हुआ ये दोनों को मिलाया तो २०१ हुआ इसमें ५ मिलाया तो २०६ हुआ उसमे ७ से भाग देने से शेष ३ बचे, इसलिये विक्रमसवत्सर १६८७में दुष्काल कहना।

शक सवत्सर को त्रिगुणा कर के सात स भाग देना, जो शेष रहे, उसको द्विगुणा कर पाच मिला देना ॥ १४ ॥ अन्यत्–सवत्सर को द्विगुणा

क्वचित्-- वत्सर द्विगुणीकृत्य त्रिभिर्न्यून तु कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेष संवत्सरे फलम् ॥१५॥
आदिचतुष्के दुर्भिक्ष सुभिक्ष च द्विपञ्चके ।
त्रिषट्के मध्यम कालं शून्ये शून्य विनिर्दिशेत् ॥ १६ ॥

केचित्तु एतत्करणेन उष्णकालिकधान्यपरिज्ञानं वदन्ति । पुनरप्यस्यैव पाठान्तर यथा—

वत्सरं द्विगुणीकृत्य त्रिभिर्न्यूने कृते ततः ।
नवभिर्भाज्यते शेषे सवत्सरशुभाशुभम् ॥ १७ ॥
शेषे द्वित्रिचतुष्के च सुभिक्ष वर्षमुच्यते ।
षडेकशून्यैर्मध्यस्थं हीन पञ्चाष्टसप्तसु ॥ १८ ॥

क्वचित्— संवत्सराङ्कस्त्रिगुणः सप्तभक्तोऽवशेषिते ।
कृते पञ्चगुणो भागस्त्रिभिस्तेन फल मतम् ॥ १९ ॥
एकशेषे सुभिक्ष स्याद् द्विशेषे मध्यमा समा ।
शून्ये दुर्भिक्षमादेश्य वर्षे तत्र शुभाशुभम् ॥ २० ॥

रुद्रदेवस्तु– संवत्सरस्य ये अङ्का अधोऽधो लिखिताः क्रमात्।
वेदाङ्कसहिता ये तु मुनिभिर्भागमाहरेत् ॥ २१ ॥
आद्ये चतुष्के दुर्भिक्षं सुभिक्षं द्विकपञ्चके।
त्रिषष्ठे मध्यमः कालः शून्ये शून्यं विनिर्दिशेत् ॥ २२ ॥

तथा– कालो विक्रमभूपतेः प्रथमतस्त्रिस्ताडयते मीलनात्,
पश्चात्पञ्चयुते तुरङ्गमहृते शेषाङ्कमालोचयेत्।
द्वाभ्यां वह्निभिरिन्द्रियै रसयुतैः कालोत्तमत्वं वदेत्,
शून्येनाधमतां चतुःशशधरे स्यान्मध्यमत्वं सदा ॥ २३ ॥

अत्र यदि पञ्चैव योज्यन्ते तदा सप्तवर्षानन्तरमवश्यं शून्यं समायाति, न च तत्र दुष्कालनियमः, तेन पञ्च योगकरणमिति कोऽर्थः? पञ्च मनुष्योक्ता अङ्काः क्षेप्या इति इष्टं वचनम्।

संवत्सर के अङ्क और शताब्दी के अङ्क ये दोनों नीचे नीचे लिख कर मिला देना, इस में पांच और मिला कर सात का भाग देना, जो शेष बचे उस का फल कहना ॥ २१ ॥ जो शेष एक या चार हो तो दुष्काल, दो या पांच हो तो सुकाल, तीन या छः हो तो मध्यम और शून्य हो तो शून्य फल कहना ॥ २२ ॥ विक्रम संवत्सर की शताब्दी को और वर्ष को त्रिगुणा कर इकट्ठा करना, इस में पांच और मिलाकर सात से भाग देना, जो शेष बचै उस का फल विचारना– शेष दो तीन पांच या छः बचै तो उत्तम समय कहना, एक या चार बचें तो मध्यम समय कहना और शून्य शेष बचें तो अधम समय कहना ॥ २३ ॥ यहां यदि पांच मिलाते तो सात वर्ष पर्यंत क्रमशः अवश्य शून्य आता है, इससे यहां दुष्काल का नियम नहीं रहा, इसलिये पंच योग का मतलब मनुष्योक्त अंकों का मिलाना यहां इष्ट है ॥ फिरभी– संवत्सर के अंकों का द्विगुणा कर एक मिला देना, इसमें सातसे भाग देकर शेषसे वर्ष

क्वचित् पुनः– संवत्सराङ्कं द्विगुणीकृत्यैक मीलयेत्ततः ।
सप्तभिर्भागदानेन बोध्य वर्षशुभाशुभम् ॥२४॥

यथोदाहरणम्– सवत् १६८७ द्विगुणीकरणे १७४ एकयोगे १७५ सप्तभिर्भागे शून्यं तेन दुर्भिक्षम् ।

सवत्सरे द्विगुणिते त्रिभिरन्वितेऽथ,
नन्दैर्विभाजनमनुष्यफल तु शेषे ।
युग्मे२ त्रिके३ जलनिधौ४ च सुभिक्षमेके,
षड्६ नन्दयो९ श्च समताऽपर ५-७-८ तोऽतिदौस्थ्यः॥२५॥

अत्र संवत्सरशब्देन केचिद् विक्रमराजसंवत्सर गणयन्ति तन्न युक्त, सर्वत्र ज्योतिश्चैः शाकस्यैव गणनात्, तेन विक्रमकाल इति क्वचिद् न भ्रमितव्य, विक्रमकालस्य कालो विनाश इति। अर्थात्-शाकं त्रिनिघ्नं मुनिभाजितं च, शेष द्विनिघ्न शरसयुतं च। वर्षा च धान्य तृणशीततेजो-वायुश्च वृद्धिः क्षयविग्रहौ च॥२६॥

का शुभाशुभ कहना ॥ २४ ॥ उदाहरण— सवत् १६८७ है उसको द्विगुणा किया तो १७४ हुए इसमे एक और मिलाया तो १७५ हुए, उसको ७ से भाग दिया तो शून्य शेष रहा। इसलिए उस वर्ष दुष्काल जानना॥ फिर भी– सवत्सरको द्विगुणा कर तीन मिला देना उसमे नवसे भाग देकर शेष का फल कहना। जो शेष एक दो तीन या चार बचै तो सुकाल छ या नव बचैतो समान और पाच सात या आठ बचैतो अधम समय जानना॥ २५ ॥ यहा सवत्सर शब्दसे कोई विक्रम सवत्सर गिनते है यह योग्य नहीं है, सर्वत्र ज्योतिषियों को शालिवाहन का शक सवत्सर ही जानना चाहिये। इस लिए कहीं विक्रम काल का भ्रम नहीं करना चाहिये। शक सवत्सर को त्रिगुणा कर सातसे भाग देना और शेषको द्विगुणा कर उसमे पाच मिला देना, तो वर्षा धान्य तृण शीत तेज वायु वृद्धि क्षय और विग्रह होता है ॥ २६ ॥ इसका फल — वर्षके विश्वा को त्रिगुणा कर इसमे तीन मिला दे॥ उसका

अस्य फलम्- वर्षाविंशोपकाः सर्वे त्रिगुणास्त्रिभिरूनिताः ।
सप्तभिस्तद्विभागेन शेषं संवत्सरे फलम् ॥२७॥
चन्द्रे वेदे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्मबाणयोः ।
त्रिषष्ठे मध्यमः कालः शून्ये रौरवमादिशेत् ॥२८॥

अथ षष्टिसंवत्सरम्—

संवद्विक्रमराजस्य न्यूनः शरगुणेन्दुभिः ।
शाकोऽयं शालिवाहस्य भूद्वियुक् षष्टिभिर्भजेत् ॥२६॥
शेषेषु प्रभवादीनां वर्षादौ नाम जायते ।
प्रवृत्तिः षष्टिवर्षाणां गुरोर्मध्यमभोगतः ॥३०॥

अथ स्थूलमतेन संवत्सरप्रवृत्तिर्यथा—

वारे वेदा ४ स्तिथौ शैला ७ घटीषु द्वितयं क्षिपेत् ।
पूर्वसंवत्सराद् भावि-वत्सरागमनिर्णयः ॥३१॥
प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥३२॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।

सातसे भाग देकर शेषसे वर्षका फल कहना ॥ २७ ॥ शेष एक या चारहो तो दुष्काल, दो या पांच हो तो सुकाल, तीन या छः हो तो मध्यम काल और शून्य हो तो रौरव (भयानक) हो ॥ २८ ॥ इति शाक ॥

विक्रमसंवत्सर में से १३५ घटादेने से शालिवाहन का शक संवत्सर होता है। इसमें बारह मिलाकर साठ का भाग देना ॥ २६ ॥जो शेष बचे वह प्रभव आदि वर्ष का नाम जानना। बृहस्पति के मध्यम भोग से साठ वर्षों की प्रवृत्ति होती है ॥ ३० ॥ अथवा वार में चार, तिथि में सात और घड़ी में दो मिलाने से भावी वर्ष का निर्णय होता है ॥ ३१ ॥ साठ संवत्सरों के नाम प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम, वृष, चित्रभानु, सुभानु

चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥३३॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥३४॥
हेमलम्बो विलम्बश्च विकारी शर्वरी प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥३५॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ।
परिधावी प्रमाथी च नन्दाख्यो राक्षसो नलः ॥३६॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥३७॥
स्वनामसदृशं ज्ञेयं फलमत्र शुभाशुभम् ।
माघे गुरुर्धनिष्ठांशे प्रथमे प्रभवोदयः ॥३८॥

यदुक्त रत्नमालायाम्—

तपसि खलु यदासावुद्गम याति मासि,
प्रथमलवगतः सन् वासवे वासवेज्यः ।
निखिलजनहितार्थं वर्षवृन्दे गरिष्ठः,
प्रभव इति स नाम्ना जायतेऽब्दस्तदानीम् ॥३९॥

तारण, पार्थिव, व्यय, सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नन्दन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्ब, विलम्ब, विकारी, शर्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु, पराभव, प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी प्रमाथी, नन्द, राक्षस, नल, पिङ्गल, कालयुक्त सिद्धार्थ, रौद्र, दुर्मति, दुन्दुभि, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन, और क्षय ॥ ३२-३७ ॥ ये साठ संवत्सरों के नाम हैं उनके नामसदृश शुभाशुभ फल जानना। माघमासमें धनिष्ठा के प्रथम अंश पर बृहस्पति आनसे प्रभव नामका वर्ष प्रारंभ होता है ॥३८॥ रत्नमालामें भी कहा है कि माघमासमें धनिष्ठा के

सिद्धान्ते तु—कति णं भंते ! संवच्छरा पण्णत्ता? गोयमा ! पंच संवच्छरा पण्णत्ता तंजहा- णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे, सणिचरसंवच्छरे। णक्खत्तसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे- सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मगसिरे पोसे माहे फग्गुणे चित्ते वइसाहे जिट्ठे आसाढे, जं वा बुहस्फइ महग्गहे दुवालस संवच्छरेहिं णक्खत्तमंडले समाणेइ सेणं णक्खत्तसंवच्छरे। जुगसंवच्छरे णं कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते. तंजहा- चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव सेत्तं जुगसंवच्छरे। पमाणसंवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए सेत्तं पमाणसंवच्छरे। लक्खणसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ?

प्रथम अंश पर बृहस्पति का उदय हो तब समस्त मनुष्यों के हित के लिये साठ वर्षोंमेंसे प्रथम प्रभव नाम का वर्ष प्रारंभ होता है ॥ ३९ ॥

हे भगवन् ! संवत्सर कितने हैं ? गौतम ! संवत्सर पांच हैं—नक्षत्रसंवत्सर १ युगसंवत्सर २, प्रमाणसंवत्सर ३, लक्षणसंवत्सर ४, और शनैश्चरसंवत्सर ५ । चन्द्रमा को पूर्ण नक्षत्र मण्डल भोगनेमें जितना समय व्यतीत हो उसको नक्षत्रमास कहते हैं, यह बारह हैं—श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख ज्येष्ठ, और आषाढ, इन बारह मासों का एक नक्षत्रसंवत्सर होता है, उसकी दिन संख्या ३२७$\frac{५१}{६७}$ है॥ १ ॥युगसंवत्सर पांच प्रकारका है-चंद्र, चन्द्र, अभिवर्द्धित, चन्द्र और अभिवर्द्धितसंवत्सर । कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक २९$\frac{३२}{६२}$ इतने दिन के प्रमाण वाला एक चन्द्रमास होता है, ऐसे बारह मासों का एक चंद्रसंवत्सर होता है, उसकी दिनसंख्या ३५४$\frac{१२}{६२}$ है । इस तरह ३१$\frac{१२१}{१२४}$ दिन के प्रमाण वाला एक अभिवर्द्धित मास होता है, ऐसे बारह मासों का एक अभिवर्द्धितसंवत्सर

गोयमा ! पञ्चविहे तंजहा-- समगं णक्खत्त जोग जोयंति समग उऊ परिणमन्ति । णच्चुण्ह णाइसीओ बहूदओ होइ णक्खत्तो ॥१॥ ससिसगलपुण्णमासी जोयति विसमचारिणक्खत्ता । कडुओ बहूदओआ तमाहु संवच्छर चंदं ॥२॥ विसम पवालिणो परिणमंति अणऊसु देंति पुप्फफलम् । वासं ण सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाण तु रसं पुप्फफलाण च देइ आइच्चो । अप्पेण विवासेण सम्मं निप्फ-

होता है। इन पाच संवत्सरों के समूह का युग कहते हैं और अभिवर्द्धित संवत्सरमें एक अधिक मास होता है ॥ २ ॥ प्रमाणसंवत्सर पांच प्रकार का है —नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्द्धित। नक्षत्र चन्द्र और अभिवर्द्धितसंवत्सर का लक्षण पहले कह दिया है । ऋतु—तीस अहोरात्र का एक ऋतुमास, ऐसे बारह मास का एक ऋतुसंवत्सर होता है, उसकी दिन संख्या ३६० पूरी है। आदित्य—३० $\frac{1}{2}$ दिन का एक आदित्य (सूर्य) मास । ऐसे बारह मास का एक आदित्य(सूर्य)संवत्सर होता है उसकी दिन संख्या ३६६ है ॥ ३ ॥ लक्षणसंवत्सर—संवत्सर के नक्षत्रादि लक्षण प्रधान को लक्षणसंवत्सर कहते हैं, वह पाच प्रकार का है— जिस जिस तिथि में जो जो नक्षत्र आने को कहा है उन उन तिथियों में वह आजाय, जैसे कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका, माघ की पूर्णिमा को मघा चैत्री पूर्णिमा को चित्रा इत्यादि। किन्तु "जेट्ठो वच्चइ मूलेण सावणो धणिट्ठाहिं । अद्दासु य मग्गसिरो सेसा नक्खत्तनामिया मासा" ॥१॥ अर्थ—ज्येष्ठ पूर्णिमा को मूल, श्रावण पूर्णिमा को धनिष्ठा और मार्गशिर पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र होता है और बाकी नक्षत्र के नाम सदृश मास की पूर्णिमा होती है। समकालीन अनुक्रम से ऋतु परिवर्तन हो, कार्तिकपूर्णिमा पीछे हेमन्त ऋतु, पौषपूर्णिमा पीछे शिशिरऋतु, माघपूर्णिमा पीछे वसन्त ऋतु इत्यादि समानपन से रहें। जिस वर्ष में अधिक उष्णता न हो,

उभए सस्सं ॥४॥ आइच्चतेयतविया खणलवदिवसा उऊ परिणमंति । पूरेइ रेणुथलताइं तमाहु अभिवड्ढियं नाम ॥५॥ सणिच्छरसंवच्छरे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठावीसइविहे पराणत्ते. तंजहा-- अभिई सवण धणिट्ठा सयभिसया दो अ हुंति भद्दवया रेवइ अस्सिणी भरणी कत्तिया तह रोहिणी चेव जाव उत्तरासाढाओ जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमण्डलं समाणेइ सेत्तं सणिच्छरसंवच्छरे ॥ इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रे स्थानाङ्गे च ॥

एवं गुरोः पञ्चकृत्वः शनेर्द्विर्भगणभ्रमात् ।

अधिक शीत न हो और वृष्टि अधिक हो उसको नक्षत्रसंवत्सर कहते हैं ? । जिस वर्ष में पूर्णिमा को चन्द्रमा पूर्ण कलायुक्त हो तथा नक्षत्र विषमचारी याने मासकी पूर्णिमा के नाम सदृश न हो और अधिक शीत, अधिक उष्णता अधिक वृष्टि हो उसको चन्द्रसंवत्सर कहते हैं ॥ २ ॥ जिस वर्ष में वृक्ष में फल फूल नवीन पत्ते विना ऋतु के आजाय, वृष्टि अच्छी तरह न हो उस को कर्मसंवत्सर, ऋतुसंवत्सर और सावनसंवत्सर कहते है ॥ ३ ॥ जिस वर्षमें पृथ्वी और पानीका रस मधुर तथा स्निग्ध हो, समयानुकूल वृक्षमें फलफूल आवें, थोटी वृष्टि होनेपर भी धान्य अच्छी तरह उत्पन्न हों इत्यादि लक्षणयुक्त संवत्सर को आदित्यसंवत्सर कहते है ॥ ४ ॥ जिस वर्षमें सूर्य के तेजसे क्षण मुहूर्त श्वासोच्छ्वास प्रमाण का दिवस, दोमास का ऋतु ये सब यथास्थित रहें और पवन रेती(रज) से खड्डा पूर दे, उसको अभिवर्द्धित संवत्सर कहते हैं ५ ॥ ४ ॥ जितने समयमें शनैश्चर पूर्ण नक्षत्रमण्डल को याने बारह राशियों को तीस वर्षमें भोग करले उसको शनैश्चर संवत्सर कहते हैं, वह श्रवणादि अट्ठाईस नक्षत्र से अट्ठाईस प्रकार का है ॥५॥

इस तरह गुरु पांच वार, शनैश्चर दो वार और राहु तृतीयांश सहित तीन ($3\frac{1}{3}$) वार भगण (पूर्ण नक्षत्र मंडल) में भ्रमण करे इतने समय में

वत्सराणां भवेत् षष्टी राहोस्त्रिस्त्र्यंशयुग्भ्रमात् ॥ ४० ॥
न संमत तेन शत ममानां, ज्योतिर्विदां क्वापि च शास्त्ररीत्या।
संवत्सराख्या द्विपविंशकार्थ-ग्रहप्रचारैः फलमत्र चिन्त्यम् ॥४१॥
सवत्सरे स्याद्विषमे प्रायो दुर्भिक्षसम्भवः ।
राजविग्रहमारीणां सम्भवः समवत्सरे ॥४२॥
वर्षेशाः सर्वतोभद्रे जीवार्किशिखिराहव ।
तेषां चारानुसारेण भवेत् सांवत्सर फलम् ॥४३॥
सांवत्सरफलग्रन्थान् प्राच्यान्नव्याननेकशः ।
विलोकयेत् सुधीस्तेन ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥४४॥
अत्र च वचनप्रामाण्याय रामविनोदग्रन्थ एवम्—
यो निर्गुणो गुणमयं वितनोति विश्व,
तापत्रय हरति यस्तपनोऽप्यजस्रम् ।
कालात्मको जगति जीवयते च जन्तून्,
ब्रह्माण्डसम्पुटमणि द्युमणिं तमीडे ॥४५॥

साठ वर्ष पूर्ण होते हैं ॥ ४० ॥ 'षष्टि' ऐसा कहा है इस लिए शास्त्र रीति से किसी भी जगह विद्वानोंका सेकडे (सौ वर्ष) का मत नहीं है। सवत्सर के नाम की द्विपविंशतिका का फलादेश ग्रहों के चालन से जानना ॥ ४१ ॥ विषम सवत्सर में प्राय दुर्भिक्ष का सभव रहता है और सम वर्ष में राज में विग्रह या महामारी आदि रोग का सभव रहता है ॥४२॥ सर्वतोभद्रचक्र में वर्षाधिपति – गुरु शनि राहु और केतु कहे है, उनकी गति के अनुसार सवत्सर का फल होता है ॥ ४३ ॥ सवत्सरफल सम्बन्धी प्राचीन और नवीन अनेक ग्रन्थों को देखकर उससे विद्वान लोग मेघ महोदय को जानें ॥ ४४ ॥

जो स्वय गुणरहित होकर भी गुणवाला जगतको रचता है, स्वय निरतर तपनवाला होकर भी तीन प्रकारके तापोंका नाश करता है, काल

श्रीरामदासरुचिदे गणितप्रबन्धे,
दैवज्ञरामकृतरामविनोदनाम्नि ।
श्रीसूर्यभक्तिमदकब्बरशाहिशाके,
सौरागमानुभजतस्तिथिपत्रमेतत् ॥४६॥
+घाताब्दा यमरवर्जिता नग७गुणाः शून्याम्बराङ्को ९०० द्धृता,
भाज्य लब्धमिताऽब्दनेत्रदहना ३२ढ्यशाब्दशकेन्दुतः ।
दिग्१०भागासकलायुतं प्रभवतोऽब्दाः षष्टिशेषाः स्मृताः,
शेषांशा रविभिर्हता दिनमुख मेषार्कतः प्राग्वेत् ॥४७॥
अत्र दाक्षिणात्याः सौरमानेन संवत्सरप्रवृत्तिमाहुः ।
उक्त च 'शाके सार्के हृते खाङ्के शेषे स्युः प्रभवादयः' ।
तेषां च फलानि--

स्वरूप होकर भी जगत्के प्राणियोंको जीवन देता है, और जो ब्रह्माण्ड रूपी समुद्रका मणिरूप है, ऐसे श्री सूर्यनारायणको प्रणाम करता हूँ ॥४५॥ श्री रामदास को आनन्ददायक गणितप्रबन्धमें याने रामदैवज्ञविरचित रामविनोद नामक गणितग्रन्थमें सूर्य नारायणके भक्त अकबर बादशाहके शाकमें यह तिथिपत्र सूर्यसिद्धान्तके अनुसार है ॥ ४६ ॥

दक्षिणादेशके रहने वाले सौरमान से संवत्सर की प्रवृत्ति मानते हैं। कहा है कि— शक संवत्सर में बारह मिला कर साठ का भाग देना, जो

+ यह श्लोक आकर समझने में नहीं आनेसे उसके स्थान पर निम्न लिखित प्रचलित श्लोक लिखता हूँ—

शकेन्द्रकालः पृथग् कृतिघ्न॰, शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः समेतः ।
शराद्रिवस्विन्दुहृतः सलब्धः, षष्ट्या सशेषे प्रभवादयोऽब्दाः ॥ १ ॥

इस शालिवाहन शक को दो जगह लिख कर एक जगह २२ से गुणें, इस गुणनफल में ४२९१ जोड़ कर १८७५ का भाग दें, जो लब्धि मिले उसको दूसरे स्थान पर लिखा हुआ शकवर्षमें जोड़ इसमें ६० का भाग दें जो शेष रहे वही प्रभव आदि वर्ष जानें। प्रथम जो शेष बचा है उसको १२ से गुणा कर १८७५ से भाग दें तो महीना और इस की शेषमें ३० से गुणा कर १८७५ से भाग दें तो दिन मिल जाता है ॥

निरीतिः सकलो देशः सस्यनिष्पत्तिरुन्नतः ।
सुस्थिता भूभुजाः सर्वे प्रभवे सुखिनो जनाः ॥४८॥
दण्डनीतिपरा भूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः ।
विभवाब्देऽखिला लोकाः सुखिनः स्युर्विवैरिणः ॥४९॥
शुक्लाब्दे निखिला लोकाः सुखिनः स्वजनैः सह ।
राजानो युद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ॥५०॥
प्रमोदाब्दे प्रमोदन्ते राजानो निखिला जनाः ।
वीतरोगा वीतभया ईतिवैरिविनाकृताः ॥५१॥
न चलन्त्यखिला लोकाः स्वस्वमार्गात् कथञ्चन ।
अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुसस्यार्घवृष्टय ॥५२॥
अन्नाद्य भुज्यते शश्वज्जनैरतिथिभिः सह ।
अङ्गिराब्देऽखिला लोका भूपाश्च कलहोत्सुकाः ॥५३॥
श्रीमुखाब्देऽखिला धात्री बहुसस्यार्घसंयुता ।

शेष बचे वह प्रभव आदि वर्ष जानना । उनका फल—

प्रभवसंवत्सर में समस्त देश ईति रहित हो, खेती (धान्य) की उत्पत्ति अच्छी हो, राजा प्रसन्न रहे और प्रजा सुखी हो ॥ ४८ ॥ विभव संवत्सर में राजा दण्डनीति में तत्पर हों, बहुत धान्य हों, वर्षा अच्छा बरसे, सब लोग सुखी और वैर रहित हों ॥ ४९ ॥ शुक्लसंवत् में स्वजनों के साथ सब लोग सुखी हों, राजा परस्पर जीतने की इच्छा से युद्ध करें ॥ ५० ॥ प्रमोदसंवत् में सब राजा और प्रजा प्रसन्न हों, रोग रहित और भय रहित हों, ईति और शत्रु का नाश हो ॥ ५१ ॥ प्रजापतिवर्ष में मनुष्य अपनी कुलमर्यादा को रेखामात्र भी न त्यागें खेती और वर्षा अच्छी हो ॥ ५२ ॥ अंगिरावर्ष में मनुष्य निरन्तर अतिथियों के साथ अन्न आदि का उपभोग करें सब लोक और राजा कलह में उत्सुक हों ॥ ५३ ॥ श्रीमुखवर्ष में समस्त भूमि अन धान्य से पूर्ण हो,

अध्वरे निरता विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ॥५४॥
भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्याः सस्यार्घवृष्टयः ।
राजानो युद्धनिरता-स्तथापि सुखिनो जनाः ॥५५॥
प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजन्तवः ।
सर्वकामक्रियासक्ता युवाब्दे युवतीजनाः ॥५६॥
धातृवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः सदा युद्धपरायणाः ।
सम्पूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥५७॥
ईश्वराब्देऽखिलान् जन्तून् धात्री धात्रीव सर्वदा ।
पोषयत्यतुलं चान्न फलमाषेक्षुव्रीहिभिः ॥५८॥
अनीतिरतुला वृष्टि-र्बहुधानाख्यवत्सरे ।
विविधैर्धान्यनिचयैः सम्पूर्णा चाखिला धरा ॥५९॥
न मुञ्चति पयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् ।
मध्यमा वृष्टिरर्घश्च नूनमब्दे प्रमाथिनि ॥६०॥
विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रान्तभूमयः ।
सर्वत्र सर्वदा मेघा मुञ्चन्ति प्रचुरं जलम् ॥६१॥

ब्राह्मण यज्ञकर्म में प्रवृत्त हों रोग और शत्रुता रहित हों ॥ ५४ ॥ भाव-वर्ष में बहुत रोग हों, धान्य और वर्षा मध्यम हो, राजा युद्ध करे तो भी लोग सुखी हों ॥ ५५ ॥ युवावर्ष में गौ बहुत दूध दे, सब प्राणी सुखी हों और स्त्रीजन कामक्रिया में आसक्त हों ॥ ५६ ॥ धातावर्ष में सब राजा युद्ध के लिये तत्पर हों। समस्त पृथ्वी वर्षा द्वारा बहु धान्यसे पूर्ण हो ॥ ५७ ॥ ईश्वरवर्ष में पृथ्वी सब प्राणियों को माता की समान फल, माष (उड़द) ऊख (इक्षु), चावल (व्रीहि) आदि अनाज से पालन करे ॥ ५८ ॥ बहुधान्यवर्ष में ईति रहित बहुत वर्षा हो, पृथ्वी अनेक प्रकार के अन्न से पूर्ण हो ॥ ५९ ॥ प्रमाथीवर्ष में वर्षा न वरसे, कहीं कहीं मध्यम वर्षा और धान्य पैदा हो ॥ ६० ॥ विक्रमवर्ष में राजा पराक्रम

वृषभाब्देऽखिलाः क्ष्मेशा युद्ध्यन्ते वृषभा इव ।
मत्ताः प्रसक्ता विप्रेन्द्राः सततं यजतां सुरान् ॥ ६२॥
चित्रार्थवृष्टिसस्याद्यै-र्विचित्रा निखिला धरा ।
निराकुलाखिला लोका श्चित्रभानोश्च वत्सरे ॥६३ ॥
सुभानुवत्सरे भूमौ भूमिपानां च विग्रहः ।
भाति भूर्भूरिसस्याढ्या भुजङ्गमभयङ्करी ॥ ६४॥
कथञ्चिन्निखिला लोका-स्तरन्ति प्रतिपत्तनम् ।
नृपाहवे क्षताद् रोगाद् भैषज्यं तारणेऽब्दके ॥ ६५॥
पार्थिवाब्दे च राजानः सुखिनः स्युर्भृश जनाः ।
बहुभिः फलपुष्पाद्यै-र्विविधैश्च पयाधरैः ॥ ६६ ॥
व्ययाब्दे निखिला लोका बहुव्ययपरा भृशम् ।
वीरमत्तेभतुरग-रथैर्भीतिश्च सर्वदा ॥ ६७॥
सर्वजिद्वत्सरे सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभाः ।
राजानो विलयं यान्ति भीमसंग्रामभूमिषु ॥ ६८॥

से भूमिको जीतने वाले हों और सब जगह सर्वदा बहुत वर्षा वरसे ॥ ६१॥ वृषभवर्षमें सब राजा मत्त वृषभकी समान युद्ध करें और ब्राह्मण निरन्तर श्रद्धा युक्त होकर देव पूजन करें ॥ ६२ ॥ चित्रभानुवर्ष में अनेक प्रकारकी वृष्टि और धान्यसे समस्त पृथ्वी विचित्र रंग वाली हो और सब लोग प्रसन्न हों ॥ ६३॥ सुभानुवर्ष में पृथ्वी पर राजाओंमे विग्रह हो, भूमि बहुत धान्यसे पूर्ण हो तो भी काले नागकी जैसी भयकर लगे ॥ ६४ ॥ तारणसंवत्सर में सब लोक राजाओंके युद्धमें घायल हुए रोगसे मुक्त होकर उहर तरफ जावे ॥ ६५ ॥ पार्थिववर्ष में राजा और प्रजा बहुत फल फूल आदिसे और वर्षासे बहुत सुखी हों ॥ ६६ ॥ व्ययसंवत्सर मे सब लोक बहुत खर्च करें और सर्वदा सुभट मदोन्मत हाथी घोड़े और रथों से पृथ्वी पर भय हो ॥ ६७ ॥ सर्वजित्संवत्सरमे देवों के समान मनुष्य हों, और राजालोग भयकर संग्राम भूमिमे प्राण

सर्वधार्यब्देके भूपाः प्रजापालनतत्पराः ।
प्रशान्तवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ६९॥
शीतलादिविकारः स्याद् बालानां तस्करा जनाः ।
अल्पक्षीरास्तथा गावो विरोधश्च विरोधिनि ॥ ७० ॥
मुष्णन्ति तस्करा लोकान् तीडाः स्युः शलभाः शुकाः ।
विकारकृद्‌जलवृष्टि-र्विकृतेऽब्दे प्रजारुजः ॥ ७१ ॥
स्वल्पा वृष्टिः स्वल्पधान्य खण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ।
छत्रभङ्गः प्रजापीडा खरेऽब्दे खरता जने ॥ ७२ ॥
सुभिक्ष सुखिनो लोका व्याधिशोकविवर्जिताः ।
नन्दन च धनैर्धान्यै-र्नन्दने वत्सरे भवेत् ॥ ७३ ॥
युध्यन्ते भूभृतोऽन्योऽन्य लोकानां च धनक्षयः ।
दुर्भिक्ष च कचित् स्वस्थ बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ७४ ॥
जयमङ्गलघोषाद्यै-र्धरणी भाति सर्वदा ।
जयाब्दे धरणीनाथाः सग्रामे जयकाङ्क्षिणः ॥ ७५ ॥

त्यागें ॥ ६८ ॥ सर्वधारीवर्ष मे वैर रहित होकर राजा प्रजा के पालन में तत्पर हों, बहुत धन धान्य और जलवर्षा हों ॥ ६९ ॥ विरोधीवर्ष मे बालकों को शीतलादि का रोग हो, लोक चौरी करें, गौए थोड़ा दूध दें ॥ ७० ॥ विकृतवर्ष में लोगों को चोर दु ख दें, टीड़ी शलभ शुक आदि विशेष हो, विकार करने वाली जलवर्षा हो और प्रजा को रोग हो ॥७१॥ खरसवत्सरमे थोडी वर्षा, थोडा ही धान्य, खण्डवृष्टि, राजाका विनाश, छत्र-भग, प्रजाको दु ख और मनुष्योंमें क्रूरता हो ॥ ७२ ॥ नन्दनवर्षमें सुभिक्ष, लोक सुखी, व्याधि और शोकसे रहित और धन धान्यसे सुखी हों ॥७३॥ विजयसवत्सरमें राजा परस्पर युद्ध करें, लोगोंका धन क्षय हो, दुष्काल पड़े, कहीं शान्तता और धन धान्य हो, वर्षा हो ॥ ७४ ॥ जयसवत्सरमें जय मगल के शब्दों से पृथ्वी सर्वदा शोभायमान हो, राजा सग्राम में जय की

मन्मथाब्दे जनाः सर्वे तस्करा अतिलोलुपाः ।
शालीक्षुयवगोधूमै-र्नयनाभिनवा धरा ॥७६॥
दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टि-रीतिचोराकुला धरा ।
महावैरा महीनाथा वीरवारणघाटकैः ॥७७॥
हेमलम्बे त्वीतिभीति-र्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
भाति भूर्भूपतिक्षोभः खड्गविशुल्लतादिभिः ॥७८॥
विलम्बिवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः ।
प्रजापीडा त्वनर्थत्वं तथापि सुखिनो जनाः ॥७९॥
विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरोगा वृष्टिपीडिताः ।
पूर्वसस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् ॥८०॥
शर्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभिः ।
जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिण ॥८१॥
प्लवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः प्लवसन्निभा ।

इच्छा वाले हों ॥७५॥ मन्मथवर्षमें सब लोक बहुत लोभी और चोर हों, धान्य, ईख, जव, गेहूं आदिसे नत्रोंको आनन्द देने वाली पृथ्वी हो ॥ ७६ ॥ दुर्मुखवर्षमें मध्यम वर्षा हो, ईति और चोरोंसे पृथ्वी आकुल हो, राजा वीर (सुभट) हाथी घोडों से महावैर करें ॥ ७७ ॥ हेमलम्बिवर्षमें ईतिका भय हो, मध्यम वर्षा और थोडा धान्य हो, पृथ्वी शोभित हो, और राजा तलवाररूपी लता आदिसे क्षुभित हों ॥ ७८ ॥ विलम्बीवर्षमें राजा परस्पर विरोध करें, प्रजा में पीडा और अनर्थ हो तो भी लोग सुखी हों ॥७९॥ विकारीवर्ष मे समस्त लोग रोग और वर्षासे दुःखी हों, पहले धान्य फल फूल थोडे हों और पीछे बहुत हों ॥ ८० ॥ शर्वरीवर्ष में पृथ्वी धन धान्य से पूर्ण हो, सब मनुष्य सुखी हों और राजा वैररहित हों ॥८१॥ प्लववर्ष मे समस्त पृथ्वी वर्षा स प्लव (सुगन्धितनृणविशेष) सदृश हो, सम्पूर्ण वर्षमें ईतिभय और रोग रहे ॥ ८२ ॥ शुभकृद्वर्ष में पृथ्वी

रोगाकुला त्वीतिभीतिः सम्पूर्णे वत्सरे फलम् ॥८२॥
शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ।
आतङ्कचौरा भयदा राजानः समरोत्सुकाः ॥८३॥
शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा ।
तथापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥८४॥
क्रोध्यब्दे त्वखिला लोकाः क्रोधलोभपरायणाः ।
ईतिदोषेण सततं मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥८५॥
अब्दे विश्वावसौ शश्वद् घोररोगाकुला धरा ।
सस्यार्घवृष्टयो मध्या भूपाला नातिभूतयः ॥८६॥
पराभवाब्दे राज्ञां स्यात् समरः सह शत्रुभिः ।
आमयक्षुद्रसस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥८७॥
प्लवङ्गाब्दे मध्यवृष्टी रोगचौराकुला धरा ।
अन्योऽन्य समरे भूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ॥८८॥
कीलकाब्दे त्वीतिभीतिः प्रजाक्षोभो नृपाहवैः ।

अनेक उत्सवोंसे सुशोभित हो भयदायक रोग और चोर हो, राजा युद्ध में उत्सुक हो ॥८३॥ शोभनवर्ष में पृथ्वी प्रजा को रोग शोक देने वाली हो तो भी लोक सुखी हो, बहुत धन धान्य और वर्षा हो ॥८४॥ क्रोधीवर्ष में समस्त लोग क्रोध और लोभ परायण हों, ईति दोष से निरन्तर दुःख हो, मध्यम धान्य और वर्षा हो ॥८५॥ विश्वावसुवर्षमें पृथ्वी निरन्तर घोररोग से व्याकुल हो, मध्यम खेती और वर्षा हो और राजा सम्पत्ति वाले न हो ॥ ८६ ॥ पराभववर्ष में राजाओं का शत्रु के साथ युद्ध हो, रोग और क्षुद्र धान्य अधिक हो, वर्षा थोड़ा हो ॥ ८७ ॥ प्लवङ्गवर्ष में थोड़ी वर्षा हो, पृथ्वी रोग तथा चोरोंसे व्याकुल हो, राजा शत्रुके साथ युद्धमें प्रवृत्त हो ॥ ८८ ॥ कीलकवर्ष में ईतिका भय, प्रजामें क्षोभ, राजा से युद्ध हो तो भी लोक धन धान्य से बढ़े और वर्षा अच्छी हो ॥८९॥

तथापि वर्द्धते लोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥८९॥
सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ।
विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥९०॥
साधारणाब्दे वृष्ट्यर्थं भयं साधारणं स्मृतम् ।
विवैरिणो धराधीशाः प्रजाः स्युः स्वच्छचेतसः ॥९१॥
विरोधकृद्वत्सरे तु परस्परविरोधिनः ।
सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥९२॥
भूपाहवो महारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
दुःखिनो जन्तवः सर्वे वत्सरे परिधाविनि ॥९३॥
प्रमाथिवत्सरे तत्र मध्यमस्यार्घवृष्टयः ।
प्रजाः कथञ्चिज्जीवन्ति समात्सर्याः क्षितीश्वराः ॥९४॥
आनन्दाब्देऽखिला लोकाः सर्वदानन्दचेतसः ।
राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥९५॥
स्वस्वकार्ये रताः सर्वे मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राक्षसाब्देऽखिला लोका राक्षसा इव निष्क्रियाः ॥९६॥

सौम्यवर्ष में समस्त लोक बहु धन धान्य से सुखी हों, राजा वैर रहित हों और ब्राह्मण यज्ञकर्म में प्रवृत्त हों ॥ ९० ॥ साधारणवर्ष में वर्षा के लिये साधारण भय कहना, राजा वैररहित हों और प्रजा प्रसन्न मनवाली हो ॥ ९१ ॥ विरोधीवर्ष में सब राजा और प्रजा परस्पर विरोधी हों और मध्यम वर्षा हो ॥ ९२ ॥ परिधावीवर्ष में राजाओं में युद्ध, बड़ा रोग, मध्यम वर्षा और धान्य हो, तथा सब प्राणी दुःखी हों ॥९३॥ प्रमाथीवर्षमें मध्यम वर्षा, प्रजा को दुःख और राजाओं में परस्पर ईर्षा हो ॥ ९४ ॥ आनन्दवर्ष में सब लोक प्रसन्न चित रहे, राजा सुखी हों और बहुत धान्य हो, वर्षा अच्छी हो ॥ ९५ ॥ राक्षसवर्ष में सब अपने २ कार्यों में लवलीन हों, मध्यम वर्षा हो और सब लोक राक्षसकी जैसे क्रिया रहित हों

नलाब्दे मध्यसस्यार्घं वृष्टिभिः प्रवरा धरा ।
नृपसंक्षोभसंजाता भूरितस्करभीतयः ॥९७॥
पिङ्गलाब्दे त्वीतिभीति-मध्यमस्यार्घवृष्टयः ।
राजानो विक्रमाक्रान्ता भुञ्जन्ते शत्रुमेदिनीम् ॥९८॥
वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः ।
सन्तीतयोऽपि सस्यानि प्रचुराणि तथाऽगदा ॥९९॥
सिद्धार्थवत्सरे भूपाः शान्तवैरास्तथा प्रजाः
सकला वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥१००॥
रौद्रेऽब्दे नृपसम्भूत-क्षोभक्लेशसमन्विते ।
सतत त्वखिला लोका मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥१०१॥
दुर्मत्यब्देऽखिला लोका भूपा दुर्मतयः सदा ।
तथापि सुखिनः सर्वे सग्रामाः सन्ति चेदपि ॥१०२॥
सर्वसस्ययुता धात्री पालिता धरणीधरैः ।
पूर्वदेशविनाशः स्यात् तत्र दुन्दुभिवत्सरे ॥१०३॥

॥ ९६ ॥ नलसंवत्सर में मध्यम धान्य हो, वर्षासे पृथ्वी श्रेष्ठ हो, राजाओं में क्षोभ पैदा हो और चोरों का बहुत भय हो ॥९७॥ पिङ्गलवर्ष में ईति का भय हो मध्यम वर्षा तथा राजा पराक्रमसे पूर्ण होकर शत्रु की पृथ्वी का भोग करें ॥ ९८ ॥ कालयुक्तवर्ष मे सब प्राणी सुखी हों, ईति का उपद्रव हो तो भी धान्य बहुत हों और रोग अधिक हों ॥ ९९ ॥ सिद्धार्थवर्ष में राजा और प्रजा शान्तवैर हों, सब पृथ्वी बहुत धन धान्य की वृद्धि और वर्षा से शोभायमान हो ॥ १०० ॥ रौद्रवर्ष मे सब राजा क्षोभित और क्लेश वाले हों, सब प्राणियोंको भी क्लेश हो, मध्यम धान्य और वर्षा हो ॥ १०१ ॥ दुर्मतिवर्ष मे सब लोक और राजा दुष्ट बुद्धि वाले हों तो भी सब सुखी हों और संग्राम भी हो ॥ १०२ ॥ दुन्दुभिसंवत्सर मे पृथ्वी धान्य से पूर्ण हो, राजा अच्छी तरह पृथ्वीका पालन करें और

रुधिरोद्गारिणि त्वाधि प्रभूताः स्युस्तथाऽऽमयाः ।
नृपसङ्ग्रामसम्भूतव्यापदस्त्वखिला जनाः ॥१०४॥
रक्ताक्षवत्सरे भूपा अन्योऽन्य हन्तुमुद्यताः ।
ईतिरोगाकुला धात्री स्वल्पसस्यार्घवृष्टयः ॥१०५॥
क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टि. पूर्वमस्यविनाशनम् ।
सम्पूर्णमपर सस्य भूपाः क्रोधपराः सदा ॥१०६॥
क्षयाब्दे सर्वसस्यार्घ-वृष्टयः स्यु. क्षयगताः ।
तथापि लोका जीवन्ति कथञ्चिद येन केनचित् ॥ १०७ ॥
एव प्रायो वत्सराख्यानुसारि, वाच्यं प्राच्यैरुक्तभाव प्रधार्य ।
तत्राऽप्यब्दे जीवराह्वर्किकेतु-चार वारवारमन्तर्विमृश्य ॥१०८॥

अथ रुद्रदेवब्राह्मणेन पार्वतीमुद्दिश्य ईश्वरवाक्येन कृता मेघमाला तस्यां विशेषः—

प्रथमा विंशतिर्ब्राह्मी द्वितीया वैष्णवी स्मृता ।

पूर्वदेश का विनाश हो ॥ १०३ ॥ रुधिरोद्गारीवर्ष मे राजा युद्ध करें, सब लोक दुःखी हों और बहुत आधि व्याधि फैले ॥ १०४ ॥ रक्ताक्षि वर्ष में राजा परस्पर युद्धके लिये तत्पर हों, ईति और रोगसे पृथ्वी व्याकुल हो, थोडी खेती और वर्षा हो ॥ १०५ ॥ क्रोधनवर्ष मे मध्यम वर्षा हो, पहले धान्यका विनाश हो परन्तु पीछे सम्पूर्ण धान्य पैदा हो, राजा क्रोध मे तत्पर हों ॥ १०६ ॥ क्षयसंवत्सरमें समस्त धान्य और वर्षा का नाश हो, तो भी किसी तरह से लोक प्राण धारण करें ॥ १०७ ॥ इस तरह प्राचीन विद्वानों के कहे हुए फलादेश का विचार कर और वर्षमें बृहस्पति राहु शनि और केतु के चालन का बारंबार हृदयमें विचार कर वर्षों के नामसदृश फल कहना ॥ १०८ ॥

इति रामविनोदे षष्ठिसंवत्सरफलम् ।

रुद्रदेवब्राह्मण ने अपनी मेघमाला में साठ संवत्सर का फल विशेष रूपसे

रौद्री तृतीया ह्यधमा स्वरूपानुसरत्फला ॥ १ ॥
बहुतोया महामेघा बहुसस्या च मेदिनी ।
बहुक्षीरघृता गावः प्रभवेऽब्दे वरानने ! ॥ २ ॥
प्रभवविभवप्रमोद-प्रजापति-अंगिराः ।
श्रीमुख-भाव-युवाख्य-धातृनामानो वत्सराः शुभाः ॥ ३ ॥
देवैश्च विविधाकारै-र्मानुषा वाजिकुञ्जराः ।
पीड्यन्ते नात्र सन्देहः शुक्ले संवत्सरे प्रिये ! ॥ ४ ॥

इतिवचनात् शुक्लोऽशुभः । ईश्वरसंवत्सरे—

सुभिक्षं सर्वदेशेषु कर्पासस्य महर्घता ।
घृतं तैलं मधु मद्यं महर्घं स्यान्महेश्वरि ! ॥ ५ ॥

इयान् विशेषः—बहुधान्यसंवत्सरे सुभिक्षं निरुपद्रवम् । प्रमाथिनि दुर्भिक्षं, राष्ट्रभङ्गः, तस्करपीडा, विग्रहः । विक्रमे शुभं, सर्वधान्यनिष्पत्तिः, लवणं मधु मद्यं च समर्घं । वृषभना-

कहा है—प्रथमा ब्राह्मी, दूसरी वैष्णवी और तीसरी रौद्री। ये तीन साठ संवत्सर की विंशतिका (बीसा) हैं, वे अपने नामसदृश फलदायक हैं ॥ १ ॥ हे शुभमुखवाली! प्रभववर्ष में पृथ्वी बहुत जलवाली, बहुत वर्षावाली और बहुत धान्यवाली हो। गौएं बहुत घी दूध देनेवाली हों ॥ २ ॥ प्रभव, विभव, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धातृ ये नव वर्ष शुभ हैं ॥ ३ ॥ हे प्रिये! शुक्लवर्ष में विविध आकार वाले देवों से हाथी और घोड़े वाले मनुष्य पीडित होते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥ हे महेश्वरि! शुक्लवर्ष में अशुभ। ईश्वरवर्ष में सब देश में सुकाल हो और कपास घी तैल मधु और मद्य महँगे हों ॥ ५ ॥ बहुधान्यवर्ष में सुकाल हो और जगत् उपद्रव रहित हो। प्रमाथी वर्ष में दुष्काल, देशभङ्ग, चोरों से दुःख और विग्रह हो। विक्रमवर्ष में शुभ हो, सब तरह के धान्य पैदा हों, लूण (नमक) मधु और मद्य सस्ते हों। हे सुलोचने! वृषभवर्ष में कोद्रवा (कोदों)

मसंवत्सरे—"कोद्रवाः शालयो मुद्गाः कगुलाक्षास्तथैव च ।
परिधानं सुभिक्षं स्यात् सुवृषे च सुलोचने" ।॥ १॥
चणका मुद्गमाषाश्च यवान्न विदलं प्रिये ! ।
विचित्रा जायते वृष्टि-श्चित्रभानौ न संशयः ॥१॥ इतिवचना-
च्चित्रभानुसुभानू श्रेष्ठौ, तारणः अशुभः, पार्थिवः शुभः ।
व्ययसंवत्सरे स्वल्पवृष्टी रोगपीडा धान्यसमता विग्रहः ।

इति प्रथमा ब्राह्मी विंशतिका ॥

तोयपूर्णा भवेत् क्षोणी बहुसस्यसमन्विता ।
सुभिक्षं सुस्थितं सर्वं सर्वजित्वत्सरे प्रिये ! ॥१॥
जलैश्च प्रबला भूमि-र्धान्यसौपथ्यपीडनम् ।
जायते मानुषं कष्टं सर्वधारिणि शोभने ॥२॥
प्रजा च विकृता घोरा पीडिता व्याधितस्करैः ।
अल्पक्षीरघृता गावो विरोधिवत्सरे प्रिये ! ॥३॥
उपप्लवं जगत्सर्वं तस्करैः शलभैस्तथा ।

विकृता जलवृष्टिः स्याद् विकृते हिमवत्सुते ! ॥४॥
अल्पोदकाः पयोवाहा वर्षन्ति खण्डमण्डले।
निष्पत्तिः स्वल्पधान्यानां खरे सवत्सरे प्रिये ! ॥५॥
सुभिक्ष जायते लोके व्याधिशोकविवर्जितम्।
धनधान्येषु सम्पूर्णा नन्दने नन्दति प्रजा ॥६॥
क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः शूद्रा वा नटनायकाः।
पीडयन्ते च वरारोहे ! जये दुर्भिक्षसम्भव. ॥७॥
मानुषा सर्वदुःखार्त्ता ज्वररोगसमाकुलाः।
दुर्भिक्ष वा क्वचित्सुस्थ विजये वरवर्णिनि ! ॥८॥
तुषधान्यक्षयो देवि ! कोद्रवान्नमहर्घता।
व्यवहारप्रवृत्त्या तु मन्मथे सुखिनो जनाः ॥९॥
पीडयन्ते सर्वधान्यानि वर्षणेन यथेप्सितम्।
दुर्मुखे चैव दुर्भिक्ष समाख्यात सुलोचने ! ॥१०॥
तस्करैः पार्थिवैर्देवि! अभिभूतमिद जगत्।
सस्य भवति सामान्यं हेमलम्बे नगाङ्गजे ! ॥११॥

जलवर्षा हो ॥ ४ ॥ हे प्रिये ! खरवर्ष में कोई २ जगह ही वर्षा थोड़ी हो और धान्य भी थोड़ा पैदा हो ॥ ५ ॥ नन्दनवर्ष में सुकाल हो, प्रजा व्याधि शोक से रहित हो और धन धान्यसे आनन्दित हो ॥ ६ ॥ हे वरानने ! जयवर्ष में दुष्काल का सम्भव हो, क्षत्रिय वैश्य शूद्र और नट नायक आदि लोक दुःखी हों ॥ ७ ॥ हे पार्वति ! विजयवर्ष में सब लोक ज्वर आदि रोगों से दुःखी हों और दुष्काल हो, क्वचित्‌ही स्वास्थ्य रहे ॥ ८ ॥ हे देवि ! मन्मथवर्ष में धान्य और धान्य का विनाश हो, कोदों आदि धान्य महँगे हों और लोग व्यवहार में प्रवृत्त हों ॥ ९ ॥ हे सुलोचने ! दुर्मुखवर्ष में इच्छित वर्षा न होनेसे सब धान्य का विनाश हो इसलिये दुष्काल हो ॥ १० ॥ हे पार्वतीदेवि ! हेमलम्बिवर्ष में चोर और राजाओंसे जगत् पराभूत हो और